भाव सिन्धु

MERCURY
VENUS
EARTH
MARS
JUPITER
SATURN
NEPTUNE
URANUS
PLUTO

सुनीता झा

भाव सिन्धु

(ज्योतिष जगत का एक क्रांतिकारी गेय ग्रंथ)

सुनीता झा

NISHKAAM PEETH PRAKASHAN

(Publication Divison of **"The Times of Astrology"**)

First Edition : 2003

ISBN - 81-87528-35-4

Also available at :
Lucknow Beureau of **"The Times of Astrology"**
B-4, Arif Vikas Chamber, Sector-2, Vikas Nagar, Lucknow
Phone : 0522 - 2769462

Cover Design : Achyut Shanker

Published by **Rajeshwari Shanker** on behalf of
Rajeshwari Shanker Assoicates for **Nishkaam Peeth Prakashan**
(Publication Divison of **"The Times of Astrology"**)
Shankers' House of Astrology,
R-12-A, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph : 011-26512504, 26512523
E-mail: ***editor@jyotirved.com***
http://www.jyotirved.com

Printed by : Triveni Offset, M/146, Ram Gali no.7,
Panchsheel Garden, Naveen Shahdara
Delhi - 110 032, Phone : 011-22588175

श्रद्धेय स्वामी सनातन श्री जी महाराज

(श्री सनातन आश्रम, गौरा बाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश)
के श्री चरणों में

समर्पण

जिसका मिलना है सहज नहीं
इन्द्रियानुभव के जो ऊपर।
अध्यात्म मार्ग के पथिकों को,
हो जाता जो जब तब गोचर।।
जिसके द्वारा प्रेरित थी मैं,
जिसके बल से यह है निर्मित।
उस परम ज्ञाननिधि योगी गुरु,
को, ''भाव–सिन्धु'' सादर अर्पित।।

ॐ

इस पुस्तक में चर्चित वैदिक ज्योतिष के सिद्धांत, योग एवं सूत्र दैवज्ञों और पाठकों से गम्भीर, गहन एवं तलावगाही अनुशीलन की अपेक्षा रखते हैं। बिना इन सिद्धांतों और सूत्रों को अच्छी तरह समझे हुए, यदि कोई पाठक, ज्योतिष के अपने अल्प ज्ञान के आधार पर स्वयं अपनी या निकट सम्बन्धी की कुण्डली पर इन सूत्रों, योगों व सिद्धांतों को लागू मानकर अपने मन को कष्ट में डालता है या क्लेश देने की भूल करता है तो यह पूर्णतः प्रकाशिका एवं लेखक दोनों के अथक परिश्रम, सदाशयता और लोक कल्याण की भावना के विपरीत होगा।

यह पुस्तक एक दृष्टि में

१ बारह भावों से सम्बंधित लगभग २५०० अनुपम योगों का संकलन।

२ दस वर्ग में प्राप्त विशेष अंशों वाले ग्रहों के विलक्षण योगों का संग्रह।

३ आरूढ़, उपपद, आत्मा कारक, कारकांश तथा अष्टक वर्ग आदि का। विभिन्न भावों से सम्बद्ध अद्वितीय योगों का समावेश।

४ भूमि, भवन, वाहन, धन आदि प्राप्ति का सुन्दर योगों का चयन।

५ मेडिकल एस्ट्रोलोजी-नाना रोगों का ज्योतिषीय विवेचन।

६ सन्तान विषय का सर्वांग चिन्तन।

७ मंगली दोष की उत्कृष्ट व्याख्या, वैवाहिक जीवन के विभिन्न पहलू, कुण्डली मिलान की अनुपम बातें, विवाह समय जानने की विलक्षण विधियां, विदेश-भ्रमण आदि-आदि।

८ आयु-खण्ड निर्धारण की अनोखी विधियां।

९ तीर्थ, यज्ञ-कर्म, आजीविका, राजयोग एवं पदोन्नति एवं परमार्थ सम्बंधी योग।

१० बारह भावों का सर्व सार। जो कुछ भी अन्यत्र, वह यहां एकत्र, जो यहा नहीं वह कहीं नहीं।

अनुक्रम

मन की बात

१

हर हाल में, हर वक्त ही निस्सीम सविता को नमी।
आशीष गुरुजन का जुटाकर सार ज्योतिष का कहौं।।
है ज्ञान की अनुपम छटा, सब शास्त्र में अद्वित्य जो।
अद्वैत का विज्ञान, परिभाषित करे नित सत्य जो।।

२

ब्रह्मांड के सब सूक्ष्म ऊर्जा का बताता स्त्रोत सारा।
गत्यात्मक सारे बलों के पृष्ठिभूमि का भेद सारा।।
जिसमें छुपा है जीव के उत्थान-अवनति की कहानी।
वह सत्य ही मैंने रची, सब सिद्ध ऋषियों की जुबानी।।

३

है हिन्द अथवा चीन या फिर मिस्त्र अथवा मेक्सिको।
सब के उदय का श्रेय जाता, उनके ज्योतिष ज्ञान को।।
इस ज्ञान से विकसित हुआ था, विश्व का विज्ञान सारा।
इससे सजा है योग, आयुर्वेद एवं तंत्र न्यारा।।

४

है समय का विज्ञान ज्योतिष, काल की गणना करे।
क्या है भविष्य के गर्भ में, वह भूत में दिखता अरे।
समय के सापेक्ष में ही बीज कारण का फलित हो।
कर्म का सब फल हमेशा, काल गति से ही घटित हो।।

५

ज्योतिष बिना संसार की है सभ्यता सारी अधूरी।
विज्ञान का उत्कर्ष करता देह सुख की माँग पूरी।।
उपलब्धियाँ भौतिक जगत की बन गयी सब आसुरी।
परमात्मा से आत्मा की बढ़ रही है नित्य दूरी।।

६

हर राष्ट्र के अध्यात्म का आधार ज्योतिष पर टिका।
प्रतिरोध हर युग में हुआ, पर ज्ञान यह किससे रूका।।
कर्म और गुण, दोष के भी पार जो कुछ है ढ़ँका।
उस मूल-तत्व के सामने, विज्ञान नतमस्तक झुका।।

७

जो देह से हरदम परे, पर देह में ही है निहित।
जो देह के द्वारा ही करता कर्मफल सारा ग्रहित।।
जो आधुनिक विज्ञान के अज्ञान के अन्दर ढ़ँका।
उस आत्मदीप को आजतक, मात्र ज्योतिष पा सका।।

८

दृश्य जगत में ही कई अदृश्य जगत विद्यमान है।
जो नहीं समझे उसे वह नर नहीं मतिमान है।।
ज्योतिष बना उसके लिए है ब्रह्म में जिसकी प्रवृत्ति।
सृष्टि के उद्भव प्रलय में व्याप्त रहती मूल प्रकृति।

९

अव्यक्त रहता जो वही है व्यक्त को निज में धरे।
पर मूलप्रकृति है व्यक्त व अव्यक्त दोनों से परे।।
बाह्य सृष्टि में व्यक्त जो वह जुड़ा अभयन्तर से है।
हर प्रकट प्रतिमान का एक बीज तो अन्दर में है।।

१०

है शास्त्र यह अनुपम अनूठा काल को जो पूजता है।
ब्रह्माण्ड के सब भेद को यह पिण्ड में ही ढूंढता है।।
जो घटित हो व्योम में वह धरा पर भी हो घटित।
नक्षत्र के परिवेश से हम रह नहीं सकते कटित।।

११

अन्तरिक्ष, द्यौ, भूमि में ब्रह्माण्ड को ऋषियों ने बांटा।
इन तीन भागों को पुनः त्रिगुणात्म ऊर्जा में लपेटा।।
स्थूल, कारण, सूक्ष्म में है दृश्य-मानव खुद छुपा।
व्यकृति रहित परमात्मा का अंश सब इसमें खपा।।

१२

यह जीव अपने आप में अद्भुत अनूठा है परम।
अज्ञात शक्ति से सजा है भेद इसका अति मनोरम।।
इन तीन भागों में निहित है तीन लोकों का धरम।
त्रिदेव की परिकल्पना है ज्ञान का अद्भुत चरम।।

१३

तीन अक्षों पर करें हम कुण्डली का भी विवेचन।
लग्न है सर्वोपरि, पर भानु, शशी भी है विलक्षण।।

इन तीन अक्षों के समन्वय से बने होरा-सुदर्शन।
फल कथन की सत्यता का हो यहीं से पुष्ट कारण।

१४

लग्न में जो कुछ उदय उसको समेटे है गगन।
जीवात्मा के सूक्ष्म गुण का खान होता सुख भवन।।
उदय, नभ एवं मदन में इनका ही विस्तार होता।
क्रिया, इच्छा, ज्ञान का अनुराग सारा इनमें सोता।

१५

प्रत्येक ग्रह में निहित रहता तीन स्थिति यह अवश्य।
निज वेग एवं बल से करते कर्म को ग्रह नित हविष्य।।
नीचत्व या उच्चत्व एवं जाति, गुण व रूप, कारण।
जीवात्मा में निहित ऊर्जा का करें सब विधि निरूपन।।

१६

मात्र तीन ही भाग में भचक्र भी यह टूटता है।
तीन अवस्था में ही मानव कर्मगति को कूटता है।।
मेष से कर्कट तलक है बाल-काल का हाल देता।
अन्य भागों में इसी विधि है समग्र भचक्र बंटता है।।

१७

चर, अचर व उभय में राशियां सारी बंटी है।
पांच तत्वों में सिमटकर एक दूजे से कटी है।।
तीन के ही भेद से है सारगर्भित सब त्रिकोण।
धर्म, अर्थ, मद, मोक्ष में फिर बंट रहा सरा त्रिकोण।।

१८

चार कोणों से प्रकट हो ब्रह्म की स्थिति जो चार।
ईश्वर, प्रज्ञा, हिरण्यगर्भ व वैश्वानर के सकल प्रकार।।
यह सभी स्थिति तथा गुण, भूत कारण सब सिमटकर।
कुण्डली में हो प्रकट वह काल-पुरुष का रूप बनकर।।

१९

इस काल-पुरुष के कल्पना में ज्ञान हो जाता शिथिल।
ब्रह्माण्ड के सब शक्तियों से भी अधिक यह है जटिल।।
नित समय और आकाश का विस्तार इससे हो रहा है।
वर्तमान बनकर इसी में भविष्य, भूत से मिल रहा है।।

२०

यह काल पुरुष अवयक्त रहकर हम सबों में ही वसे।
और कर्मबन्धन को यथाविधि हर समय आकर कसे।।
इसको समझने में लगाया मुनियों ने अगनित जनम।
फिर भी छली यह खो रहा देकर हमेशा अति मरम।।

२१

यह जीव जी सकता नहीं है क्षीर सागर से अलग।
फिर क्यों रहेगा कालपुरुष भी क्षीरसागर से विलग।।
जो क्षीर सागर देह में वह अम्बु में पत्री में है।
इसलिए अच्यूत का भी अलय हृत्-तन्त्री में है।।

२२

जब कर्क को माने लगन तो कर्मपति है मूतनय।
कर्मफल के ही गणित हित जन्म होता हर समय।।
कर्म जनित सब शक्ति का है स्रोत केबल रक्तनेत्र।
इसलिए ही कालपुरुष का लग्न होता इसका क्षेत्र।।

२२

यह कुण्डली केबल नहीं द्वादस घरों का सम विभाजन।
मनुज के सर्वस्व को वर्णित करे यह है प्रयोजन।।
आद्य शक्ति भी देह में एक कुण्डली बनकर निहित है।
चक्र में इसके तभी तो ग्रहों की गतियां त्वरित है।।

२३

देह की यह कुण्डली है सात चक्रों को लपेटे।
राशियों का चक्र भी है सात ही ग्रह को समेटे।।
जागृत अवस्था में प्रथम इस कुंडिलीनी के छोर खुलते।
राहु-केतु के अक्ष पर ही सात ग्रह के डोर थमते।।

२४

अध्यात्म में है सात अंकों की बड़ी अनुपम कथा।
सप्त-पदी या सप्त-जिह्वा, सप्तऋषि आदि यथा।।
तोय, क्षिति, पावक, पवन, चर, उभय, स्थिर यह जगत।
सर्व व्यापी व्योम तत्व में सृष्टि रचती है सतत।।

२५

चित्र के संसार में जो वृत्त से अभिव्यक्त है।
अंक की दुनिया में उसको शून्य करता व्यक्त है।।

रंग एवं रौशनी में वह परम है तम-घना।
ध्वनि जगत में वह हमेशा मौन में रहता सना।।

२६

निस्सीम निर्गुण को समझना है बड़ा दुश्तर विकट।
संकेत सूत्रों में उसी को किया ऋषियों ने प्रकट।।
सब राशियों का नाम एवं रूप एक आधार है।
उसको समझने का जो नर में निहित अपरम्पार है।।

२९

संकेत अद्‌भुत है छिपा इन राशियों के रूप में।
ज्यों काष्ठ में होता अनल या द्रव्य रहता कूप में।।
ज्यों रश्मि होती भानु में या स्वत्व होता भूप में।
गूढ़ार्थ इसका पढ़ सके नर ज्ञान के ही धूप में।।

२९

राशियों के रूप में है आत्मा की वह कथा।
जिससे सजा है जीव के अपकर्ष की अन्तर्व्यथा।।
जन्म-जन्मान्तर के कर्मों से बना जिसमें निलय।
वह राशि ही पत्री में होती लग्न बनकर के उदय।।

३०

भाव सब जन्मांग के हैं देह से पहले जुड़े।
पुनः भौतिक जगत के उपलब्धियां दिस वह मुड़े।।
भोग, लिप्सा, काम-कुण्ठा आदि की चर्चा करे।
परम पद के पथिक हित जो वह्नि बाती सा जरे।।

३१

भाव से ही राशि एवं ग्रहों की महिमा बने।
भाग्य गृह में चाप सुन्दर, रन्ध्र में लिप्सा सने।।
लग्न में सुरवन्द्य की महिमा कही जाती अनूप।
पर वही हो रिस्फ में, रंक बन जाता है भूप।।

३२

ग्रह वही है व्योम में जो सार कर लेता ग्रहण।
भाव, राशि, नक्षत्र आदि का गुण यही करता ग्रहण।।
इसलिए ही ग्रहों के स्वामीत्व में सब कुछ दिखे।
जो नहीं समझे इसे वह फल कथन क्यों कर लिखे।।

३३

सौर मण्डल से परे है कर्मगति का मूल कारण।
नक्षत्र की दुनियां में ढूंढा सिद्ध ऋषियों ने निवारण।।
नक्षत्र में ऋषियों ने देखा अन्तरिक्ष की गूढ़ता को।
निषेध कर नक्षत्र को ज्योतिषी कहे निज मूढ़ता को।।

३४

राशि में अन्तर्निहित नक्षत्र का परिवेश सारा।
नक्षत्र से ही तो बनता फलकथन सर्वत्र न्यारा।।
सिंह लग्न का तुंग विधुसुत धन के हित दिखता विलक्षण।
किन्तु हो वह हस्त में तो धन सकल कर ले हरण।।

३५

योग की दुनिया में होता कालसर्प का अपना ढंग।
मनुज के सौभाग्य-सुख को डस रहा भीषण भुजंग।।
राहु हो गुरु आश्रित व केतु का स्वामी हो कान।
काल सर्प से ही मिले तब पद, प्रतिष्ठा एवं मान।।

३६

कुण्डली में शीतकर से अंगिरा जब हो षडाष्ट।
तब बनाता योग दुखमय हम जिसे कहते शकट।।
यामिनीपति लाभ में हो, सुर पुरोहित अरि प्रविष्ट।
तब यही शुभफल सदा दे, हो नहीं कुछ भी अनिष्ट।।

३७

हर जन्म से पहले जगत में सृष्टि हो जाती विभक्त।
एक तो है देह में और दूसरे में सब है व्यक्त।।
वह जिसे भौतिक जगत में हम कहें वातावरण।
कर्मफल के फलित होने के वहां है पुष्ट कारण।।

३८

इसी हित में गर्भ व परिवेश का होता चुनाव।
अन्तरिक्ष में ग्रह करें सब कर्मगति का रख-रखाव।।
भाव, मनसा, क्रिया, इच्छा का वही करते नियंत्रण।
कर्म बन्धन का नहीं सम्भव किसी विधि अतिक्रमण।।

३९

पूर्व कर्म जनित तरंगे ही ग्रहों से दौड़ती है।
भेद सारे आवरण को, चित्त को झकझोरती है।।
जागती इच्छा तभी लेने क्रिया का रूप सारा।
प्रकट होता फल वही जो पूर्व कर्मों में धरा।।

४०

अशुभ या शुभ कोई भी ग्रह स्वयं में होते नहीं।
कर्म के कम्पन को नर तक घेरते रहते वही।।
सुख या दुःखदायी फलों का कर्त्ता जातक स्वयं होता।
कर्म के सुदृढ़ नियम में दखल ना देता विधाता।।

४१

सृष्टि के सब सूक्ष्म भेदों को पढ़ें ज्योतिष के द्वारा।
जिसमें झलकता हर समय स्रष्टा का अनुपम खेल सारा।।
जो ग्रहों से करता नियंत्रित कर्मगति का सब नियामक।
जिसमें विलय होने को आतुर जीव सहता दुःख भयानक।।

४२

काव्य में ज्योतिष लिखूं भी कामना मन में बड़ी।
आज गुरु आशीश से वह आ गयी सुन्दर घड़ी।।
अनुवाद भर मैने किया है कुछ नहीं है खास मेरा।
भिन्न ग्रन्थों में दियाजो सकंलित वह योग सारा।।

४३

मात्र बारह भाव की महिमा से मण्डित भाव-सिन्धु।
ज्योतिष जलधि में मिल रही वारि की एक सूक्ष्म बिन्दु।।
सहयोग जिससे जो मिला, है उन सबों को शत नमन।
कृतज्ञ हूँ तुझसे अधिक, राजेश्वरी! मेरी बहन।।

४४

प्रयास मेरा था बृहत, त्रुटियाँ बची होगी जरूर।
त्रुटिरहित होने का मुझमें है नहीं कोई गरूर।।
ज्योतिष के प्रेमी ही गुणे, यह श्रम मेरा कितना सफल।
दसांश भी स्वीकार्य हो तो स्नेह मिल जाता सकल।।

सुनीता झा
बी. ३७, सैक्टर- २३
नोएडा-२०१३०१ (यू.पी.)

स्वस्ति वाचन

बड़ा यशस्वी शक्र करे सबको स्वस्ति प्रदान।
शक्तिमान पूषा करे जन-जन का कल्याण।।
अविनाशी खगराज सा प्रतिभा भरे उड़ान।
सुर-पण्डित वागीश का, मिले मुझे वरदान।।

मंगलाचरण

लक्ष्मीपति, निज गुरु को, मन से करूं प्रणाम।
पत्री के हर भाव की महिमा लिखूं तमाम।।

जिसके ज्ञान विवेक का ऋषिगण करें वखान।
एक दन्त दें ज्योतिष को हर दिल में स्थान।।

रवि तनया के तीर गूंजती जिस मुरली की तान।
वह राधानागर करें ज्योतिष का उत्थान।।

पूर्व जन्म के कर्म की कितनी जटिल कहानी।
सब रहस्य मैं लिख सकूं, वर दो यही भवानी।।

मध्य शिशिर में जिस तरह प्रियकर लगे प्रभाकर।
भाव-सिन्धु रुचिकर बने, यही वरो गिरिजा-शंकर।।

जन-जन के उरपुर में बसकर ज्योतिष बने सनाथ।
भाव-सिन्धु में भव दिखे, यही वरें रघुनाथ।।

कई ग्रंथों के पठन मनन व चिन्तन के उपरान्त।
अपने सुख के लिए लिखी, भाव का सकल वृतान्त।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

प्रथम भाव

लग्नं मूर्तिः कल्पमाद्‌यं वपुः
स्यादंगं देहश्चोदयाख्यं तनुश्च।

लग्नं होरा कल्पदेहोदयाख्यं
रूपं देहं शीर्ष वर्तमानं च जन्म।

रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम्।
सुख दुःख स्वभावंच लग्नभावान्निरीक्षयेत्।।

शरीरवर्णाकृतिलक्षणानि यशोगुणस्थानसुखा सुखानि।
प्रबासतेजोबलदुर्बलानि फलानि लग्नस्य वदन्ति सन्तः।।

प्रथम भाव-फल

१

प्रथम भाव ही मुख्य है, पत्री का आधार।
इसके बल और धर्म से, जीवन रहे न भार।।

२

आता जिससे जीव धरा पर, लग्न वही वातायन।
इसी मार्ग से देह में, आत्मा का हो प्रकटन।।

३

मृत्युलोक के गुणों से, परिपूरित जो सकल।
प्रबल योग के कर्म में, खिलता यहीं सहस्त्रदल।।

४

आंतरिक रणनीति का जितना जो आचार।
गृह-मंत्रालय का यहाँ, अध्ययन तथा विचार।।

५

अभिरुचि, इच्छा, कर्म, गुण विचार और स्वभाव।
कारकत्व सारे प्रकट, होते प्रथम ही भाव।।

६

लग्न और लग्नेश से बनता है आकार।
तन, मन, मस्तक, धर्म गुण तथा सकल संस्कार।।

७

सबल होना लग्न का, होता परमावश्यक।
सुखमय जीवन के लिए सबसे सबल सहायक।।

८

चन्द्र पुत्र हो उदय में, भौम वसे आकाश।
यौवन से परिपूर्ण तन, आनन दीप्त प्रकाश।।

९

सैंहिकेय संग देवगुरु, वास करे तनु-मंडल।
लोहितांग हो लाभ में, कान्तियुक्त मुखमंडल।।

१०

अर्धकाय, रबि, नील जब लग्न को करे पूणीत।
निज उम्र से ज्यादा का, जातक होय प्रतीत।।

११

रमा बंधु, रबिनन्दन जब साथ लग्न में बसता।
तब अपनी ही उम्र का, जातक हर पल दिखता।।

१२

लग्न भाव शुभ दृष्ट हो, योगकारक ग्रह हों सबल।
दें प्रभुता, सम्मान, पद, भोग, प्रताप, प्रबल।।

१३

अग्नि-तत्व ग्रह सकल जब उदय भाव को जाय।
तन में आग, बदन में आग, आग ही भरे सुभाय।।

१४

सबल रिपु - राशीश का, उदय भाव हो वास।
शुभ दृष्टि अरि भाव पर, होय शत्रु का नाश।।

१५

लोहितांग हो लग्न में, शक्र-सचिव धर्मस्य
नर होता निर्भीक और, सकल कार्य सिद्धहस्त।।

१६

केवल पापी ग्रहों से, भरा पड़ा हो केन्द्र।
लग्न रहे बलहीन यदि, जातक बने दुखेन्द्र।।

१७

फल वृद्धि उस भाव की, जाय जहाँ लग्नेश।
शक्ति युक्त हों भाव यदि साथ रहें भावेश।।

१८

रिपु नायक के साथ यदि लग्न में रहे भुजंग।
सौरि दृष्ट प्रथमेश हो, जातक बने अपंग।।

१९

लग्न, चन्द्र, गुरु तीन पर,, पड़े सौरि की दृष्टि।
नर होता विद्वान् तब, आगम-निगम सनिष्ट।।

२०

स्वक्षेत्री शनि लग्न में, या उच्चत्व को प्राप्त।
धीमे किन्तु सतत गति से, जातक हो विख्यात्।।

२१

लग्न और लग्नेश पर, शनि, रन्ध्रेश की छाप।
आत्मज में हो राहु यदि, मंत्र का बढ़े प्रताप।।

२२

शुभ प्रभाव में लग्न रहे, काया होय निरोग।
पाप युक्त हो तो सदा, दे ज्वर, ताप व रोग।।

२३

वर्गोत्तम लग्नेश यदि आत्मा-कारक संग।
गुरु, केतु हो मूर्ति में, जातक बने निहंग।।

२४

कवि, जीव हो मीन में, लग्नेश रहे बलशाली।
शीतरश्मि हो उच्च तो, जातक प्रतिभाशाली।।

२५

उदय से अरिभाव तक सब ग्रह करे प्रयाण।
"एकाबली योग" यह, सब सुख करे प्रदान।।

२६

उदय, वित, व्यय, द्यून ग्रह, "छत्र-योग" सा राज।
कुल दीपक, गुणवान मनुज, को नायक चुने समाज।।

२७

परिवर्त्तन लग्नेश से, करे कहीं रन्ध्रेश।
राहु संग व्ययेश तब, देता बन्धन क्लेश।।

२८

लग्नस्थ रिपुनाथ का मलिन ग्रहों संग योग।
झड़े बाल या चोट या गाँठ, त्वचा का रोग।।

२९

धन, धर्म और अंग में हो सम्बन्ध अपात।
योग यह ऐसा प्रबल जो लक्ष्मी लाये हठात्।।

३०

इनके ईशों का अगर त्रिक्-भावों में योग।
निर्धनता, चिंता तथा देता नाना रोग।।

३१

बलशाली लग्नेश हो, शुभ प्रभाव में लग्न।
दृढ़ उदार संकल्पमति जातक धर्म निमग्न।।

३२

छिद्रेश्वर हो लग्न में, लग्नेश जाय अरिभाव।
नील, नाग से दृष्ट हो, रोग का बढ़े प्रभाव।।

३३

युति लग्नेश, अरीश की धरापूत्र से दृष्ट।
पाप प्रभाव शशांक पर, होता प्रबल अरिष्ट।।

३४

रन्ध्रेश हो लग्न में, लग्नेश आयु को जाय।
यह चिरायु जातक सदा, पैतृक सम्पत्ति पाय।।

३५

निज-निज भाव विराजते अंगेश और निधनेश।
चिरजीवी जातक बने, है यह योग विशेष।।

३६

तनु, तूर्य और तपपति, मृत्यु भाव आसीन्।
निर्धनता ता उम्र रहे, जातक धर्म विहीन।।

३७

निधनेश यदि बड़जोड़ हो, तुलना में लग्नेश।
दशा-भुक्ति में बन जाता, वह प्रचण्ड मारकेश।।

३८

वक्री, वर्गोत्तम, लग्नपति, आत्माकारक से युक्त।
निखड़ उठे बल और तब, फलवृद्धि उपयुक्त।।

३९

केन्द्र-कोणगत, उच्च या निजगृही धर्मेश।
ललितासुत जातक बने, सबल अगर लग्नेश।।

४०

काम अथवा त्रिक् में, भानु, भौम, लग्नेश प्रकट।
हत्या एवं आत्मघात का बढ़ जाता तब संकट।।

४१

शनि देखे लग्नेश को, लेकर दृष्टि समस्त।
पापग्रस्त हो राशि यदि, जीवन संकटग्रस्त।।

४२

लग्नेश हो नीचगत या त्रिक्-गृह में वास।
लग्ननाथ की दशा दे, व्याधि, शत्रु से त्राश।।

४३

सब पापी केन्द्रस्थ हो, तनु शुभ गुण से हीन।
राजयोग यह प्रबल मगर, कीर्ति धर्म हो क्षीण।।

४४

अस्त, नीच, लग्नेश दे अरि भाव में रोग।
अर्थ, अंग में परिवर्तन, धन वर्षा हित योग।।

४५

उदय, वित्त और आय में आपस में सम्बन्ध।
देवगुरु हो साथ तो, धन, धान्य अनुबन्ध।।

४६

महादशा लग्नेश की और लाभेश की भुक्ति।
धन मण्डल हो जाय तब, परम पुरस्कर उक्ति।।

४७

देवलोकांश दिनेश हो, लग्ननाथ बलवान।
तपनायक हो उच्च का, जातक हो मतिमान।।

४८

निज अंश या उच्चगत या मित्रगृही लग्नेश्वर।
केन्द्रनाथ हो साथ में, जातक हो युक्तेश्वर।।

४९

राहु, गुलिक हो लग्न में, पापयुक्त लग्नेश्वर।
सौरि दृष्ट हो लग्न यदि, दुःख देता है तस्कर।।

५०

लग्नेश के नवमांशपति संग मंगल, मन्दि, भुजंग।
रोग ग्रस्त हो जाता तब जातक का जननांग।।

५१

लग्न भाव में भानु हो, नभ गत लग्न का नायक।
शुभ प्रभाव हो लग्न पर, नामवर बनता जातक।।

५२

गगनपति हो द्यून में, सुख में हो लग्नेश।
कीर्तिवान जातक बने कुल में सफल नरेश।।

५३

क्षत, नाश या कल्प में, चन्द्र पुत्र, रक्ताम्बर।
अपराधी या नीच या नर बन जाए तस्कर।।

५४

लग्न, तिथि या वार के अन्त में नर उत्पन्न।
तब औरों से जन्म का योग होय सम्पन्न।।

५५

भौम उच्च, तम कलश में, रमणी चन्द व मन्द।
सुर पण्डित हो सिंहगत, शत्रु पक्ष निस्पन्द।।

५६

लग्न, चन्द्र से पंचम गृह, द्वादशेष आसीन्।
पाप दृष्टि या युति यदि, जातक संततिहीन।।

५७

लग्नभाव में यदि वसे चन्द्र तथा अंगारक।
रोहिणेय की दृष्टि पड़े, बुद्धिहीन हो जातक।।

५८

चन्द्र अकेले हो तथा उभय ओर ग्रहहीन।
केन्द्र सभी हो रिक्त तो, जातक हो धनहीन।।

५९

केवल शुभ ग्रह केन्द्र में, नहीं षडाष्टक योग।
उत्तम धन, विद्‌या तथा भाग्य वृद्धि हित योग।।

६०

लग्नेश हो लग्न में, बुध, गुरु, कवि केन्द्र स्थान।
तन-मन ओजस युक्त हो, अतिश हो उत्थान।।

६१

शुभ प्रभाव में लग्न हो, लग्ननाथ बलशाली।
ज्ञान, धर्म, धन युक्त नर, होता गौरवशाली।।

६२

शुभ युक्त हो केन्द्र सब, लग्नेश कोणगत होय।
पंकज लोचन पुरुष यह, राज-काज के योग्य।।

६३

कर्क लग्नगत मंगल की महादशा का वेग प्रबल।
राहु भुक्ति में जातक की, होय मनोरथ पूर्ण सकल।।

६४

पापी ग्रह तनु भवन में, लग्नेश पाप से ग्रस्त।
दुष्ट कर्म में लीन नर,, रहे व्याधि से त्रस्त।।

६५

पाप ग्रस्त हो लग्न तथा, शशि, भानु पर पाप प्रभाव।
रक्त-वस्त्र कामस्थ हो, सुख शांति का रहे अभाव।।

६६

सभी ग्रहों से दृष्ट हो लग्न और सुधाकर।
अति विशाल साम्राज्य का होता भोग पुरस्कर।।

६७

लग्नेश पर सब ग्रहों की होवे दृष्टि समस्त।
धर्म कर्मा, सुखी नर जीवन जीता व्यस्त।।

६८

शशि संयुक्त लग्न संग पापी का संयोग।
दुष्ट ग्रहों की दृष्टि दे, पानी वाला रोग।।

६९

सबल पापी लग्न में, पाप प्रभाव बलिष्ट।
मध्यमायु, अल्पायु का होता "योग अरिष्ट"।।

७०

क्रूर ग्रह लग्नेश बन, लग्न में यदि समाय।
अथवा होवे उच्च का, जीवन सफल बनाय।।

७१

निर्बल चन्द्र हो लग्न में, पापी ग्रह संयुक्त।
स्वास्थ्यहीन जातक सदा, रहे व्याधि से युक्त।।

७२

इसी हाल में शुक्र को राहु रहा चपेट।
वाणी में हो दोष या मुख-पीड़ा का खेट।।

७३

एक से ज्यादा क्रूर ग्रह लग्न में हो आसीन।
नित अवनति से पतित नर होता सम्पत्तिहीन।।

७४

सारे ग्रहों से एक संग जब भी निशाकर दृष्ट हो।
न्यायप्रिय, धर्मज्ञ नर का, कर्म नृपवत पुष्ट हो।।

७५

रिपु, रन्ध्र, जाया भाव में, बलवान शुभ ग्रह राजता।
चिरायु, नीति निपुन्न नर सुख से प्रजा को पालता।।

७६

कर्क, वृश्चिक, मीन अथवा
लग्न में हो चापधर।
असुरेश पंडित हो तहाँ
रजनी पति को साथकर।।
फनिनाथ का गरल भी
इस योग में घुलता रहे।
जान का खतरा जलो से
उम्र भर पलता रहे।।

७७

लग्न में हो छाग अथवा
केशरी, अलि या मकर।
भूमिसुत व शिखी को
ले संग बैठा हो दिवाकर।।

अग्नि का यह प्रबल वेग
प्रचण्ड हो पलता रहे।
निज हित में जातक उम्र भर
ही अनल से बचता रहे।।

७८

त्रिक् भाव के राशीश का
जब लग्न में हो जलजला।
दंष्ट्री यदि हो संग तो
सब देह सुख जाता चला।।

७६

लग्न शुभ से युक्त एवं
दृष्टि शुभ की पुष्ट हो।
लग्नेश भी बलवान हो
तो भोग मन-संतुष्ट हो।।

८०

खतरा देता आग और काष्ठ, शस्त्र, पाषाण।
शनि, रवि, राहु संग लग्न में मंगल हो बलवान्।।

८१

उदय भाव, होरादि सब जब हो पापाक्रान्त।
धन, सम्पत्ति सब क्षीण हो, जीवन मिटे दुखान्त।।

८२

शुभ ग्रह होकर नीच का यदि बिराजे लग्न।
परम अशुभ फलप्रद बने, जीवन दुःख संलग्न।।

८३

लग्नपति चर राशि में, चर राशि ही लग्न।
जीवन यापन के लिए, जातक करे भ्रमण।।

८४

चर राशि में लग्न हो, या नवमांश हो चर।
भ्रमणशील जातक सदा जाता इधर-उधर।।

८५

लग्नस्थ स्वरभान हो, मदन में पंकज-बोधन।
रक्त वस्त्र मध्यस्थ यदि, जनक की होय निधन।।

८६

चर राशि के लग्न का लग्नेश यदि द्रुतगामी।
द्रुत गति वाले ग्रह देखें तो जातक हो बहुयामी।।

८७

गोपुर में लग्नेश हो, शुभ से सजे लगन।
देवलोक में कवि रमे, सुखमय होता जीवन।।

८८

लग्नेश्वर अम्बर बसे यदि उच्च का होकर।
प्रबल प्रतापी नर बने, यदि लग्न में दिनकर।।

८६

लग्न और लग्नेश को करते, मंगल, मन्द प्रभावित।
व्याधि, चोट और दुर्घटना, जीवन में सदा समाहित।।

६०

लग्नेश्वर बन भौम जब बसे लग्न ही भाव।
दुष्ट दृष्टि उस पर पड़े, लगे शस्त्र से घाव।।

६१

इसी हाल में लग्न में छायात्मज का भोग।
गिरने से दे चोट या स्नायु तंत्र का रोग।।

६२

लग्नेश युत घर का स्वामी, जब जाये त्रिक्-भाव।
लग्न होय बलहीन तब, स्वास्थ्य का रहे अभाव।।

६३

राहु, भौम की दृष्टि में रहे लग्नगत दिनकर।
टी.वी. अथवा दमा रोग से, जीवन बनता दुःखकर।।

६४

स्वरभानु से युक्त लग्न में सूर्यपुत्र का वास।
तब पिशाच के कोप से, जातक रहे हताश।

६५

धूम्रकेतु लग्नस्थ हो, मलिन दृष्टि की भीड़।
चोरों से तब भय बने या पिशाच से पीड़।।

९६

शशि संयुक्त लग्न या लग्नेश पर भी राहु की।
दृष्टि जब पड़ती कभी तब भय सताता प्रेत की।।

९७

लग्नेश तथा तुर्येश का आपस में परिवर्तन।
राहु केतु से दृष्ट हो, पशु-जातक उत्पन्न।।

९८

सबल क्रूर निज गृह बसे, शुभ शोभे अन्यत्र।
पशु-राशि यदि लग्न में, पशु-जन्म का सत्र।।

९९

बुध राशि के लग्न में, षष्टमपति का सत्व।
शनि की पड़ती दृष्टि जब, नष्ट होय पुंषत्व।।

१००

द्विस्वभावगत जब रहे, चन्द्रपुत्र, रविनन्दन।
पुंषत्व हो नष्ट अगर, राहु करे अवलोकन।।

१०१

प्रथम गृह में देवगुरु
देता प्रचुर विनम्रता
सब भांति हो सबका भला।
जातक यही है चाहता।।
मृदुभाषी व मिष्टानप्रिय,
हो सत्यवादी सर्वथा।
छायात्मज की दृष्टि से,
गंभीर हो, सागर यथा।।

१०२

कल्प में हो क्रूर ग्रह,
नवमांश क्रूराक्रान्त हो।
गगनगत हो मलिन ग्रह,
नीचस्थ स्वयं प्रशान्त हो।।
केन्द्र कोण में भानु को
जब देखता स्वरभान हो।
लग्नेश हो निर्बल अगर,
जातक बहुत बदनाम हो।।

१०३

मकर अथवा तोयधर
द्रेश्कान में जब लग्न हो।
निशाकर उसको निहारे
केन्द्र गृह से मग्न हो।।
क्रूर ही षष्टियंश में
हो लग्नपति का जलजला।
नीच पथ में ही सतत
जातक का होता सिलसिला।।

१०४

सौम्य सौरि और शुक्र जब तप में करे गमन।
वर्गोत्तम हो अंश में, लम्बा सुखमय जीवन।।

१०५

आरोही बनकर रहे भाग्य उदय के नायक।
शुभ प्रभाव से युत रहे, कीर्तिवान हो जातक।।

१०६

तपगत रवि, अहि अरि रहे निधन बसे शुक्लाम्बर।
कुलदीपक जातक होता जब सुत में हो रक्ताम्बर।।

१०७

षष्टेश संग नवमेश हो, राहू दृष्टि प्रपन्न।
तब पराये पुरुष से, जातक हो उत्पन्न।।

१०८

रिपुनायक संग सोम कुज सुख में करे गमन।
तब जातक के जन्म का अन्य मर्द हो कारण।।

१०६

कवि चाप में, जीव मकरगत, शफरी में रक्ताम्बर।
क्रूर कर्म जातक करे जब घट में बसे दिवाकर।।

११०

जल राशि में लग्नेश्वर शुभ संग रहे प्रविष्ट।
या जलग्रह से दृष्ट हो, सेहत हो उत्कृष्ट।।

१११

जलराशि नवमांश, लग्न में शुभ ग्रह रहे प्रविष्ट।
तब जातक को प्राप्त हो सबल स्वस्वछ देहिष्ठ।।

११२

प्रथम भाव जल तत्व में शुभ ग्रह बैठे तुष्ट।
तब जातक की काया हो सुन्दर और सुपुष्ट।।

११३

मौम से सप्तम हो यदि चन्द्र पुत्र का गेह।
जातक को तब प्राप्त हो कोमल लम्बा देह।।

११४

मिथुन राशि जब होती है नवमांश में लग्न।
स्वस्थ गातयुत नर सदा होता सुख-संलग्न।।

११५

द्रव्य एवं व्ययपति हो चन्द, मन्द से दृष्ट।
तब जातक करता सतत कर्म कई निकृष्ट।।

११६

भानु से धन में शनि तथा व्योम वसे यदुनायक।
मौम रहे कामस्थ वहीं से, विकलांग हो जातक।।

११७

केन्द्रस्थ शशि भानु करें पाप दृष्टि का भोग।
अंग-भंग का पत्री में बनता तब दुर्योग।।

११८

लग्नस्थ कवि पर पड़े सूर्यपुत्र की दृष्टि।
तब जातक के अंग में दोष की होती सृष्टि।।

११९

अहि सौरि या आर संग जीव करे आवास।
शुक्र जाय पाताल में, अंग-भंग से त्राश।।

१२०

कर्कस्थ कुज पर रहे पापी ग्रह का रोष।
पित्त-कोप के कारण, रक्त में होता दोष।।

१२१

सोम सौम्य का जब घटे भौम दृष्टि से धर्म।
जातक तब हो जाता है, नीच और बेशर्म।।

१२२

राहु दृष्टि में हों यदि सौम्य संग अंगारक।
छली और कपटी तब मन से होता जातक।।

१२३

मंगल मन्द भुजंग एक संग करें कहीं संयोग।
छल प्रपंच और कपट का, बनता भीषण योग।।

१२४

जीव दृष्ट जब होता है लग्नस्थ भृगुनन्दन।
तब जातक का होता है, शुद्ध, सरल, अन्तर्मन।।

१२५

कीट लग्न में रवि कवि जाकर व्योम समाय।
वामन होता मनुज जब सोम मकर में जाय।।

१२६

मेष लग्न में चन्द्र को देख रहा अहिनायक।
तब अत्यधिक क्रूर, मन से होता जातक।।

१२७

सबल लग्नपति को यदि देखे देवपुजारी।
जातक होता धन्य तब पाकर खुशियां सारी।।

१२८

निशा जन्म हो भूमिसुत तनु या नभ में शेर।
तब अपने ही शौर्य से जातक बने कुबेर।।

१२९

शनि साँप से हो अगर लग्नस्थ भृगु दृष्ट।
जातक के जीवन का सब होता भोग विनिष्ट।।

१३०

षष्टस्थ होकर रहें तप अम्बु के नायक।
तब बहुत ही कपटी, मन से होता जातक।।

१३१

बागीश संग भौम करे सप्तम गृह विश्राम।
जातक होता शूर तथा करता भोग तमाम।।

१३२

विक्रम गृह में वक्र हो, तप में ज्ञ, यदुनायक।
कलुषित मति व क्रोधी, तब हो जाता जातक।।

१३३

प्रथमेश निर्बल रहे या नीच, अस्त, अवरोही।
राहु, वक्र की दृष्टि से जातक होता द्रोही।।

१३४

कारकांश में ध्वजी जब डाले अपना डोर।
तब जातक होकर रहे दुश्कर्मी व चोर।।

१३५

कारकांश में जब कभी गुलिक मचाये शोर।
पापकर्म में निरत नर बन जाता तब चोर।।

१३६

अंत्येश का हो यदि सहज भवन में ठौर।
नीच वृत्ति का जातक बनकर रहता चोर।।

१३७

भौम सौम्य लग्नस्थ हो, राहु रहा हो देख।
चौर-वृत्ति में नर रमे, ऐसा है विधि-लेख।।

१३८

अष्टमेश धन भवन में यदि करे संचार।
लग्नाथ निर्बल रहे, जातक हो बटमार।।

१३९

देवगुरु हो नीच का जाकर लग्न भवन।
तब जातक है पालता, नाना नीच व्यसन।।

१४०

व्ययेश चन्द्र हो नीचगत, देखे उसे शनी ।
तब जातक हो जाता, कई भाँति दुर्व्यसनी।।

१४१

व्यय, द्रव्यगत क्रूर हो, लग्ननाथ हो निर्बल।
हत्‌भाग्य जातक बने, मिले न कोई सम्बल।।

१४२

कारकांश से नवम में रवि जीव हो संग।
तब जातक कर सकता है हर मर्यादा भंग।।

१४३

नीच नवांशगत सित यदि नभ में रहता शक्य।
कामस्थ कुज तब भरे, नर में कामाधिक्य।।

१४४

लग्नस्थ भृगुनाथ को राहु लगाये चाबुक।
शुभ विवर्जित हो यदि, जातक होता कामुक।।

१४५

विषम लग्नगत सित रहे अहि, असित से भ्रष्ट।
तब जातक का हो जाता पुंषत्व सब नष्ट।।

१४६

शुक्र राशि में हो यदि पत्री में यदुनायक।
शनि, सर्प से दृष्ट हो, अल्पवीर्य हो जातक।।

१४७

गगन, निधन में सित, असित शुभ प्रभाव से रिक्त।
तब रुग्ण शुक्राणु से हो जीवन सुख तिक्त।।

१४८

आत्मजस्थ हो जीव शनि, लग्नस्थ यदुनायक।
तपगत हो स्वरमान तो वीर्यहीन हो जातक।।

१४९

सौम्य असित हो अस्तगत, प्रमदा होवे लग्न।
शनि राशिगत सित रहे, शुक्राणु हो रुग्न।।

१५०

सोम भौम कोणस्थ हो, लग्न में सौरि समाय।
अंत्यस्थ दिनमान हो, मति-विभ्रम हो जाय।।

१५१

सोम सौरि कामस्थ हो, लग्न में शशिसुत निर्बल।
तब मानसिक तौर पर जातक होता विह्वल।।

१५२

जैमिनेय जब लेता है सोदर में स्थान।
कलहप्रिय जातक बने यदि मंगल हो बलवान।।

१५३

भानु सौरि बसते अगर कई वर्ग में साथ।
नर होता बदनाम तब शुद्र नारि के साथ।।

१५४

अरीश दृष्ट प्रथमेश जब रिपु में करे प्रवेश।
मित्र, बन्धु ही देते, तब नर को नाना क्लेश।।

१५५

शिखी गुरु हो लग्नगत, उच्च रहे रबिनन्दन।
असफल नर का बने, संयासीवत् जीवन।।

१५६

लग्नस्थ कुज का करें भानु सौरि अवलोकन।
पाहन अथवा शस्त्र से होता है शिरछेदन।।

१५७

छायासुत युत चन्द्र पर मंगल करे प्रहाड़।
तब जातक को ग्रस लेता रोग अपस्मार।।

१५८

लग्नस्थ गुरु को मिले सप्तम शनि से ढ़ाढ़स।
वाताधिक्य से गात में, पलता अतिशय आलस।।

१५९

नवमांश में लग्नेश्वर संग बसता जब अंगारक।
पापी ग्रह हो निधन में, हत्यारा हो जातक।।

१६०

शशि भौम हो लग्नगत, पाप प्रभाव हो पुष्ट।
कामस्थ हो भानुसुत, जातक हो अति दुष्ट।।

१६१

मेषराशिगत चन्द्र को मंगल देखे उत्सुक।
लग्नेश बलहीन हो, नर बन जाता भिक्षुक।।

१६२

शुभ विवर्जित चन्द्र संग करता राहु प्रवास।
श्रीहीन जातक बने भिक्षुक अथवा दास।।

१६३

बुध नक्षत्र में हो अगर दिनकर का संचार।
जातक को करता ग्रसित, मतिभ्रम, मनोविकार।।

१६४

यदि चन्द्र नक्षत्र में दिवानाथ का वास।
पराजित जीवन से तब जातक जिये हताश।।

१६५

जब राहु नक्षत्र में करे सुधाकर भोग।
जातक रहता नित विकल, पले मानसिक रोग।।

१६६

जन्म-चक्र में शुभ ग्रह बने लग्न का नायक।
पर्वतादि अंशों में हो, सम्मानित हो जातक।।

१६७

नवमांश में जब कभी होता कर्क उदय।
तब तोय से पालता, जातक सदिखन भय।।

१६८

मेष लग्न का चन्द्र हो अष्टम गृह में पस्त।
जल से खतरा पालकर जातक रहता त्रस्त।।

१६९

पापी ग्रह संग लग्न में केतु करे संयोग।
तस्कर देते कष्ट या होता स्नायु-रोग।।

१७०

लग्न निधन या द्यूनगत भानु संग अंगारक।
अग्नि घाव या शत्रु से पीड़ित रहता जातक।।

१७१

चन्द्र से सुत या वित्त गृह देवगुरु का वास।
तथा निधन व भाग्य में पापी करे प्रवास।।
धर्म, शील, ऐसा जातक, देता सकल नशाय।
धन अर्जन में रत रहे, करके नीच उपाय।।

१७२

कोष अथवा कोण में छायासुत का वेश।
बलहीन लग्नेश का हो पाताल प्रवेश।।
निधन भवन में फूंकते पापी जब चिंगारी।
नीच कर्म में निरत नर होता मिथ्याचारी।।

१७३

चन्द्रपुत्र स्वरभान संग लग्न में करे विलाश।
सप्तम गृह में धरणीनन्दन करता यदि प्रवास।।
दिनकर सुत भी निधन में करता हो संचार।
तब होकर के ही रहे, जातक को अतिसार।।

१७४

षष्ठेश संग लग्न में जीव और शुक्लाम्बर।
तथा उन्हें हो देखता शनि, साँप, रक्ताम्बर।।
जातक रहता दुःखी जब निर्बल हो प्रथमेश।
अपने ही जन देते तब उसको नाना क्लेश।।

१७५

लग्नेश संग अरीश जब करता प्रथम प्रवास।
जातक निज कुटुम्ब से पाता नाना त्रास।।

१७६

व्यसन, निधन व अंत्य में पापी बसे तमाम।
नीच कर्म में निरत नर होता अति बदनाम।।

१७७

नीच अंश में सौम्य, शशि, सौरि करे विश्राम।
तब कुकर्म में लिप्त नर होता अति बदनाम।।

१७८

यदि लग्न में जीव संग राहू करे प्रवास।
तब जातक में हो नहीं थोड़ा भी उत्साह।।

१७६

लग्नस्थ होकर रहे यदि लाभ का नायक।
हंसी, खुशी, मस्ती में, जीवन जीता जातक।।

१८०

रिस्फ, रन्ध्र या गगन में शुक्र सोम का वास।
कामान्ध जातक करे, अतिशय भोग विलाश।।

१८१

व्यसन निधन या द्यून में शुक्र सौम्य संयोग।
तब जातक को प्राप्त हो अति अगाध रतिभोग।।

१८२

गुरु दृष्टि से लग्नगत होवे सौम्य निहाल।
शुभ अंशगत हो अगर, जातक हो वाचाल।।

१८३

षष्टेश संग लग्न में चन्द्रपुत्र जब जाय।
रहे राहु से दृष्ट तो वाचा-शक्ति नशाय।।

१८४

भानु, भौम और भानुसुत अरिभाव में संग।
राहु दृष्ट प्रथमेश हो, जातक बने अपंग।।

१८५

सित, असित जब एक संग करता काम प्रवास।
रूधिर तिलक हो लग्नगत, कामशक्ति हो नाश।।

१८६

कारकांश में जब बने भीषण पापाचार।
जातक के तब जन्म का कारण हो व्यभिचार।।

१८७

सहज, शत्रु, धन, सुतस्वामी लग्न में करे प्रयाण।
तब जातक हो सकता है औरों का सन्तान।।

१८८

प्रथम भाव में जब बसे सूर्य तथा स्वरभान।
शनि तुर्यगत हो अगर, नर जारज सन्तान।।

१८९

वैशेषिक अंश में लग्नेश का बढ़ता यदि प्रताप।
तब ललिता की कृपा से मिटे सकल संताप।।

१९०

क्षीण चन्द्र का लग्न में अहि से बढ़े विषाद।
दिनकर सुत पाताल में, नर में हो उन्माद।।

१९१

पापयुत लग्नेश का व्यसन, निधन में भोग।
तब जातक है पलता, सव्य नेत्र में रोग।।

१९२

कारकांश में छायासुत जब रहता विद्यमान।
चतुर उद्‌यमी मनुज तब होता प्रतिभावान।।

१९३

कान्तागृह में जब करे सौरि, शिखी, गठजोड़।
तब अनेकों व्याधि से काया हो कमजोर।।

१९४

कारकांश से तुर्य में राहु भौम का योग।
जातक को करता ग्रसित टी.बी. जैसा रोग।।

१९५

लग्न भवन को देखता सौरि तथा अंगारक।
दमा रोग से तब सतत पीड़ित होता जातक।।

१९६

सोम भानु नववांश में करते गृह विनियोग।
जातक को करता ग्रसित टी.बी. जैसा रोग।।

१९७

सिंह राशि में जब करें ये ही ग्रह संयोग।
पड़े राहु की दृष्टि तो, होता है क्षय रोग।।

१९८

चन्द्र लग्न पर सौरि, कुज करते यदि प्रहार।
क्षय रोग तब जातक को अक्सर देता मार।।

१९९

अलि कर्क घट अंश में सूर्यपुत्र, यदुनायक।
गुल्म रोग से तब सतत पीड़ित होता जातक।।

२००

कारकांश से तनय में रहता केतु समाय।
संग्रहनी तब जातक की काया देत नशाय।।

२०१

नीच अंशगत साँप, शनि करते लग्न प्रवेश।
तब पिशाच से पाता, जातक नाना क्लेश।।

२०२

वित्त उदय मद रन्ध्र हो पापी ग्रह से दृष्ट।
नर का करते सुख हरण, अग्नि शस्त्र या दुष्ट।।

२०३

लग्न भवन में रिपुनाय संग
जब रमता है भूनन्दन।
तब कष्टमय ही रहता है
आग से नर का जीवन।।

२०४

चार या चार से ज्यादा ग्रह
जब एक साथ करते संयोग।
छायासुत बलवान रहे तो
प्रबल प्रव्रज्या का हो योग।।

२०५

ऊपर वाले योग में दिखता
जो ग्रह अतिशय बलशाली।
प्रव्रज्या पथ में तब होता।
लक्षण वो सब बलशाली।।

२०६

सबसे ज्यादा प्रबल वहाँ
जब पत्री में रहता दिनमान।
परम तपस्वी जातक होता।
अर्जित करता अति सम्मान।।

२०७

इसी योग में रमाबन्धु
जब होता सबसे बलवान।
तब कपालिक मार्ग वरणकर
जातक बनता परम महान।।

२०८

रक्ताम्बर जब इसी योग में
सबसे ज्यादा हो बलशाली।
रक्तवस्त्रधारी जातक तब
तप में हो प्रतिभाशाली।।

२०९

जब सोमसुत इसी योग में
सबसे ज्यादा रहे प्रखड़।
धवल कीर्ति ऐसे जातक की
जग में सदिखन रहे अमर।।

२१०

अमर पुरोहित इसी योग में
जब होता सबसे पुरजोड़।
तब दण्डी सन्यासी जग में
लेता खुद को ब्रह्म से जोड़।।

२११

सबसे ज्यादा इसी योग में
बलपूरित जब हो शुक्लाम्बर।
जातक जग में वन्दित होता
कई सिद्धियों से खुद सजकर।।

२१२

छायासुत इस योग में होता
पत्री में जब अति बलवान।
नग्न, दिगम्बर वेष धरे नर
सदा साधता है शमशान।।

२१३

नीच, पराजित, अस्त ग्रहों से
युत या दुष्ट प्रव्रज्या कारक।
तब साधना से विरक्त हो।
पाप मार्ग गह लेता जातक।।

२१४

नवमांश में एक राशि में
शशि, भानु, जब करे गमन।
पापी ग्रह भी साथ रहे तो
कुत्सित होता नर का मन।।

२१५

सिंहीसुत युत कुमुदबन्धु का
सुर पण्डित करता अवलोकन।
तब सदिखन ही पापकर्म में।
रमता है जातक का मन।।

२१६

बलि पंडित संग रमाबन्धु जब
लग्न भवन में हो विद्यमान।
छायात्मज से दृष्ट रहे तो।
जातक सहता नित अपमान।।

२१७

लग्ननाथ बलहीन अगर हो
लग्न में पापी ग्रह आसीन।
सारे योग विफल हो जाते।
जातक हो सुख, सम्पत्तिहीन।।

२१८

द्रव्य भवन में पापी ग्रह संग
सूर्य पुत्र जब हो विद्यमान।
लग्ननाथ बलहीन मलिन हो
नित पीड़ित करते हैं स्वान।।

२१६

जन्मांग में सौरि दृष्ट से
लग्नेश्वर हो धन में भ्रष्ट।
तब जीवन में जातक पाता
स्वानवर्ग से अतिशय कष्ट।।

२२०

जाया, लग्न, रन्ध्र या वित्त में
धरापुत्र संग जब हो गुलिका।
एवं उनके ऊपर पड़ती, कुपित।
दृष्टि जब दिवानाथ का।।
लग्ननाथ हो निर्बल अथवा
पाप प्रभाव पड़े भरपूर।
अग्नि, शस्त्र या शत्रुजनों से
नर का होय मनोबल चूड़।।

२२१

जन्मचक्र में लग्ननाथ संग
धरापुत्र जब करे भ्रमण।
तारानायक पापी ग्रह संग
षष्टमगृह में रहे मगन।।
या सुखेश ही अर्धकाय संग
जाकर बसता रिस्फ भवन।
तब नीच वृत्तियों से रहता
अँटा पड़ा जातक का मन।।

२२२

शुष्क ग्रहों संग, शुष्क राशिगत यदि रहे लग्नेश।
तब जातक की होती है क्षीणकाय, कृष-भेष।।

२२३

शशि सौरि संग पत्री में जाकर बसता मेष।
पापी ग्रह से दृष्ट हो, जातक हो कृष-भेष।।

२२४

आय, केन्द्र में रिस्फपति करता यदि प्रवेश।
वक्री होता वह यदि, जातक हो कृष-भेष।।

२२५

केन्द्र भवन में हो यदि पापी ग्रह की भीड़।
तब जातक के गात में होती अक्सर पीड़।।

२२६

तप, तनय में पाप दृष्ट यदि रहे अंगारक।
पड़ता पाप प्रभाव तो अंगहीन हो जातक।।

२२७

बुध के नवमांश में रहे लग्न का नायक।
तीव्र बुद्धि व हास्यप्रिय तब होता है जातक।।

२२८

सोम, सौम्य से दृष्ट हो सहजगत अंगारक।
परम घमण्डी तथा प्रमादी होकर रहता जातक।।

२२९

अर्धकाय से दृष्ट हो लग्नस्थ अंगारक।
शुभ विवर्जित हो यदि क्रोधी होता जातक।।

२३०

गुलिक संग होता यदि वित्त भवन का नायक।
मलिन अंशगत जब रहे, क्रोधी होता जातक।।

२३१

भौम संग संयुक्त हो यदि लग्न का नायक।
पड़ता पाप प्रभाव तो दुर्व्यसनी हो जातक।।

२३२

पापी ग्रह का अंत्य में जब बनता है योग।
लग्ननाथ निर्बल रहे, दुर्व्यसनों का भोग।।

२३३

पड़ता पाप प्रभाव जब लग्नभाव पर पुष्ट।
तब जातक बनकर रहे, दुर्व्यसनी व दुष्ट।।

२३४

नीच राशि में व्ययपति करता यदि भ्रमण।
लग्नेश निर्बल रहे, जातक करे व्यसन।।

२३५

प्रभाकर वसता यदि तिमि, अलि वा कुलीर।
भौम दृष्टि से नर बने क्षमावान व वीर।

२३६

करते गृह विनियोग जब तुर्य लग्न के नायक।
धीर, वीर, गंभीर व क्षमावान हो जातक।।

२३७

मिथुन लग्न में हो यदि असुर पूज्य का वास।
अतिशय कामुक नर चाहे निशिवासर सहवास।।

२३८

शुक्र राशिगत पत्री में यदि रहे यदुनायक।
सौरि, साँप से दृष्ट हो, वीर्यहीन हो जातक।।

२३९

विषम राशि के लग्न में शुक्र रहे आसीन।
पड़ता पाप प्रभाव तो मनुज वीर्य से हीन।।

२४०

विषम लग्न को देखता सम राशिगत अंगारक।
मलिन अंशगत हो, नपुंसक हो जातक।।

२४१

विषम राशि में सौम्य हो, सम में हो यदुनायक।
सौम्य भौम से दृष्ट हो, नपुंसक हो जातक।।

२४२

नवमांश में विषमगत, लग्न, शुक्र, यदुनायक।
सौरि, भौम भावेश हो, नपुंसक हो जातक।।

२४३

अलि जूक में जब रहे छायासुत, अंगारक।
रमणी सुख मिलता नहीं, वीर्यहीन हो जातक।।

२४४

सौरि, अंगिरा सुत गहे, लग्न वसे यदुनायक।
रमणी सुख मिलता नहीं, वीर्यहीन हो जातक।।

२४५

कारकांशगत सौम्य शिखी, सौरि दृष्टि हो हिंसक।
रमणी सुख मिलता नहीं, जातक बने नपुंसक।।

२४६

पाप अंशगत हो यदि अशुभ लग्न का नायक।
पापयुत वागीश हो, चुगलखोर हो जातक।।

२४७

कारकांश में हो यदि सर्प संग अंगारक।
आत्माकारक विबल हो, चुगलखोर हो जातक।।

२४८

जीव, सौम्य जब एक संग करें कल्प संचार।
लग्नानाथ शुभअंशगत, जातक रचनाकार।।

२४९

पत्री में लग्नस्थ हो चन्द्रपुत्र, षष्टेश।
जातक होता मूक और सहता नान क्लेश।।

२५०

लग्न में षष्टेश का सहे जीव जब फूंक।
लग्नेश बल रहित हो, जातक होता मूक।।

२५१

सिंहस्थ हो सोमसुत, दिन का हो अवतार।
वाक्चतुर जातक बने, जाने शिष्टाचार।।

२५२

कर्कस्थ हो सोमसुत, होय निशा अवतार।
वाक् चतुर जातक बने, जाने शिष्टाचार।।

पयस्विनी

माँ का पय:पान करके बालकों के शरीर में पुष्टि तथा अन्तः करण में संस्कारों का विकास होता है। माँ गायत्री पयस्विनी-कामधेनु बनकर दिव्य पयपान कराकर साधक को देवताओं जैसा समर्थ एवं पूर्णकाम बना देती है। इसके पयपान से विकृत कामनाएँ शुद्ध हो जाती हैं तथा श्रेष्ठ कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

द्वितीय भाव

धनधान्यं कुटुम्बांश्च मृत्युजालभमित्रकम्।
धातुरत्नादिकं सर्बं धनस्थनान्निरीक्षयेत्।।

वित्तं नेत्रं मुखं विद्र्या वाक्कुटुम्बाश नानि च।
द्वितीयस्थानजन्यानि क्रमाज्ज्योतिर्विदो विदु।।

वान्वित्तकौटुम्बमत्राक्षिसंज्ञम्।।

वित्तं विद्र्या स्वान्नपानानि भुक्तिं

दक्षाक्ष्यास्यं पत्रिका वाक्कुटुम्बम्।

द्वितीय भाव फल

१

अर्थ, कोष, कुटुम्ब यह लग्न का सबल सहायक।
नेत्र, वाक्, दैवज्ञ गुणों, का भी हो परिचायक।।

२

दुष्ट ग्रह धन भाव का हो जाता है मारक।
सत्ता, सिंहासन तथा वित्त-मंत्रालय का कारक।।

३

आर्थिक सम्मृद्धि हेतु विवेचन, धन घर का आवश्यक।
मारकेश इसका स्वामी, बन जाता खलनायक।।

४

द्वितीय भाव, भावेश, गुरु, यदि पत्री में बलवान्।
पोषक, पालक, अन्नदाता, जातक अमित महान।।

धन अर्जन

५

लग्नेश्वर धनगत रहे, लाभेश्वर हो लग्न।
द्रव्यपति लाभस्थ हो, मिलता प्रचुर धन।।

६

केन्द्र-कोण में रम रहे तनु, धन, भव का नायक।
धन अर्जन अपने बल से करता है तब जातक।।

७

शुभ भाव में युति करे, वित्त, उदय के नायक।
सबल भावपति लग्न में, अर्थोपार्जन लायक।।

८

एक साथ संयुक्त रहें, लाभ, कोष के नाथ।
मेजबान हो लग्न में, लक्ष्मी रहती साथ।।

९

धनेश युत लाभेश जब, केन्द्र में हो बलवान्।
लग्नेश्वर शुभयुत, सबल, जातक हो धनवान।।

१०

आय, वित्त के नाथ का, आत्मज गृह संयोग।
भाग्यनाथ हो लाभगत, धन-कुबेर का योग।।

११

देवेन्द्र पूज्य धनगत रहे, धनेश कोण या केन्द्र।
लग्न, लाभ में संगति हो, जातक बने महेन्द्र।।

१२

द्रव्यलाभपति राहु संग, करे वित्त गृह भोग।
अकस्मात् धन लाभ हित, परम विलक्षण योग।।

१३

स्वगृही धननाथ हो, लग्नेश्वर हो बलवान।
सोम, जीव तप भवन में, जातक हो धनवान।।

१४

शुभ प्रभाव से पुष्ट हो धनगृह तथा धनेश।
जातक के जीवन में नित लक्ष्मी बढ़े अशेष।।

१५

शुभराशिगत अम्बु वित्तपति तप में यदि समाय।
भूमि, भवन से धन अर्जन का बनता बहुल उपाय।।

१६

नवमांश चक्र में कर्मनाथ का जो होता मेजबान
धनेश, आयेश की युति पर, उसकी दृष्टि समान।।
या वैशेषिक अंश में, लाभेश का बढ़ता मान।
तब जातक बन सकता है, नाना विधि धनवान्।।

१७

नवमांश चक्र में लग्ननाथ का जो होता मेजबान।
धनेश तपेश की युति पर, उसकी दृष्टि समान।।
शुभयुक्त मेजबान वही जब केन्द्र में ले स्थान।
तब जातक बन सकता है नानाविधि धनवान।।

१८

अन्य सारे ग्रहों से लग्नेश्वर हो बलवान।
देवगुरु, संग युक्त हो, गहे केन्द्र-स्थान।।
धनेश वैशेषिक अंश में, पाता हो सम्मान।
सुख सम्पतियुत जातक होता लक्ष्मीवान।

१६

शुभ ग्रहों से युक्त हो, कल्प, कोष और लाभस्थान।
स्वक्षेत्री या मित्र-गृही या उच्च का हो अभिज्ञान।।
धनेश का नवमांश पति, जब देखे उन्हें समान।
तब जातक बन सकता है, नाना विधि धनवान।।

२०

नवमांश में धनेश के मेजबान का मेजबान।
धननायक का दोस्त हो तथा रहे बलवान।।
स्वगृही बन केन्द्र-कोण में पाता जब स्थान।
सुख सम्पत्तियुत जातक तब होता लक्ष्मीवान।

२१

केन्द्रस्थ तनु, धन के स्वामी करे दृष्टि विनियोग।
वैशेषिक अंशों में भी जब दोनों करते भोग।।
भाग्येश्वर की दृष्टि से उनका बढ़ता हो अभिमान।
तब जातक बन सकता है, नाना विधि धनवान्।।

२२

लग्न सिंह हो, चन्द्र-पुत्र संग,
भानु, भौम हो नभ-स्थान।
मलिन दृष्टि से रहित रहे तो,
जातक बने महा धनवान।।

२३

लग्न मकर या मिथुन हो,
स्वस्थ शुक्र, पंचम-स्थान।
लाभ भाव में मंगल हो तो,
जातक बने महा धनवान।।

२४

लग्न वृषभ या कुम्भ हो,
सबल सौम्य पंचम स्थान।
शशि, गुरु, मंगल लाभ में,
जातक बने महा धनवान्।।

२५

सूर्य स्वगृही पंचम घर में,
सोम, जीव हो लाभ-स्थान।
सूर्य-पुत्र हो संग उन्हीं के,
जातक बने महा धनवान्।।

२६

लग्न कीट या सिंह हो,
सुर पंडित पंचम स्थान।
भव भवन में चन्द्र विराजे
जातक बने महा धनवान।।

२७

लग्न कर्क या धनुष हो,
धरापुत्र पंचम स्थान।
दैत्य गुरु लाभस्थ रहे तो
जातक बने महा धनवान।।

२८

मीन लग्न में देव गुरु हो,
मन्द बसे जब लाभ स्थान।
स्वच्छ, स्वराशि का सोम हो,
जातक बने महा धनवान।।

२९

सबल स्वराशि का सूर्य लग्न में,
मंगल, गुरु से करे मिलान।
निश्चय ही इस प्रबल योग से
जातक बने महा धनवान।।

३०

स्वच्छ चन्द्र यदि कर्क लग्न में,
सौम्य, जीव से करे मिलान।
अथवा उन से दृष्ट रहे तो
जातक बने महा धनवान।।

३१

लग्न वनिक हो, सौरि कलश में,
विभावसु यदि लाभस्थान।
कान रहे यदि भाग्य भवन में,
जातक बने महा धनवान।।

३२

लग्न कुमारिका, मन्द मकर में
चन्द्र गहे जब लाभ स्थान।
सुनु स्वराशि का धनगत हो,
तो जातक बने महा धनवान।।

३३

लग्न मिथुन हो, बुध सबल हो,
पंचम में शनि, गुरु मिलान।
अति उत्तम इस योग भाव से,
जातक बने महा धनवान।।

३४

लग्न कुमारिका, बुध उच्च का,
शनि, गुरु संग करे मिलान।
अति उत्तम इस योग भाव से,
जातक बने महा धनवान।।

३५

धनेश के मेजबान का नवमांश में मेजबान।
शुभ अंश से युक्त हो, जातक हो धनवान।।
अशुभ षष्टियंश में अगर उसका होता नर्तन।
तब जातक बन जाता है, सभी भांति से निर्धन।।

३६

लग्नेश्वर धन भाव में, लाभेश बसे आकाश।
शुभ, धनेश का अंशपति, धन का बढ़े प्रकाश।।

३७

लग्नेश, धनेश के अंशपति की रहे परस्पर दृष्टि।
या सौम्य, जीव से दृष्ट हो, लक्ष्मी की हो वृष्टि।।

३८

कर्मेश के नवमांश पति संग रहे लाभ का नाथ।
जातक हो धनवान जब, कोष, कर्म पति साथ।।

३९

लाभेश तथा धनेश का नवमांश में मेजबान।
क्रूर होय पर केन्द्र गत, जातक हो धनवान।।

४०

लग्नेश का नवमांश पति, गोपुर अंश को जाय।
कर्मेश से दृष्ट यदि, नर अतुलित धन पाय।।

४१

वैशेषिक अंशों में हो, भानु, जीव, शशि धन नायक।
सबल रहे लाभेश यदि तो लक्ष्मी सदा सहायक।।

४२

धनेश के द्रेष्काणपति का नवमांश में मेजबान।
हो ऐराबत अंश में, तो जातक हो धनवान।।

४३

अंत्यस्थ कवि, जीव अर्थगत, निज अंशों में जाय।
सबल रहे लग्नेश उसी विधि, लक्ष्मी आती धाय।।

४४

कर्मेश के द्रेश्कानपति का सप्तांश में मेजबान।
हो एराबत अंश में, तो जातक हो धनवान।।

४५

केन्द्र सभी शुभयुत रहे, धनेश पर्वत या सिंहासन।
तब लाखों की सम्पति पर, जातक करता शासन।।

४६

वैशेषिक में जब रहे, लाभ, लग्न, धन के नायक।
अथवा हो मृदु अंशगत, लक्ष्मीसुत वह जातक।।

४७

स्वगृही या उच्च का, पापी ग्रह धन भाव।
जोड़-तोड़ से धन अर्जन, नर का बने स्वभाव।।

४८

धनपति पर्वत अंश में, शुभ से हो संयुक्त।
बिनु प्रयास लक्ष्मी बढ़े, नर सब सम्पति युक्त।।

४९

नवमांश चक्र में कर्मेश का जो ग्रह हो मेजबान।
सप्तमांश चक्र में वह पुनः जिसका है मेहमान।।
उसके ऊपर दृष्टि पड़े, शुक्र तथा सुर गुरु की।
जातक पर तब होती है, अति कृपा लक्ष्मी की।।

५०

लग्नेश तथा लाभेश एक संग बैठे द्वितीय घर।
वित्त तथा तप या तनयपति करते युति सुघर।।
इन पर पड़ती दृष्टि उसी की, पूजें जिसे अमर।
महाधनी जातक जीता, तब लक्ष्मीपुत्र कहाकर।।

५१

उदय भाव में बैठा हो दिनकर तथा निशाकर।
धन, व्यय दोनों दमक रहे, शुभ ग्रहो से सजकर।।
बढ़ जाता तब लग्न का सदिरवन अतुलित बल।
महाधनी जातक बने, निज कुटुम्ब का सम्बल।।

५२

धन भाव कलशस्थ सोम हो शुभ प्रभाव से व्याप्त।
नष्ट धनों को कर लेता जातक फिर से प्राप्त।।

५३

द्रव्य, लाभपति दोनों ही लग्न में करे निवास।
जातक गृह में लक्ष्मी तब, करती सदा प्रवास।।

५४

स्वक्षेत्री बनकर रहे, उदय, आय, धननाथ।
वैभवशाली जातक को लक्ष्मी करे सनाथ।।

५५

श्यामगात्र, सुरगुरु संग, धनपति का संयोग।
धन, समृद्धि के वास्ते, परम विलक्षण योग।।

५६

तप, तनयपति छोड़कर अन्य ग्रहों से संगति।
धन, लाभ के नाथ का, करे न धन की उन्नति।।

५७

धन की सादृशता से ही योग बने धनदायक।
धन कारक गुण जब मिले, लक्ष्मीपति हो जातक।।

५८

द्रव्य, आय पति संग हो, व्ययपति का संयोग।
तब जीवन में जातक के, धन का बने न भोग।।

५९

जीव सौम्य कवि लग्नपति, जाय केन्द्र स्थान।
जातक तब होकर रहे सब विधि सम्पत्तिवान।।

६०

दिनकर शोभे लग्न में, जीव तनय को जाय।
धननायक निज भवन में, लक्ष्मी आती धाय।।

६१

दशमेश के नवमांशपति संग युत रहे लाभेश।
तब जातक हर हाल में, बनकर रहे धनेश।।

६२

सिंहासन अंश में द्रव्यपति जब होता है शेर।
जातक तब बनकर रहे, धनपति यथा कुबेर।।

६३

लग्न, कोष के नाथ से लाभपति हो केन्द्र।
समृद्धशाली जातक तब जीता यथा सुरेन्द्र।।

६४

स्वराशिगत हो यदि तीन से ज्यादा ग्रह।
जातक पर लक्ष्मी की, रहती सदा अनुग्रह।।

६५

तप, आय या गगन में सबल रहे धननाथ।
जीवन में तब हर समय, रमा राजती साथ।।

६६

शशि मंगल जब पत्री में करते हैं संयोग।
जातक जीवन भर करे, धन का अनुपम भोग।।

६७

शुभ ग्रह जब पत्री में ले उपचय स्थान।
सभी भाँति बनकर रहे जातक तब धनवान।।

६८

लग्नेश का नवमांशपति पर्वत अंश में जाय।
तब लक्ष्मी की कृपा हो, संकट सकल नशाय।।

६९

दशमेश का नवमांशेष शुभांशगत, शुभदृष्ट।
तब जीवन में धन की वर्षा होती पुष्ट।।

७०

शुभ ग्रह सारे पत्री में जब बसते है केन्द्र।
लग्ननाथ बलवान हो, जातक बने महेन्द्र।।

७१

पंचमपति निजभावगत, लाभ में हो नीलाम्बर।
जातक रहता नित मुदित, अर्थ अनेकों पाकर।।

७२

तनय भावगत शीतकर, निजगृह हो सुरपूज्य।
तब लक्ष्मी की कृपा से जातक बनता पूज्य।।

७३

स्वगृही वागीश लग्नगत, सोम भौम हो साथ।
विष्णुप्रिया नर को करे, सब विधि सदा सनाथ।।

७४

मंगल, मन्द, भुजंग, कवि कन्या में हो व्याप्त।
अमित अर्थ का लाभ तब जातक करता प्राप्त।।

७५

तप, तनय में जब करे लग्नपति विश्राम।
तब ललिता की कृपा से, मिलता सब आराम।।

७६

तप कोष में करे यदि लग्ननाथ विश्राम।
धनोपार्जन वास्ते जुड़ता युक्ति तमाम।।

७७

द्रव्यपति पर जब पड़े तुर्यपति की दृष्टि।
देवपूज्य हो गगन में, धन की होती वृष्टि।।

७८

निधन भवन में करता हो द्रव्यपति जब घोष।
जातक करता प्राप्त तब गुप्त धनों का कोष।।

भाइयों से धन-लाभ

७९

धन,लाभपति युति करे, अथवा हो अवलोकन।
सहजनाथ की दृष्टि पड़े, भ्राता से धन अर्जन।।

८०

लग्नेश और धनेश जब सहज भाव सजाय।
वैशेषिक सहजेश हो, बन्धु से बढ़ती आय।।

८१

देवगुरु संग धनगत हो, सहज भाव का नाथ।
धन अर्जन में जातक का, बन्धु बटाते हाथ।।

८२

वैशेषिक वित्तेश भौम संग धन घर यदि समाय।
लग्ननाथ से दृष्ट रहे, तो बन्धु से बढ़ती आय।।

पुत्र से धन लाभ

८३

सबल धनेश से युति करे या देखे सुतनायक।
धन कारक वागीश भी इस में बने सहायक।।
वैशेषिक लग्नेश हो, लाभेश सकल सब लायक।
तब पुत्रों की मदद से, लक्ष्मी पाता जातक।।

निर्धनता व धन हानि

८४

पाप प्रभावित हो अगर, धनभवन व नायक।
लग्ननाथ, गुरु विवल हो, निर्धन होता जातक।।

८५

दशमेश का नवमांशपति हो धनेश के साथ।
या बैठे धन भाव में, निर्धनता हो माथ।।

८६

धनेश का नवमांशपति, त्रिकूभवन में पस्त।
तब आर्थिक रूप से जातक रहता त्रस्त।।

८७

धनेश के नवमांशपति का कालदण्ड षष्टियंश।
जीवन भर सहना पड़े निर्धनता का दंश।।

८८

लाभनाथ नीचस्थ हो, धन में अशुभ प्रवेश।
जातक जीवन भर सहे निर्धनता से क्लेश।।

८९

राहु, मन्दि, कवि, सोम संग धनपति कोष भवन।
खोकर निज सर्वस्व तब, जातक बनता निर्धन।।

९०

लग्नस्थ होता यदि निधन, दूयून, धननायक।
लग्नेश हो रन्ध्र में, निर्धन होता जातक।।

९१

लग्न, दूयून धननाथ करे षष्टम भाव गमन।
हो अरीश यदि लग्नगत, जातक होता निर्धन।।

९२

वागीश से तुर्य, कोष, सुत पापी करे प्रवेश।
लग्न, कोषपति विवल हो, निर्धनता से क्लेश।।

९३

तप, तनय और कोष में, पापी करते छिद्र।
लग्ननाथ बलहीन हो, जातक बने दरिद्र।।

९४

धर्मनाथ अंत्यस्थ हो, व्ययपति कोष भवन।
पापी हो सहजस्थ तो जातक होता निर्धन।।

९५

लग्न मिथुन या कुम्भ हो, नीच रहे दिननायक।
धरापुत्र हो उच्च का, निर्धन होता जातक।।

९६

धनेश तथा लाभेशे पर पाप प्रभाव हो पुष्ट।
निर्धन जातक से सदा लक्ष्मी रहती रुष्ट।।

९७

केन्द्र-कोणगत धनपति रहे नीच या अस्त।
निर्धन जातक का रहे, जीवन संकट ग्रस्त।।

९८

उदय, अम्बु, तपनाथ जब तीनों जाय निधन।
तब आजीवन ही रहे, जातक जग में निर्धन।।

९९

द्रव्यांत्यपति एक संग बसता यदि विनाश।
तब जातक के जीवन में धन का होता नाश।।

१००

वित्तपति अंत्यस्थ हो, व्ययपति बसे लगन।
मारक ग्रह से दृष्ट हो, धन का होय हरण।।

१०१

पंचमेश अरिगत रहे, अष्टम में तपनायक।
मारक ग्रह से दृष्ट हो, निर्धन होता जातक।।

१०२

लग्ननाथ बलहीन रहे, व्यय गृह में हो मस्त।
धननायक हो नीच, या रहे सूर्य संग अस्त।।
मलिन ग्रहों से युत या मलिन दृष्टि से ग्रस्त।
शासक करता धन हरण, जातक रहता त्रस्त।।

१०३

व्ययेश यदि धनगत रहे, लाभेश जाय व्यय भाव।
धन नायक जाकर बसे, यदि कहीं त्रिक्-भाव।।
शत्रुक्षेत्री, नीच, अस्त या मलिन ग्रहों से ग्रस्त।
शासक करता धन हरण, जातक रहता त्रस्त।।

१०४

धनेश यदि हो निधन में, अथवा होवे नीच।
पापी ग्रह से युत या पाप-कर्त्तरी के बीच।।
अथवा रवि के संग में वहीं पड़ा हो अस्त।
शासक करता धन हरण, जातक रहता त्रस्त।।

१०५

धनेश तथा व्ययेश करें आपस में परिवर्त्तन।
रिपुनायक से दृष्ट रहे उनका सारा नर्त्तन।।
रन्ध्र में लग्नेश्वर हो, मलिन ग्रहों से ग्रस्त।
शासक करता धन हरण, जातक रहता त्रस्त।।

१०६

त्रिक् भाव में जा बसे धन व आय के स्वामी।
मेदिनीसुत लाभस्थ हो, राहु रहे धनगामी।।
जातक को सहना पड़े, राजशक्ति का कोप।
दुश्कर ऐसा योग करे धन-दौलत का लोप।।

१०७

लग्नेश बलहीन रहे या रवि संग करे प्रवास।
धनेश तथा लाभेश का क्रूर अंश में बास।।
पाप ग्रहों के संग हो, या त्रिक् भवन निवास।
अग्नि अथवा चोर से, धन का होता नाश।।

१०८

नवमांश में धनेश हो जिस राशि के साथ।
त्रिक्-स्थानों में बसे, उसी राशि का नाथ।।
पाप ग्रहों की युति से जब वह रहे मलीन।
तब संकट से ग्रस्त सदा जातक हो धनहीन।।

१०९

कर्मनाथ जाकर करे मृत्यु भवन में बास।
तथा क्रूर षष्टियंश ही उसका बने निवास।।
लाभ तथा धननाथ भी, धरें रन्ध्र की आस।
जातक होता अपमानित, धन का होता नाश।।

कर्जे का बोझ

११०

पापी ग्रह धन भाव में, लग्नेश रिस्फ को जाय।
कर्जे में तब डूबकर, नर बनता असहाय।।

१११

कर्मेश तथा लाभेश पर हो व्ययेश की दृष्टि।
जातक के जीवन में तब कर्जे की हो सृष्टि।।

११२

नीच, अस्त धननाथ हो, रन्ध्र, कोष में पापाचार।
जातक जीवन भर सहे, कर्जे की तब मार।।

११३

धनेश मलिन षष्टियंश में, या नीच राशि में दर्ज।
पाप अंश युत भवनायक हो, बढ़ता रहता कर्ज।।

११४

लाभेश्वर के नवमांशपति का त्रिक्-भाव में सोझ।
तथा क्रूर षष्टियंश में, कर्ज का बढ़ता बोझ।।

विद्या

११५

स्वगृही या उच्च राशिगत गुरु हो धन स्थान।
यह उपकारी योग बनाता जातक को विद्वान।।

११६

केन्द्र-कोणगत जब रहे गुरु तथा धन नायक।
हर प्रकार के शास्त्र में पारंगत हो जातक।।

११७

निशानाथ धन भाव में, नर भक्ति में लीन।
रक्तवस्त्र हो कोषगत, जातक तर्क प्रवीण।।

११८

दैत्य पुरोहित वित्त में, देता काव्य व गान।
जातक होता मूढ़ जब, पंगु द्रव्य-स्थान।।

नेत्र एवं मुख विचार

११९

उदय, वित्तपति, भानु, कवि, बसे यदि त्रिक्-क्षेत्र।
क्रूर ग्रहों से दृष्ट रहे, रोगयुक्त हो नेत्र।।

१२०

सौरि, वक्र व गुलिक संग नेत्रेश्वर का योग।
पापा क्रान्त हो शुक्र गर, आंखों में हो रोग।।

१२१

सिंह लग्न में सूर्य, चन्द्र पर मंगल, मन्द का कोप।
नेत्र रोग हो जातक को, दृष्टि शक्ति हो लोप।।

१२२

नेत्रेश्वर के नवमांशपति का पापी ग्रह संग योग।
पाप प्रभाव में सोम शुक्र हो आंख में होता रोग।।

१२३

सुन्दर होता नैन तथा मुखमण्डल भी सुन्दर।
धनपति हो धन भाव में, शुक्र संग हो सुर-वर।।

१२४

शुभ युत धन भाव हो, ले भानु उदय में चैन।
शुभ की पड़ती दृष्टि अगर, सुन्दर होता नैन।।

१२५

धनेश यदि हो केन्द्र में, धन हो शुभ का कानन।
शुभ प्रभाव पड़ता अधिक, सुन्दर होता आनन।।

१२६

मित्र गृही या तुंग मुखेश का केन्द्र में होवे सेहरा।
गोपुर अंश में लग्ननाथ हो, सुन्दर होता चेहरा।।

१२७

पापी ग्रह मुखभाव में, मुखेश मलिन ग्रह प्राप्त।
तब कुरुप चेहरे में होता, दोष अनेकों व्याप्त।।

१२८

दिनकर हो धननाथ अगर, दुष्ट दृष्टि का भोग।
वक्र, गुलिक धन भाव में, आंखों में दे रोग।।

१२९

शत्रु-क्षेत्र मे रम रहा द्वादशेश-द्वितियेश।
एवं उनके बीच हो, मलिन ग्रहों का वेश।।
धन, व्यय व शुक्र पर पापी ग्रह की दृष्टि।
जातक के तब नेत्र में, रोग की होती सृष्टि।।

१३०

कर्मेश, रोगेश के अंशपति, जाये त्रिक्-स्थान।
लग्नेश्वर भी संग उन्हीं के करता वहीं प्रयाण।।
भृगुनन्दन धननाथ संग जाय मृत्यु के क्षेत्र।
तब जातक हर हाल में खोता अपना नेत्र।।

१३१

लग्न द्रव्यपति साथ हों, शुभ ग्रह हो धनक्षेत्र।
पाप विवर्जित हो अगर, सुन्दर होता नेत्र।।

१३२

लग्नस्थ शशि भानु को राहु रहा निहार।
तब जातक के नेत्र में होता विविध विकार।।

१३३

लग्न एवं अंत्य में पापी करे प्रवेश।
नेत्ररोगी हो मनुज, सहता नाना क्लेश।।

१३४

धन अंत्य में असुर गुरु होता यदि सपाप।
नेत्ररोग से नित बढ़े जातक का संताप।।

१३५

रिपु रन्ध्र में जब करे दानव पूज्यप्रवास।
पड़ता पाप प्रभाव तो नेत्र में होता त्राश।।

१३६

द्रव्य उदयपति जब करें पापी संग संयोग।
तब जातक के आँख में होता नाना रोग।।

१३७

शनि दृष्ट पापी यदि वित्त में रहता चैन।
तब जातक हर हाल में खोता अपना नैन।।

१३८

वित्तपति संग शुक्र जब उड़े लगाकर पाँख।
पड़ता पाप प्रभाव तो जातक खोता आँख।।

१३९

सौम्य वक्र की राशि में हो वित्तेश प्रविष्ट।
रहे सौरि से दृष्ट तो होता नेत्र विनिष्ट।।

१४०

नेत्रेश से युत रहे गुलिक, आर, रबिनन्दन।
पापांश में शशि, रबि, जातक मन्द विलोचन।।

१४१

भृगु से दूजा भवनपति जब जाता त्रिक्क्षेत्र।
पाप दृष्ट हो कवि यदि रोग ग्रस्त हो नेत्र।।

१४२

एक अंश पर एक संग धरापुत्र, यदुनायक।
पड़ता पाप प्रभाव तो नेत्रहीन हो जातक।।

१४३

पापी रहे धनस्थ तथा भव में तीव्र विलोचन।
अंत्यस्थ हो सौरि तो जाता सव्य नयन।।

१४४

वक्री ग्रह की राशि में शशि रबि रहे निवेसित।
राहु की पड़ती दृष्टि तो नेत्ररोग हो विकसित।।

१४५

बक्री ग्रह की राशि में अंत्येश हो तिष्ठित।
वाम नेत्र तब जातक का होता रोग ग्रसित।।

१४६

नेत्रेश के नवमांशपति का मलिन रहे भावेश।
पापयुत नेत्रेश हो, नेत्र में होता क्लेश।।

१४७

लग्न, निधनगत शुक्र पर पड़े पाप की दृष्टि।
रोगग्रस्त होता नयन, होय नेत्र से वृष्टि।।

१४८

भृगुपुत्र से त्रिकभवन में जब रहे धनेश।
तब जातक के नेत्र में होता नाना क्लेश।।

१४९

पत्री में जब कोणगत रहता है दिननायक।
पड़ता पाप प्रभाव तो नेत्रहीन हो जातक।।

१५०

त्रिक भवन में भानु, कवि, वित्तपति, लग्नेश।
तब जातक के नेत्र में होता व्याधि विशेष।।

१५१

त्रिक् भवन में युत हो निशानाथ, अंगारक।
पड़ता पाप प्रभाव तो नेत्रहीन हो जातक।।

१५२

त्रिकभवन में युत रहे देवगुरु, यदुनायक।
पाप अंशगत नेत्रपति, नेत्रहीन हो जातक।।

१५३

त्रिकभवन में हो यदि दैत्य गुरु, यदुनायक।
तब अधिक रति कर्म से, अन्धा होता जातक।।

१५४

अंत्यस्थ शनि, वित्तस्थशशि, रन्ध्रस्थ हो दिननायक।
रिस्फ कोषपति पापअंशगत, नेत्रहीन हो जातक।।

१५५

लग्न शुक्र से तनय में करता राहू प्रवास।
रहे भानु से दृष्ट तो नेत्रज्योति हो नाश।।

१५६

सिंह लग्नगत हो यदि शीतरश्मि, दिननायक।
नेत्रहीन होता मनुज जब देखे शनि, अंगारक।।

१५७

धनभवन में जब करे दिननायकसुत घोष।
वित्तपति बलयुत रहे, नेत्र में होता दोष।।

१५८

अरि, वित्त नभनाथ हो तनु में यदि निढ़ाल।
शासक अथवा शत्रु लें नर की आँख निकाल।।

१५९

पाप अंशगत, पापयुत शुक्र तथा धननायक।
नेत्रहरण नर का करें, शत्रु अथवा शासक।।

१६०

मेष राशि में जब करें, शुक्र, सोम अनुबन्ध।
अरि, उदय में सोसुत, मुख में हो दुर्गन्ध।।

१६१

कर्क राशि में पापयुत रहे दैत्य आत्मात्य।
मुख में हो दुर्गन्ध तब, ज्योतिष कहता सत्य।।

१६२

स्वगृही बुध अरिभवन, लग्न में हो यदुनायक।
मुख में हो दुर्गन्ध तब, लज्जित रहता जातक।।

१६३

मीन राशि में हो यदि दिनकर सुत, निशिमान।
तब जातक के चेहरे पर सदा रहे मुस्कान।।

१६४

केन्द्र कोणगत तुंग हो पत्री में धननायक।
शुभ प्रभाव धनभाव पर, हंसमुख होता जातक।।

१६५

शुभ प्रभाव में हो यदि धन गृह तथा धनेश।
तब जातक के चेहरे में होती कांति विशेष।।

१६६

धननाथ धनभाव से पापी ग्रह हों सम्मुख।
तब जातक होता सदा दुःखयुत या दुर्मुख।।

वाणी-विचार

१६७

मुखेश उच्च या पर्वत का, डाले केन्द्र में आसन।
देव, दैत्य-गुरु साथ हों, अंश गहे सिंहासन।।
वर्गोत्तम हो सोम-सुत, जो वाणी का कारक।
तर्क पूर्ण, प्रतिभाशाली, वक्ता बनता जातक।।

१६८

चन्द्रपुत्र मुखभाव में, दुष्ट ग्रहों का रोष।
मलिन अंश गहता यदि, वाणी में दे दोष।।

१६९

उच्च कोण या केन्द्रगत, जब होता वाकेश्वर।
शुभ अंशों से युक्त यदि, वाणी होती सुन्दर।।

१७०

देवेन्द्र पूज्य संग नाश में, धन भाव का नायक।
राहु, सौरि की दृष्टि हो, गूंगा होता जातक।।

१७१

केन्द्र कोणगत शुभदृष्ट हो पत्री में धननायक।
ओजस्वी वक्ता बने हर हाल में जातक।।

१७२

पर्वतादि में केन्द्रगत होता अगर धनेश।
तब जीवन में वाक्पटु जातक बने विशेष।।

१७३

सौम्य अंश में देवगुरु होता यदि सबल।
वाक्शक्ति तब मनुज की होती अमित प्रबल।।

१७४

गोपुरादि में हो अगर धनपति का अंशेश।
तब जीवन में वाक्पटु जातक बने विशेष।।

१७५

वर्गोत्तम हो देवगुरु, शुभ संग हो संयुक्त।
वाक्चतुर जातक रहे सभा बीच उन्मुक्त।।

१७६

सप्तमेश निज द्वितीयगृह केतु को रखता पोष।
तब जातक की जिह्वा में होता कोई दोष।।

१७७

सप्तमेश से वित्त गृह केतु का हो आगार।
तब जातक की वाणी में होता कोई विकार।।

१७८

शनि राशिगत पत्री में होवे कारक।
शनि से होता दृष्ट तो तुतलाता है जातक।।

१७९

बल विवर्जित अशुभ अंशगत होता यदि धनेश्वर।
तब करता है बात नित जातक वह हक्लाकर।।

पापदृष्ट तपगत रहे पत्री में शुक्लाम्बर।
कहता अपनी बात, जातक तब हक्लाकर।।

शनि सांप के साथ हो पत्री में यदुनायक।
कर्कश स्वर में बोलता प्रायः ऐसा जातक।।

गृह त्याग एवं व्यवसाय हानि

१८०

दुष्ट ग्रहों की दृष्टि कभी
धनभाव पर अच्छा नहीं।
मलिन प्रभाव धनेश पर
संकेत दे अच्छा नहीं।।
सहसा कुटुम्ब से टूटकर
सुदूर भी जाना पड़े।
धन हानि हो, अपमान हो,
व्यवसाय भी तजना पड़े।।

कारागार एवं अपराध वृति

१८१

लाभ, लग्न और सहज में,
पापी ग्रह जब बैठता।
या धन तथा व्यय भाव में
हो नीच-क्रूर की एकता।।
लग्न और लग्नेश्वर का
शुभ ग्रह न कोई अवलम्बन।
हर हाल में जातक को होती
जेल-यात्रा तथा बन्धन।।
शनि-मंगल की युति से,
हत्या का बनता दोष है।
भानु, भौम हो, साथ जब,
भूमि, भवन, का रोष है।।
शनि, शिखी के योग से,
बनता यदि उपरोक्त बन्धन।
इल्जाम चोरी का सदा, होता
है इसका मुख्य कारण।।
छायात्मज, दिनकर से मिल,
बटमार जातक को बनाता।।
रौहिणेय, स्वरमान के संग
बलात्कार में है फंसाता।।
गुरु, शुक्र जब कारण बने,
तो धर्म में ही धमाल हो।
सोम, सौम्य की युति से
धोखाधड़ी का कमाल हो।।

१८२

धन, सुत, व्यय और भाग्य में, भारी पापाचार।
परम अशुभ यह योग जो, देता कारागार।।

ज्योतिष एवं गणित ज्ञान

१८३

शशि, मंगल धन भाव गत, बुध दृष्टि का भोग।
या सौम्य केन्द्रस्थ हो, गणित ज्ञान हित योग।।

१८४

चन्द्रपुत्र धननाथ बन यदि उच्च का होय।
लग्नस्थ गुरु, मन्द मृत्यु में, गणित ज्ञान संजोय।।

१८५

सुर पण्डित केन्द्रस्थ हो, दैत्य पुरोहित उच्च स्थान।
धनेश, सौम्य उच्चस्थ दे, गणित का सुन्दर ज्ञान।।

१८६

धनेश्वर बलवान हो, सबल शुक्र हो धन स्थान।
अथवा हो बलि पूज्य को पर्वत अंश का मान।।
निर्मल रहकर सोम तनय, केन्द्र में करे प्रयाण।
गुरु दृष्टि धन भाव पर, ज्योतिष का दे ज्ञान।।

१८७

मंगल अथवा भानु हो, धन भवन का नाथ।
सुधा दृष्टि गुरु, शुक्र की, उनको करे सनाथ।।
पर्वत अंश में बुध यदि, सोच-शक्ति उद्भ्रान्त।
तभी समझ सकता जातक, ज्योतिष का सिद्धांत।।

दांतों में रोग

१८८

धनगत शुक्र सुखेश का रिपुनाथ संग योग।
दशा-भुक्ति में दे वही दाँतों में तब रोग।।

१८९

राहु संग धनेश का रिपुभवन में योग।
दशा-भुक्ति में दे वही दाँतों में तब रोग।।

१९०

रोगेश संग धनेश हो, मलिन अंश में वास।
अर्धकाय हो देखता, हो दाँतों का नाश।।

१६१

देवगुरु संग लग्न में राहु करे जब भोग।
लाभस्थ हो भौम तो दाँत में होता रोग।।

१६२

पत्री में जब मेष, वृष होता कोषागार।
पड़ता पाप प्रभाव तो होता दन्त-विकार।।

१६३

शुभ विवर्जित भौम का जाया हो आगार।
अर्धकाय हो व्योम में, होता दन्त विकार।।

१६४

सप्तमस्थ होता यदि शशि, सौरि, दिननायक।
दन्तरोग से तब ग्रसित होकर रहता जातक।।

१६५

सप्तमेश से वित्तगृह राहु रहे आसीन।
सौरि यदि हो देखता, जातक हो रद्हीन।।

१६६

अरीश युत धननाथ हो पत्री बीच सपाप।
दन्तरोग से तब बढ़े जातक का संताप।।

१६७

सुत भवन में भानु हो, भवगत हो अंगारक।
दन्तरोग से तब सदा पीड़ित रहता जातक।।

१६८

लोहितांग कामस्थ हो, सुत में अहि आसीन।
कठिन रोग से तब बने जातक वह रद्हीन।।

विविध

१६६

कुटुम्बेश की दशा भुक्ति में, हो सकती है शादी।
धन, व्यय में परिवर्तन से, हो जाती बर्बादी।।
धनपति जाया भाव में, दे विवाह से लाभ।
जहां-जहां जाता धनेश, वहीं-वहीं से लाभ।।

२००

दृचून, व्यसन, धनभाव में, लग्नेश्वर, षष्टेश।
पुनः इनकी युति बीच जब पापी करे प्रवेश।।
अच्छा होता योग नहीं, अच्छी सेहत के लिए।
नर रहता बेचैन, रोग से राहत के लिए।।

२०१

बुध, सूर्य हो संग में, मिथुन अगर हो लग्न।
नाश अटल उस भाव का, जिससे वे संलग्न।।
कुम्भ लग्न में शनि-मंगल, यही करेगा हाल।
तुला लग्न का जीव, कवि, कर दे मालामाल।।

२०२

धन एवं धननाथ पर, जब पड़ता पाप प्रभाव।
मिथ्याचारी मनुज का होता मलिन स्वभाव।।

२०३

उदय, अंत्य, रिपु, मदन में, मन्दि संग हो वक्र।
अस्त, नीच या भानु-दृष्ट, रक्त दोष का चक्र।।

२०४

पाद लग्न से व्यय में, रवि, कवि, व स्वरभान।
तब शासक के कोप से, धन का हो अवसान्।।

२०५

इसी योग पर जब पड़े रजनीपति की दृष्टि।
शासक से धन हरण की निश्चय होती पुष्टि।।

२०६

पाद लग्न से अंत्य में, भौम तथा रवि नन्दन।
भ्राता ही तब हर लेता जातक का सब धन।।

२०७

पाद लग्न से कोष को, ध्वजी करे जब सिद्ध।
तब समय से पूर्व ही जातक दिखता वृद्ध।।

२०८

पाद लग्न से अर्थ में जब रहता ग्रह तुंग।
अतुलित धन तब प्राप्त हो, बढ़ता रहे उमंग।।

२०९

लग्न पाद में जब बसे, सबल कोई शुभ ग्रह।
विष्णु प्रिया का तब रहे, नर पर सदा अनुग्रह।।

२१०

घटिका, होरा, जन्म लग्न हो गुरु युत या दृष्ट।
तब निज जीवन में जातक धन पाता उत्कृष्ट।।

२११

सहज, अम्बु, रिपु, वित्त में सब ग्रह करे प्रयाण।
तब जातक बन जाता है, अतुलित सम्पतिवान।

२१२

निधन, व्यसन, व्यय, वित में सब ग्रह करे गमन।
जातक तब निज जीवन में, कभी न पाता धन।।

२१३

पाद लग्न पर जब पड़े, शशि कवि जीव की दृष्टि।
जातक के जीवन में तब धन की होती वृष्टि।।

२१४

नवमांश चक्र में उक्षगत यदि रहे आत्मा कारक।
अतुलित धन का स्वामी तब बन जाता जातक।।

२१५

कारकांश, नवमांश लग्न में, शुभ ग्रह रहा विराज।
लक्ष्मीपति उस जातक को हासिल होता राज।।

२१६

कारकांश से केन्द्र, कोण में केवल शुभ विद्रमान।
तब जातक को मिलता है, लक्ष्मी का वरदान।।

२१७

कारकांश से कोष में दंष्ट्री करे गमन।
जातक की सारी सम्पति तस्कर करें हरण।।

२१८

पाद लग्न से कोष में, कवि, जीव, रजनीपति।
तब समाज में कहलाता, जातक वह लक्ष्मीपति।।

२१६

शुक्र, वक्र की राशि हो कारकांश का धन।
तब पराई नार संग जातक करे रमण।।
उसी राशि में जब रहे भृगु नन्दन व वक्र।
पर दारा सहवास का चलता रहे कुचक्र।।

२२०

ध्वजधारी जाकर बसे, कारकांश से धन।
पर दारा के भोग से, हट जाता तब मन।।

२२१

उसी जगह हो सुरगुरु, उदय, अंत्य में पापाचार।
सप्तम घर का भूमिसुत, नष्ट करे परिवार।।

२२२

सहजस्थ शनि, लग्नस्थ अहि, गुरु अशुभ संग भ्रष्ट।
संग्रहणी से तब मिले नर को नाना कष्ट।।

२२३

सौरि वक्र की राशि में हो प्रथमेश प्रविष्ट।
रहे उन्हीं से दृष्ट तो होती दृष्टि विनिष्ट।।

विविध

२२४

तपपति संग तूर्य में बसता जब दिनमान।
तब तात से निधि मिले, जातक हो धनवान।।

२२५

केन्द्र, कोणगत आयपति, भव में पापी शेर।
लग्ननाथ हो सबल तो जातक बने कुबेर।।

२२६

कारकांश से भाग्य में राहु करे जब वास।
नीचनारि संग रमण से धन का होता नाश।।

२२७

अंत्यस्थ बुध को लखे शनि एवं स्वरमान।
मुकद्दमों में होता है धन का तब नुकसान।।

२२८

व्ययनाथ हो मलिन संग, शुभ प्रभाव से वर्जित।
तब प्रपंच से ही करे, सम्पत्ति जातक अर्जित।।

२२६

व्ययनाथ धनगत रहे, व्यय में हो लाभेश।
द्रव्यपति त्रिकूभाव में, धन होता सब शेष।।

२३०

नीच, अस्त या मलिनसंग धनपति व्यसन समाय।
राजकोप से जातक की सम्पत्ति सकल नशाय।।

२३१

धनेश का नवमांशपति त्रिक में डाले डोर।
पापी ग्रह से युत रहे, धन हर लेता चोर।।

(अ)
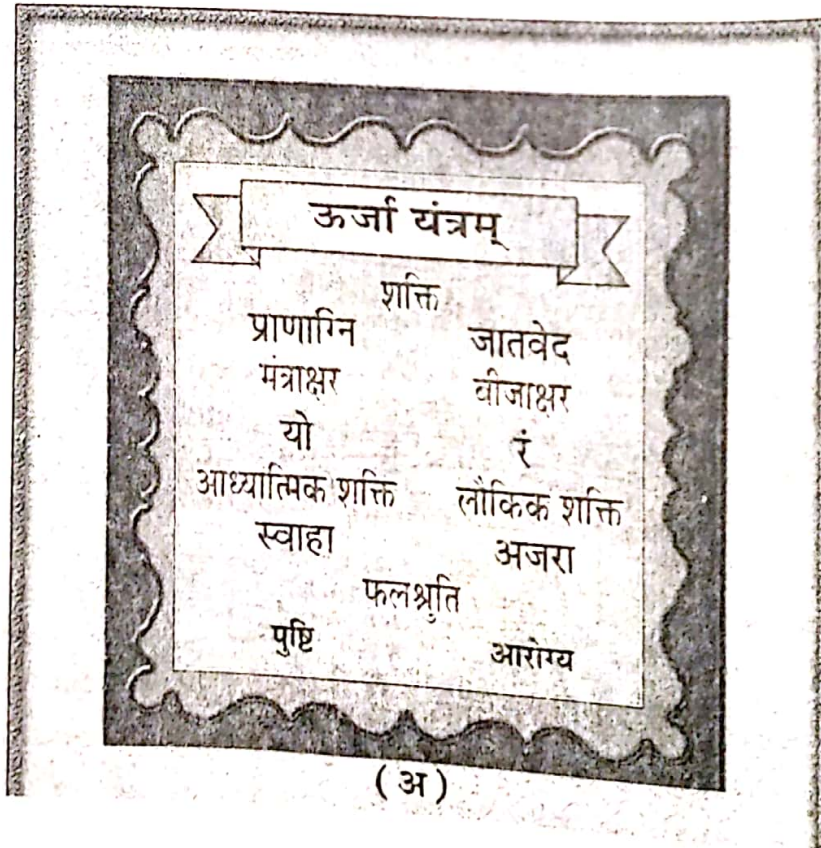
१८. प्राणाग्नि

जीवन रसों को प्राणाग्नि ही पकाती है। इसका संचार भू लोक से लेकर जीव - कोषों तक में है। इसी अग्नि के विज्ञान को पंचाग्नि विद्या के रूप में जाना जाता है । प्राणाग्नि की कमी से ही शरीर एवं संकल्पों में दुर्बलता आती है तथा इसकी सबलता से ओजस्विता बढ़ती है। वही जीवन की बाधाओं को चीरती हुई साधक को उच्च लक्ष्यों तक पहुँचाती है।

तृतीय भाव

सहजं भ्रातृदुश्चिक्य संज्ञमू।

सहोत्थदुश्चिक्यगलं तृतीयं।

भ्राता ततः सहजभं गदितं पुराणैः।

भगिनीभ्रातृ भृत्यानां दासकर्मकृतामपि।
कुर्वीत वीक्षणं विद्वान सम्यग दुश्चिक्यवेशमतः।।

ज्योष्ठानुजस्थितिपराक्रमसाहसानि
कंठस्वरश्रुतिवरावरणांशुकानि।
धैर्यं च वीर्यबलमूलफलाशनानि
वक्ष्ये तृतीयभावनात् क्रमशोऽखिलानि।।

तृतीय भाव

१

तीसरा भाव पराक्रम का ससुर, शस्त्र, आवागमन।
बाँह, बन्धु, सौतेली माँ, लेखन, कण्ठ, प्रकाशन।।
समाचार, सम्वाददाता, साझेदारी, रेल, उड्डयन।
यातायात, तथा सलहज का इसी भाव से चिन्तन।।

पराक्रम

२

सहजेश सहजस्थ हो, संग सूर्य, अंगारक।
अतुल साहसी, विक्रमी, धैर्यवान हो जातक।।

३

विक्रमेश शुभ अंश में, शुभ प्रभाव भरपूर।
मंगल हो बलवान गर,, जातक होता शूर।।

४

विक्रमेश हो पापी ग्रह, पाप राशि में युक्त।
पराक्रम में पापी हो, जातक भय से मुक्त।।

५

विक्रम घर में छायाग्रह, दे साहस उत्साह।
उसी भाव में सोम सुत, रखता सदा हताश।।

६

गोपुर, पर्वत, मृदु अंश में, विक्रमेश का मान।
शुभ ग्रहों से दृष्ट रहे तो, युद्ध में बढ़ती शान।।

७

वैशेषिक वीर्येश्वर का जब शुभ संग हो सम्बाद।
शौर्यवान उस जातक में, रण का हो उन्माद।।

८

दुश्चिक्येश हो उच्च का, मृत्यु भाव में आन।
क्रूर षष्टियंश में भौम हो, युद्ध बीच अवसान।।

९

धन नायक का सहज गृह, बने यदि आगार।
जातक तब बन जाता है, दानी और उदार।।

१०

वीर्येश्वर रबियुक्त हो, जातक बनता धीर।
मंगल भी बलयुक्त हो, बनता अतुलित वीर।।

११

विक्रमपति हो नीच का, मलिन षष्टियंश में लीन।
पापयुक्त हो भौम अगर, रण-कौशल हो हीन।।

१२

राहु संग हो नीच में, विक्रमघर का नायक।
शौर्यहीन होता मगर, गाल बजाता जातक।।

१३

केन्द्र कोण में जब रमे विक्रम गृह का नायक।
लग्ननाथ शुभ अंशगत, शौर्यवान हो जातक।।

१४

लग्न सहजपति पत्री में रहे एक स्थान।
निज प्रताप से तब बढ़े जातक का सम्मान।।

१५

रिपु भवन में तुंग हो विक्रमगृह का नायक।
नवमांश में द्विस्वभावगत, युद्धोन्मत हो जातक।।

१६

अशुभ राशि हो विक्रमगृह, मलिन संग विक्रमेश।
पापी ग्रह हो सहज में, बढ़ता शौर्य विशेष।।

१७

क्रूर षष्टियंशगत विक्रमपति, अशुभ दृष्ट या नीच।
जातक डरकर भाग ले, कठिन युद्ध के बीच।।

१८

उच्च के षष्टेश संग विक्रमपति जब जाय।
तब युद्ध में पराजय, जातक निश्चित पाय।।

१९

जब क्रूर षष्टियंश में दुर्बल होता आर।
हर सामना में सतत, जातक जाता हार।।

२०

श्रेष्ठ वैशेषिक अंश में विक्रमेश का वास।
रण मध्य जातक का तब साहस उठे आकाश।।

२१

निशाजन्म हो, लग्न, व्योमगत बलपूरित अंगारक।
परम पराक्रमी हो सदा वह तेजस्वी जातक।।

२२

द्यून भवन में हो यदि पत्री में अंगारक।
प्रबल साहसी वीर तब होता ऐसा जातक।।

२३

बल विवर्जित लोहितांग से होवे लग्न वलोकित।
कायर जातक हर समय होता सदा पराजित।।

२४

निशा जन्म हो व्योमगत यदि रहे रबि पुत्र।
कायरता का मनुज में होता सुदृढ़ सूत्र।।

२५

लग्न भाव को जब लखे स्वक्षेत्री अंगारक।
अन्दर से होता सदा कापुरुष वह जातक।।

२६

कारकांश से सहज में पापी ग्रह आसीन।
कापुरुष नर हर समय होता साहसहीन।।

२७

केन्द्र कोणगत विक्रमेश शुभ से रहे वलोकित।
साहस एवं जोश वस जातक नित उत्तेजित।।

२८

विक्रमेश पर हो यदि शुभ प्रभाव की भीड़।
हर समय, हर हाल में, जातक होता धीर।।

२९

विक्रमेश का अंश या राशिपति दिननायक।
अतुल साहसी, धीरमति होता ऐसा जातक।।

३०

विक्रमपति हो सबल तथा साथ रहे यदुनायक।
धीर, वीर, मतिमान तब होता ऐसा जातक।।

भ्राता विचार

३१

कुज युति या दृष्टि से हो सहजपति समृद्ध।
शुभ प्रभाव सूचित करे, भ्राता की अभिवृद्धि।।

३२

केन्द्र-कोण में जब करे, सहजनाथ प्रवेश।
विक्रम एवं बन्धु की वृद्धि होय विशेष।।

३३

तृतीयेश निर्बल मगर, गुरु, मंगल से युक्त।
तब जातक के बन्धु की संख्या हो उपयुक्त।।

३४

सहजनाथ और भौम का शुभ ग्रह करें निरीक्षण।
तब बांधव की भीड़ हो, कहे विचार सुधीजन।।

३५

शुभयुत या दृष्ट रहे, सहजनाथ और घर।
मंगल हो बलवान तो, भ्राता होय सुघर।।

३६

पर्वत अंश में सहजेश्वर हो, भौम गहे सिंहासन।
शुभ युक्त सोदर अगर, भाई का बढ़ता आसन।।

३७

सहजनाथ और तीव्र विलोचन पाये शुभ-मध्यत्व।
सहज भाव शुभ दृष्ट हो, भाई का बढ़ता स्वत्व।।

३८

भ्रातृपति सुत भाव में करता अगर प्रवेश।
तब जातक के भाई की उन्नति होय विशेष।।

३९

पर्वत अंश का सहजेश्वर यदि केन्द्र में जाता।
शुभ विक्षित, शुभयुत रहे, होय अनेकों भ्राता।।

४०

सोदर में हो सहजनाथ शुभ ग्रहों से विक्षित।
शुभ अंश गत कुज रहे, भ्राता मिलता निश्चित।।

४१

सहजेश्वर और भौम का विषमराशि नवमांश।
जीव, भानु से दृष्ट या उनके वर्ग में अंश।।
या फिर मंगल स्वयं रहे, सभी भांति बलवान।
तब जातक का बढ़ता है, भ्रातृगणों से शान।।

४२

सहजेश्वर और भौम का, केन्द्र-कोण में वास।
सहज भाव शुभ युक्त हो, भ्राता करे विकास।।

४३

रक्तनेत्र संग सहजनाथ भी यदि रहे पंचस्थ।
गुरु की पड़ती दृष्टि तो भ्राता उच्च पदस्थ।।

४४

शुभ विक्षित मृदृअंश में सहज भाव का नायक।
लग्नेश्वर संग युत रहे, भ्राता बनें सहायक।।

४५

सहजभाव से केन्द्र, कोण में शुभ ग्रह सभी समाय।
जातक के भाई सभी, धन, जन, सम्पति पाय।।

४६

शुभ अंशों का सबल शुभ अरि में करे गमन।
गुरु से हो विक्षित अगर, भाई का बढ़ता धन।।

४७

वैशेषिक, मृदु अंश में, सहजनाथ शुभयुक्त।
वैभवशाली बन्धु बनें, योग परम उपयुक्त।।

४८

सहज भाव और भौम हो, दुष्ट ग्रहों से दृष्ट।
पाप मध्य सहजेश हो, अनुज की होय अरिष्ट।।

४९

सहजस्थ शनि को अगर देख रहा अंगारक।
अनुज जनों के हित में, योग नहीं शुभकारक।।

५०

सबल पुरुष ग्रह, शत्रु में जब भी करे प्रयाण।
रिपुनायक रिपुभाव में, अनुज बने धनवान।।

५१

धन एवं सुख भाव में हो, पापी ग्रह आसीन।
मंगल ग्रसित हो राहु से, आयु अनुज का क्षीण।।

५२

सहजेश का नवमांशपति, अष्टम घर आसीन।
सहजनाथ हो नीच या त्रिक्-भावों में लीन।।
नीच, अस्त अविनेय हो, या पापी के संग।
तब भ्राता के निधन से रंग में पड़ता भंग।।

५३

क्षत, नाशगत यदि रहे सहजभाव का नायक।
बन्धु हानि के भय से, सदा त्रस्त हो जातक।।

५४

सौरिदृष्ट सहजस्थ कुज अनुज के हेतु विनाशक।
कलुषित गुरु भव भाव में, अग्रज के हित घातक।।

५५

सहज भाव का नाथ जब धन में रहे प्रविष्ट।
मलिन अगर षष्ट्यंश तो बन्धु का होय अनिष्ट।।

५६

सहजनाथ के संग वक्र का मृत्युभाव में वास।
क्रूर ग्रहों की दृष्ट हो, बन्धु का होता नाश।।

५७

सहज भाव, सहजेश्वर पर पापी ग्रह का लोचन।
मलिन अंश का वासे दे, भ्रातृ निधन का बोधन।।

५८

पाप ग्रहों के बीच हो, सहजभाव का नायक।
सहजस्थ राहु बने अनुज निधन का कारक।।

५९

सहजेश नीच या अस्त हो, पापी ग्रह सहजस्थ।
अनुज निधन का डर पले, मंगल जब अस्वस्थ।।

६०

नीच अथवा अस्त हो, भौम सहज का कंत।
पाप कर्त्तरी सहज का, भ्राता का हो अंत।।

६१

सहजेश के नवमांशपति पर, भीषण पापचार।
नीच, अस्त का मंगल तब भाई को दे मार।।

६२

सोदर में सहजेश हो, मलिन षष्टियंश की आन।
कुज राहु संयुक्त रहे तो भाई का हरता प्राण।।

६३

पाप-मध्यत्व में जब पड़े सहजनाथ, अविनेय।
सोदर में स्वरभान हो, अनुज निधन हो ज्ञेय।।

६४

कोष, तुर्य में जब रहे, पापी ग्रह की भीड़।
शुभ युत दुश्चिक्य हो, बन्धु को मिलती पीड़।।

६५

मन्द, मन्दि से युक्त जब रहता है सहजेश्वर।
पापी हो सहजस्थ तो दुख पाता है सोदर।।

६६

सिंहासन व गोपुरगत हो सहजनाथ व कारक।
तब अनेकों भाई से मर्यादित हो जातक।।

६७

केन्द्रस्थ सहजेश का पर्बत अंश में वास।
तब अनेकों भ्राता से बढ़ता नित उल्लास।।

६८

शुभ ग्रह के नवमांश में सहजपति का वास।
तब भी भ्राता लाभ से बढ़ता है उत्साह।।

६९

पुरुष ग्रहों के अंशगत सहजपति व कारक।
तब बहन से ज्यादा भाई पाता जातक।।

७०

सहजेश, कारक करें स्त्री अंश गमन।
तब भाई से ज्यादा जातक पाय बहन।।

७१

सोदर के नवमांश राशि से हो सकता अनुमान।
भाई, बहन की संख्या का समुचित सुज्ञान।।

७२

सहज भवन में रहता जो भी ग्रह विद्यमान।
उसका भी नवमांश दे, भ्रातृ-संख्या की ज्ञान।।

७३

राशि नवमांश में जहां करे सहजेश्वर विश्राम।
सोदर संख्या का मिले उससे ज्ञान तमाम।।

७४

त्रिक् भावों में जब रमे सहजनाथ, अंगारक।
पापी ग्रह हो सहज में, भ्रातृहीन हो जातक।।

७५

सहजेश का नवमांश पति जाकर वसे व्यसन।
राहु दृष्ट हो रक्तनेत्र तो होता भ्रातृ-निधन।।

७६

तृतीयेश का नवमांशपति हो अस्त, नीच, अरिगेह।
षष्टमपति हो सहज में, मिटे बन्धु का स्नेह।।

७७

सहजेश के नवमांशपति का जो हो नवमांशेश।
पाप प्रभाव में हो अगर सोदर सुख हो शेष।।

७८

सौरिदृष्ट क्षितितनय हो सोदरगृह आसीन।
भ्राता सुख मिलता नहीं जब सहजनाथ बलहीन।।

७९

पापी ग्रह हो तनय में, राहु सहज में लीन।
मंगल हो निर्बल अगर, जातक भ्राताहीन।।

८०

सहजपति जाकर करे चन्द्रअंश का भोग।
पड़े भौम की दृष्टि तो भाई को होता रोग

८१

पापी ग्रह धन भवन में, राहु सहज में लीन।
छाया सुत अरिगत रहे, जातक भ्राताहीन।।

८२

धरापुत्र से तीजा घर हो पापी ग्रह से भ्रष्ट।
तब भ्राता सुख हो जाता तब सकल विधि नष्ट।।

८३

कल्पेश सहजेश के नवमांशेश हों दुश्मन।
तब जातक की बन्धु से होती हरपल अनबन।।

८४

लोहितांग सहजेश हों त्रिक् गृह में आसीन।
पड़ता पाप प्रभाव में, नर हो भ्राताहीन।।

८५

पाप कत्तरी में रहे सहज भवन का नायक।
पापी ग्रह हो सहज में, भ्रातिहीन हो जातक।।

८६

पाप कर्त्तरी में रहे दुश्चिक्य तथा अंगारक।
सहजनाथ निर्बल रहे, भ्रातृहीन हो जातक।।

कान एवं गला

८७

सहज भाव में मन्दि हो, राहु संग सहजेश।
तब जातक के गले में, करता रोग प्रवेश।।

८८

यम अंश में भौम का तृतीय भाव प्रस्थान।
तब जातक के कान में, रोग धरे स्थान।।

८९

सहज भाव में जब करे, मन्द मन्दि संयोग।
शुभ प्रभाव से रिक्त हो, कान में होता रोग।।

६०

क्रूर ग्रह सहजेश हो, क्रूर षष्टियंश में भोग।
शनि राहु की दृष्टि दे कानों में तब रोग।।

६१

सहजेश का भावेश जब हो नवमांश में नीच।
पाप युक्त दुश्चिक्य हो, रोग गले के बीच।।

६२

अरिभावगत सहजेश्वर संग छायात्मज का योग।
सोदर में स्वरभान हो, कान में होता रोग।।

६३

षष्ठेश संग सहज में गुलिका करे प्रवेश।
तब जातक के गले में होता रोग विशेष।।

६४

अंत्यस्थ हो भौम तथा सहज में हो स्वरभान।
रोग ग्रस्त होकर रहे, नर का गला या कान।।

६५

प्रेत पुरीश (षष्टियंश) में, सहजस्थ भौम की आन।
रोग-ग्रस्त होकर रहे, नर का गला या कान।।

६६

शुभ विवर्जित शनि, गुलिक विक्रम करे प्रवेश।
कर्णरोग से पाता तब जातक अतिशय क्लेश।।

६७

क्रूर षष्टियंशगत सहजेश को पापी रहा पछाड़।
तब गला या कान में होता व्याधि, विकार।।

६८

कारकांश गत केतु पर पाप ग्रहों की दृष्टि।
तब जातक के गले में रोग की होती सृष्टि।।

६९

सोम, सोमसुत सहजगत, अशुभ संग संयोग।
तब मूह या ग्रीवा में हो सकता है रोग।।

विविध

१००

सत्ताधारी जनों का, दशमेश वसे विक्रम में।
पद, प्रताप, सामर्थ सब, घट जाता है क्रम में।।

१०१

विक्रम, वित्त के नाथ का बढ़े नील संग क्षोभ।
स्वार्थ परायण जातक का, बढ़ता जाता लोभ।।

१०२

चन्द्रपुत्र, भाग्येश संग, सहज में करे गमन।
वित्त, सहजपति साथ हो, जातक पाता धन।।

१०३

सहज, नाश के नाथ का आपस में संयोग।
लग्नेश्वर हो पापमय, आत्मघात का योग।।

१०४

विक्रमेश और वैरीश का षष्टम घर में योग।
राहु की पड़ती दृष्टि तो नाभि में होता रोग।।

१०५

बाहुगत शनि, वक्र पर पड़े राहु की दृष्टि।
लगे भुजा में चोट या वात रोग की सृष्टि।।

१०६

विक्रमेश संग वक्र हो, शुभमय सहज अखण्ड।
लग्नेश्वर बलवान हो, साहस, शौर्य प्रचण्ड।।

१०७

भानु, भौम संयुक्त सहज को राहु रहा हो देख।
अस्थि भंग हो जातक का, विधि का ऐसा लेख।।

१०८

सहज भाव में निशानाथ पर पाप ग्रहों की टोक।
मलिन अंश का भौम दे, अनुज निधन का शोक।।

१०९

सहजेश संग शुक्र का उचित नहीं आचार।
राहु भी यदि संग हो, बढ़ता है व्यभिचार।।

११०

सहजनाथ रंग राहु जब कल्प में करे प्रयाण।
राहु का मेजबान वही तो, सर्प दंश का भान।।

१११

विक्रमपति हो नीच का, मलिन अंश में वास।
शौर्य और साहस का तब होता नहीं विकास।।

११२

उच्चस्थ विक्रमपति, जब नाश भवन में जाय।
पाप युक्त, चर राशि या चर नवमांश सजाय।।
ऐसा जातक दिखता है प्रायः सौम्य, सरल।
पर भयानक समर में, साहस, शौर्य प्रबल।।

११३

क्रूर ग्रहों की राशि का सहज, में हो स्थान।
तथा क्रूर ग्रह भी करे विक्रम भाव प्रयाण।।
सहजेश्वर का जब बने पापी ग्रह मेजबान।
हर मुकाबला में तब, जातक हो बलवान।।

११४

तृतीय और तपनाथ में, हो सम्बन्ध परस्पर।
शुभ अंशगत अगर रहे, बुध, चन्द्र व दिनकर।।
सहज भाव में शुभ बसे, सबल लग्न का नायक।
जातक तब बन जाता है, लेखक और प्रकाशक।।

११५

शुभ प्रभाव से युक्त हो, सहज, सहज का नायक।
शुभ अंगगत बुध रहे तो लेखक होता जातक।।

११६

विक्रम, वित्त, तपनायक का शुभमय हो सम्बन्ध।
लेखन से धन अर्जन का बनता विविध प्रबन्ध।।

११७

सहनाजनाथ, लाभेश तथा चन्द्र तनय और सविता।
लग्न से हो सम्बद्ध अगर, लेखन से धन मिलता।।

११८

मंगल, मन्द धनस्थ हो, सोदर में तय जाता।
उस जातक का एक भी, बन्धु नहीं जी पाता।।

११९

सहज भवन में जब बसे रिपुभाव का नायक।
भृगुनन्दन से दृष्ट हो, शिल्पकार हो जातक।।

१२०

सहजेश का नवमांशपति केन्द्र में रहता लोट।
सप्तमस्थ स्वरमान तब मस्तक में दे चोट।।

१२१

भौम, सौरि, स्वरभान जब बसे एक ही घाट।
तब शस्त्र के चोट से नर का फटे ललाट।।

१२२

केन्द्र कोण गत सिंह में करता शुक्र प्रवास।
राहु, गुरु हो सहज में शूल रोग से त्राश।।

१२३

सहजेश संग भौम करे षष्टम भवन प्रवेश।
पाप अंशगत अरिपति, मातुल पाते क्लेश।।

१२४

सहजस्थ शशितनय को सुरगुरु रहा निहार।
सबल रहे सहजेश तो मनुज बने पत्रकार।।

१२५

सहजस्थ शशि तनय का दैत्य गुरु हो पोषक।
सबल रहे सहजेश तो जातक बनता लेखक।।

१२६

पाप अंशगत सहजपति, सहज में पापाचार।
चन्द्र यदि बलहीन हो, माँ करती व्यभिचार।।

१२७

पाप अंशगत सहजपति, सहज में पापाचार।
बलहीन भृगुतनय दे, परिणयसूत्र उजाड़।।

१२८

मन्द, मन्दि से युत हो पत्री में सहजेश्वर।
सहजस्थ पापी रहे, मर जाता है सोदर।।

१२६

सहजस्थ हो केतु तथा अंत्य वसे अंगारक।
बात-बात पर नित कलह करता रहता जातक।।

१३०

लोहितांग व गुलिक हो सहज भवन में शेर।
बिना वजह जातक करे सबसे तब मुठभेर।।

१३१

सोम, सौम्य से दृष्ट हो सहजगत अंगारक।
द्रोही, क्रोधी, अभिमानी हो जाता तब जातक।।

१३२

धरापुत्र संग सहज में जब होता रिपुनायक।
आंत्रशोथ के रोग से पीड़ित रहता जातक।।

१३३

षष्टेश संग निधन में सौरि करे गठजोड़।
मंगल भी हो साथ तो पिण्डली देता तोड़।।

१३४

त्रिक भवन में जब बसे षष्टम गृह का नायक।
व्यभिचार में व्यस्त तब हर पल रहता जातक।।

(अ)
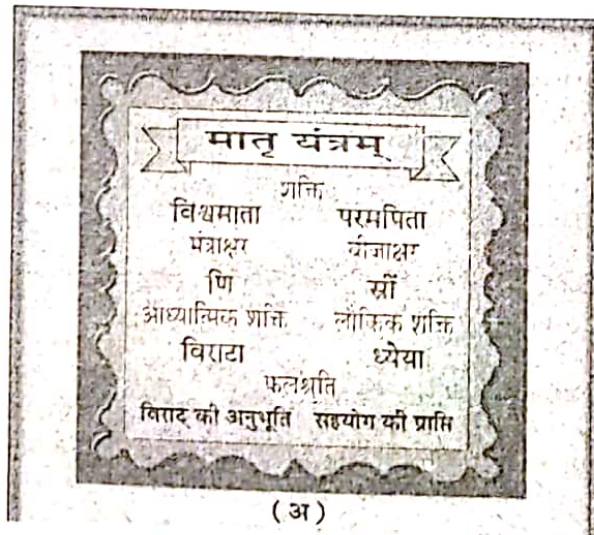
विश्वमाता

विश्वमाता विश्व के सभी प्राणियों के बीच सद्भाव पैदा करने में समर्थ है। वसुधैव कुटुम्बकम् -विश्वबन्धुत्व की भावना को फलित करती है। हर मनुष्य को विवेक का अनुदान देकर वर्गभेद मिटाकर विश्व में एक भाषा, एक धर्म, एक व्यवस्था, एक संस्कृति की स्थापना करने में सक्षम है।

चतुर्थ भाव

रसातलां वै हिबुकं च वेश्म
पातालहृद्वाहनमातृसंज्ञा।

वाहनान्यथ बन्धुश्च मातृसौख्यादिकान्यपि।
निधि क्षेत्रं गृह चापि चतुर्थात् परिचिन्तयेत्।।

वदन्ति विद्या जननी सुखानि सुगन्ध गोबन्धुमनोगुणानि।
महीपयानक्षितिमन्दिराणि चतुर्थभावप्रभानि तज्ज्ञाः।।

अम्बापातालतुर्यं हिबुकगृहद्वाहनं यानसंज्ञं।
बन्धवाख्यंचाम्बु नीरं जलमथ।

चतुर्थ भाव फल

१

पत्री में सुख भवन की परम विलक्षण हाल।
सबल तथा शुभयुत रहे, जीवन मालामाल।।

२

भूमि, भवन, वाहन एवं विद्या, प्रजा व जननी।
दया, हृदय, मन, गुप्त-धन तथा रखैल व धरणी।।

३

बावड़ी, कूप, तड़ाग, वाटिका, तेल, कूप, जायदाद।
दूध, दमा, क्षय, श्वास-रोग, गृहस्थ सुख का स्वाद।।

४

मातृभाव का राजनीति से होता अधिक लगाव।
लोकप्रियता, क्षेत्राधिकार, जनमानस पर प्रभाव।।

५

रखैल तथा रतिक्रीड़ा-स्थल का देता निर्देश।
जो ग्रह इसको देखता या करता यहां प्रवेश।।

६

जिस प्रभाव में रहता है, तूर्येश, तुर्य, भदुनायक।
दयावान या निर्मम, कपटी, वैसा होता जातक।।

७

तप, रिस्फ, पाताल में पापी ग्रह आसीन।
तात, मातु व भाग्य से जातक होता हीन।।

८

जातक के रखैलों का रसातल रखता ज्ञान।
तथा रन्ध्र बताता उसका जो अवैध संतान।

भवन एवं भूमि विचार

९

लग्नेश्वर संग लग्न में जब सुखेश हो व्याप्त।
शुभ प्रभाव से युत रहे, नूतन घर हो प्राप्त

१०

सबल, स्वगृही, उच्च का, यदि रहे गृहनाथ।
बिनु प्रयास गृह प्राप्तकर, जातक होय सनाथ।।

११

केन्द्रस्थ होकर रहे यदि सबल गृहनायक।
शुभ प्रभाव से युत रहे, गृह निर्माता जातक।।

१२

वैशेशिकांश गृहनाथ हो या नवांश में तुंग।
भवन मनोरम प्राप्त हो, बढ़ता रहे उमंग।।

१३

गृहपति का नवमांशपति, बसे केन्द्र-स्थान।
तब निश्चय ही वह करे सुन्दर भवन प्रदान।।

१४

तप नायक हो केन्द्र में, उच्चग्रह हो पाताल।
मित्रगृही गृहनाथ हो, बनता भवन विशाल।।

१५

सहज भाव शुभयुक्त हो, सबल रहे सहजेश।
सुन्दर मिलता भवन जब हो बलयुक्त गृहेश।।

१६

मृदु, गोपुर या सिंहासन में गृहपति करे गमन।
सुन्दर और सुसज्जित तब जातक पाय भवन।।

१७

पर्वतांश गेहेश हो, शशि विक्षित सुरपंडित।
या गोपुर अंश में गुरु रहे, गृह नाना विधि मंडित।।

१८

गेहेश्वर, कर्मेश संग हो छायासुत केन्द्रस्थ।
अति विशाल आगार तब पाता सुखी गृहस्थ।।

१९

चर राशि पाताल में, चर में हो गेहेश।
कई जगह आवास हो जब चर में भौम प्रवेश।।

२०

स्थिर राशि हो अम्बु में, थिर में हो गेहेश।
स्थाई घर प्राप्त हो, जब थिर में भौम प्रवेश।।

२१

मृदु, गोपुर का अम्बुपति, उदय भवन को जाय।
जातक तब हर हाल में, भूमि, भवन, निधि पाय।।

२२

भूमिपुत्र, लग्नेश का बास यदि हो सुखघर।
अथवा हो सुखनाथ संग, जातक होता भूधर।।

२३

गेहाधिप हो गूह्यगत, रहे मलिन से दृष्ट।
निर्बल हो अविनेय तो घर हो जाय विनिष्ट।।

२४

चतुर्थेश का नवमांशपति रन्ध्र में करे प्रयाण।
होता भवन विनिष्ट तब, ज्योतिष करे वखान।।

२५

अम्बुपति रिपु, निधन में, राहु वित्त में मस्त।
मंगल हो निर्बल यदि, घर हो जाता ध्वस्त।।

२६

अंत्य, अम्बु और वित्तपति हो कोण, केन्द्रस्थान।
दृढ़, स्थाई अलय बने, ज्योतिष देय विधान।।

२७

शुभ संग सुखनाथ हो, सुख में शुभ का बास।
रबि नन्दन शुभयुत रहे, होता भूमि विकास ।।

२८

कारकांश से अम्बु में शुक्र तथा यदुनायक।
तब सुन्दर प्रासाद का स्वामी बनता जातक।।

२९

कारकांश से तूर्यगत वसता हो ग्रह तुंग।
अति विशाल प्रासाद पा बढ़ता सतत उमंग।।

३०

कारकांश से तूर्य में दिनकर सुत, स्वरभान।
अति विशाल आगार तब करता नर निर्माण।।

३१

कारकांश से अम्बु में केतु तथा अंगारक।
परम मनोरम भवन का स्वामी होता जातक।।

३२

कारकांश से अम्बु में जब होता सुरपूजित।
जातक का प्रासाद तब नाना विधि हो सज्जित।।

३३

कारकांश से तुर्यगत जब होता दिनमान।
परम मनोरम भवन तब नर करता निर्माण।।

३४

सुखेश तथा लग्नेश में जब हो गृह विनियोग।
अति सुन्दर प्रासाद में जातक करता भोग।।

३५

सबल तुर्यपति केन्द्र में करता यदि प्रयाण।
शुभ से होता दृष्ट तो घर होता निर्माण।।

३६

शशि, सौरि के साथ हो सुखपति व कर्मेश।
जातक का प्रासाद तब होता भव्य विशेष।।

३७

पर्बत अंश सुखेश का गोपुर में यदुनायक।
गुरु से होता दृष्ट तो घर बनवाता जातक।।

३८

सुखेश तथा सुखेश का नवमांशपति बलवान।
सहजस्थ हो शुभ यदि गृह होता निर्माण।।

३९

लग्नेश संग सुखेश का सुख में हो संयोग।
अक्समात गृह लाभ का बने विलक्षण योग।।

४०

कारकांश में हो अगर राहु, भानु, अंगारक।
अक्समात गृह नाश का कारण बनता पावक।।

४१

केन्द्र, कोण में राहु से रहे दिवाकर त्रस्त।
शिल्पकर्म के दोष से गृह होता क्षतिग्रस्त।।

४२

पाप दृष्ट सुखेश हो रिपु, रन्ध्र में भ्रष्ट।
कई कारणों से तब घर हो जाता नष्ट।।

४३

सुखेश का नवमांशपति अरिगृह रहे प्रविष्ट।
पड़ता पाप प्रभाव तो होता भवन विनिष्ट।।

४४

स्थिर राशि में अम्बुगृह, कारक व भावेश।
स्थाई गृहभोग का बनता योग विशेष।।

४५

शुभ षष्टियंश में अम्बुपति करता यदि प्रवास।
तथा स्थाई हो सदा जातक का आवास।।

४६

गृह परिवर्तन जब करे अम्बु, व्योम के नायक।
धरणीसुत बलयुत रहे, क्षेत्रवान हो जातक।।

४७

शुभ प्रभावगत हो यदि सुखेश, सौरि, पाताल।
तब जातक को प्राप्त हो अतिशय क्षेत्र विशाल।।

४८

सुतगत सुखपति पर रहे अमरपूज्य की नेत्र।
गोपुरादि हो वर्गों में, अति विशाल हो क्षेत्र।।

४९

सहजेश संग हो यदि शुभ अंशगत सुखनायक।
तब भ्राता के मदद से क्षेत्रवान हो जातक।।

५०

सबल लग्नपति तुर्यगत, लग्नस्थ रहे सुखनायक।
स्वपराक्रम से बने क्षेत्रवान तब जातक।।

५१

सबल सुखेश हो द्यूनगत, सुख में दानववन्दित।
तब भार्या की भाग्य से क्षेत्र करे नर अर्जित।।

५२

उपचय गृह में हो यदि लग्नेश संग सुखनायक।
अपने बल से ही बने क्षेत्रवान तब जातक।।

५३

पापमध्य या नीच, शत्रुगृह क्षेत्रपति आसीन।
पाप दृष्ट पाताल हो, जातक हो भूहीन।।

५४

क्षेत्रेश निर्बल रहे पाप-मध्य अंगारक।
पड़ता पाप प्रभाव तो क्षेत्रहीन हो जातक।।

५५

क्रूर षष्टियंश में क्षेत्रपति, पापी क्षेत्रभवन।
लग्ननाथ निर्बल रहे, होता भूमि हरण।।

५६

तुर्येश नभभवन में सूर्य संग हो अस्त।
शासक करता भूहरण, जातक रहता त्रस्त।।

५७

धनेश के नवमांशपति संग पापयुत सुखनायक।
भाग्येश्य हो नीचगत, भूमि हड़पता शासक।।

५८

षष्टमस्थ सुखनाथ पर षष्टमपति की नेत्र।
लग्ननाथ निर्बल रहे, शत्रु हड़पता क्षेत्र।।

सम्पत्ति विचार

५९

परिवर्त्तन में जब रहें, अम्बु, व्योम के नायक।
मंगल हो बलयुक्त तो, सम्पतियुत हो जातक।।

६०

अम्बु, व्योमपति दोनों हों पत्री में बलवान।
धरापुत्र शुभ अंश में, जातक सम्पतिवान।।

६१

क्षेत्र अथवा क्षेत्रपति संग, मंगल व सहजेश।
जातक तब निज बन्धु से, सम्पति पाय विशेष।।

६२

सुखेश का नवमांशपति केन्द्र में करे प्रयाण।
भौम रहे संयुक्त तो सम्पति भ्रता करे प्रदान।।

६३

लग्नेश और क्षेत्रेश में होवे गृह विनियोग।
शुभ प्रभाव से युत रहे, हो सम्पति का भोग।।

६४

मदन भवन में क्षेत्रपति, सुख में भृगुसुत व्याप्त।
अम्बु, द्यूनपति मित्र हों, पत्नी से धन प्राप्त।।

६५

रिपुनायक बलयुक्त बन यदि रसातल जाय।
क्षेत्रनाथ अरिगत रहे, शुभ अंशों में समाय।।
रिपुपति से जब क्षेत्रपति, बनता हो बलवान।
तब शत्रु से सम्पति पा, जातक हो धनवान।।

६६

स्वक्षेत्र या पर्वत अंश में क्षेत्रनाथ का आश्रय।
अथवा वह बलयुक्त हो, घर जाये जो उपचय।।
या तुंग होकर वही हो लग्ननाथ से दृष्ट
निज प्रयास से नर करे, नाना सम्पति सृष्ट।।

६७

रक्तनेत्र संग क्षेत्रपति वैशेषिक अंश को जाय।
शुभ से होवे दृष्ट तथा शुभ गृह में ही समाय।।
अथवा लाभ व वित्तपति के संग करे निवास।
नाना सम्पति प्राप्त कर, जातक करे विकाश।।

६८

नीच, अस्त या शत्रुगृही हो पत्री में क्षेत्रेश।
मलिन ग्रहों से दृष्ट या कर्त्तरी-पाप प्रवेश।।
लग्ननाथ बल रहित हो, मिलता नाना क्लेश।
जातक अपने कर्म से, सम्पति करता शेष।।

६९

मलिन ग्रहों संग युत हो, पत्री में रक्ताम्बर।
मलिन ग्रहों से दृष्ट रहे या पापी के घर।।
नवमांश चक्र में भी करे मलिन अंश में बास।
तब जातक का सम्पति हो जाता है नाश।।

७०

मलिन षष्टियंश में क्षेत्रपति जब भी करे प्रवेश।
शत्रु गृही या नीच राशि में निर्बल बने विशेष।।
त्रिकभाव या पापीग्रह संग, करता यदि निवास।
तब जातक का सम्पति, हो जाता है नाश।।

७१

मलिन ग्रहों संग, नीचगत, धन में जब क्षेत्रेश्वर।
जातक का सारा सम्पति, हर लेता तब ईश्वर।।
उच्च क्षेत्रपति, अशुभ संग त्रिक में लेता आश्रय।
जातक के सम्पति सब हो जाता तब विक्रय।।

७२

राज्यनाथ जब मलिन संग, करे क्षेत्र में वास।
निधन भाव में क्षेत्रपति भी जब करे प्रवास।।
मृत्यु या यम अंश में, नभपति करे विलास।
तब शासक के कोप से, सम्पति होता नाश।।

७३

मलिन नवमांश में जब रहे, भानु, भौम, राज्येश।
नीच राशिगत, मृत्यु या यम अंशों में प्रवेश।।
तब जातक हो जाता है, राजकोप का भाजन।
उसका तब सारा ही धन शासक करे हरण।।

७४

नीच राशिगत अम्बु में रहता यदि दिवाकर।
नवमांश चक्र में नीचगत जब होता क्षेत्रेश्वर।।
धनेश का नवमांशपति हो भानु संग प्रविष्ट।
तब सत्ता के कोप से, सम्पति होय विनिष्ट।।

सुख, दुःख व आराम विचार

७५

पत्री में पातालपति हो सुर-पण्डित से दृष्ट।
गुरु, अथवा क्षेत्रेश हो, शुभकर्त्तरी में प्रविष्ट।।
तथा रसातल में करे, शुभग्रह कोई प्रवेश।
तब जातक को प्राप्त हो, सुख, आराम अशेष।।

७६

सुखनायक के साथ हो शुभग्रह कोई विशेष।
या सुखेश सुरगुरु संग केन्द्र में करे प्रवेश।।
या गुरु दृष्ट सुखपति जब मृदु अंश में जाय।
तब जातक बहुभांति ही सुखमय जीवन पाय।।

७७

शुभग्रह सुख भवन में, करता यदि प्रयाण।
शुभ-कर्त्तरी के बीच में होवे सुख स्थान।।
लग्ननाथ से देवगुरु, अगर रहे बलवान।
सुखमय जीवन में बढ़े, सदा मान, सम्मान।।

७८

सुर पंडित सुखभवन को रखता यदि सजाय।
गोपुर अंश में लाभपति, रहता यदि समाय।।
इसी हाल में सुखनायक, धनभवन को जाय।
जातक करता प्राप्त, सुख का सकल उपाय।।

७९

दुष्ट ग्रह जब कर रहे, सुखभवन को क्षीण।
सुर पण्डित जन्मांग में यदि रहे बलहीन।।
अशुभ ग्रहों संग सुखपति जब हो जाय मलिन।
तब जातक का जीवन, दुखमय एवं दीन।।

८०

मलिनग्रहों संग सुखपति, करता यदि विलास।
एवं सुख में नीच ग्रह भी जब करे प्रवास।।
लग्ननाथ इस हाल में, त्रिक् में करे निवास।
दुःखमय जीवन में मिले, नर को नाना त्राश।।

८१

सुखनायक के साथ हो, भानु तथा रक्ताम्बर।
और नीच नवमांश में, जाये यदि सुखेश्वर।।
शुभ ग्रहों की कहीं से, पड़े न उस पर दृष्टि।
तब जीवन में होता है, नाना दुःख की सृष्टि।।

८२

भानु, भौम जाकर बसे जब भी सुख स्थान।
मलिन ग्रहों की दृष्टि से उनका हो अवसान।।
और नीच नवमांश में, सुखपति करे प्रयाण।
जातक जीवन में रचे, दुःख का सकल विधान।।

८३

रसातल में उच्चग्रह, तपपति हो केन्द्रस्थ।
शुभ अंशगत सुखपति, जातक सुखी गृहस्थ।।

८४

लग्न से लेकर तुर्य तक सब शुभ करे प्रयाण।
आजीवन सुखमय रहे, जातक वह श्रीमान।।

८५

लग्नेश संग केन्द्र में सुखेश करे विश्राम।
शुभ दृष्ट होता यदि, मिलता सब आराम।।

८६

पर्बतादि में सुखपति, लग्न में अमर पुरोहित।
लग्ननाय हो सबल तो दुःख, संताप, तिरोहित।।

८७

राशि या नवमांश में धनु में हो लग्नेश।
या वसता लाभेश वहाँ सुख सौभाग्य विशेष।।

८८

लग्नेश या लाभेश का नवमांशपति केन्द्रस्थ।
श्रेष्ठ अंशगत सुखपति, जातक सुखी गृहस्थ।।

८९

तनय से लेकर रन्ध्र तक सब शुभ करे प्रयाण।
तब मध्यावस्था में ही नर बनता श्रीमान।।

९०

लग्न, लाभ व अंत्य में शुभ ग्रह करे प्रवेश।
सुर पण्डित हो केन्द्रगत, सुख सौभाग्य विशेष।।

९१

लग्न, कोष व सहज में शुभ करते विश्राम।
तप भवन में देवगुरु देता सुख आराम।।

९२

धर्म से लेकर अंत्य तक शुभग्रह सभी समाय।
वृद्धावस्था में सजे सुख का सकल उपाय।।

९३

देवलोक में लग्नपति, गोपुर रमे सुखेश।
दानवपण्डित सबल हो, मिलता भोग विशेष।।

९४

अशुभ विवर्जित सुखपति, शुभ संग हो संयोग।
शुभ अंशगत लग्नपति, मिलता नाना भोग।।

९५

चार से ज्यादा ग्रह यदि हो अपने ही भाव।
जीवन में सुख भोग का बढ़ता सतत प्रभाव।।

९६

पातालेश पर हो यदि सुरपण्डित की दृष्टि।
लग्नेश शुभ अंशगत, सुख की होती वृष्टि।।

९७

शुभ कर्त्तरी सुखभाव का, जीव दृष्ट सुखनायक।
तब ऐशो आराम में पलता बढ़ता जातक।।

९८

केन्द्र, कोणगत सुखपति, शुभ की पड़ती दृष्टि।
सुख, सुविधा की तब सदा होती रहती वृष्टि।।

९९

पत्री में लग्नेश से अमर पूज्य बलवान।
सबल रहे सुखनाथ तो जातक हो सुखवान।

१००

शुभ अंशगत तुर्यपति हो धन, उपचय स्थान।
सुखमय जीवन में सदा बढ़ता नित सम्मान।।

१०१

शुभ कर्त्तरी में हो यदि पत्री में यदुनायक।
सबल रहे सुखनाथ तो सुख से जीता जातक।।

१०२

नवमांश में आत्माकारक वृषभ राशि में जाय।
जीवन में सुखभोग का सजता स्वतः उपाय।।

१०३

कारकांश के लग्न में जब होता है मेष।
पड़ता पाप प्रभाव तो बढ़ता नाना क्लेश।।

१०४

कारकांश में केसरी होता यदि उदय।
हर समय पलता रहे जीवन में दुःख भय।।

१०५

पाप दृष्ट वागीश जब करता तुर्य गमन।
चिंता ग्रस्त मनुज का होता दुःखमय जीवन।।

१०६

कन्या राशि जब बने कारकांश में लग्न।
जातक के जीवन में तब आता नाना विघ्न।।

१०७

सुख नायक निर्बल रहे, पापी, ग्रह हो संग।
जातक को प्रतिपल डसे, दुःख का कठिन भुजंग।।

१०८

पाप असंगत नीच या तुर्यनाथ हो अस्त।
जातक जीवन में रहे, सदिखन चिंताग्रस्त।।

१०९

सुखेश संग हो पत्री में भानु तथा अंगारक।
पापी ग्रह हो तुर्यगत, दुःख में जीता जातक।।

११०

लाभस्थ होकर रहे पत्री में रन्ध्रेश।
बाल्यवस्था में सहे, जातक नाना क्लेश।।

१११

निधनस्थ हो राहु तथा लग्न वसे रबिनन्दन।
धरापुत्र अरिगत रहे, दुःखमय होता जीवन।।

११२

पाप कर्त्तरी में रहे पत्री में यदुनायक।।
सुखनाथ निर्बल रहे, दुःख में जीता जातक

पाप-कर्म विचार

११३

ज्यादा पापी ग्रह रहे अम्बु भवन में व्याप्त।
अथवा सुख, धनभवन हो अशुभ-दुर्धरा प्राप्त।।
मलिन षष्टिंश में रहें, तूर्यभवन का नायक।
तब नाना दुष्कर्म में लिप्त रहे वह जातक।।

११४

कई क्रूर से युत रहे, तूर्य-भवन का नाथ।
अस्त अथवा शत्रुगृही या हो नीच के साथ।।
छायात्मज की दृष्टि से, बिगड़े उसका धर्म।
तब जातक करता सतत, कई तरह दुष्कर्म।।

११५

सबल सौम्य, शशि सुनु या गुरु बने तूर्येश।
शुभ ग्रहों की दृष्टि भी करता वहां प्रवेश।।
या शुभ ग्रह संग तूर्यपति गहे केन्द्र-स्थान।
तब जातक को प्राप्त हो भोग तथा सम्मान।।

११६

तूर्यगत भृगु श्रेष्ठ पर पड़े चन्द्र की दृष्टि।
या हो गोपुर अंश में, भोग की होती पुष्टि।।

वाहन विचार

११७

बलवान रहे सुखभाव अगर,
सुखनाथ का भी हो बल सुन्दर।
शुभ ग्रह से हो अवलोकित तो
वाहन सुख भी मिलता सुन्दर।।

११८

जब भाग्यनाथ के संग सुखेश
का लग्न में होता मधुर मिलन।
करता यह योग प्रदान सदा
सौभाग्य सुघर, उत्तम वाहन।।

११९

असुरेश सचिव सुखभाव में जब
सुख नायक के ही संग रहे।
पड़ता हो पाप प्रभाव पुष्ट तब
वाहन सुख सब अल्प कहें।।

१२०

तप, आय, व्योम में वाहनेश
जब बलि पंडित के संग रमें।
शुभयुक्त रहे, बलयुक्त रहे
तब वाहन योग विशेष बने।।

१२१

जब लग्न में ही सुखनायक के
संग भृगु कुल दीपक रहे मगन।
ममता पति से हो दृष्ट अगर
तो वाहन मिलता बिना जतन।।

१२२

अम्बु भवनपति, अम्बु, उदय
में रमाबन्धु से दृष्ट रहे।
अश्व खचित व रत्न जड़ित
तब वाहन सुख सम्पूर्ण लहे।।

१२३

हो कर्क लग्न; चतुरस्थ सोमसुत
दानव वन्दित संग सजे।
वाहन भोग, विशेष मिले, जब
बुध दशा, भृगु भुक्ति रचे।।

१२४

हो भाग्यनाथ का चतुर्थेश संग
जन्म-चक्र में परिवर्तन।
तब राजकृपा से जातक को
मिलता है भूषण अरु वाहन।।

१२५

हो भाग्यनाथ का चतुर्थेश संग
जन्म-चक्र में परिवर्तन।
तब पूर्व पुण्य के बल से नर
पाता जीवन में है वाहन।।

१२६

चतुरस्थ रहे लाभेश अगर
सुखनायक भव में करे गमन।
तब अपने ही बल, पौरुष से
जातक को मिलता है वाहन।।

१२७

सुखनायक का लग्नेश्वर संग
जब जन्म-चक्र में परिवर्तन।
तब बिनु प्रयास ही पा लेता
जातक निज जीवन में वाहन।।

१२८

निशानाथ, कवि, देव गुरु संग
सुखनायक जब बसे लग्न।
अशुभ विवर्जित, नीच रहित जब
वाहन सुख में, मनुज मगन।।

१२९

उदय, हृदय, तपनायक तीनों
एक साथ जब जाय गगन।
सुख, वाहन, सिंहासन मिलता
कर्मनाथ जब जाय लग्न।।

१३०

सुखनायक तप भवन विराजे
सुख में सुर अरु असुर के पंडित।
भाग्यनाथ हो केन्द्र, कोणगत
नर वाहन, भूषण से मंडित।।

१३१

लग्नस्थ रहे सुख, धर्म के स्वामी
सुधा दृष्टि सुर गुरु वर्षाय।
पाप प्रभाव से रहित रहे तो
नृप से नर वाहन सुख पाय।।

१३२

आगम, अम्बु में, लग्ननाथ हो
सुखनायक तप भवन सजाय।
सबल रहे शुक्लाम्बर भी तो
नर नाना वाहन सुख पाय।।

१३३

धनेश रहे लग्नस्थ अगर
कर्मेश, कोष में करे गमन।
वाहन योग विशेष बने यदि
वाहनेश का वास गगन।।

१३४

सुखनायक पर दृष्टि पड़े जब
तप, भव, नभ के स्वामी की।
पर्वत अंश का वाहनेश तब
वाहन दे द्रुतगामी भी।।

१३५

अंत्येश उच्च का रहे अगर
धननायक उसके संग रमे।
भाग्येश्वर की दृष्टि पड़े
तब उत्तम वाहन योग बने।।

१३६

लाभेश और कर्मेश एक संग
अम्बु भवन में राज करे।
भाग्यनाथ से दृष्ट रहे
नर वाहन भोग अगाध करे।।

१३७

सबल दैत्य गुरु, उच्च राशिगत,
कर्मनाथ सुख भवन समाय।
सुखनायक शुभयुक्त रहे तब
नर उत्तम वाहन सुख पाय।।

१३८

दग्ध देह संग कर्मनाथ जब
केन्द्र में ही शुभयुक्त रहे।।
लग्ननाथ सुखभवन में शोभे
वाहन सुख उपयुक्त लहे।।

१३९

धर्म, लाभ, नभनाथ करे जब
तुर्य भवन में मुक्त विहार।
पाप विवर्जित यदि रहे तो
मिलता वाहन भोग अपार।।

१४०

व्योम भवन में कोई भी ग्रह
उच्च राशि में करे विहार।
उदय, धर्मपति से वलोकित,
मिलता वाहन भोग अपार।।

१४१

अम्बु, व्योमपति दोनों ही जब
सिंहासन अंशों में जाय।
लग्ननाथ से दृष्ट रहे तो
वाहन सुख का सजे उपाय।।

१४२

जब शक्र पुरोहित वाहनेश संग
लग्न भवन में करे विहार।
भृगुकुल दीपक जाया में हो,
मिलता वाहन भोग अपार।।

१४३

लाभनाथ से नवमनाथ जब
कारकांश में करे विहार।
वाहनेश तप भवन में शोभे।
मिलता वाहन भोग अपार।।

१४४

वाहनेश हो केन्द्र भवन में,
भावपति उसका हो लगनगत।
श्रेष्ठ वर्ग में दोनों हों तो
नर का उड़ता यान गगनगत।।

१४५

व्योमनाथ संग लाभ भवन में
वाहनपति जब रहे मगन।
ऐरावत अंशों में अगर हो
नर का उड़ता यान गगन।।

१४६

केन्द्रस्थ हो वाहनपति और
श्रेष्ठ अंश में करे विहार।
गोपुर गत हो लाभनाथ तो
मिलता वाहन भोग अपार।।

१४७

अशुभ विवर्जित सबल अम्बुपति
पत्री में जब हो वर्गोत्तम।
निशानाथ से भृगु हो सप्तम
वाहन सुख भी मिलता उत्तम।।

१४८

गुरु दृष्ट हो वाहनपति और
लाभ भवन में करे विहार।
शशि से शुक्र सहज या भवगत
यान में नर करता संचार।।

जल में डूबने का योग

१४९

निर्बल सुखपति नीच, अस्त या
शत्रु राशि में करे गमन।
राशि अगर जल-तत्व वही
तो नर का होता कूप-पतन।।

१५०

बिबल लग्नपति नीच, अस्त या
पापी संग पाताल समाय।
जल राशि में अम्बुपति हो
जातक तब जल में डुबि जाय।।

१५१

जल राशि गत अम्बु भवन में
उदयनाथ तुर्येश समाय।
गगनपति से दृष्ट रहे, तो
जल समाधि को जातक पात्र।।

१५२

तूर्यपति का मेजबान यदि
सुखनायक से दृष्ट रहे।
तब जातक के कूपतपन की
सारा संग्रह सृष्ट करे।।

पत्थर से चोट

१५३ (ए)

विभावसु, रक्ताबर के संग
अम्बु भवन को करता खोट।
गगननाथ से दृष्ट रहे वो
नर खाता पाहन से चोट।।

१५३ (ब)

नील, नाग, पातालपति जब
एक साथ पत्री में लोट।
रक्तनेत्र से दृष्ट रहे तब
नर खाता पाहन से चोट।।

काम-कुण्ठा

१५४

रमाबन्धु या भृगुकुल दीपक
केन्द्र भवन में करे गमन।
पाप ग्रहों से युत, दृष्ट हो
खिन्न रहे जब उसका मन।।
अथवा निज-निज तुंग राशि
से, षष्टम में वे करें भ्रमण।
तब नारी जो मातृ-तुल्य हो
जातक उस संग करे रमण।।

१५५

तारापति जब पाप दृष्ट हो
या पापी संग करे चलन।
तूर्य भवन में पापी ग्रह को

क्रूर करे फिर अवलोकन।।
केन्द्रभावगत विभावसु जब
नीच अंश में करे गमन।
तब नारी जो मातृ-तुल्य हो
जातक उस संग करे रमण।।

१५६

पातालेश हो पापी ग्रह संग
क्रूर करे फिर अवलोकन।
शुभ प्रभाव से सदा विवर्जित
नीच अंश में करे गमन।।
षडबल में जब लग्ननाथ का
बल कान्तापति से हो विपन्न।।
तब वनिता जो भग्नी तुल्य हो।
जातक उस संग करे रमण।।

१५७

जायापति हो अम्बु भवन में
पाप दृष्ट या अवलोकित।
पुनः मलिन षष्टियेश में
पड़कर गुण उसका होवे कुंठित।।
सहजस्थ लग्नेश, गालु का
अहिनायक जो करे दर्शन।
तब वनिता जो भग्नी तुल्य हो
जातक उस संग करे रमण।।

१५८

क्रूर संग अभिशप्त अम्बु में
क्रूर करे फिर अवलोकन।
मलिन ग्रहों संग युत रहे या
मलिन षष्टियेश में करे गमन।।
सुनु संग अविनेय सहज में
जायापति हो भाग्य भवन।
तब वनिता जो भग्नी तुल्य हो
जातक उस संग करे रमण।।

मातृसुख विचार

१५९

अरि, रन्ध्र में निशापति करता यदि प्रवास।
मंगल हो जब द्यूनगत, मातृसुखों का नाश।।

१६०

अष्टमस्थ हो राहु तथा नभगत हो अंगारक।
मातृसुखों से तब विरत हो जाता वह जातक।।

१६१

शशि, शुक्र का पत्री में रहे पाप-मध्यत्व।
जननी से होता नहीं जातक को अपनत्व।।

१६२

पाप कर्त्तरी में अगर तुर्यनाथ हो भ्रष्ट।
पड़े पाप की दृष्टि तो माता जिये सकष्ट।।

१६३

चन्द्र से सप्तम भाव में शुक्र पाप से युक्त।
तब जननी में हो नहीं जातक वह अनुरक्त।।

१६४

अशुभ ग्रहों से दृष्ट शनि यदि वसे पाताल।
मातृहीन उस जातक का बचपन हो बेहाल।।

१६५

शनि सोम की युति में पापी रहे प्रविष्ट।
तब जातक की माता को होकर रहे अरिष्ट।।

१६६

भौम, सोम जब एक संग करता गगन प्रवास।
मातृ सुखों की जातक तब धरे न कोई आस।।

१६७

राहु दृष्ट शनि तनय में करता यदि प्रयाण।
प्रसव काल में ही तजे जातक-जननी प्राण।।

१६८

मदन भवन में शीतकर रहता यदि सपाप।
मातृसुखों से हीन नर सहता बहु संताप।।

१६९

देवगुरु हो लग्नगत, सप्तम में स्वरमान।
छायासुत हो कोषगत, माँ की जाती जान।।

१७०

देवगुरु लाभस्थ हो, सहज में हो स्वरभान।
अर्थभवन का सौरि तब हरता माँ की प्राण।।

१७१

धरापुत्र हो लग्नगत, द्यून में हो दिनमान।
जातक की जननी तब जल्दी तजती प्राण।।

१७२

सहजेश संग शशि करे षष्टम भवन प्रयाण।
तब कर सकता जातक वह अन्य से स्तनपान।।

१७३

चन्द्र से चौथे, सातवें पापी रहे प्रविष्ट।।
पाप अंशगत सोम हो, माँ की होय अरिष्ट।।

१७४

चन्द्र से जब भी कोष में पंगु करे प्रवास।
निशाकाल में जन्म हो, जननी सहती त्रास।।

माता का चरित्र

१७५

व्यसन नाथ संग शीतरशिम हो
रक्त-वस्त्र पाताल समाय।
नवमांश में सोम नीचगत
मां की चरित में दे चतुराई।।

१७६

पाप दृष्ट पातालपति संग
नील, नाग, रवि करे हिसाब।
मलिन अंशगत तुर्यपति हो
जातक मां की चलन खराब।।

१७७

निशानाथ पर जैमिनेय या
सिंहीसुत जब करे प्रहार।
नवमांश में सोम मलिन हो
मां औरों संग करे विहार।।

१७८

अम्बुपति जब रहे लग्नगत
शुभ ग्रह से हो अवलोकन।
मृदु, पर्वत या वैशेषिक हो,
उत्तम होती मां की चलन।।

१७९

सबल तुर्यपति लग्नभवन में
पाप प्रभाव से रहे रहित।
निशानाथ हो भाग्य भवन में,
उत्तम होती माँ की चरित।

१८०

श्रेष्ठ वैशेषिक अंशों में जब
अम्बुपति करता है भ्रमण।
शुभ ग्रह से अवलोकित हो
तो उत्तम होती माँ की चलन।।

१८१

जन्म चक्र में अम्बुनाथ का
शुभ ग्रह करते अवलोकन।
दिवानाथ से दृष्ट रहे तो
उत्तम होती माँ की चलन।।

१८२

पापी ग्रह संग तारापति जब
अम्बु भवन में धरे पड़ाव।
षष्टमपति संग धरापुत्र हो
माँ की होती चलन खराब।।

१८३

अर्धकाय संग पापी कोई
अम्बुपति का हरता धर्म।
नीच राशि में निशानाथ हो,
माता करती तब दुष्कर्म।।

जारज संतान

१८४

व्यसन नाथ संग तुर्यपति जब
भाग्य भवन में करे गमन।
पाप प्रभाव हो पुष्ट वहां तो
नर औरों से है उत्पन्न।।

१८५

तप नायक, सुखनाथ एक संग
जब पाताल में करे भ्रमण।
अर्धकाय की दृष्टिपात हो
नर औरों से है उत्पन्न।।

१८६

लग्नेश्वर, सुखनायक एवं
विघ्ननाथ संग करे रमण।
पाप प्रभाव हो पुष्ट वहां तो
नर औरों से है उत्पन्न।।

१८७

विघ्नेश्वर के नवमांशपति संग
तप, सुख नायक करे रमण।
पाप प्रभाव हो पुष्ट वहां तो
नर औरों से है उत्पन्न।।

१८८

सहज, आत्मज दोनो गृह में
पापी ग्रह जब रहे प्रविष्ट।
लग्ननाथ, तपनायक से जब
पत्री में हो जाये बलिष्ट।।

शुभ प्रभाव से रहित रहे
जब अम्बुपति और भदुनायक
अन्य पुरुष के संग रमण
से पैदा होता वह जातक।।

१८६

सुर पंडित की सुधा दृष्टि से
रहित रहे शशि और लगन।
शीत रश्मि संग भानु, क्रूर हो,
नर औरों से है उत्पन्न।।

१६०

पापी ग्रह तप, तूर्य विराजे
विवल लग्नपति अम्बु भवन।
अरिक्षेत्री नवमांश लग्नपति,
नर औरों से है उत्पन्न।।

१६१

इन सारे ही योगों का
दैवज्ञ करें बहु भांति पठन।
शीघ्र यदि निष्कर्ष किया
तो, मिथ्या हो सकता है वचन।।

माता की आयु विचार

१६२

शुभ दृष्ट युत सबल सोम जब
अम्बु भवन में करे गमन।
शुभ अंशगत अम्बुपति हो
लम्बा हो माँ का जीवन।।

१६३

रमाबन्धु बलपूरित हो अरू।
सबल शुक्र से दृष्ट रहे।
दीर्घायु माता से नर को

सुख, सम्पत्ति, आशीष लहे।।

१६४

शुभ अंशगत केन्द्र भवन में
दानव पूज्य शशांक रहे।
दीर्घायु माता से तब नर
जीवन का सब सार गहे।।

१६५

चतुर्थेश का नवमांशपति जब
पत्री में रहता बलवान।
केन्द्रस्थ हो शुभ दृष्टि में,
जननी होती आयुष्मान।।

१६६

मातृ भाव, शीतांशु भी जब शुभयुत हो रहता।
तुर्यनाथ बलवान हो, चीर जीवी हो माता।।

१६७

सबल सोम, सुनु शुभयुत, शुभ से होवे विक्षित।
शुभ ग्रह के नवमांश में, जब रहते आधिष्ठित।।
मातृ भवन में शुभ ग्रह कोई रहता यदि समाय।
लम्बी पाती उम्र है तब जातक की माय।।

१६८

तूर्येश का नवमांश में जो होता मेजबान।
उसका जब नवमांशपति गहे केन्द्र-स्थान।।
लग्न एवं चन्द्र से करें केन्द्र की गणना।
लम्बी आयु के बाद ही, माँ का होता मरना

१६६

सोम अथवा सुनु जब, अम्बु में करे प्रयाण।
पापी ग्रह जाकर बसे, सहज, तनय स्थान।।
पापी ग्रह की दृष्टि में पड़ता अम्बु भवन।
तब जातक की माता का होता शीघ्र निधन।।

२००

भृगु नन्दन जब चन्द्र से जाता द्यून भवन।
तथा मातृगृह में बसे नीच अंश रविनन्दन।।
क्रूर ग्रह इन दोनों का करे यदि अवलोकन।
तब अल्पायु माता का, शीघ्र हो स्वर्गारोहन।।

२०१

शुभ युत या दृष्ट अर्कसुत मातृ भाव में जाय।
तब जातक के जननी की लम्बी होती आयु।।

२०२

पाप दृष्ट, युत सौरि जब जननी गृह को जाय।
उम्र बहुत ही थोड़ी तब जातक जननी पाय।।

मन की स्थिति

२०३

सुहृत यदि शुभ युक्त हो, नायक रहे सबल।
जातक तब मन से रहे, सदा स्वच्छ व निर्मल।।

२०४

निशानाथ शुभयुत, उच्च हो, शुभ अंशों का चरित्र।
पाप प्रभाव से रहित यदि, मन हो सदा का पवित्र।।

२०५

मृदु, गोपुर में तूर्यपति, शुभयुत सुहृत भवन।
तब प्रपंच से सदा रहित, हो जातक का मन।।

२०६

पर्वतांश लग्नेश अम्बुगत, शुभ से होवे दृष्ट।
तब जातक का मन रहे निर्मल तथा सुपुष्ट।।

२०७

शुभ अंशों का देव, दैत्य गुरु यदि लग्न में जाय।
तब जातक का होता है, सुन्दर, सरल, सुभाय।।

२०८

अम्बु अशुभयुत, दृष्ट या पाप-कर्त्तरी के बीच।
पापी संग पातालपति, मन जातक का नीच।।

२०९

अम्बु भवन में जब बसे सौरि, सांप, भूनन्दन।
अम्बुपति नीचांश हो, कपटपूर्ण जातक मन।।

२१०

अम्बु भवनगत मलिन गगनपति, पापी रहा लिपट।
तब जातक के मन में होता ईर्ष्या, द्वेष, कपट।।

२११

पापयुत या दृष्ट अम्बु में, अम्बुभवन का नायक।
कपटी और छली मन का, तब होता है जातक।।

२१२

सौरि दृष्ट हो अम्बु अरु भानु तथा यदुनायक।
तब अन्तरमन से सदा कपटी होता जातक।।

२१३

निशाकर व तूर्यपति का, राहु हरे यदि बल।
तब जातक करता सदा, ईष्ट, मित्र संग छल।।

२१४

मलिन ग्रहों से दृष्ट नागपति जाये सुहृत भवन।
तब सरल आनन के पीछे रहता कपटी मन।।

२१५

सोम तनय संग लोहितांग रहता यदि लिपट।
तब जातक के मन में होता ईर्ष्या तथा कपट।।

२१६

शुभ विवर्जित सहजगत यदि रहे अंगारक।
पापी हो पाताल में, कपटी होता जातक।।

२१७

तप, अम्बुपति एक संग अरिगृह रहा रपट।
तब जातक के हृदय में होता भरा कपट।।

२१८

मेष राशिगत सोमसुत सौरि दृष्टि से तिक्त।
छल प्रपंच में तब सदा जातक रहता लिप्त।।

२१९

रन्ध्र, व्योम के नाथ जब सुख में रहा रपट।
तब जातक के हृदय में होता भरा कपट।।

२२०

सुख भवन में हो यदि मंगल, मन्द, भुजंग।
छल, प्रपंचयुत कर्म में नर का बढ़े उमंग।।

२२१

सुख भवन पड़ता यदि पाप ग्रहों के बीच।
मन, हृदय से हो सदा जातक ऐसा नीच।

२२२

उच्च राशिगत शुभ यदि सुख में करे विहार।
तब जातक का हृदय हो निर्मल तथा उदार।।

२२३

गोपुरादि में हो अगर तुर्यभवन का नायक।
छल प्रपंच से दूर तब होता ऐसा जातक।

२२४

शुभ दृष्टि में सुखगत हो पत्री में लग्नेश।
तब जातक के हृदय में होता स्नेह विशेष।।

२२५

अम्बु भवन में देवगुरु, शुक्र का नभ आगार।
तब जातक का हृदय हो करुणा का भण्डार।।

२२६

शशि, भानु जब एक संग सुख में करे विहार।
कभी कपट मन हो मनुज, होता कभी उदार।।

२२७

पाप युत या दृष्ट हो सुख में जब स्वरभान।
बाहर से निर्मल दिखे, मन में विष विद्यमान।।

सगा-सम्बन्धी विचार

२२८

शुभ युत या दृष्ट अम्बु हो, शशिसुत हो बलवान।
तब जातक को सगे-सम्बन्धी देते हर सम्मान।।

२२६

गुरु दृष्ट सुखनाथ हो, शुभ ग्रह रहे सुखस्थ।
तब जातक के बान्धव होते, सारे उच्च पदस्थ।।

२३०

वैशेषिक का अम्बुपति, केन्द्र, कोण में करे विहार।
निज कुटुम्ब का जातक तब करता हर उपकार।।

२३१

अम्बुभावगत सौम्य जीव कवि मृदु में करे विलास।
तब अपने बान्धव की जातक पूर्ण करे सब आस।।

२३२

मलिन षष्टियंश का अशुभग्रह, अम्बु में करे निवास।
सम्बन्धी सब जातक को तब देते बहुविधि त्राश।।

२३३

तूर्य, तूर्यपति, सौम्य में, दुष्ट भरे जब दोष।
सम्बन्धी सब जातक के, प्रकट करें तब रोष।।

२३४

नीच संग सुखेश हो, सुख हो दुष्ट से भ्रष्ट।
निज कुटुम्ब से जातक तब, पाता नाना कष्ट।।

२३५

मृदु गोपुर का सुखपति करे केन्द्र में भोग।
शुभ से होता दृष्ट तो करते सम्बन्धी सहयोग।।

२३६

वित्त तनय तप आय में सुखपति शुभ से योग।
शुभ अंशों को प्राप्त तो करते सम्बन्धी सहयोग।।

१३७

मित्र अथवा उच्च ग्रह, अम्बु में करे प्रयाण।
गुरु से होता दृष्ट तो, देते सम्बन्धी सम्मान।।

२३८

नीच अस्त या मलिन दृष्ट रहता यदि सुखेश।
निज कुटुम्ब से जातक तब रखता मन में दोष।।

२३९

सुखेश और लग्नेश में जब हो गृह विनियोग।
जातक के सम्बन्धी सब करें पूर्ण सहयोग।।

२४०

सुखनायक पर हो यदि शुभ प्रभाव अति पुष्ट।
तब जातक से बन्धुगण कभी न होते रुष्ट।।

२४१

तारापति बलयुत रहे, शुभ दृष्ट सुखनायक।
सम्बन्धी से तब सदा सम्मानित हो जातक।।

२४२

अमर पूज्य पाताल में, शुभयुत रहे सुखेश।
सम्बन्धी से मान तब पाता मनुज विशेष।।

२४३

पर्वतादि में हो यदि केन्द्र, कोणगत सुखनायक।
तब सारे सम्बन्धी का नर करता उपकार।।

२४४

सबल सौम्य का जब बने तुर्यभवन आगार।
तब सारे सम्बन्धी का नर करता उपकार।।

२४५

यदि क्रूर षष्टियंश में सुखपति करे प्रवेश।
पापी ग्रह हो साथ तो हो कुटुम्ब से क्लेश।।

२४६

यदि क्रूर षष्टियंश में सुखपति करे प्रवेश।
पापी ग्रह हो साथ तो हो कुटुम्ब से क्लेश।।

२४७

तुर्य भवन में शशि सहे भीषण पापाचार।
तब कुटुम्बगण ही करें, जातक का अपकार।।

२४८

त्रिक् भवन या शत्रुगृही जब होता गेहेश।
पापयुत होता यदि, बन्धु से बढ़ता द्वेश।।

२४९

कोण लाभ या अम्बु में धनपति करे प्रयाण।
तब सारे संबंध को नर देता सम्मान।।

विविध

२५०

कुमुद बन्धु पाताल में, देख रहा स्वरभान।
नीचस्थ तूर्येश हो, मां की जाती जान।।

२५१

सुख नायक संग भानु हो, राहु रहा हो देख।
पापी ग्रह पाताल में, हृदय रोग का लेख।।

२५२

पापी ग्रह पाताल में, रन्ध्रस्थ जीव बलवान।
कान्तापति कर्मेश संग, हो अवैध संतान।

२५३

सुख में राहु से बढ़े, मिथ्या अहम व दर्प।
ईर्ष्यालु जातक होता, दिल में लोटे सर्प।।

२५४

तूर्य या तूर्येश संग अरिपति का संयोग।
सौरि, सर्प की दृष्टि हो, दुर्घटना का योग।।

२५५

सुखपति शुक्र व सुरगुरु, तीनों हो बलवान।
सबल रहे लग्नेश तो, नर बन जाय महान।।

२५६

शुक्र, चन्द्र जल राशि में, फनि, शनि की हो दृष्टि।
क्षय, जुकाम या दमा, रोग की हो सकती तब सृष्टि।।

२५७

सुखभाव में जब करे, चन्द्र, चन्द्रसुत भोग।
नील, नाग की दृष्टि दे, टी.बी. जैसा रोग।।

२५८

सुखस्थ शुक्र शुभांश हो, व्यय में शुभ प्रवेश।
तब वाहन के ऊपर नर, करता खर्च विशेष।।

२५९

मातृभाव में सोम, सुनु करें यदि संयोग।
वक्र, सांप, शनि देखता, श्वेत-कुष्ठ का रोग।।

२६०

सुख भवन में जब वसे, भाग्य, तनय के नायक।
राजयोग का भोग सब, हासिल करता जातक।।

२६१

राहु, सौरि के संग अम्बु में वसे निधन का नाथ।
उदय, भाग्य बलहीन हो, जातक बने अनाथ।।

२६२

अशुभ गुणों की मातृ में, बढ़ती हो जब बाढ़।
आयु क्षीण हो जनक का, बढ़ता रोग प्रगाढ़।।

२६३

उदय, अम्बु व नायक इनके सारे रहे सबल।
सार्वजनिक जीवन में हो, नर बहु भांति सफल।।

२६४

चतुर्थेश संग शुक्र का उचित नहीं आचार।
राहु रहे यदि संग तो बढ़ता नित व्यभिचार।।

२६५

तप, तनय, सुखनाथ जब भव में करे प्रवेश।
पद, प्रभाव, सम्मान सब, बढ़ता रहे विशेष।।

२६६

लाभेश, सुखेश, सुतेश की दशा-भुक्ति दे धन।
पर इनके ही भोग में, जनक की होय निधन।।

२६७

सुखस्थ शुभ की दशा दे, भूमि, भवन या वाहन।
पर पिता के क्लेश का जुट जाता सब साधन।।

२६८

तूर्य, तनयपति दोनों ही यदि रहे गगनस्थ।
नर पाता सम्मान है, होकर उच्च पदस्थ।।

२६९

सुतेश और सहजेश का योग नहीं हो सुन्दर।
जातक करता प्राप्त सुख, पर धन सदा हड़पकर।।

२७०

भौम संग सुखेश जब जाता विघ्न, निधन।
चर राशि सुख भाव में, जातक मूक वचन।।

२७१

कारकांश से तूर्य में, शुक्र तथा निशिमान।
या वे उसके देखते, उत्तम बने मकान।।

२७२

कारकांश से चतुर्थ में, उच्च ग्रह करे प्रयाण।
जातक तब बनवाता है, अतिशय भव्य मकान।।

२७३

सुख पाद में क्रूर संग यदुपति करे गमन।
तब जातक के जननी का होता शीघ्र निधन।।

२७४

लाभेशाधिष्ठित राशि से, शनि जब करे भ्रमण।
तब हो सकता जातक के मां का स्वर्गारोहन।।

२७५

सुख पाद में सुरगुरु, शुभ अंश में अंगारक।
धर्मशील, ममतामयी, माता पाता जातक।।

२७६

चन्द्रारूढ पाद में जब अर्धकाय हो व्याप्त।
जातक के जननी को तब विधवापन हो प्राप्त।।

२७७

मकर राशि या शत्रु क्षेत्र में, रहे निशाकर भ्रष्ट।
शुभ प्रभाव से रहित हो, मातृ वर्ग को कष्ट।।

२७८

सुख पाद में शुक्र हो, मातुल हो धनवान।
पितृधन मिलता नहीं, ऐसा बना विधान।।

२७९

चतुर्थेश लाभेश हो लग्ननाथ के दुश्मन।
माँ-पुत्र में हर समय होता रहता अनबन।।

२९०

सुखेश तथा षष्टेश में षडाष्टक सम्बन्ध।
तब क्लेशयुत ही रहे माता-सुत सम्बन्ध।।

२८१

षष्टम गृह में हो अगर तुर्यपति का वास।
माता-सुत सम्बन्ध तब होकर रहता नाश।।

२८२

शुभ ग्रहों की दृष्टि से तुर्यभवन हो मस्त।
तब जातक की सेवा में भृत्य अनेकों व्यस्त।।

२८३

सौरि, भौम के साथ तुर्यगत जब होता सुर पण्डित।
हृदय रोग से जातक का सारा सुख हो खण्डित।।

२८४

तुर्यभवन में जब वसे सौरि और यदुनायक।
द्वादस में स्वरभान हो, अल्पवीर्य हो जातक।।

२८५

गगनगत होता यदि तुर्यभवन का नायक।
रस-रसायन में अधिक रुचि दिखलाता जातक।।

२८६

गगन भवन में भानु हो, अम्बु बसे अंगारक।
दुर्घटना से तब वरे मृत्यु हमेशा जातक।।

२८७

भाग्येश के नवमांश में यदि रहे सुखनायक।
जीवन में सुख भोगता, सभी भाँति वह जातक।।

२८८

षष्टमगत हो अम्बुपति, साथ रहे रबिनन्दन।
दुर्घटना से तब सदा नर की होय निधन।।

सरस्वती

इन्हें साहित्य, संगीत, कला की देवी कहा गया है। ज्ञान की प्रतीक पुस्तक है । ज्ञान शुष्क भी होता है, किन्तु माता सरस्वती की वीणा उसके साथ सरस भाव संवेदना भी झंकृत करती है। माता सरस्वती की कृपा से मूढ़ व्यक्तियों में विद्वत्ता के विकास के प्रमाण सर्वविदित हैं।

पंचम भाव

यंत्र-मंत्रों तथा विद्या बुद्धेश्चैव प्रबन्धकम्।
पुत्रराज्यापिभ्रंशादीन् पश्येत पुत्रालयाद् बुधः।।

पुत्राद्देवमहीपपुत्रपितृधीपुण्यानि संचिन्तयेद्
यात्रा मस्त सुतस्वकर्मभवनैर्दराटनं रिष्फलः

बुद्धिप्रभावत्मजमंत्रसंज्ञ विवेकशक्ती उदर प्रदेशः।
विद्यात्मजाख्यं तनयं तनूजं वागबुद्धिसंज्ञं किल पंचमं स्यात्।।

पंचम भाव फल

१

पंचम घर का पत्री में होता बहुत महत्व।
ग्रह हो जाते शुभ सभी पा करके स्वामित्व।।

२

विद्या, उदर, राज्यपद, लाटरी व संतान।
प्रज्ञा, प्रेम, विवेक व मंत्र-शक्ति का ज्ञान।।

३

पंच, सप्त, व्यय भाव से, काम का करें विचार।
पंचमस्थ भृगु, चन्द्र दृष्ट हो, दौलत देय अपार।।

४

दस, पंचम में परिवर्तन, संतति को हो रोग।
यही अगर नव, पंचम में, ज्योतिष का दे योग।।

५

सुत, भार्या व भाग्य संग, पापी का संयोग।
जातक जाता जेल, मिले अपमानों का भोग।।

६

तनय, वित्त के नाथ संग, शशि का हो संयोग।
मंत्र-मुग्ध श्रोता को कर दे, वक्ता हित यह योग।।

७

सुत नायक रिपुगत रहे, धर्मेश आयु विद्यमान।
पापी ग्रह से दृष्ट हो, धन का हो अवसान।।

८

पंचम, अष्टमपति करे जब मृत्यु में वास।
सट्टे में धन हारकर, नर सहता उपहास।।

९

चौथे घर में भानु हो, मिले पिता से धन।
पंचमस्थ हो शशि यदि, होता मातृ-निधन।।

१०

शशि, भानु पर एक संग, शनि सांप का पाश।
विद्‌या, धन, सामर्थ का पल में होता नाश।।

तेज बुद्धिमता

११

शुभ राशि हो तनयगत, शुभ से पावे शक्ति।
तब योग्य जातक करे मेधा की अभिव्यक्ति।।

१२

शुभ कर्त्तरी या तुंग राशिगत पत्री में सुतनायक।
बुद्धिपूर्ण तब जन्म से ही होता वह जातक।।

१३

केन्द्र, कोण में देवगुरु जब रहता विद्‌मान।
तब होता जातक सदा अतिशय ही बुद्धिमान।।

१४

शुभ ग्रहों के भाव में पंचमपति विद्‌मान।
देवगुरु तपगत रहे, नर हो मेधावान।।

१५

चन्द्रपुत्र हो तनय में, पंचमपति बलवान।
तब जातर होकर रहे, खूब अधिक मतिमान।।

१६

केन्द्रस्थ सुतनाथ पर दृष्टि रहा गुरु भेज।
तब जातक होता सदा अध्ययनशील व तेज।।

१७

श्रेष्ठ वर्ग में पंचमपति करता यदि प्रयाण।
शुभ से होवे दृष्ट तो जातक मेधावान।।

१८

मृदु षष्टियंशगत तनयपति, केन्द्र में हो बलवान।
तब जातक होकर रहे अतिशय मेधावान।।

१६

गोपुरादि अंशों में हो तनय भवन का नायक।
सुर पूजित से दृष्ट हो, मेघावी हो जातक।।

२०

श्रेष्ठ वैशेषिक अंश में यदि रहे सुरपण्डित।
पंचमपति शुभयुत रहे, जातक मेधा-मण्डित।।

२१

शुभ-कर्त्तरी सुत भाव का, शुभ युक्त पुत्रेश।
बुधि-विशारद मनुज पर रहे प्रसन्न गणेश।।

२२

शुभ अंशगत बुध हो, पंचमपति बलशाली।
केन्द्र, कोण में युति करे, जातक प्रतिभाशाली।।

२३

केन्द्र में पंचमपति संग,
कोई शुभ ग्रह साथ हो।
चन्द्र सुत हो कामिनी में
नर वो विद्यानाथ हो।।

२४

शुभ-कर्त्तरी में हो पुत्रपति
आत्मज में शुभ का वेश हो।
सुर पुरोहित केन्द्र, कोण में
मेधा-शक्ति विशेष हो।।

२५

नवमांश में पुत्रेश जिस
भी राशि में है राजता।
उस राशि का स्वामी पुनः
यदि केन्द्र-कोण में साजता।।
फिर देखता उनको कहीं
से जब कभी पंचमपति।
उस ज्ञानघन जातक को
होती सिद्ध माता भारती।।

२६

शुभ ग्रह को मिलता हो कभी
यदि तनय गृह का आधिकार।
और सुत में वास करता
देव-गुरु जब साधिकार।।
तथा शुभ-कर्त्तरी से सज्जित
हो यदि पंचम भी भाव।
जातक को देते तब विधाता
बुद्धि सुन्दर, शुचि स्वभाव।।

२७

सुतेश एवं सोमसुत को
प्राप्त यदि गोपुर, मृदु।
शुभ विक्ष भी रहता अगर
तो बुद्धि भी होती मृदु।।

२८

पुत्रेश के नवमांश पति पर
शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।
अंश वैशेषिक धरे तो
तीक्ष्ण बुधि की सृष्टि हो।।

२९

पंचमपति और सौम्य का
हो केन्द्र में द्रेष्कानपति।
वागीश से हो दृष्ट गर
तो नर बने विद्ययापति।।

३०

केन्द्र, कोण में तनयपति को
देखता हो शशि-सुपुत्र।
बुद्धि होती तीव्र नर की,
पकड़ ले संकेत-सूत्र।।

मन्द बुद्धिमत्ता

३१

सुतभाव में जा बैठता है
जब कभी दिनकर तनय।
यथा विधि लग्नेश को
देखता वह उस समय।।
पंचमपति भी डट रहा हो
राहु के ही प्रभाव में।
श्री हीन जातक जी रहा
वह ज्ञान के ही अभाव में।।

३२

सुतनाथ यदि हो बंध रहा
पापी ग्रहों के पाश में।
और पंचम भाव सजता
राहु, शनि के वास में।।
श्यामगात्र भी रम रहा
जो राशि स्थिर है कहीं।
हीन मेधा से मनुज की
बुधि होती थिर नहीं।।

३३

शुभ प्रभाव से हीन सुत
में, मन्दि, मन्द, भुजंग हो।
मलिन ग्रह की दृष्टि पा
सुतनाथ, सौम्य कृषांग हो।।
होरादि में पुत्रेश को जब
मलिन अंश ही प्राप्त हो।
तब क्षीण मेधा-शक्तिवाला
मनुज दुःख से व्याप्त हो।।

३४

सुतेश का षष्टियंश मलिन,
आत्मज अशुभ का वास हो।
मलिन युत सुतनाथ हो तो
मेधा-शक्ति की नाश हो।।

३५

नीच अस्त या शत्रुक्षेत्री
दुष्ट दृष्ट सुतेश हो।।
मलिन हो षष्टियंश उसका
बुद्धि सारा शेष हो।।

३६

केन्द्र अथवा कोण में निशानाथ संग दिनकर।
मन रहता चंचल सदा, मेधा होती कमतर।।

३७

पत्री में जब केन्द्रगत होता देव पुरोहित।
चंचलमति जातक बने, मेधा होय तिरोहित।।

३८

लग्नस्थ शशि को देखे शनि अथवा अंगारक।
बुद्धिहीन ही होता है प्रायः ऐसा जातक।।

३९

क्रूर षष्टियंश में जब रहे आत्मजगृह का नायक।
मेधा-शक्ति से हीन हो, प्रायः ऐसा जातक।।

४०

भानु, भौम व सौरि से रहता दृष्ट निशाकर।
मन्द बुद्धि होता मनुज, सारी प्रतिभा खोकर।।

४१

भृगु दृष्ट त्रिक् भवन में जब होता यदुनायक।
कम अक्ल व विस्मयशील होता ऐसा जातक।।

४२

मलिन संग में हो यदि आत्मज गृह का नायक।
बात-बात में विस्मय तब प्रकट करे वह जातक।।

४३

केन्द्र भवन में हो अगर गुलिक, सौरि, शशि तिष्ठित।
तनयनाथ त्रिक्भवन में, जातक हो तब जड़मति।।

४४

सहजनाथ जब हो रहा सौरि दृष्टि से सूर्ख।
सुरपण्डित निर्बल रहे, जातक हो तब मूर्ख।।

४५

धन भवन में गुलिक संग यदि रहे दिननायक।
सुरपूजित हो मलिन संग, जड़मति होता जातक।।

४६

मलिन ग्रह संग द्रव्यपति वसता हो आकाश।
जड़बुद्धि जातक सहे, सभा मध्य उपहास।।

४७

स्वरमान संग युत रहे जब पत्री मध्य सुतेश।
सभा बीच तब मनुज की प्रतिभा होती शेष।

४८

सुतगत शनि से दृष्ट हो, लग्ननाथ व सुतपति।
पाप अंशगत सोमसुत, जातक होता जड़मति।।

४९

गुलिक संग में सौरि जब सुतगृह रहे निवेसित।
शुभ विवर्जित हो अगर, जातक होता जड़मति।।

५०

मलिन संग वागीश करे आत्मजगृह में वास।
मलिन अंशगत तनयपति, होता बुद्धि विनाश।।

स्मरण-शक्ति

५१

शुभ विवर्जित तनय गृह में
मन्दि, मन्द, भुजंग हो।
सुतनाथ पाप से दृष्ट हो
तो याद-शक्ति अपंग हो।।

५२

अशुभ ग्रह के ग्राह से
सुतनाथ जब होता ग्रसित।
उनके मलिन षष्टियंश में,
यदि तनयपति होता व्यथित।।

शुभ ग्रहों के संग लेकिन
सोम सुत जब हो मुदित।
तब याद करके पाठ जातक
भूल जाता सब झटित।।

५३

सुतनाथ शुभ को संग ले
जब अंश गोपुर का गहे।
शुभ प्रभाव में सौम्य हो
तो याद सब हरदम रहे।।

५४

अग्नि अथवा वायु तत्व में
श्याम गात्र अखण्ड हो।
सुत भाव शुभ ग्रह से सजे
तो याद-शक्ति प्रचण्ड हो।।
भूमि एवं तोय तत्व में
क्षुब्ध हो शीतांशु नन्दन।
पर बुध यदि हो कामिनी
में, सबल होता स्मरण।।

५५

देवेन्द्र पूज्य से दृष्ट शुभ
ग्रह आत्मज में हो प्रविष्ट।
सुतनाथ सबल शुभांश हो
तो मेधा होती अति विशिष्ट।।

५६

लग्ननाथ से दृष्ट हो
यदि देवगुरु का मेजबान।
द्रव्यपति बलयुक्त हो
जातक बने अति बुद्धिमान।।

५७

यजमान गुरु जब तनयपति
संग अंश गोपुर का गहे।
होता यदि सुतभाव में तो
कालगति सारा कहे।।

उदर-रोग

५८

पाप विक्षित तनय गृह व
मलिन पंचमपति जो होता।
योग हो षष्ठेश से गर
तब उदर में रोग होता।।

५९

पुत्रेश के नवमांशपति का
षष्टियंश अगर मलीन हो।
तब पेट में हो व्याधि या
शक्ति-पाचन क्षीण हो।।

६०

निधन मे ही तनयपति संग
निधननाथ का योग हो।
अर्धकाय से दृष्ट हो वह
तब उदर में रोग हो।।

बीज स्फूट

६१

पुरुष कुण्डली में प्रथम, बीज करें स्पष्ट।
होता यह कमजोर गर, संतति होय सकष्ट।।
सूर्य, शुक्र और गुरु की राशि, अंश लें जोड़।
प्राप्त करें वह राशि जो बनता इसको तोड़।।
विषम राशि हो यह यदि, बीज बने बलशाली।
सम राशि आता अगर, कुक्षि गर्भ से खाली।।
विषम राशि के बीज का, विषम होय नवमांश।
निश्चय मिलता पुरुष को, संतति सुख का अंश।।
पर दोनों में एक जो सम-विषम बनि जाय।
चिकित्सा के फलस्वरूप, नर संतति सुख पाय।।
लेकिन दोनों दें अगर सम राशि का बोध।
नहीं करे संतान की, ऐसा मनुज प्रबोध।।

क्षेत्र-स्फुट

६२

वनिता की पत्री में भी, करें क्षेत्र की गणना।
होता यह कमजोर तब, संततिहीन ही कहना।।
कुज, सोम व जीव की, राशि अंश लें जोड़।
प्राप्त करें वह राशि जो बनता इसको तोड़।।
सम राशि आता यदि, क्षेत्र का उचित विकास।
विषम राशि होता यदि, व्यर्थ ही जाय प्रयास।।
सम राशि के क्षेत्र का, सम ही हो नवमांश।
परम विलक्षण कुक्षि यह, संतति करे प्रवाश।।
किन्तु इन्हीं में एक जब सम-विषम हो जाय।
उचित चिकित्सा से, सदा, वह माता कहलाय।।
पर दोनों हो विषम अगर, क्षेत्र बने बेजान।
गर्भाधारण हो नहीं, वधू को, कहना मान।।

शुभ-अशुभ विचार

६३

क्षेत्र एवं बीज पर शुभ - अशुभ का वेश।
बल बढ़ता -घटता सदा, ज्योतिष का आदेश।।
बीज से पंचम, नवम क्षेत्र से, पापी रहा समाय।
राहु आदि का योग हो, तब अनिष्ट हो जाय।।
सप्त वर्ग, सप्तांश में, पाप का अगर प्रभाव।
दुष्ट, क्रूर ग्रह हो अधिक, गर्भ का रहे अभाव।।

विशेष-विचार

३९

लग्न तथा यम कण्टक का, राशि अंश ले जोड़।
संतान गुरु वह राशि जो बनता इसको तोड़।।
नव दोषों से युक्त हो, जब सन्तान गुरु।
अविलम्ब परिहार तब, वे जन करें शुरु।।

सन्तान लाभ

६५

गो, छाग, कुलीर हो तनय भवन में व्याप्त।
राहु, केतु से युत रहे, संतति हो झट प्राप्त।।

६६

सप्तमेश के नवमांशपति को जब देखे लग्नेश।
धन, धर्मपति सबल हो, सन्तति लाभ विशेष।।

६७

शुभ युत, शुभ दृष्ट हो तनयभाव, सुतनायक।
लग्नेश्वर हो लाभगत, संतति पाता जातक।।

६८

लग्नेश हो तनयगत, सुतपति गुरु बलवान।
भाग्यवान जातक बने, ज्यादा सन्ततिवान।

६९

लग्नेश्वर से दृष्ट गुरु सुत में करे प्रवेश।
सबल रहे सुतनाथ तो संतति लाभ विशेष।।

७०

बलशाली धननाथ हो पंचमगृह विद्मान।
सुधादृष्टि गुरु की पड़े, जातक सन्ततिवान।।

७१

एक दूजे को देखते लननाथ, सुतनायक।
पाप विवर्जित हों यदि संतति पाता जातक।।

७२

तनय, लग्नपति केन्द्र में शुभ संग करे प्रयाण।
सबल रहे धननाथ तो नर पाता सन्तान।।

७३

पुत्रेश का नवमांशपति शुभ से होवे विक्षित।
संतति सुख तब मनुज को हो व्यवधान रहित।।

७४

प्रथमेश संग धर्मेश जब मद में करे प्रवेश।
द्रव्यपति हो केन्द्र में, सन्तति लाभ विशेष।।

७५

पर्बतादि अंशों में हो सुत, तप, तनु के नायक।
बिना किसी व्यवधान के संतति पाता जातक।।

७६

जीव का नवमांशपति केन्द्र में करे प्रयाण।
सुतनायक से दृष्ट हो, मिलता तब सन्तान।।

७७

तनय, तनयपति, देवगुरु, पत्री में शुभ होय।
निश्चय संतति प्राप्त हो, संशय करे न कोय।।

७८

लग्नेश सुतगत रहे, सुतेश, जीव बलवान।
निःसंशय उस जातक को प्राप्त होय संतान।।

७९

सुतनायक सुरुगुरु हो लग्नेश्वर से दृष्ट।
तब जातक गृह संतति से भर देता अदृष्ट।।

८०

वैशेषिक में जब रहे, पुत्रेश, सुरेश-पुरोहित।
निसंदेह ही जातक को प्राप्त होय तब संतति।।

८१

देवेन्द्र पूज्य से दृष्ट द्रव्यपति, वसता यदि तनय।
जातक के संतति सुख में रहे न कोई संशय।।

८२

लग्नेश, पुत्रेश युत रहे या करे दृष्टि विनियोग।
निःसंशय तब जातक को हो संतति का भोग।।

८३

उदय, तनयपति एक संग, केन्द्र में करे प्रवेश।
कुटुम्बेश बलयुक्त हो, संतति लाभ विशेष।।

८४

सुतेश का नवमांशपति शुभ दृष्ट या युक्त।
निसन्देह सुत लाभ हो, योग बहुत उपयुक्त।।

८५

अंगेश, तपेश एक संग काम में करे प्रवेश।
द्रव्यपति हो लग्न में, संतति लाभ विशेष।।

८६

चन्द्र, गुरु और लग्न से जो-जो पंचम भाव।
शुभ ग्रहों का जब पड़े उन पर पुष्ट प्रभाव।।
अमर पूज्य शुभयुत हो, पंचमपति बलवान।
मिले अवश इस हाल में जातक को संतान।।

८७

पंचमपति हो अशुभ ग्रह किन्तु उसी घर जाय।
बलपूरित इस भाव से जातक संतति पाय।।
सौम्य ग्रहों से भी अगर उसका हो संयोग।
बहु संतति के लाभ हित परम विलक्षण योग।।

८८

पंचम गृह में जब करे सबल द्रव्यपति वास।
देव-पूज्य का पड़ रहा उस पर यदि प्रकाश।।
इस उत्तम संयोग से, भाव का बढ़ता मान।
जातक सुख से युक्त हो, पाकर बहु संतान।।

८९

शुभ अंशगत पंचमपति हो, पंचम घर बलवान।
या शुभ ग्रह से बढ़ रहा, हो उनका सम्मान।।
शुभ अंशों में सुर-सेवित करता यदि प्रयाण।
तब निश्चय ही योग यह संतति करे प्रदान।।

९०

सप्तमांश में तनय भाव में देव पुरोहित जाय।
तथा वहीं लग्नेश भी शुभ अंशों में समाय।।
जन्म-चक्र में तनयपति होता जब बलवान।
सारा बाधा भंग कर, प्रदत्त करे संतान।।

९१

सुतेश का नवमांश चक्र में होता जो मेजबान।
फिर उसका नवमांशपति करता तनय प्रयाण।।
दस वर्ग में तनय नाथ का बढ़ता हो अभिमान।
तब निश्चय यह जातक को देता है संतान।।

६२

पुत्रेश तथा लग्नेश का आपस में परिवर्तन।
अथवा निज-निज राशि में, वे करते शुभ-नर्त्तन।।
तनय भाव, भावेश को, सुर गुरु रहा हो देख।
प्राप्त होय संतान तब, मिटे न विधि का लेख।।

६३

उदय, तनय के नाथ हों, भाग्य भवन में युक्त।
तप, कोष के नाथ रहे आगम में संयुक्त।।
किसी अशुभ की दृष्टि से, पंचम घर हो मुक्त।
संतति लाभ का योग यह, है अनुपम उपयुक्त।।

६४

कान्तापति नवमांश में, बैठा हो जिस भाव।
उसके स्वामी पर पड़े, नवमपति का प्रभाव।।
लग्न तथा धननाथ का, उनसे हो व्यवहार।
जातक के घर हो सदा, संतति का विस्तार।।

सन्तान में विलम्ब

६५

चन्द्र यदि हो रम रहा मृत्यु भाव के संग।
तथा लगन में मुदित मन बैठे लोहितांग।।
अल्प-पुत्री राशि में, दिनकर हो जब ढेर।
तब जातक को होता है, पुत्र-लाभ में देर।।

६६

अल्प-पुत्री राशि से सजा हो पंचम भाव।
तथा लग्न पर पड़ रहा, छायात्मज का प्रभाव।।
व्ययगत वक्र, गुरु गूहयगत, ऐसा बनता योग।
तब विलम्ब से हो सदा, पुत्र-लाभ का भोग।।

६७

एक संग ही कई ग्रह, उदय भवन में जाय।
और गुरु से पंचम में, पापी रहा समाय।।
तथा करे संयोग जब मरण संग मृगांक।
तब देर से खेलता, पुत्र मनुज के अंक।।

९८

पापी ग्रह सुतभवन में, नभ में शुभ विद्मान।
तब विलम्ब से होता है जातक को सन्तान।।

९९

सुतेश नीचगत, सुतभवन सौम्य, शिखी से भ्रष्ट।
धर्माधिप हो लग्न में, सन्तति होय सकष्ट।।

१००

पापयुत गुरु अम्बुगत, सुत में हो यदुनायक।
तब तीसवें वर्ष में सन्तति पाता जातक।।

१०१

सिंह, छाग, घट लग्न हो पापी ग्रह से भ्रष्ट।
लोहितांग, रबि विवल हो, संतति होय सकष्ट।।

१०२

कर्कस्थ शशि संग रहे पाप दृष्ट दिनमान।
सौरि दृष्ट हो कुज यदि, गर्भ में हो व्यवधन।।

१०३

तप, तनय, तनुनाथ हो त्रिकभवन में व्याप्त।
तब विलम्ब से मनुज को संतति होती प्राप्त।।

मात्र पुत्र संतान

१०४

आत्मजस्थ हो कर रहे, उष्ण, जीव व सौम्य।
अथवा सुत गृह पर पड़े, इनकी दृष्टि अदम्य।।
शक्तिमान हों ये सभी, बलशाली पुत्रेश।
तब करता है गर्भ में, केवल पुत्र प्रवेश।

१०५

पत्री में सुत नायक जब रहे उच्च स्थान।
अथवा शुभ से युक्त हो, धन में करे प्रयाण।।
तप अथवा तनय को गुरु दृष्टि हो लब्ध।
तब जातक को होता है, मात्र पुत्र उपलब्ध।।

१०६

गुरु किसी भी भाव में धरे उच्च का वेश।
स्वरभानु को साथ ले, बैठा हो वित्तेश।।
धर्म भाव धर्मेश युत बना रहे जो नेक।
ऐसे जातक को मिले, बहुधा पुत्र अनेक।।

१०७

बल पूरित, शुभ युत रहे, पत्री में पुत्रेश।
कर्म-भवन में रम रहा जब स्वयं कर्मेश।।
पंचम अथवा नवम हो देव गुरु से दीप्त।
पुत्र अनेकों प्राप्तकर, जातक रहता तृप्त।।

१०८

पंचमपति और जीव का विषम राशि हो वास।
भौम, भास्कर दोनों का, विषम राशि आवास।।
तथा विषम नवमांश में इनका हो जब सूत्र।
तब जातक को प्राप्त हो मात्र पुत्र ही पुत्र।।

१०९

पुरुष ग्रह पुत्रेश हो, सुत में राशि विषम।
दोनों का नवमांश भी जब हो राशि विषम।।
पुरुष ग्रहों के संग ही, इनका हो व्यवहार।
मात्र पुत्र का जातक गृह में होता है भरमार।।

११०

ऊपर वाले योग में सुतगत हो वाचांगपति।
जातक के घर में सदा पुत्रों की संख्या बढ़ती।।

१११

नवमांश चक्र में जो होता
है कान्तापति का स्वामी।।
जन्म-चक्र में उसे देखता
धन, तप, तनु का स्वामी।।
मात्र-पुत्र की सृष्टि करे
तब गर्भ में अन्तर्यामी।।

मात्र पुत्री संतान

११२

सोम स्वराशि का जीव उच्च
का, सुत ग्रह करे निवास।।
तब केवल पुत्री धन का
गर्भ में होय विकास।।

११३

स्त्री-ग्रह सुतेश हो, सुत में सजे सम राशि।
इन सबका नवमांश भी, जब होता सम राशि।।
स्त्री-गृह के संग ही जब करते व्यवहार।
तब जातक को प्राप्त हो, पुत्री-रत्न अपार।।

११४

सुत में समराशि हो, सौरि, सौम्य ले वास।
होरादि में भी करें, सम राशि में प्रवास।।
शीत-रश्मि की यदि पड़े उनके ऊपर दृष्टि।
तब होता है गर्भ में तनुजा की ही सृष्टि।।

११५

ऊपर वाले योग में, सुतगत हो वाचांगपति।
तब जातक गृह में सदा दुहिता ही दुहिता होती।।

११६

लाभ भाव में जब करे, सोम, सौम्य, कवि वास।
ऐसा जातक तब करे बस पुत्री की आस।।

प्रथम संतान

११७

कल्प, कोष या सहज में
लग्नेश जब हैं शोभता।
प्रथम गर्भ से पुत्र धन
जातक सदा ही प्राप्त करता।।
और वसता वह किसी
विधि से यदि पाताल में।
तब सुता होती सुत से
पहले, आने वाले काल में।।

११८

जब शक्तिशाली क्रूर ग्रह
जा वास आगम में करे।
तनय में रजनीपति संग
दैत्य - गुरु संगम करे।।
योग ऐसा जो दिलाता
मान जातक को पिता का।
पर प्रथम संतान में हो
लाभ निश्चय ही सुता का।।

११६

दुश्चिक्य ग्रह में जब कभी
है रोहिणेय प्रयाण करता।
पश्चात् दो पुत्रों के वह
पुत्री भी एक प्रदान करता।।

१२०

तनयगत अलि या कुलीर में
राजता जब भी सुधाकर।
पिता पद मिलता मनुज को
पहले पुत्री धन ही पाकर।।

१२१

सुतेश स्त्री-राशि में स्त्री
ग्रहों संग राश करता।
पुत्री प्रथम संतान में देता
नरों को है विधाता।।

१२२

कोष, तनय में जब गढ़े लग्नेश्वर निज सूत्र।
तब जातक को प्राप्त हो प्रथम कुक्षि से पूत्र।।

१२३

द्विस्वभावगत हो यदि शशि, शुक्र अंगारक।
प्रथम कुक्षि से पुत्र ही प्रायः पाता जातक।।

१२४

पापी ग्रह लाभस्थ हो, सुतगत सित, यदुनायक।
प्रथम गर्भ से पुत्री ही तब पाता है जातक।।

निःसंतान योग

१२५

लग्न, चन्द्र व जीव से
जो पांचवा होता वही।
जब रिक्त होकर शुभ गुणों
से मलिन संग रहता कहीं।।
अथवा बने उनका कभी
जब योग कर्त्तरी–पाप का।
या कि उनमें रम रहा
स्वामी जो है त्रिक्–भाव का।।
अथवा पड़े जाकर कहीं वो
पाप ग्रह की दृष्टि में।
संतान जातक को नहीं
मिलता है तब इस सृष्टि में।।

१२६

स्वामी सुख, कुटुम्ब का
जब अंत्य ग्रह में राजता।
रन्ध्रेश उनके संग ही
जब उसी घर में साजता।।
और उन पर दृष्टि हो
पापी ग्रहों का जो कहीं।
जातक को तब इस हाल
में, संतान सुख मिलता नहीं।।

१२७

भानु सुत का खेल चलता
हो तनय में बैठकर।
और उसको देखता हो
लाभगत होकर सुधाकर।।
पुत्रेश हो विचलित पड़ा
स्वरभान से संयुक्त होकर।
जातक बिताता दिन है तब
संतान सुख से रिक्त रहकर।।

१२८

सुतभाव शेभित हो रहा हो
अल्प-पुत्री राशि पाकर।
मुदित मन से तथा उस में
राजता हो जब दिवाकर।।
आद्य में अविनय एवं
रन्ध्र में दिनकर तनय।
अभाव में संतान के
जातक जिये वह हर समय।।

१२९

रन्ध्र में यदि वक्र रमता,
लग्न में सजता प्रभाकर।
लग्न का स्वामी बसे जब
त्रिक्-भवन में कहीं जाकर।
सैंहिकेय से सुत सजा हो
विघ्न में हो विघ्नघन।
सदा संततिहीन नर
जीता बहुत जीवन करुण।।

१३०

सुत भाव को पीड़ित करे
खुद बैठ करके लोहितांग।
अंत्य सज्जित हो रहा हो
देव गुरु को पाके संग।।
रन्ध्र में जाकर विराजे
धीमी गति वाल अपंग।
सन्तान सुख से हीन नर
में हो नहीं कोई उमंग।।

१३१

आत्मज गृह में वक्र हो, लग्न में हो दिनमान।
जीवन में जातक रहे, प्रायः निःसन्तान।।

१३२

पाप दृष्ट गुरु हो यदि पंचम में विद्मान।
धर्मस्थ हो राहु तो नर हो निःसन्तान।।

१३३

लग्न अथवा द्यून में पंचपति, बलवान।
हो अरीश जब साथ तो जातक निःसंतान।।

१३४

दया, मान में हो अगर छायासुत, अंगारक।
पाप दृष्ट सुत भाव हो, निःसंतति हो जातक।।

१३५

सित, असित व वक्र हो जायाभवन प्रविष्ट।
निर्बल हो सुतनाथ तो संतति लाभ विनिष्ट।।

१३६

पंचमस्थ होकर रहे राहु, भौम, दिनमान।
सुख-सम्पदायुत मनुज, रहता निःसंतान।।

१३७

कारकांश से द्यून में तनयनाथ आसीन।
पड़ता पाप प्रभाव तो नर हो सन्तानहीन।।

१३८

पुत्रेश संग सुरवन्द्य जब त्रिकगृह करे प्रयाण।
पापी ग्रह हो तनय में, नर हो निःसन्तान।।

१३९

पंचमस्थ शनि से रहे दृष्ट यदि सुतनायक।
तब विमुख होकर रहे, संतति सुख से जातक।।

१४०

विक्रमपति हो तनय में पापी ग्रह से विक्षित।
तब जातक रह जाता संतति सुख से वंचित।।

१४१

सुतेश, जीव त्रिकभवन में करता यदि प्रवास।
पड़ता पाप प्रभाव तो संतति सुख हो नाश।।

गर्भपात के योग

१४२

लग्नस्थ हो राहु तथा सुत में भानु गमन।
सुरपण्डित बलरहित हो, होता गर्भ-पतन।।

१४३

तनय भावगत जीव हो, निधन पंगु से भ्रष्ट।
भव भवन का राहु करे गर्भस्थ शिशु नष्ट।।

१४४

तनय भवन में जब रहे पापी ग्रह प्रविष्ट।
त्रिक् में हो सुतनाथ तो होता गर्भ विनिष्ट।।

१४५

धरापुत्र से दृष्ट हो आत्मज में दिनमान।
सहजस्थ हो शनि अगर नष्ट हो गर्भाधान।।

१४६

तनय भावगत हो यदि पत्री में रविनन्दन।
पड़ता पाप प्रभाव तो होता गर्भ-पतन।।

१४७

नीच, अस्त सुतनाथ जब त्रिक् में करे भ्रमण।
पाप प्रभाव लग्नेश पर, होता गर्भ-पतन।।

१४८

कोणस्थ सुरपूज्य जब रहे अशुभ से दृष्ट।
सुतपति हो निर्बल अगर, होता गर्भ विनिष्ट।।

१४९

कुज राशिगत लग्नपति, षष्टम में पुत्रेश।
बल विवर्जित देवगुरु, गर्भ में होता क्लेश।।

१५०

कन्या लग्न में जब रहे भानु संग स्वरभान।
धरापुत्र हो उच्च का, गर्भ होय अवसान।।

१५१

कामस्थ अहिराज हो, उच्च रहे रविनन्दन।
भवभवन का भौम तब करता गर्भ-पतन।।

१५२

धरापुत्र पाताल में, रिपु में हो रविनन्दन।
तब भामिनी का होता प्रायः गर्भ-पतन।।

१५३

षष्टेश संग षष्टमगृह रविसुत करे प्रवास।
सप्तमस्थ हो सोम तो होता गर्भ विनाश।।

वंश-विच्छेद

१५४

सोम अपनी कला से सजा रहा आकाश।
और करे लग्नेश जब चन्द्रपुत्र संग वास।।
अपना ही गुण काम में, करता कवि तलाश।
प्रलयंकारी योग यह, करे वंश का नाश।।

१५५

सुतगत सूर्य, मूर्तिगत मंगल, निधन बसे रविनन्दन।
वंश विनाशक योग से, जीवन में हो क्रन्दन।।

१५६

नाश, तनय और अंत्य में पापी ग्रह समाय।
अति दुश्तर इस योग से वंश नाश हो जाय।।

१५७

आत्मजस्थ लग्नेश तथा कल्प, सोम पर पापचार।
अति अपकारी योग यह, वंश का हो संहार।।

१५८

स्त्री राशि में चन्द्र हो, पापयुत या दृष्ट तनय।
सुत में बिन्दु पचीस से कम, होता वंश विलय।

१५९

शशि तनय सुतगत रहे, तप में हो स्वरभान।
सहजस्थ गुरु, लग्नस्थ शशि, वंश करे अवसान।।।

१६०

क्षत, नभपति हो लग्न में, सुखपति रन्ध्र समाय।
उदय, तनयपति अरिभवन, देता वंश नशाय।।

१६१

लग्न छोड़कर अन्य केन्द्र में चन्द्रपुत्र, लग्नेश।
पड़ता पाप प्रभाव तो वंश वृद्धि हो शेष।।

१६२

तनय, रन्ध्र या रिस्फ में पापी करे प्रवास।
जन्मचक्र का योग यह करता वंश विनाश।।

१६३

लग्न भवन में सोम, गुरु करता यदि विहार।
द्यून भवन में सौरि, कुज वंश करे संहार।।

१६४

सारे पापी ग्रह यदि अम्बु में करे प्रवेश।
वंश नाश होकर रहे, ज्योतिष का संदेश।।

१६५

रन्ध्र, रिस्फ, तनु, तनय में भीषण पापाचार।
जन्म-चक्र का योग यह वंश करे संहार।।

१६६

रन्ध्र, रिस्फ, तनु, पाप ग्रसित, सुतगत हो यदुनायक।
वंश नाश के योग से अभिशापित हो जातक।।

१६७

शशि से अष्टम भाव में पापी सकल प्रविष्ट।
मलिन अंशगत देवगुरु, होता वंश विनिष्ट।।

१६८

पंचम गृह में हो यदि भीषण पापाचार।
पंचमेश, कारक विवल, वंश होय संहार।।

१६९

लग्नस्थ कुज, निधनस्थ शनि, सुतगत हो दिनमान।
वंशनाश का जीवन में जुटता सब सामान।।

१७०

रिस्फ अथवा काम में सौम्य, शुक्र का वास।
पापी ग्रह पाताल में करता अगर प्रवास।
सुतभावगत गुरु हो अशुभ दृष्टि से भ्रष्ट।
जातक का कुल वंश तब होकर रहता नष्ट।।

सन्तान गोद लेना

(पंचमेश का लग्नेश या कामेश से कोई संबंध न हो।)

१७१

निर्बल पंचमपति हो, लग्नेश कामेश से दूर।
पोष-पुत्र अपनाने को जातक हो मजबूर।।

१७२

अल्प पुत्री राशि में सुतपति करे निवास।
मन्द, मन्दि से दृष्ट हो, पोषपुत्र की आस।।

१७३

कल्पेश और तपेश में, बने षडाष्टक योग।
मन्द, मन्दि से दृष्ट हो, पोषपुत्र का योग।।

१७४

सौरि, सौम्य के संग करे, पंचमेश जब वास।
और पुनः नवमांश में, शनि भावों में प्रवास।
मलिन प्रभाव से मन्द के होय नहीं संतान।
पोष-पुत्र से ही सजे जातक का अरमान।।

१७५

गुरु वर्ग में गुरु से पंचम घर पर देते ध्यान।
शुभ बिन्दु कितने मिले, किसका कितना दान।।
शनि राशि के ग्रहों से, मिले अधिक सहयोग।
तब जातक के जीवन में, पोष-पुत्र का योग।।

१७६

शनि राशि, नवमांश में हो सुतगत निशिमान।
शुभ से होता युत तो हो दत्तक सन्तान।।

१७७

मन्द, भौम, पाताल में रचे एक संग सूत्र।
जीवन गति आगे चले पाकर दत्तक-पुत्र।।

१७८

सौरि, सौम्य के साथ हो पंचम में यदुनायक।
तब दत्तक-संतान से करे तोष वह जातक।।

संतान-संख्या

१७९

सुतग्रह तथा सुतेश का, जो नवांश है भुक्त।
उसमें जितना मलिन ग्रह, उसको करके मुक्त।।
शेष अंक जितना बचे, कर के सब व्यवहार।
उतनी संतति जातक को, ज्योतिष कहे विचार।।

१८०

जितना ही नवमांश हो, तनयनाथ को प्राप्त।
उतना ही संतान वह जातक करता प्राप्त।।

१८१

पुत्रेश रहे नवमांश में, लग्न से जितना दूर।
उतनी संतति प्राप्त वह जातक करे जरुर।।

१८२

जितने किरणों से सजे, सुरगुरु और सुतेश।
उतने संतति से सजे, जातक का परिवेश।।

१८३

गुरु के अष्टक वर्ग का करके सूक्ष्म विवेचन।
जातक के संतति संख्या का करते ज्ञान सुधीजन।।

संतान प्राप्ति का समय

१८४

तनय भाव से युत ग्रह, या जो उसको देखे।
उनकी दशा भुक्ति है, संतति के हित लेखे।।

१८५

पंचम गृह, पुत्रेश पर गुरु जाय गोचर में।
संतति लेता जन्म है तब जातक के घर में।।

१८६

पंचमेश की दशा, भुक्ति में, हो सकता संतान।
लग्ननाथ या सप्तम स्वामी, देता यह वरदान।।
गुरु अपनी दशा-भुक्ति में, करता पुत्र प्रदान।
राहु भी कर सकता है, इसी भांति कल्याण।।

१८७

लग्नेश, सुतेश, कामेश के राशि-अंश का योग।
उसके अन्दर चल रहा, जिस नक्षत्र का भोग।।
उस नक्षत्र के स्वामी की महादशा हो हितकर।
पंचमपति की भुक्ति दे, संतति जातक के घर।।

१८८

वागीश से पंचम भावपति करे जहां विश्राम।
अथवा वह नवमांश में जहां करे आराम।।
उस राशि या कोण से गुरु जब करे प्रयाण।
तब प्रायः वह देता है, जातक को संतान।।

१८९

दिनकर एवं पुत्रपति का जो होता मेजबान।
उनका राशि, अंश जोड़कर करते पुनः निदान।।
उसी अंश पर गोचर में, जाता जब वागीश।
जातक को संतान - वर, तब देता है ईश।।

१९०

संतान गुरु, संतान मन्दि, यम-कण्टक का योग।
बनता जो नक्षत्र, नवांश करके सारा भोग।।
उसके ऊपर से होती, जब सुर गुरु की यात्रा।
मिलता तब संतान है, सुख की बढ़ती मात्रा।।

१९१

गुरु के शोड्यापिण्ड तथा शुभ विन्दु का गुणन।
उसका फिर सत्ताइस से करते पहले भाजन।।
प्राप्त भागफल त्यागकर, कर लें शेष-ग्रहन।
अश्वनी से गिनकर उस नक्षत्र का करें वरन।।
गोचर का गुरु उसके ऊपर करता जभी भ्रमण।
तब सुन्दर संतान मिले, सुखमय होता जीवन।।

१९२

गुरु के शोड्यापिण्ड को सात से करें गुणा।
सत्ताइस से संस्कार कर, जो नक्षत्र बना।।
उसके ऊपर से गुरु, करता जभी प्रयाण।
तब देता भगवान है, जातक को संतान।।

१६३

पत्री में पहले करें सन्तान गुरु की गणना।
और देख लें ध्यान से क्या नवमांश बना।।
गोचर का गुरु वहां से करता जभी प्रयाण।
तब भी दे सकता है वह जातक को सन्तान।।

पिता-पुत्र सम्बन्ध

१६४

लग्नेश तथा पुत्रेश यदि कहीं रहे संयुक्त।
अथवा वो नवपंचम हों, मलिन-दृष्टि से मुक्त।।
पिता-पुत्र में प्रेम हित योग परम हितकारी।
स्नेहवान हो पिता सदा, पुत्रा हो आज्ञाकारी।।

१६५

प्रथमेश तथा पुत्रेश में होवे दृष्टि परस्पर।
अथवा वे नवमांश में, हो एक-दूजे के घर।।
एक-दूसरे से वे दोनों होवे नहीं षडाष्टक।
तात सदा तोषक होता, तनय तात का सेवक।।

१६६

पुत्रेश देखता लग्न को या जाकर बसे लगन।
अथवा खुद लग्नेश्वर ही जाये तनय-भवन।।
या फिर उनके बीच हो, यदि दृष्टि-परिवर्तन।
तब करता है पुत्र सदा अपने तात का वन्दन।।

१६७

आरूढ़ लग्न से पत्री में नव-पंचम स्थान।
पिता-पुत्र में प्रेम का, देते विपुल प्रमाण।।
इनके नायक में रहे केन्द्र-कोण सम्बन्ध।
पुत्र पिता को मान दे, होरा का अनुबन्ध।।

१६८

पत्री में हो देवगुरु, अरिनायक के संग।
अरिभावस्थ सुतेश का घटता यदि उमंग।।
अंत्येश का लग्न में, रहता यदि निवास।
पिता-पुत्र सम्बन्ध तब जो जाता है नाश।।

१९९

सुत, वित्त, धर्म में उच्च का तनयनाथ आसीन।
भानु, अंगिरा साथ हो, पुत्र पिता में लीन।।

२००

लग्नपादपति से सुतेश का सम्बन्ध हो सुन्दर।
आज्ञाकारी पुत्र हो, तनय बसे जब दिनकर।।

२०१

लग्नपाद से तप तनय पति होता यदि षडाष्टक।
अथवा वे द्विर्द्वाश हो तो हो सम्बन्ध में सकष्ट।।

२०२

त्रिक्–भावस्थ सुतेश पर, राहु भौम का वेग।
तनय–तात सम्बन्ध में, भर दे क्रोधावेग।।

२०३

पंचमेश, लग्नेश संग, भाग्य में करे गमन।
पिता–पुत्र में स्नेह हो, निर्मल रहता मन।।

२०४

शनि राशि में भानु हो, शुक्र में देवगुरु।
पिता, पुत्र में हर समय, झगड़ा रहे शुरू।।

२०५

पंचमेश, प्रथमेश जब त्रिक में करें प्रवेश।
राहु, भौम से दृष्ट हों, सम्बन्ध सब शेष।।

२०६

पंचमेश, धर्मेश पर सौरि, सांप का दोष।
अंत्येश हो भानु संग, पिता पुत्र में रोष।।

२०७

देव गुरु से केन्द्र–कोण में बसता यदि दिनेश।
पिता, पुत्र के बीच तब हो सम्बन्ध अशेष।।

२०८

नक्षत्रेश रवि जीव का, हो आपस में दुश्मन।
पिता पुत्र में हर समय, तब रहती है अनबन।।

२०९

पिता, पुत्र का लग्नपति, रहता यदि षडाष्ट।
आपस का सम्बन्ध तब हो जाता है नष्ट।।

२१०

प्रथमेश, नवमेश संग षष्टेश का रगड़ा।
रन्ध्रस्थ सुतेश दे, तात-तनय में झगड़ा।।

२११

सुतनाथ हो मकरगत, धर्मेश कीट को जाय।
तात-तनय सम्बन्ध में, स्नेह न कभी समाय।।

२१२

पुत्रेश अरिभावगत, शुभ से रहे विछोह।
तब तात से हर समय पुत्र करे विद्रोह।।

२१३

राहु, भौम से युत, दृष्ट जब रहता पुत्रेश।
पिता-पुत्र सम्बन्ध तब होता सारा शेष।।

२१४

षडाष्टक होकर रहें, कल्प, तनय के नायक।
पुत्र द्रोह से हर समय पीड़ित रहता जातक।।

२१५

षष्टेश की दृष्टि से पंचमपति अवरुद्ध।
तब जातक से हर समय रहता पुत्र विरुद्ध।।

सुयोग्य एवं अयोग्य संतान

२१६

मूल त्रिकोण गत, उच्च या मित्रगृही वागीश।
पंचम घर शुभ युक्त हो, योग्यपुत्र दें ईश।।

२१७

शुक्र, सौम्य से दृष्ट गुरु, सुतभवन शुभयुक्त।
तब सुयोग्य संतान पा, जातक चिंता मुक्त।।

२१८

नवमांश में लग्न, तनयपति, करें युति परिवर्तन।
तब सुयोग्य संतान हो, उज्जवल होता जीवन।।

२१९

कर्मेश उदय या वित्त में, यदि करे प्रस्थान।
पंचमपति हो लाभगत, कुल दीपक संतान।।

२२०

तनु, सुत नायक युत रहें, उपचय बसे धनेश।
गुरु से विक्षित हो यदि, संतति बने नरेश।।

२२१

सुतनाथ सुत भावगत, लग्न राहु से भोग्य।
शनि, गुरु देखे तनय को, होता पुत्र अयोग्य।।

२२२

पंचमेश और देव गुरु पर होवे क्रूर प्रभाव।
तब अयोग्य संतान से, सुख का रहे अभाव।।

२२३

पुत्रेश नीच या अस्तगत, करते मलिन प्रहाड़।
तब अयोग्य संतान से, मिलता कष्ट अपार।।

२२४

पंचमपति, रन्ध्रेश संग जब रहता है भ्रष्ट।
तब अयोग्य संतान से, जातक पाता कष्ट।।

बहु पुत्र योग

२२५

गुरु भौम के वर्ग में जाता यदि सुतेश।
शुभ से होवे दृष्ट तो होता पुत्र विशेष।।

२२६

गुरु, भौम के वर्ग में आत्मज गृह हो व्याप्त।
शुभ से होवे दृष्ट तो बहुसुत होता प्राप्त।।

२२७

सौम्य जीव व कवि की, आत्मज पर हो दृष्टि।
जातक के घर में होती, तब पुत्रों की वृष्टि।।

२२८

पंचमेश हो तुंग तथा लग्नेश जीव संयोग।
अशुभ विवर्जित हो यदि, कई पुत्र का योग।।

२२६

लाभनाथ हो कोणगत, साथ रहे पुत्रेश।
बहु पुत्र के लाभ का, बनता योग विशेष।।

२३०

पुरुष ग्रह पुत्रेश का विषम यदि नवमांश।
पुत्र अनेकों प्राप्त हो, बढ़ता रहे सुखांश।।

२३१

भानु, भौम और सौम्य का वास तनय स्थान।
सुधा दृष्टि हो गुरु की, मिले बहुत संतान।।

२३२

लग्नपाद से नवम हो, दंष्ट्री, जीव, दिनेश।
जातक को तब होता है, पुत्र-लाभ विशेष।।

२३३

दारापति हो पंचम गृह में लाभेश्वर से दृष्ट।
शुभ अंशगत सबल गुरु से पुत्र लाभ हो पुष्ट।।

२३४

उपपाद से सप्तम में, रबि और जीव प्रविष्ट।
कई पुत्र के प्राप्ति का, बनता योग विशिष्ट।।

बहु पुत्री योग

२३५

पंचमस्थ शशिपुत्र की हो नेत्रपाणि अवस्था।
कन्याधन होती अधिक, ज्योतिष देय व्यवस्था।।

२३६

सित, सोम के वर्ग में जाता यदि सुतेश।
सित, सोम से दृष्ट हो, पुत्री रत्न विशेष।।

२३७

सित, सोम के वर्ग में आत्मजगृह हो व्याप्त।
सित, सोम से दृष्ट रहे, बहुपुत्री हो प्राप्त।।

२३८

तनयनाथ जाकर बसे धन, लयपद स्थान।
तब जातक को प्राप्त हो, बहु-पुत्री संतान।।

२३९

आद्रा, हस्त, पुनर्वसु, मीर्गशीर्ष, सुतनायक।
बहु पुत्री की बाढ़ से चिंतित रहता जातक।।

२४०

स्त्री राशि सुतभवन में, स्त्री-ग्रह की दृष्टि।
सुतनायक सम राशिगत, पुत्री-धन की वृष्टि।।

२४१

नवमांश में तनयपति, सम राशि में करे विहार।
सोम, शुक्र भव भवन में, दुहिता लाभ अपार।।

२४२

स्त्री गृह से दृष्ट तथा लाभस्थ रहे कामेश।
तब जातक को प्राप्त हो, पुत्री-धन विशेष।।

२४३

पंचमेश, दारेश करें, कान्ता-भवन प्रवेश।
शशि, कवि हो युत यदि, पुत्री लाभ विशेष।।

अभिशाप विचार

२४४

भौम दृष्ट स्वरमान हो आत्मज गृह में मस्त।
सुतहीन जातक रहे सर्प से तब अभिशप्त।।

२४५

शशि दृष्ट शनि तनय में, सुतेश संग स्वरभान।
तब भुजंग के शाप से नर हो निःसंतान।।

२४६

शुभ विवर्जित राहु तनय में, सुतपति हो अंगारक।
तब भुजंग के शापवस, निःसन्तति हो जातक।।

२४७

पापी ग्रह सुतस्थ हो, लग्नेश, सुतेश बलहीन।
तब सांप के शाप से, जातक सन्ततिहीन।।

२४८

सुतेश संग भूपुत्र हो, लग्नेश संग स्वरभान।
तब सर्प के शाप से, नर हो निःसंतान।।

२४९

पापकर्त्तरी में भानु हो, नीच सौरि, अंगारक।
पूर्वजों के शाप से, सन्ततिहीन हो जातक।।

२५०

पंचमेश शशि संग युत सौरि, वक्र, स्वरभान।
तब माता के शापवस, नर हो निःसन्तान।।

२५१

पुत्रकारक संग हो अर्धकाय की वास।
कारकांश में भी करे धरणीतनय निवास।।
सुतनायक इस हाल में यदि रहे बलहीन।
तब सांप के शाप से जातक सन्ततिहीन।।

२५२

लग्नेश, अहि, सुतेश जब जाते त्रिक्भवन
पुत्रकारक संग वसे पत्री में भूनन्दन।।
पुत्रपाद में हो यदि पापीग्रह आसीन।
तब सांप के शापवस जातक सन्ततिहीन।।

२५३

पापयुत शशि पुत्र हो पत्री में सुतनायक।
तथा रहे नवमांश में निजगृही अंगारक।।
अहिराज सुतपाद में यदि रहे विद्मान।
तब सर्प के शापवस नर हो निःसन्तान।।

२५४

पंचमपति जब बनता हो पत्री में दिनमान।
पापी उसको देखकर हरता हो अभिमान।।
या पाप मध्यत्व से बल का हो अवसान।
पितृशाप से तब रहे जातक निःसन्तान।।

२५५

सिंह राशि में वसता हो सुरपण्डित जब जाकर।
तथा रहे सुतनाथ संग किसी भाव में दिनकर।।
तनय, उदय में भी रहे पापी ग्रह आसीन।
पितृशाप से होता तब जातक सन्ततिहीन।

२५६

निधन भवनगत पत्री में रहता यदि दिवाकर।
तनय भवन हो सज रहा छायासुत को पाकर।।
पुत्रपति के साथ जब रमता है स्वरभान।
पितृशाप से तब रहे नर वह निःसन्तान।।

२५७

लग्नस्थ हो पत्री में रिस्फभवन का नाथ।
निधनपति जातक वसे तनयनाथ के साथ।।
तथा रन्ध्र में नभपति करता यदि प्रयाण।
पूर्वजों के शाप से नर हो निःसन्तान।।

२५८

पंचमपति यदुश्रेष्ठ जब पत्री में हो नीच।
शत्रुगृही या अस्त या मलिन ग्रहों के बीच।।
तनय, अम्बु में हो यदि पापी ग्रह आसीन।
तब माता के शाप से नर हो सन्ततिहीन।।

२५९

कीट लग्नगत जब रहे पत्री में रविनन्दन।
तीन या ज्यादा पापी ग्रह सुत में करे गमन।।
तनय भवन में ही रहे निशानाथ आसीन।
तब माता के शाप से नर हो सन्ततिहीन।।

२६०

तनयनाथ जन्मांग में रहता यदि त्रिकूस्थ।
और रहे लग्नेश्वर भी पत्री में नीचस्थ।।
पापी ग्रह के साथ हो शीतरश्मि आसीन।
तब माता के शाप से नर हो सन्ततिहीन।।

२६१

पत्री में पातालपति जब बनता अंगारक।
लगनस्थ होकर रहे भानु संग यदुनायक।।
भौम संग संयुक्त हो सौरि तथा स्वरभान।
तब माता के शाप से नर हो निःसन्तान।।

२६२

तनय भवनगत राहु हो, रिपुगत हो नीलाम्बर।
लग्नस्थ हो भानु तथा अष्टमगत रक्ताम्बर।।
त्रिक् भवन में हो यदि लग्ननाथ आसीन।
मातृशाप से तब बने नर वह सन्ततिहीन।।

२६३

पत्री में पातालपति रहता जब रन्ध्रस्थ।
सुतेश संग लग्नेश भी जब होता षष्टस्थ।।
षष्टेश तथा कर्मेश हों लग्नभवन आसीन।
मातृशाप से तब बने नर वह सन्ततिहीन।।

२६४

त्रिक् भवन में हो यदि अहि, जीव, अंगारक।
पापी ग्रह के साथ हो पत्री में सुतनायक।।
पंचम घर में हो अगर, शशि सौरि आसीन।
तब माता के शाप से हो नर सन्ततिहीन।।

२६५

शनि से षष्टम भावगत शशि, सौम्य व दिनकर।
पापी ग्रह से युत, दृष्ट लग्न तथा लग्नेश्वर।।
त्रिक् भवन में हो अगर सुरपण्डित आसीन।
कुल देव के कोप से नर हो सन्ततिहीन।।

२६६

छायासुत की राशि में दसता यदि प्रभाकर।
मलिन अंश में हो यदि लग्न तथा लग्नेश्वर।।
पापी ग्रह से दृष्ट रहे पत्री में दिनमान।
कुलदेव के कोप से नर हो निःसंतान।।

संतान दोष परिहार

२६७

संतति पाता है मनुज , पूर्व-पुण्य के बल से।
सोम, सौम्य, कवि बाधा दे, विनय करे शंकर से।।
संतति हित में बाधा जब बनता हो सुरगुरु से।
तब उसका परिहार करें, तन्त्र, मंत्र औषधि से।।

शनि, मंगल या छाया ग्रह, जब होता है बाधक।
पूजन, अर्चन से फल देते, अपना ही कुलनायक।।
बाधक यदि होकर रहे, नवमपति या प्रभाकर।
दुर्गा पूजन तब करें, कुल सद्धर्म निभाकर।।
किसी रूप में होता गर,, उस असीम का बन्दन।
सकल मनोरथ सिद्ध हो, सुखमय बनता जीवन।।

२६८

सुत-आरुढ़ पाद में, यदुपति करे गमन।
पादेश बुध राशि में करता यदि भ्रमण।।
पापी ग्रह से युक्त हो अगर मदन स्थान।
पुत्र-लाभ में होता है, कई तरह व्यवधान।।
पूर्व-जन्म के पाप से, होता यह अतिरेक।
दोष-शमन हो जाता, करके शिव-अभिषेक।।

२६९

सुत-पाद में सौम्य हो, भौम दृष्ट सुर-सेव्य।
सौरि दृष्ट सुत भवन हो, भार्या-गर्भ-अयोग्य।।
शिशुमार के दान से दोष का कर करें निदान।
सुन्दर शिशु तब देते है, सर्वव्याप्त नारायण।।

२७०

सुतारुढ़गत श्यामगात हो, नवमांश हो मेष।
केतु वही विद्मान हो, संतति लाभ हो शेष।।
मृत-वत्सला पत्नी तक दे सुन्दर संतान।
धर्म निरत जातक करे, जब शंकर का ध्यान।।

१७१

सुत-आरुढ़-पाद में करता ध्वजी प्रयाण।
तथा भुजंग निवेसित, लग्न से सुत-स्थान।।
शीत-रश्मि हो वहीं पर, राहु संग विद्मान।
तब संतति के लाभ में, पड़े बहुत व्यवधान।।
चन्द्र के बदले शुक्र जब रहे उसी स्थान।
पोष पुत्र से तब सजे जातक के अरमान।।

१७२

सुत पाद हो कर्म में, क्षत में नाथ समाय।
निःसंतान का योग तब पत्री में बन जाय।।
नृसिंह देव ही जातक का तब करते कल्यण
लक्ष्मीपति को वह भजे, कर हनुमत का ध्यान।।

१७३

सुतपाद से अष्टमगत शनि, सुत में हो स्वरभान।
यहां, वहां भटका फिरे, जातक का संतान।
शिव-शक्ति को तब भजे जातक वह मतिमान।
शत-चण्डी के पाठ से कटता सब व्यवधान।।

ज्योतिषी योग

२७४

तप, सुत में हो परिवर्तन या नाथ रहें संयुक्त।
अथवा देखें एक दूजे को, पाप प्रभाव से मुक्त।।
किसी भांति से लग्नेश्वर का इनसे हो संयोग।
भूत, भविष्य के ज्ञान को बन जाता तब योग।।

२७५

सुर सेवित जाकर गहे, अपना ही नवमांश।
और उसे यदि प्राप्त हो, वर्गों में मृदुअंश।।
शुभ अंशों वाला कवि, सौम्य यदि उसे देखे।
त्रिकालज्ञ जिससे बने, योग ज्योतिषी लेखे।।

२७६

उदयनाथ पाताल में, तपपति व्यय को जाय।
अंत्येश हो लग्नगत, सुखपति तनय समाय।।
सुतेश हो उनसे यदि किसी भांति संलग्न।
तब ज्योतिषी कर्म से, जातक पाता धन।।

१७७

सित, सूर्य से दृष्ट हो जब गुरु का भावेश।
सबल रहे वागीश तो ज्योतिष ज्ञान विशेष।।

२७८

विक्रम गृह या कोष में श्यामगात, शुक्लाम्बर।
दैवज्ञों में श्रेष्ठ तब जातक उठे उभरकर।।

२७९

तुंग देवगुरु जब रहे वित्त भवन आसीन।
तब ज्योतिष शास्त्र में जातक बने प्रवीण।।

२८०

केन्द्र, कोणगत सोमसुत, सबल रहे धननायक।
अति श्रेष्ठ दैवज्ञ तब बन जाता वह जातक।।

२८१

केन्द्र, कोण में गुरु संग आत्मज गृह का नायक।
शुभ की पड़ती दृष्टि तो ज्योतिषी बनता जातक।।

२८२

मृदु षष्टियंशगत स्वनवांश का पत्री में सुरपण्डित।
त्रिकालज्ञ जातक बने जग में गरिमा मण्डित।।

गणित ज्ञान

२८३

सुत, वित्त या सहज में जीव, केतु आसीन।
तब गणित में होता है जातक परम प्रवीण।।

२८४

शुभ दृष्ट, धनगत रहे पत्री में अंगारक।
तब गणित में खास रुचि, रखता ऐसा जातक।।

२८५

आर, चन्द्र हो युत तथा रहे सौम्य से दृष्ट।
यदि सौम्य हो केन्द्रगत, गणित ज्ञान उत्कृष्ट।।

२८६

निधनस्थ दिनकरतनय, सबल सोमसुत बने सुतेश।
लग्नस्थ सुरसचिव दे गणित में ज्ञान विशेष।।

२८७

दैत्य पुरोहित सबल हो, केन्द्र, कोणगत सुरसेवित।
चन्द्रपुत्र धन भवन में, गणित ज्ञान हो विकसित।।

अन्य शास्त्रों का ज्ञान

२८८

कारकांशगत केतु को शुक्र रहा हो देख।
तब जातक याज्ञिक बने, विधि का ऐसा लेख।।

२८९

कारकांश से कोण में पापी करे प्रवास।
यांत्रिक नर की साधना में हो प्रबल प्रकाश।।

२९०

सोम, सौम्य, कवि से रहे आत्मा कारक दृष्ट।
जातक तब बनकर रहे, चिकित्सक उत्कृष्ट।।

२९१

द्यून भवन में हो यदि द्रव्यपति आसीन।
तब चिकित्सा शास्त्र में जातक बने प्रवीण।।

२९२

कारकांश को जब देखे, शुक्र तथा यदुनायक।
रस, रसायण विज्ञ तब होकर रहता जातक।।

२९३

कारकांश से तनय, कोष में देवगुरु विद्‌मान।
तब व्याकरण शास्त्र में जातक हो विद्वान।।

२९४

कारकांश से तनय में देवगुरु, यदुनायक।
पापी वसता साथ तो लेखक बनता जातक।।

२९५

कारकांश से वित्त में, देवगुरु, शशिपुत्र।
तब मिमांसा शास्त्र का जातक रचता सूत्र।।

२९६

सुत, वित्त या सहज में देवपूज्य, अंगारक।
तर्क शास्त्र में तब प्रवीण होता ऐसा जातक।।

२६७

सुत, वित्त या सहज में देवगुरु, यदुनायक।
तब सांख्य दर्शन का ज्ञाता होता जातक।।

२६८

पंचमपति जाकर वसे लाभ भवन या मान।
तब सभा में जातक की करते सब सम्मान।।

२६६

लग्नस्थ होकर रहे पत्री में नभनायक।
अति मनोरम छन्द की रचना करता जातक।।

३००

लाभस्थ होकर रहे पत्री में नभनायक।
दानव वन्दित सबल हो, कविता रचता जातक।।

३०१

लग्न अथवा द्यून में सुखपति सजे अचूक।
यद्यपि होता ज्ञान पर सभा बीच नर मूक।।

३०२

जीव अथवा कवि बने पत्री में धननायक।
भानु, भौम से दृष्ट हो, तर्कपूर्ण हो जातक।।

३०३

कारकांश में शुभ, अशुभ युत यदि रहे दिनमान।
अर्धकाय हो साथ अगर वैद्य बने मतिमान।।

३०४

गुरु, सौम्य से दृष्ट हो पत्री में रविनन्दन।
तब वैज्ञानिक शोध में प्रतिभा जगे विलक्षण।।

३०५

केन्द्र, कोण में जब रहे अमर पूज्य आसीन।
सुतनायक शुभ अंशगत, जातक न्याय प्रवीण।।

३०६

उत्तम अंश में राहु संग दानव पण्डित मस्त।
सबल रहे सुतनाथ तो मनुज रसायन व्यस्त।।

३०७

गोपुर अंश में शुक्र हो, देवलोकगत यदुनायक।
हों दोनों केन्द्रस्थ तो व्याख्याता हो जातक।।

विविध

३०८

पंचमेश हो आयगत, लौटरी से हो लाभ।
राहु संग सुतेश हो, अक्समात धन लाभ।।

३०९

केन्द्र, कोण का नाथ भानु, निज गृह करे निवास।
जातक बढ़ता जीवन में, बिना किसी के आस।।

३१०

पंचमेश षष्टस्थ हो, भाग्येश रन्ध्र आसीन्।
नील, नाग से दृष्ट हो, जातक सम्पतिहीन।।

३११

लग्न मकर या मिथुन हो, सौम्य शुक्र लाभस्थ।
जाया मन्दिर देव गुरु, जातक सुखी गृहस्थ।।

३१२

पराक्रम में पंचमपति हो, श्याम गात्र के संग।
लेखन से धन ख्याति पा, बढ़ता रहे उमंग।।

३१३

लग्नेश्वर, सुतनाथ संग यदि बसे जा अम्बर।
तप, भवन हो सबल तो पुत्र करें नित आदर।।

३१४

लग्नेश, सुतेश का अंशपति, उदय, तनय में जाय।
जीव का अंशपति केन्द्र में, जातक संतति पाय।।

३१५

कल्प, कोष, तप के स्वामी, बसे कर्म-स्थान।
देव गुरु लग्नस्थ हो, नर दे तात को मान।।

३१६

पंचमस्थ गुरु उच्च हो, भव में असुर-अमात्य।
पुत्री ही पुत्री मिले, नियम बहुत यह सत्य।।

३१७

देवेन्द्र पूज्य हो मंत्रगत, पापी रहे धनस्थ।
नीच कर्मरत नर रहे, जब सिंहीसुत सहजस्थ।।

३१८

आत्मज में हो शुक्र, शशि, लाभ में हो नीलेश।
प्रथम कुक्षि में दुहिता, मां को अतिशय क्लेश।।

३१९

चर राशिगत तनयपति, आत्मज में रवि-नन्दन।
राहु ग्रस्त हो निशापति, जातक अन्य से उत्पन्न।।

३२०

लग्न से अष्टम चन्द्र हो, चन्द्र से अष्ट प्रशान्त।
मलिन ग्रहों की दृष्टि कहे, जारज जन्म-वृतांत।।

३२१

सुत आरुढ़ हो लग्न में, करें विष्णु की अर्चन।
सकल मनोरथ पूर्ण तब, करते स्वयं जनार्दन।।

३२२

कारकांश से पंचम में अर्धकाय, अंगारक।
क्षय रोग से क्लेश, पाता है तब जातक।।

३२३

कारकांश से पंचमस्थ, अमर सचिव और सौम्य।
प्रख्यात लेखक बने, सब सुख होता भोग्य।।

३२४

सौरि, शुक्र व भानु का आत्मज में हो गेह।
तब जातक के गात में पलता रोग प्रमेह।।

३२५

अर्धकाय हो लग्न में, सुत में हो अंगारक।
पुत्रेश हो रिस्फगत, निःसन्तति हो जातक।।

३२६

पुरुष ग्रह हो तनयगत, भव में हो स्वरभान।
उत्तरार्ध में तब बने जातक वह सुतवान।।

३२७

विषम अंश व राशिगत पुरुष ग्रह, सुतनायक।
प्रथम गर्भ से पुत्रधन तब पाता है जातक।।

३२८

मलिन संग या क्रूर षष्टियंशगत पंचमगृह का नायक।
बात-बात में करे प्रकट विस्मय ऐसा जातक।।

३२९

विवल सोमसुत तनय में हो पापी से विक्षित।
तब होता हर हाल में जातक ऐसा जड़मति।।

३३०

सुत, वित्त या सहज में देवगुरु, दिनमान।
कई शास्त्र के ज्ञान से हो भूषित मतिमान।।

३३१

केन्द्र, कोण में जब वसे बलपूरित सुतनायक।
शास्त्र विशारद, ज्ञानयुत होता ऐसा जातक।।

३३२

षष्टेश संग रवितनय सुत में करे प्रयाण।
सप्तमगत हो सोम तो होय न गर्भाधान।।

३३३

पाप मध्य पुत्रेश हो, मलिन संग हो कारक।
बार-बार हो गर्भपतन, निःसन्तति हो जातक।।

३३४

प्रकाशावस्था में रहे सुतगत यदि दिनेश।
बार-बार का गर्भपतन देता अतिशय क्लेश।।

३३५

सोम, सौम्य, कवि जब करे पंचम भवन प्रवास।
केबल कन्या रत्न की करे मनुज तब आस।।

३३६

दिनकर सुत संग लाभ में यदि रहे निशिमान।
पाप दृष्ट तनय भवन, नर हो निःसन्तान।।

३३७

पंचम गृह में युत हो सौरि, सौम्य, निशिमान।
दत्तकपुत्र से तब सजे जातक का अरमान।।

३३८

देवगुरु से तनय में पापी ग्रह हो मस्त।
तब सन्तति के कर्म से जातक रहता त्रस्त।।

३३९

गुरु वर्ग में हो यदि तनय भवन या नायक।
तब योग्य सन्तान का वर पाता है जातक।।

३४०

कारकांशगत शिखी हो कवि सौम्य से विक्षित।
तब दासी के गर्भ से जातक पाता सन्तति।।

३४१

सबल सोमसुत द्रव्य में जब रहता है तुंग।
गोपुर अंश में छायासुत का बढ़ता यदि उमंग।
सिंहासन में हो अगर शक्र वन्द्य आसीन।
गणित व भौतिक शास्त्र में जातक बने प्रवीण।।

३४२

देवगुरु से कोण में जब रहता यदुनायक।
तथा बुध से कोण में वसता हो अंगारक।।
लग्ननाथ या तनयपति का इनसे हो संयोग।
सर्व शास्त्र के ज्ञान का बन जाता तब योग।।
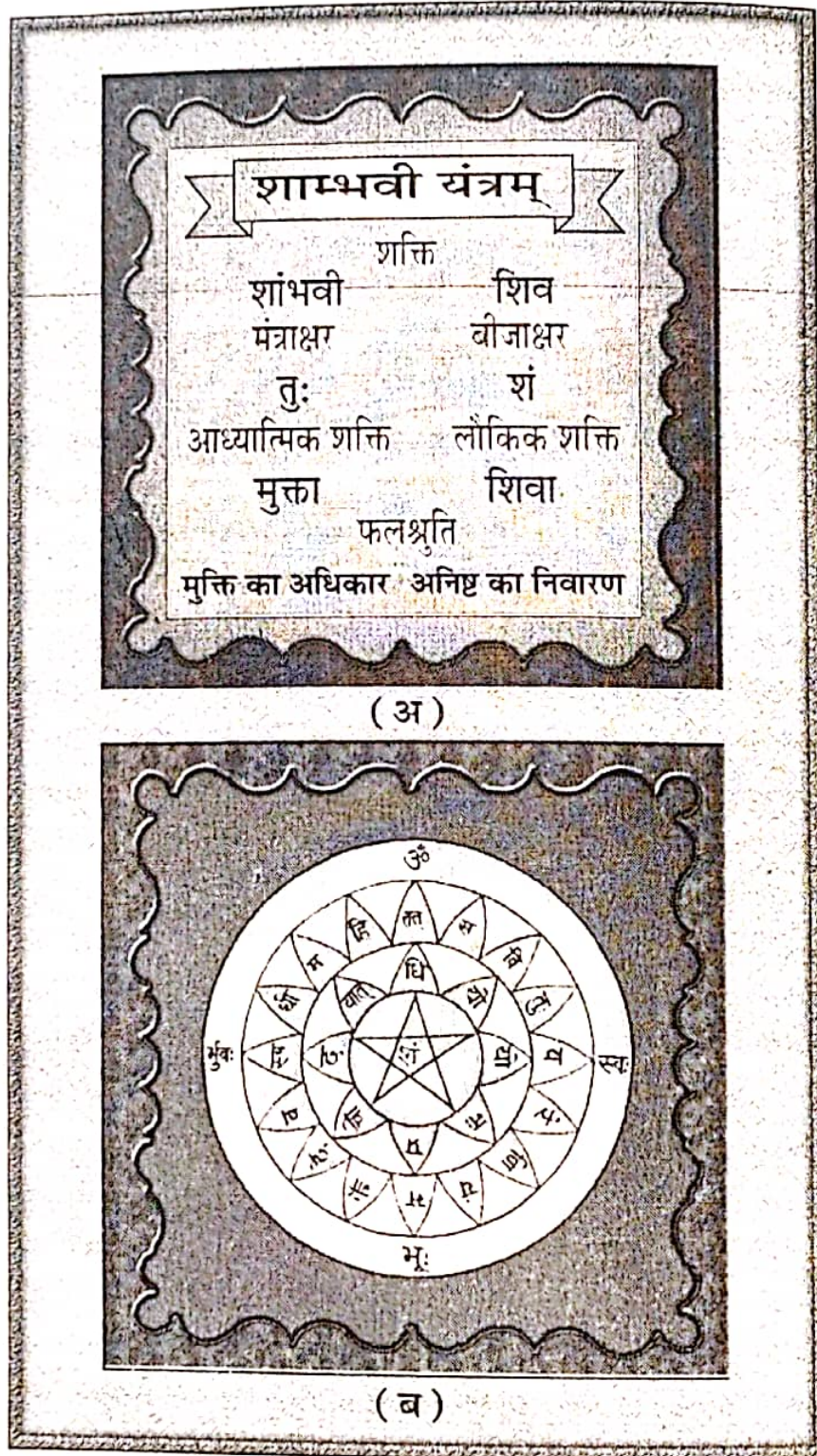
शाम्भवी यंत्रम्
शक्ति
शांभवी
शिव
मंत्राक्षर
बीजाक्षर
तुः
शं
आध्यात्मिक शक्ति
लौकिक शक्ति
मुक्ता
शिवा
फलश्रुति
मुक्ति का अधिकार
अनिष्ट का निवारण

(अ)

ॐ
भूः
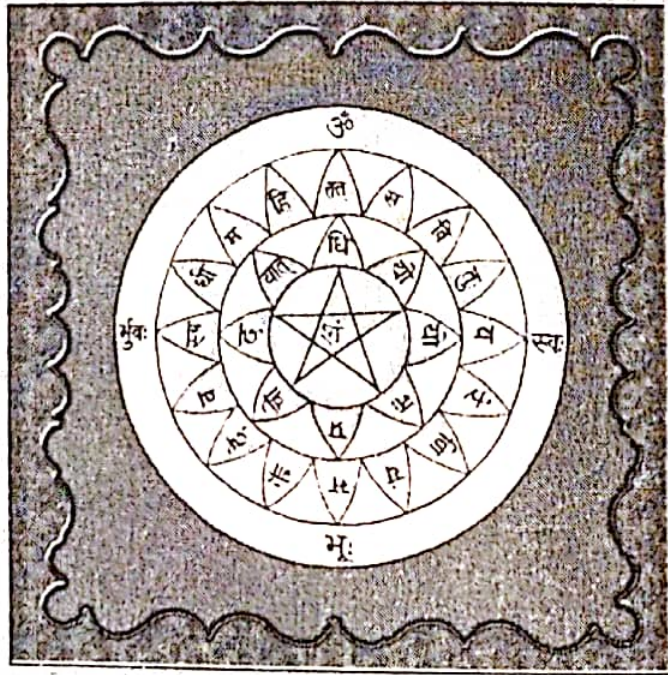
(ब)

शाम्भवी

शं-कल्याण करने वाली । पोषण के साथ परिवर्तन का भी चक्र इस सृष्टि में चलता है। उसे कल्याणकारी दिशा में गतिशील रखने वाली शिवशक्ति । धर्मरूप वृषभ इसका वाहन है। तीसरा नेत्र कषाय- कल्मषों को नष्ट करने वाली प्रज्ञा का प्रतीक है। वासना, तृष्णा, अहंता तीन आसुरी पुरियों का उच्छेदन करने वाला त्रिशूल आयुध है। मस्तक पर चन्द्रमा-शान्ति एवं विकासशील चिन्तन का प्रतीक है।

षष्ठ भाव

रोगक्षतारि व्यसनं तु चोरस्थानं
भवेद्विघ्नमिहाहुरायूर्याः।

रिपुद्वैषिवैरिक्षतारव्यं षष्ठं

षष्ठं शत्रु रिपुर्द्वेष्य सपनाख्यं च वैरिभम्।

मातुलान्तकशंकानां शत्रुश्चैव व्रणादिकान्।
सपत्नीमातरं चापि षष्ठ भावन्निरीक्षयेत्।।

रोगारिव्यसनक्षतानि वसुधापुत्रारितश्चिन्तयेद्
उक्तं रोगकरं तदेव रिपुगे जीवे जितारिर्भवेत्।।

षष्ठ भाव फल

१

षष्टम भाव उपाच्य का, शुभ - अशुभ से होर।
कहते इसको विघ्न, व्यसन, क्षत, शत्रु और चोर।।

२

दुख, अवरोध, चोर, अरि, घाव का करें विचार।
यौण, आंत, गुर्दा रोग जो नाभि में भरे विकार।।

३

भव और अरि के योग से, ऋण हो जाता दर्ज।
शत्रु, व्यय में योग हो, मिट जात सब कर्ज।।

४

लाभ, व्यसन के योग में रहता नाना खोट।
पाप प्रभाव से युत रहे, जातक खाता चोट।।

५

धन भवन में जब रहे, षष्टमपति का वास।
गुरु से होता दृष्ट तो, पुत्र का बढ़े प्रकाश।।

६

रिपुनायक शशि, सूर्य में हो सम्बन्ध अपात।
मन्द, राहु से दृष्ट रहे, तो हो सकता जलघात।।

७

तप, विघ्न के नाथ संग, भारी पापा-चार।
बदनाम जातक करे, तब नाना भ्रष्टाचार।।

शत्रुता

८

अरिभाव में शुभ ग्रह, शुभ - दृष्ट हो शत्रु।
रिपुनाथ शुभ युत रहे, मित्र बने सब शत्रु।।

९

रिपुनायक पर केन्द्र में मलिन दृष्टि जब पड़ती।
पाप ग्रस्त अरिभवन हो, शत्रु से संकट बढ़ती।।

१०

बलहीन रिपुभवन पति, मलिन ग्रहों से दृष्ट।
या पाप-कर्त्तरी में हो, दुश्मन करें अनिष्ट।।

११

नीच, अस्त या शत्रु-गृही, होता जब रिपुनायक।
लग्ननाथ बलवान हो, जातक शत्रु-विनाशक।।

१२

त्रिकस्थ षष्टेश पर कोप अशुभ का बनता।
सबल रहे प्रथमेश तो नर हो शत्रु-हन्ता।।

१३

षष्टमपति बलवान हो, शुभ अंश में करे निवास।
लग्ननाथ शुभयुत, सबल, शत्रु का होता नाश।।

१४

षष्टेश हो उच्च का, शुभ घर में आसीन्।
शुभ दृष्ट अरिभाव हो, शत्रु रहें आधीन।।

१५

षष्टेश जब तुंग हो, अथवा हो बलवान।
तब जातक का शत्रु भी होता है श्रीमान।।

१६

रिपुनायक संग सुखनायक भी जाये शत्रुभवन।
निज कुटुम्ब ही बन जाते तब जातक के दुश्मन।।

१७

अरिभावेश हो लग्न में, राहुमन्दि, शनि पास।
लग्ननाथ हो विघ्न में, शत्रु से मिलता त्राश।।

१८

लग्नेश से षष्टमपति जब रहता कमजोड़।
शुभयुत या दृष्ट रहे, शत्रु से हो गठजोड़।।

१९

शत्रुभवन में जब सजे सुरसेवित या सुधाकर।
लग्नेश्वर बलयुक्त हो, जातक सबका हितकर।।

२०

अरिपति गोपुरअंश में, देखे उसे दिवाकर।
लग्नेश बलयुक्त हो, जातक सबका हितकर।।

२१

गुरु होता विघ्नेश जब शुभगुण से पूरित होकर।
अथवा हो मृदुअंश में, सुखी मनुज बहुजन पाकर।।

२२

पर्वतांश रिपुनाथ का, हो शुभ ग्रह संग संयोग।
विघ्न लग्न से क्षीण हो, अति उत्कर्ष का योग।।

२३

यदि लग्न में सज रहे, देव, दैत्य के पण्डित।
तथा रहे विघ्नेश अगर वहीं लग्न में मण्डित।।
राहु, वक्र और सौरि की उन पर बने प्रकोप।
जातक के समुदाय पर, सदा शत्रु का कोप।।

२४

जब रिपुनायक जाकर धरे, मलिन ग्रहों की आस।
अस्त रहे या नीचगत, या मलिन नवांश निवास।।
कहीं किसी शुभ ग्रह की, दृष्टि नहीं हो उस पर।
ऐसा जातक जीता है, धन, जन, सम्पति खोकर।।

२५

नाश भाव में वसता है, जब जाकर लग्नेश्वर।
तथा उसे हो देखता यदि कहीं विघ्नेश्वर।।
अथवा दोनों एक संग, उदय भाव को जाय।
अर्धकाय की दृष्टि से, धन, जन सभी नशाय।।

२६

तप भवन का नाथ जब क्षत में करे प्रवेश।
तथा उसे हो देखता यदि कहीं विघ्नेश।।
इसी योग में वक्र, शनि, राहु मचावे शोर।
तब जातक को कष्ट दे, शत्रु, अग्नि वा चोर।।

घाव एवं रोग

२७

उदय भाव में बसता हो यदि कहीं विघ्नेश।
सौम्य और स्वरभान भी लग्न में करे प्रवेश।।
शुभ विवर्जित कल्प पर, भूमिपुत्र की आन।
तब व्याधि के वेग से होता बहु नुकसान।।

२८

दैत्य पूज्य की राशि में पापी ग्रह का भोग।
शुक्र, गुरु से दृष्ट नहीं, होता नाना रोग।।
इसी योग में जब रहे, राहु, भौम का कोप।
तब जातक का स्वास्थ्य सकल हो जाता है लोप।।

२९

सारे पापी ग्रह जब केन्द्र में करें प्रवेश।
शुभ विवर्जित लग्न हो, बढ़े रोग व क्लेश।।

३०

लग्न अथवा व्यसन संग चन्द्र करे संयोग।
पाप दृष्टि उस पर पड़े, होता नाना रोग।।

३१

रिपुभवनपति पापयुक्त हो बसे लग्न के देश।
तब जातक के गात में होता नाना क्लेश।।

३२

रिपुनायक बन भानु जब रहे लग्न में लोट।
नील, नाग से दृष्ट हो, लगती सिर में चोट।।

३३

इसी तरह से अन्य अंग में घाव का करें विचार।
अरिपति संग जो भी ग्रह, जिस गृह करे बिहार।।

३४

भौम ग्रीवा, गुरु नासिका, सिर होता दिनमान।
आनन शशि, शनि पैर है, बुध बताता कान।।

३५

चन्द्र नेत्र, गुरु उदर तथा शुक्र कहे गुप्तांग।
रौहिणेय है आंत व भौम भुजा सा अंग।।

३६

विघ्नेश और कवि यदि लग्न, रन्ध्र में जाय।
पीठ अथवा नेत्र में, जातक दुःख को पाय।।

३७

छायात्मज संग छायाग्रह का यदि यही हो हाल।
चरण अथवा अधर में, जातक रोग को पाल।।

३८

कवि, भौम की राशि में, लग्नेश संग जाय।
अर्धकाय से दृष्ट रहे, नेत्र में रोग समाय।।

३९

कवि के बदले, चन्द्र-भानु से बनता हो यह रोग।
तब भी हो सकता आंखों में, इसी तरह से रोग।।

४०

षष्टमपति जब व्योम में पापी ग्रह के संग।
तब भी देता कष्ट वह, पीड़ित करके अंग।।

४१

लग्नेश्वर का भौम, सौम्य संग सुख या व्यय में योग।
रिपुगृहेश हो साथ अगर तो आंत में होता रोग।।

४२

सोम, सोमसुत, लग्नपति का छायाग्रह संग योग।
अति अनहितकर योग यह, देता कुष्ट सा रोग।।

४३

सोम, सौम्य और भानु भाग्यगत, दृष्टि राहु की पुष्ट।
यह योग तब देता है जातक-जनक को कुष्ट।।

४४

भौम, सोम और भानु भाग्यगत, दृष्टि राहु की पुष्ट।
इस हालत में जातक के पिता को रहता कुष्ट।।

४५

भौम के बदले सौरि यहीं पर करे यदि संयोग।
कफ विकार के कारण तब फले कुष्ट का रोग।।

४६

कुज के बदले भानु जब करे वही संयोग।
रुधिर विकार से होता है, तब कुष्ट का रोग।।

४७

लग्नेश तथा रोगेश संग, रवि जब करे प्रवास।
तब शरीर में रहता है, ज्वर, ताप से त्रास।।

४८

सूर्य के बदले चन्द्र जब वहीं करे संयोग।
तब जातक को होता है, जल-तत्व का रोग।।

४६

षष्टमपति, लग्नेश से मंगल का हो संग।
शस्त्र से लगता घाव है, तब जातक के अंग।।

५०

उन दोनों से यदि करे,, सुर पण्डित संयोग।
व्याधि मुक्त जातक सदा, काया होय निरोग।।

५१

रौहिणेय का साथ वहीं पर हो सकता गम्भीर।
प्रबल मानसिक क्लेश से, जातक पाता पीड़।।

५२

भृगु नन्दन जाकर करे यदि वहां संयोग।
कान्ता के कारण होता क्लेशयुक्त हर भोग।।

५३

उसी योग में यदि पढ़े छायासुत निज मंत्र।
जातक रहता क्षुधित सदा, दुखित स्नायुतंत्र।।

५४

जब दोनों जाकर रहे, राहु-केतु के आश्रय।
स्नायुपीड़ा, सर्प दंश या चोर, अग्नि से भय।।

५५

रिपु गृहेश से परिवर्त्तन, करता जो भावेश।
जातक के उस अंग में, होता रोग विशेष।।

५६

लग्ननाथ कमजोर हो, षष्टेश बसे यदि लग्न।
भव भवन में नील हो, रोग ग्रस्त हो जीवन।।

५७

षष्टम घर में यदि बसे, सूर्यपुत्र, रक्ताम्बर।
क्रूर अंश षष्टेश का, दे सकता है अल्सर।।

५८

सौरि संग षष्टस्थ सोमसुत, अर्धकाय अम्बर में।
हो सकता है दोष तब उस जातक के स्वर में।।

५९

क्रूर षष्टेश तूर्य में, सुखेश राहु से भ्रष्ट।
वाहन से दुर्घटना हो, जातक पाता कष्ट।।

घाव एवं रोग

६०

राशि, नवांश में शशि, रबि करते गृह विनियोग।
षष्टेश हो साथ तो गात में पलता रोग।।

६१

धर्मस्थ हो भौम तथा षष्टेश राहु संग अंग।
तब जातक को कष्ट दे, तस्कर, अग्नि, भुजंग।।

६२

षष्टेश संग भानु का कल्प बने जब गेह।
रिपु भवन का भौम तब देता रोग प्रमेह।।

६३

कान्तागृह में भौम हो, निधन वसे रविनन्दन।
षष्टेश संग लग्नपति तब आलस करे सृजन।।

६४

अरि, काम व निधन में पापी करे प्रवेश।
मूत्र त्याग में मनुज को होता भीषण क्लेश।।

६५

सौरि, शुक्र, शशि, भौम की राशि रहे जल तत्व।
पड़ता पाप प्रभाव तो कुष्ठ का बढ़ता स्वत्व।।

६६

शशि, शुक्र जल राशिगत, पड़े पाप की दृष्टि।
षष्टमपति हो लग्न में, श्वेत कुष्ठ की सृष्टि।।

६७

छाग वृषभ में एक संग सौरि, भौम, यदुनायक।
षष्टेश्वर हो साथ तो श्वेतकुष्ठयुत जातक।।

६८

भानु, सौरि, कुज एक संग करते यदि प्रवास।
षष्टमपति की दृष्टि दे कृष्णकुष्ठ से त्राश।।

६९

रिपु भवन में मस्त हो दिनकरसुत, रक्ताम्बर।
तथा उन्हें ही देखता सिंही सुत संग दिनकर।।
लग्ननाथ भी जब करे पापी संग गठजोड़।
व्याधि युक्त जातक रहे, काया हो कमजोड़।।

७०

छाया सुत हो निधन में, षष्ट में रक्ताम्बर।
धनभवन में भानु हो, रिस्फ में रहे निशाकर।।
पाप नवांश में हो अगर लग्नपति आसीन।
मेधाशक्ति मनुज की हो जाती तब क्षीण।।

७१

कन्या अथवा वृषभ जब पत्री में हो लग्न।
सौम्य, भौम प्रथमेश संग सिंह में रहें निमग्न।।
पाप प्रभावों की यदि होती उन पर वृष्टि।
तब जातक के गुदा में रोग की होती सृष्टि।।

७२

ग्रहनकाल में जन्म हो, रन्ध्र में शनि, अंगारक।
लग्ननाथ संग द्रव्य में वसता हो अरिनायक।।
लग्न, कोण के बाहर हो सुरपण्डित का वास।
अपस्मार से ग्रस्त मनुज जीवन जिये हताश।।

७३

शीतरश्मि हो रिपुभवन, अंत्य में मलिन प्रवास।
तथा रन्ध्र में रबिनन्दन जब करता हो वास।।
अशुभ अंशगत लग्नपति का पापी संग संयोग।
तब नर को होकर रहे भीषण पीनस रोग।।

७४

छायासुत धन भवन में, चन्द्र वसे आकाश।
कान्तागृह में भूमिसुत करता यदि विलाश।।
इन घरों की भानु से करते सतत विचार।
षष्टमपति संग सूर्य हो, सेहत हो बेकार।।

७५

चन्द्र, चन्द्र का राशिपति जब जाता अरिक्षेत्र।
फिर उसके ऊपर पड़े सोम तनय की नेत्र।।
अरि भवन या बुध करें जल राशि निर्वाह।
पड़ता पाप प्रभाव अगर बाधित मूत्र-प्रवाह।।

७६

धन भवन में भौम हो, अंत्य वसे रबिनन्दन।
शीतरश्मि हो लग्नगत, दिनकर द्यून भवन।।
अरि अंग का नाथ एक संग करता जब संयोग।
जातक को करता ग्रसित, श्वेतकुष्ठ सा रोग।।

७७

कारकांश से तूर्य में वसता यदि सुधाकर।
जलराशि में बैठकर लखे उसे शुक्लाम्बर।।
इसी हाल में शुक्र संग षष्टमपति का योग।
जातक के तन में पले श्वेतकुष्ठ सा रोग।।

७८

उपरोक्त योग में भूमिसुत करता यदि प्रवेश।
महाकुष्ठ हो जातक को, मिलता नाना क्लेश।।

७९

कुज के बदले छायासुत से योग रहे यह भ्रष्ट।
नीलकुष्ठ को प्राप्त नर सहता बहुविधि कष्ट।।

८०

नवमांश में शशि गहे तिमि, युग्म, कुलीर।
सौरि, भौम से दृष्ट हो, पलता कुष्ठ शरीर।।

८१

कर्क, अलि, वृष, नक्र से कोण में पापाचार।
षष्टमपति लग्नस्थ हो, कुष्ठ का बढ़े विकार।।

८२

सोम, सोमसुत छायाग्रह संग करता जब संयोग।
रिपुनायक की दृष्टि तब कुष्ठ का देता रोग।।

८३

भौम संग षष्टेश जब जाता लग्न भवन।
पित्त कुष्ठ से तब रहे आहत जातक तन।।

८४

लग्न भवन में जब वसे षष्ठमपति, रविनन्दन।
कफ धातु ही तब बने कुष्ठ रोग का कारण।।

८५

लग्नस्थ होकर रहे दिवानाथ, रिपुनायक।
रक्तकुष्ठ से तब ग्रसित, होता ऐसा जातक।।

८६

षष्टेश संग भानुसुत तूर्य, निधन, तनु जाय।
लग्नस्थ कुज कुष्ठ से काया देत नशाय।।

८७

रिपु, रिस्फ में जब करे सौरि, भौम, गठजोड़।
शूल रोग से जातक की काया हो कमजोड़।।

८८

सिंह राशिगत सोम संग पापी ग्रह की भीड़।
आत्मज में अरिनाथ दे शूलरोग से पीड़।।

८९

षष्टेश संग निधन में सूर्यपुत्र हो भ्रष्ट।
लग्नस्थ मंगल रचे बाबासिर की कष्ट।।

९०

पापी ग्रह निधनेश बन षष्टम रहा समाय।
बाबासिर का रोग दे सारा भोग नशाय।।

९१

षष्टेशयुत सौरि द्यूनगत, मंगल बसे कुलीर।
भानु तुंग हो निधन में, बाबासिर की पीड़।।

९२

निधननाथ हो मदनगृह पापयुत या दृष्ट।
बाबासिर का संसय तब पत्री में हो पुष्ट।।

९३

कुज लग्नपति द्यूनगत, रिस्फ बसे रबिनन्दन।
निधनस्थ स्वरभान करे गुदा में रोग सृजन।।

९४

अंत्यस्थ शनि पर पड़े कुज, कल्पेश की दृष्टि।
निधननपति हो व्यवसन में, बाबासिर की सृष्टि।।

९५

सूर्य, सौरि जब करता है षष्टमगृह संयोग।
जलराशि का चन्द्र तब देता है कफ रोग।।

९६

षष्टेश बन सोम हो मलिन संग संयोगी।
पड़े राहु की दृष्टि तो जातक प्लीहा रोगी।।

९७

शनि, मंगल के बीच में जब बसता यदुनायक।
मकर राशिगत भानु हो, प्लीहा रोगी जातक।।

९८

चन्द्रराशीश, अरीश जब करे मलिन संग योग।
क्रूर षष्टियंशगत सोम दे प्लीहा में तब रोग।।

९९

सप्तमस्थ लग्नेश पर पापी ग्रह की दृष्टि।
षष्टेश हो साथ यदि प्लीहा रोग की सृष्टि।।

१००

लग्न, द्यूनपति, चन्द्र सब पापी से हो भ्रष्ट।
शुभ विवर्जित हो अगर प्लीहा होता नष्ट।।

१०१

सौरि, सोम दोनों बसे जाकर तनय भवन।
व्यसननाथ हो साथ तो प्लीहा रहे रुगन।।

१०२

षष्टमपति संग भानु करे लग्न में जब संयोग।
पाप प्रभाव हो पुष्ट तो होता दद्रुः रोग।।

१०३

शनि तनयगत, रन्ध्र मलिनयुत भव में हो दिनमान।
क्षय रोग हो जातक को यही कहें मतिमान।।

१०४

राशि, अंश में शशि, भानु की युति अथवा विनियोग।
पाप प्रभाव हो पुष्ट तो होता है क्षय रोग।।

१०५

षष्टेश संग शुक्र लग्नपति, षष्टम गृह हो पस्त।
क्षय रोग से जातक तब सदिखन रहता त्रस्त।।

१०६

चन्द्रपुत्र षष्टेश संग जाकर वसे कुलीर।
क्षय रोग से जातक का दुर्बल बने शरीर।।

१०७

रक्तवस्त्र जब तारापति संग करता है संयोग।
दाद, कुष्ठ, खुजली का तब होता नाना रोग।।

१०८

कीट कर्क नवमांश में कुमुद बन्धु का वास।
मलिन ग्रहों संग युत रहे, बाबासिर से त्राश।।

१०९

कीट राशि में राहु संग भौम करे संयोग।
शुभ प्रभाव से रिक्त हो, बाबासिर की रोग।।

११०

लग्नेश संग भौम का षष्टम हो जब गेह।
तब शस्त्र या घाव से पीड़ित होता देह।।

१११

पापयुत लग्नेश्वर की रिपु में लगे समाधि।
काया में उत्पन्न हो कई तरह की ब्याधि।।

११२

तनु निधन में भानु संग अरिपति रहता लोट।
जातक के सिर में सतत लगती रहती चोट।।

११३

तनु, निधन में भौम संग षष्टमेश का योग।
कण्ठ में तब हो सकता कई तरह का रोग।।

११४

षष्टेश संग रन्ध्र में गुरु की लगे समाधि।
तब नाभि में मनुज की होकर रहती व्याधि।।

११५

षष्टेश सौम्य रन्ध्रस्थ हो, पापी की हो दृष्टि।
हो जातक के गात में चर्मरोग की सृष्टि।।

११६

षष्टेश संग शुक्र जब पड़े मृत्यु के क्षेत्र।
कई तरह के दोष से रहे ग्रसित तब नेत्र।।

११७

तनु, निधन में सोम का रिपुपति हरे प्रभाव।
तब जातक के मूँह में हो सकता है घाव।।

११८

छाया ग्रह संग रन्ध्र में अरिपति का संयोग।
जातक को ग्रस ले तभी गुप्त अनेकों रोग।।

११९

अरि भवन में भानुसुत, अंत्य बसे रक्ताम्बर।
तब जातक के पिता को गुप्त रोग हो दुश्कर।।

१२०

जब अरीश संग भानु का अरि में घटे प्रताप।
तब रोग का कारण हो अपने तन का ताप।।

१२१

लग्नेश, चन्द्र, अरीश करें, त्रिकगृह में संयोग।
तब जातक के पेट में होय जलोदर रोग।।

१२२

ये ही ग्रह नवमांश में जाकर वसे मकर।
तब जातक की काया में होकर रहता ट्यूमर।।

१२३

षष्टम गृह में रम रहा लग्नेश, सौम्य, अंगारक।
पित्त ज्वर तब मनुज हित होकर रहता घातक।।

१२४

लग्नेश, जीव षष्टेश संग हो षष्टम गृह पस्त।
जातक को रहता सतत कब्ज अथवा दस्त।।

१२५

षष्टेश संग जीव, कवि रहे निधन में पस्त।
मधुमेह से जातक तब हो सकता है ग्रस्त।।

१२६

जीव, सोम की युति में अरिपति करे प्रवेश।
पापी ग्रह हो निधन में, मधुमेह दे क्लेश।।

१२७

कवि, जीव, षष्टेश का कल्प बने जब गेह।
पड़ता पाप प्रभाव अधिक, होता है मधुमेह।।

१२८

लग्न भवन में पापयुत देवगुरु, यदुनायक।
षष्टेश से दृष्ट हो, मधुमेह हो घातक।।

१२९

षष्टम गृह लाभेश का बनता जब आगार।
पाप दृष्ट लग्नेश हो, बढ़ता व्याधि विकार।।

१३०

षष्टमस्थ शनि पर पड़े धरापुत्र की दृष्टि।
तब जातक के पैर में रोग की होती सृष्टि।।

१३१

लग्नेश, भौम सुतगत रहे लेकर संग अरीश।
पाहन अथवा शस्त्र से घावयुक्त हो शीश।।

१३२

राहु, केतु करता यदि षष्टम गृह में भोग।
तब जातक के दाँत में होता नाना रोग।।

१३३

सौम्य, भौम लग्नेश हो, लग्न पे पापी दृष्टि।
षष्टमपति हो रन्ध्रगत, गुदारोग की सृष्टि।।

१३४

नवमांश में कर्क, अलि, शशि का हो आगार।
गुप्त रोग के सृजन से जातक हो लाचार।।

१३५

लग्न अथवा रन्ध्र में शशि, भानु, अंगारक।
अपस्मार से तब सतत पीड़ित रहता जातक।।

१३६

लग्नस्थ हो राहु तथा रिपु में शशि, रिपुनायक।
अपस्मार से तब सतत पीड़ित रहता जातक।।

१३७

छाया ग्रह संग व्यसन में धनेश, बुध संयोग।
षष्टमेश धनगत रहे, तालु में होता रोग।।

१३८

षष्टेश संग सहज में चन्द्रपुत्र का भोग।
देता है तब गले में वह जातक को रोग।।

१३९

लग्नेश्वर संग सौम्य करे भौम राशि में योग।
अहि, अरीश हो गगन में, मुख में होता रोग।।

१४०

षष्टेश संग भानु का धन में हो संयोग।
राहु, भौम षष्टस्थ हों, मुख में होता रोग।।

१४१

नीचस्थ षष्टेश संग भानु तनय हो भ्रष्ट।
तब मूर्धा के रोग से होता नाना कष्ट।।

१४२

सौम्य भौम दोनों करें, अरिपति संग संयोग।
जनन अंग में जातक के होता नाना रोग।।

१४३

षष्टेश रहे लग्नेश संग, निधन बसे स्वरभान।
तब चातुर्थिक ज्वर से सेहत का नुकसान।।

वंध्या पत्नी

१४४

शुक्र संग कामेश जब षष्टम में आसीन।
वंध्या पत्नी प्राप्तकर, जातक सन्ततिहीन।।

१४५

यदि बढ़े लग्नेश संग, षष्टमपति का मान।
शनि, राहु की दृष्टि से होय न गर्भाधान।।

१४६

सुख भवन में सौरि हो, राहु रिपु-स्थान।
देव गुरु मध्यस्थ हो, नष्ट होय संतान।।

बन्धन योग

१४७

लग्नेश संग रिपुनायक का केन्द्र-कोण में वास।
तथा वहीं पर उनके संग, करता पंगु प्रवास।।
पत्री में यह योग अगर हो, जातक करे विचार।
शरण गहे भगवान की, वरना होगी कारागार।।

१४८

इसका फल फलता सदा दशा-भुक्ति में उनके।
बन्धन का है योग बना, जिन ग्रहों से सजके।।

१४६

इसी योग में राहु यदि, हो तो होकर लाचार।
जेल यात्रा करे नर, खाकर सब विधि हार।।

१५०

राहु से यदि क्रान्त हो, विघ्नेश, व्ययेश का मेल।
कई मुकदमा हारकर, जातक जाता जेल।।

१५१

नील, नाग, लग्नेश का षष्टम घर आगार।
व्यय नायक नभ में बसे, होती कारागार।।

अंग-भंग योग

१५२

शनि, गुरु करे जो एक संग सहजभाव में वास।
अथवा जीव हो भ्रातृ में, शनि का धर्म निवास।।
रन्ध्र या व्यय भाव में, जब रहता है दिनकर।
शशि मंगल का योग हो, सप्तम या अष्टम घर।।
स्वरभान भी जा बसे, संग उन्हीं के, उस घर।
तब जातक को जीना पड़ता अपना अंग गंवाकर।।

१५३

सौरि, सौम्य और राहु यदि, कर्म में करे प्रवेश।
अपना पैर कटाकर तब जातक पाता क्लेश।।
अथवा कवि और भानु संग, रहे वक्र, सर्पेश।
शनि, जीव पर दृष्टि पड़े, बचे न पैर का शेष।।

१५४

व्योम वास हो कवि का, शनि लग्न के साथ।
सप्तम घर हो सज रहा पाकर के फनिनाथ।
ये सारे ही ग्रह करें, मलिन षष्टियंश का भेदन।
तब होकर के ही रहे, जातक का शिर छेदन।।

१५५

अरिगत हो सूर्यसुत, गगन में तम का जोड़।
यह दुर्योग सदा देता, पैर मनुज का तोड़।।

अप-मृत्यु

१५६

लग्नेश्वर से दृष्ट रहे, त्रिक्भावस्थ निशाकर।
राहु, मन्दि, शनि साथ हो, मृत्यु बड़ा ही दुस्कर।।

१५७

नीच, अस्त या शत्रुगृही, मन्द मलिन से युक्त।
लग्नेश क्रूर षष्टियंश में, मृत्यु कष्ट से युक्त।।

१५८

पाश, सर्प द्रेश्कान में यदि रहे अष्टमपति।
षष्टस्थ लग्नेश हो, मिले भयानक गति।।

१५९

अष्टम घर का द्रेश्कानेश, मन्द, मन्दि राहु से पतित।
फांसी लगने से करे, नर तब अपना प्राण तजित।।

१६०

मन्दाधिष्ठित राशि के द्रेश्कानपति संग वक्र।
षष्टेश संग युत रहे, अपमृत्यु का चक्र।।

१६१

समसप्तक हो पत्री में मंगल और अहस्कर।
अथवा करे नवांश में गृह-विनियोग परस्पर।
इसी योग में जब करे शत्रुनाथ भी भोग।
तब वीरगति पाने का, बन जाता है योग।।

१६२

पत्री में जब शुभ सभी रहे नीच या अस्त।
अथवा वे नवमांश में रहे शत्रुगृह व्यस्त।।
लग्ननाथ बलहीन हो, अष्टमगृह हो त्रस्त।
तब हठात होता नर अपमृत्यु से ग्रस्त

१६३

मलिन षष्टियंश में जब रहे, सौरि, सर्प व सविता।
नील अस्त, मृति भ्रष्ट हो, सहसा जातक मरता।।

१६४

विघ्नेश्वर बन वक्र जब सहज भाव को जाय।
मन्द, मन्दि, राहु अगर, उस घर को ही सजाय।।
कठिन योग यह करता है, दुश्कर मृत्यु प्रदान।
समरभूमि में तब तजे, जातक लड़कर प्राण।।

१६५

कई दुष्ट ग्रह करते हों, अष्टम घर में वास।
मंगल का नवमांश ही, इनका बने निवास।।
क्रूर षष्टियंश में यदि, इनकी बिछे बिसात।
तब प्रायः ही मनुज की होती मृत्यु हठात।

रुचिकर भोजन

१६६

रिपु भवन में जब रहे सौम्य जीव आसीन।
मृदुअंश को प्राप्त कर अगर रहे शुभलीन।।
अथवा वे बन जाते शत्रुभवन के नायक।
तब हमेशा चाहता रुचिकर भोजन जातक।।

१६७

शुभ अंशगत,. शुभ ग्रहों का, षष्टम में हो योग।
अरिनाथ शुभ दृष्ट यदि, प्रिय-भोजन का भोग।।

१६८

षष्टमपति कवि, जीव हों, मृदुअंश को प्राप्त।
मिष्ठानों में तब सदा, जातक का मन व्याप्त।।

१६९

शुभ अंशगत, सबल कवि, रिपुभाव आसीन।
तब रहता जातक का मन, मिष्ठानों में लीन।।

१७०

शत्रुगृही कवि, सौम्य हो षष्टम का रखवाला।
जातक को प्रियकर लगे, भोजन तनिक कसैला।।

१७१

पाप दृष्ट शशि तनय जब, षष्टम घर में रहता।
मिष्ठानों में मनुज का, मन नहीं तब रमता।।

१७२

रिपु भवन में जब रमे दैत्य गुरु और बोधन।
शत्रुराशि में हो यदि, रुचता खट्टा भोजन।।

१७३

षष्टस्थ कुज, शुक्र पर, सौरि दृष्टि का बट्टा।
तब जातक को प्रिय लगे, भोजन थोड़ा खट्टा।।

विविध

१७४

व्यसन, आय का योग होता कभी न सुन्दर।
जातक जीवन भर रहे सदा कर्ज में लदकर।।

१७५

षष्टम पति हो रन्ध्र में, आयेश रहे बलयुक्त।
पाप की पड़ती दृष्टि तो, नर कर्जे से मुक्त।।

१७६

राहु-केतु जब भी कभी, रिपु-रिस्फ में जाता।
दशा-भुक्ति में अपनी रोग अवश वह देता।।

१७७

पापअंशगत, पापयुक्त, रवि का रिपु में योग।
अधिक ताप के कारण हो, फोड़ा, फुंसी, रोग।।

१७८

इसी हाल में षष्टमगत, होता यदि निशाकर।
जातक को होता तभी, वातरोग अति दुश्कर।।

१७६

इसी हाल में अरिगत भौम रहता यदि सदोष।
जातक को रहता तभी, सदा रक्त का दोष।।

१८०

चन्द्रपुत्र का इसी हाल में बनता जब संयोग।
तब जातक को होता है, कफ, वात का रोग।।

१८१

शुक्र, इसी विधि से करे, पाचन को कमजोर।
शनि देता इस हाल में वायु जनित मरोड़।।

१८२

इसी तरह हो राहु-केतु का षष्टम घर आगार।
तन में होता मनुज के, अद्भुत कई विकार।।

१८३

पाप दृष्ट शशि मंगल का षष्टम हो आगार।
जातक करता प्राप्त तब, पीलिया, मनोविकार।।

१८४

इसी योग में जब करे सविता भी संयोग।
जातक करता प्राप्त तब, पीलिया जैसा रोग।।

१८५

अरिगत कुज व बुध पर, भृगु-चन्द्र की दृष्टि।
पाप अंश का कुज करे, तब टी.वी की सृष्टि।।

१८६

नील, भौम को रिपु में देखे, भानु तथा भुजंग।
निर्बल हो लग्नेश अगर कठिन रोग हो अंग।।

१८७

अरिगत नील, गुलिक को देखे, भानु तथा भुजंग।
निर्बल हो लग्नेश अगर कठिन रोग हो अंग।।

१८८

अश्लेषा का भौम यदि षष्टम में हो व्याप्त।
तब होता जातक सदा कैंसर रोग को प्राप्त।।

१८९

कर्क लग्न के षष्टम में मंगल करे प्रवेश।
आंत रोग तब जातक को होकर रहे विशेष।।

१९०

धनु, मीन का बुध जब व्यय, व्यसन में होता।
शनि की पड़ती दृष्टि तो पुंषत्व नर खोता।।

१९१

छायासुत षष्टम बसे, अष्टम में हो दिनकर।
अर्धकाय संग शुक्र रमे, नामर्द होता नर।।

१९२

षष्टेश्वर हो शुक्र तथा नक्षत्र धरे वह भरनी।
गुप्त रोग से ग्रसित नर भरता अपनी करनी।।

१९३

षष्टस्थ अलि में बसे, कुज कवि के साथ।
मध्यस्थ हो जीव जब नर चिरजीवी, सनाथ।।

१९४

भौम भुजंग से दृष्ट हो रिपु भवन का नायक।
नीच कर्मरत, झगड़ालू अथवा चोर हो जातक।।

१९५

अरिगत शनि, गुरु वित्त में, रन्ध्रस्थ हो बुध।
तब ज्योतिष के ज्ञान में जातक बने प्रबुद्ध।।

१५६

षष्टस्थ जल राशि में बसता यदि सुधाकर।
जल तत्व की राशि में जाता हो विघ्नेश्वर।।
चन्द्रपुत्र की दृष्टि करे षष्टमपति जब भोग।
तब जातक को होता है मूत्राशय का रोग।।

१९७

शशि भौम जब एक संग रिपुगृह करे प्रवेश।
अर्धकाय से दृष्ट हो, सर्प से मिलता क्लेश।।

१९८

धन भाव में गुलिक संग सिंहीसुत का रगड़ा।
षष्टेश से दृष्ट रहे तो साँप से होता खतरा।।

१९९

लग्न में षष्टेश संग सहजनाथ, स्वरमान।
सर्पदंश के भय का हो पत्री से अनुमान।।

२००

पापी ग्रह हो लग्नगत, गुलिक कोष में मस्त।
रिपुनायक हो साथ तो तस्कर करते त्रस्त।।

२०१

छाया ग्रह से युत रहे पत्री में षष्टेश।
साँप, अथवा या चोर से जातक पाता क्लेश।।

२०२

धर्मेश रहे रिपु भवन में षष्टेश से दृष्ट।
चोर अथवा सर्प से पीड़ा मिलती पुष्ट।।

२०३

सौरि, भौम के साथ हो पत्री में षष्टेश।
अग्नि अथवा चोर से मिलता कष्ट विशेष।।

२०४

धरापुत्र संग पत्री में जब रहता षष्टेश।
तब अग्नि से पाता है जातक नाना क्लेश।।

(अ)
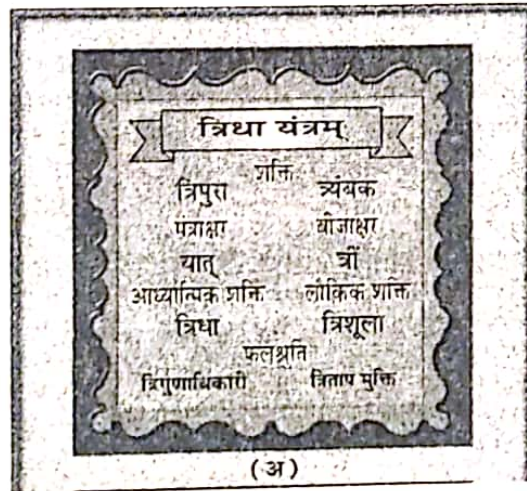
विभु यंत्रम्
शक्ति
भुवनेश्वरी
जगदीश्वर
मंत्राक्षर
बीजाक्षर
यो
खं
आध्यात्मिक शक्ति
लौकिक शक्ति
गौरी
विश्वोत्तमा
फलश्रुति
सुयश, कीर्ति
सत्ता, ऐश्वर्य

(अ)

खं
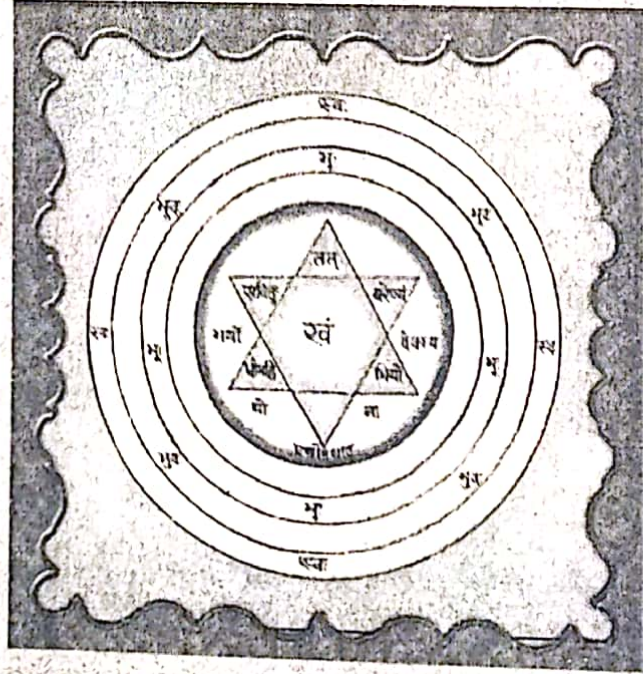
(ब)

भवानी

असुर निकन्दनि भवानी दुर्गा आदिशक्ति की विशेष अवतरण प्रकिया का रूप है। काया में स्थित देवशक्तियों की विशेषताएँ एक होकर दुर्गाशक्ति बन जाती है। पराक्रम का प्रतीक सिंह इसका वाहन है। इसकी आराधना-अनुकम्पा से व्यक्तियों, वृत्तियों तथा समाज में उभरते विकारों को दमित - शमित किया जा सकता है। यह सत्साहस एवं सत्पराक्रम उभारती है।

सप्तम भाव

वाणिज्यं व्यवहारं च विवादं च समं परैः।
गमागम कलत्राणि पश्येत प्राज्ञः कलत्रतः।।

जामित्रमस्तं मदनं द्‌युनं द्‌यूनं स्मरं मदः।
स्त्री कामाख्यामिति प्रोक्तसप्तमं पूर्वसूरिभिः।।

युवतिपदाद्वाहं भार्यापतिसूपदधिगूडक्षीरम्।
आगमनं सरिदाप्ति मूत्राशयं च नष्टधनम्।।

सप्तम भाव फल

कारकत्व

१

काम-वृत्ति या रोजी-रोटी,
दो या ज्यादा गठबन्धन।
भोग-विलास, वियोग, तलाक,
कलह, यौण, दम्पति-जीवन।।
स्वतंत्र-धन्धा, पत्नी-व्रतधर्म,
या पर-कान्ता संग रमण।
कामवासना, मूत्राशय व पद
प्राप्ति या भूमि, भवन।।
छोटी-यात्रा या क्रय-विक्रय,
या मुकदमा से जो क्लेश।
रंग, रूप, आकार, गुणादि,
पत्नी में जो मिले विशेष।।
समझौता, गुप्तांग, विरोधी,
साझेदारी का दे बोध।
प्रजा, विदेश, दिनचर्या एवं,
व्यय, निधन का बने प्रबोध।।
दम्पति सुख या जीवन संगिनी,
काम-कला के सकल प्रकार।
प्रेम-प्रसंग, मैथुन आदि का
सप्तम घर से करें विचार।।
दधि, दाल या दूध, गूड़ हो,
अथवा होता कहीं प्रयाण।
विवाह-समय, ससुराल हाल,
व शत्रु - पक्ष का देता ज्ञान।।

काम वृत्ति

२

जाया गृह में भृगुनन्दन दे,
प्रबल काम की ऊष्मा।
पर वागीश बढ़ा देता है,
दम्पति सुख की गरिमा।।

३

चन्द्र तनय हो रमणी मन्दिर,
पर दारा संग हो सम्बन्ध।
छायासुत जब कामभवन में,
शुद्र संग बनता अनुबन्ध।।

४

शुभयुत या शुभ अंशगत,
पत्री में जब हो कामेश।
सबल शुक्र से दम्पत्ति जीवन,
में हो गरिमा युक्त प्रवेश।।

५

रक्त वस्त्र हो मदनभाव में,
देता दुःख, संताप तमाम।
अनैतिक सम्बन्धों से नर,
सदिखन ही होता बदनाम।।

६

दिवानाथ देता दारा में,
पति, पत्नी, परिवार अपार।
लेकिन पर नारी के कारण,
दम्पति सुख में पड़े दरार।।

७

पापी एवं छाया ग्रह संग,
पत्री में होता कामेश।
अति कामुक जातक में होता,
पर नारी के हित आवेश।।

८

कर्म, मदन, धन का स्वामी,
जब पत्री में होवे आकाश।
तब औरों के पत्नी के संग,
जातक का बढ़ता सहवास।।

६

कान्ता, कोष, गगन का नायक,
जन्म - चक्र में हो पाताल।
भोग अनेकों रमणी का कर,
जातक रहता सदा निढ़ाल।।

१०

भृगुकुल दीपक के ऊपर जब,
अर्धकाय का रहता वेग।
प्रबल काम का जातक तन में,
बहता रहता नित आवेग।।

११

तप, विघ्न और कामपति जब,
अशुभ दृष्टि से रहता व्याप्त।
पर पत्नी से प्रजनन - सुख,
तब जातक को होता है प्राप्त।।

१२

अरि काम धन के स्वामी, यदि बसें जा लग्न।
पाप प्रभाव से मलिन भृगु, होता वहीं निमग्न।।
या लग्ननाथ, अरिनाथ हो, पापी ग्रह के संग।
पर दारा सम्बन्ध करे तब दाम्पत्य सुख भंग।।

१३

अरि, उदय और द्रव्यपति, दुष्टों से हो युक्त।
शुभ अंशों से यदि रहें वे दसवर्गादि में मुक्त।।
या पापयुत दारापति संग, मन्द मदन आसीन।
तब अन्य रमणी में हो जातक का मन लीन।।

१४

दारा गृह में हो अगर तम या कुज की राशि।
या फिर ये नवमांश में, लें जाया की राशि।।
कवि अथवा कामेश से, इनका हो अनुबन्ध।
पर पत्नी से होता तब, जातक का सम्बन्ध।।

१५

सुत, काम या कोष में, देव दैत्य-गुरु संग।
मलिन ग्रहों का जब जमे इनके ऊपर रंग।।
अति कामुक जातक करे, सब मर्यादा भंग।
उसे चाहिये हर समय, परनारी का संग।।

१६

कुज, नील के लग्न में कवि का होवे वास।
अर्धकाय भी करता हो, सुनु संग प्रवास।।
कामुक जातक कर देता, सब मर्यादा नाश।
रति इच्छुक वह चाहता सभी समय सहवास।।

१७

मन्दाधिष्ठित राशिनाथ पर दृष्टि शुक्र की पड़ती।
या उशन अविनेय गृही हो या भुजंग से पटती।।
या सौरि दृष्ट दशमेश का, रुधिर राशि अवलम्बन।
तब जातक करता नारी के प्रजनन पुष्प का चुम्बन।।

१८

कवि एवं कामेश पर मलिन प्रभाव विचित्र।
परगामी जातक जाता, दुषित रहे चरित्र।।

१९

सौरि साँप या भौम संग शुक्र करे विनियोग।
तब करता जातक सदा, पर-नारी का भोग।।

२०

योग राहु, कवि, भौम का, देता कष्ट बहुत।
अप्राकृतिक यौण से, जातक हो अभिभूत।।

२१

मलिन सुनु हो द्यूनगत, कामेश सर्प संयोग।
तब पराई नारी संग, नर का हो सम्भोग।।

२२

कामस्थ कवि जब करे भौम दृष्ट स्वीकार।
अगु का हो नवमांश तब, बढ़ता है व्यभिचार।।

२३

भौम, भुजंग से दृष्ट हो, शशि, सुनु जाया में।
प्रबल काम का वेग हो, जातक की काया में।।

२४

चर लग्नगत बलि पंडित, मन में देता हलचल।
प्रज्वलित तन में करते, रति का कठिन अनल।।

२५

शुक्र और शशि दोनों पर, पापी करें प्रहाड़।
जातक का रति में होता, पशु तुल्य व्यवहार।।

२६

सभी केन्द्र, केन्द्रेश पर, पाप ग्रहों का जोड़।
रति काल में नर करे, जानवरों संग होड़।।

२७

भौम, भानु और भानुसुत, यदि बसे पाताल।
कामकला में जातक का, जानवरों सा हाल।।

२८

मंगल हो पाताल में, राहु जाय जामित्र।
पशुवत जातक का रहे, रति में रंग विचित्र।।

२६

नीच, अस्त लग्नेश कामगत, पाप प्रभाव हो पुष्ट।
पशु - तुल्य रति - कर्म से, जातक हो संतुष्ट।।

३०

शुक्र यदि हो भौम राशि में, भौम संग संयुक्त।
तब औरों की पत्नी में, जातक हो आसक्त।।

३१

गगन, निधन या दूयून में शुक्र, सौम्य संयोग।
तब अतिशय व्यभिचार का बनता भीषण योग।।

३२

सुखनाथ संग शुक्र का उचित नहीं आचार।
राहु रहे यदि साथ तो बढ़ता है व्यभिचार।।

३३

नभ, द्यून में जब करे कवि, भौम संचार।
तब चर्चित होकर रहे जातक का व्यभिचार।।

३४

तूर्य, गगन का नाथ हो शुक्र तथा अंगारक।
द्यूननाथ से दृष्ट युत, व्याभिचारी हो जातक।।

३५

चन्द्र से दसवें भाव में जब रहता शुक्लाम्बर।
छायासुत हो द्यून में, व्याभिचारी होता नर।।

३६

सौरि, सौम्य, कवि जब वसे द्यून या दसवें भाव।
शुक्र यदि भावेश हो, काम का प्रबल प्रभाव।।

३७

काम, कोष और व्योमपति रहें व्योम में मस्त।
कामेक्षा की पूर्ति में नर हो हरपल व्यस्त।।

३८

छायाग्रह संग कान्तापति जब पत्री में हो पस्त।
प्रबल काम के वेग से जातक रहता ग्रस्त।।

३९

सौरि, भौम के वर्ग में शुक्र करे विश्राम।
उनसे ही हो दृष्ट तो दे रतिभोग तमाम।।

४०

कारकांश से अंत्य में शुक्र तथा अंगारक।
परदारा सहवास हित हरपल उत्सुक जातक।।

४१

कारकांश से नवम में करता शिखी प्रवेश।
परनारी संग रमन का अवसर मिले विशेष।।

४२

कामेश संग कोष, तोय में धनपति करे गमन।
तब अनेकों रमणी संग जातक करे रमण।।

४३

अम्बु, कामपति जब करे धन या गगन प्रवास।
तब पराई नार संग नर करता सहवास।

४४

कान्तापति का जब बने वित्त या व्यय आगार।
भृगुकुल दीपक साथ हो, बढ़ता है व्यभिचार।।

४५

कामेश संग कवि, भौम का उचित नहीं अचार।
अम्बुनाथ हो साथ तो बढ़ता नित व्यभिचार।।

४६

सप्तम गृह में सोम को कुज, पंगु दे कष्ट।
तब जातक का हर तरह शीलधर्म हो भ्रष्ट।।

४७

केन्द्रस्थ शशि, भानु का क्रूर षष्टियंश निवास।
जननी जैसी नारी संग नर करता सहवास।।

४८

मलिन दृष्ट केन्द्रस्थ सोम, कवि क्रूर षष्टियंश प्रवेश।
मातृतुल्य नारी संग बनता काम प्रसंग विशेष।।

४९

मलिन दृष्ट कामेश नाग संग हो पाताल प्रविष्ट।
मातृतुल्य नारी में रुचता कामुक स्नेह विशिष्ट।।

५०

क्रूर षष्टियंशगत कामेश का सहज में पद्म पराग।
भगिनी सम वनिता में बढ़ता जातक का अनुराग।।

५१

कामेश संग सौरि, कुज करता अम्बु प्रवास।
भगिनी जैसी युवती संग नर करता सहवास।।

५२

मदन, अंत्य में सोमसुत करता यदि प्रवेश।
राहु संग कामेश तब दे रतिभोग विशेष।।

५३

सप्तमस्थ हो भानु तथा द्यून, दसमपति योग।
तब वंध्या नारी के संग जातक करता भोग।।

५४

द्यून दसमपति साथ हो, जाया भौम प्रवास।
मृतूवत्सला नारी संग जातक करे विलाश।।

५५

गगन मदनपति युत रहे, गुरु हो काम भवन।
उच्च वर्ग की युवती संग जातक करे रमण।।

५६

गुरु के बदले शनि करे काम में जब संयोग।
नीच कुलों की नारी संग जातक करता भोग।।

५७

कामेश हो सहजेश संग, तपगत रहे सुधाकर।
जातक करता भोग तब गुरु पत्नी संग जाकर।।

५८

कामेश संग शुक्र का तप में हो अनुबन्ध।
गुरु पत्नी के संग हो जातक का सम्बंध।।

५९

तपेश, शुक्र, कामेश का षष्टम हो आगार।
छोटी साली संग रचे जातक का व्यभिचार।।

६०

इसी योग में शुक्र के बदले हो यदुनायक।
गुरु पत्नी के संग रमण करता ऐसा जातक।।

६१

नवमेश के नवमांशपति संग शुक्र करे संयोग।
जायापति भी साथ हो, गुरुपत्नी संग भोग।

६२

पंचमपति हो द्यूनगत, भव में शशि, कामेश।
ज्येष्ठा साली संग करे जातक भोग विशेष।।

६३

इसी हाल में शुक्र संग लग्नेश्वर का योग।
पुत्रवधु का ही करे कुत्सित जातक भोग।।

६४

मलिन ग्रहों के साथ हो लग्ननाथ, रिपुनायक।
परदारा में खास रुचि तब रखता है जातक।।

६५

पत्री में हो एक संग तपनायक, रन्ध्रेश।
गुरु पत्नी संग रमण का बनता योग विशेष।।

६६

द्यूून, निधन में जब कभी निर्बल सोम समाय।
पर दारा संग रमण का जातक रचे उपाय।।

६७

कान्तागृह व नाथ पर जब हो पापाचार।
जातक उद्यत हो सतत करने को व्यभिचार।।

६८

वित्त, अरि या कामगत देव, दैत्य के पण्डित।
अशुभ युत रहता यदि, शील, धर्म हो खण्डित।।

६९

मलिन ग्रहों के साथ हो यदि लग्न का नायक।
तब पराई नार में लिप्त रहे वह जातक।।

७०

सारे केन्द्रगृहों में हो भीषण पापाचार।
पशु तुल्य जातक करे रतिकाल व्यवहार।

७१

दिवानाथ हो द्यून में, मंगल हो पाताल।
रतिकर्म में जातक का जानवरों सा हाल।।

७२

अशुभ ग्रह जब गुलिक संग रहता है कामस्थ।
पशुवत केलिक्रिड़ा से नर का मन हो स्वस्थ।

७३

सहजेश संग शुक्र हो व्यसन भवन आसीन।
काम शक्ति तब मनुज की होकर रहती क्षीण।।

७४

निर्बल हो कामेश तथा पापी मदन प्रविष्ट।
तब क्षीण पुंषत्व से सुख हो सकल विनिष्ट।।

७५

वक्री ग्रह की राशि में यदि रहे शुक्लाम्बर।
पूर्ण काम सुख रति में भार्या को देता नर।।

७६

सप्तमस्थ भृगु को यदि देख रहा कामेश।
तब कामसुख नारी को जातक देय विशेष।।

७७

अम्बु, व्योम में भौम से छायासुत, यदुनायक।
तब रमणी को काम सुख देता ज्यादा जातक।।

७८

लग्नेश संग वक्र जब जाकर वसता कोष।
तब जातक दे पत्नी को केलिकर्म में तोष।।

७९

शुक्र संग स्वरभान जब जाकर वसता कोष।
अल्प कामसुख से बढ़े कान्ता मन में रोष।।

८०

छायासुत से युक्त हो कारकांश-तुलाधर।
काम कला में असफल होता ऐसा नर।।

८१

स्वरभान से युत रहे जब कारकांश-कुलीर।
कठिन काम की आग में जलता रहे शरीर।।

८२

पापयुत होकर रहे कारकांश जब कीट।
प्रणय प्रदर्शन में सदा जातक होता ढीट।।

८३

मंगल हो पाताल में, जाया में स्वरभान।
काम क्रिडा जातक करे प्रतिदिन पशु समान।।

८४

यदि शुक्र से दृष्ट हो कामस्थ अंगारक।
पशुतुल्य रति कर्म से हर्षित होता जातक।।

८५

सप्तमपति का भावपति जब बनता अंगारक।
शुक्र उसे हो देखता, पशुवत रति में जातक।।

८६

कामेश संग शुक्र का भौम राशि अवलम्बन।
नारी के गुप्तांग का जातक करता चुम्बन।।

८७

सप्तमपति संग साँप हो, मद में शनि, कवि हर्षित।
भग चुम्बन से खास सुख, जातक करता अर्जित।।

८८

गगननाथ संग कवि करे मंगल राशि विहार।
दिनकरसुत जब पत्री में देखे उन्हें निहार।।
नीचांश या राहु संग, भौम करे गठजोड़।
चूमे प्रजनन पुष्प को जातक भाव विभोर।।

८९

नीच अंश में सौरि संग लग्ननाथ हो तिष्ठित।
चूम के प्रजनन पुष्प को जातक होता हर्षित।।

९०

सौम्य, सौरि के संग जब मद में करे विहार।
विधवा नारी संग सजे जातक का अभिसार।।

९१

पाप दृष्ट शनि शीतकर मद में करे गमन।
तब विधवा के संग सतत जातक करे रमण।।

९२

नवमांश में राहू संग दारेश, शुक्र संयोग।
तब अनेकों रमणी का जातक करता भोग।।

९३

देवगुरु हो द्यून में, शुभ संग हो कामेश।
तब नर अपनी जाया से पाता तुष्टि विशेष।।

९४

शुभ प्रभाव जब पड़ता है कान्तागृह पर पुष्ट।
तब निज नारी संग ही जातक रहता तुष्ट।।

पत्नी का रूप, गुण व धर्म

९५

द्यून भाव, भावेश तथा राशि का हो जो गुण।
उस हिसाब से ज्ञात हो, जीवन संगी का गुण।।

९६

शुक्र के नवमांश राशि का जो होता गुण, धर्म।
तदनुसार हो दारा का, गुण, रूप और कर्म।।

९७

सोम के नवमांश राशि और नायक का आचार।
पत्नी के गुण, रूप का, उससे करें विचार।।

९८

लग्न के नवांश राशि का जो होता स्वभाव।
पत्नी के गुण, शील पर, उसका पड़े प्रभाव।।

९९

सप्तम शुभ, शुभ नवमांश में निर्बल शशि का ठौर।
जातक की पत्नी होती, तब निर्मम निठुर कठोर।।

१००

सबल वक्र और शुक्र हो, दारा गृह आसीन।
तब नारी के सौम्य गुणों से पत्नी होती हीन।।

१०१

शशि विक्षित कवि काम में, बढ़ जाता है रूप।
भानु-भुजंग के संग से, रंग मलिन, सुन्दर स्वरूप।।

१०२

नील, नाग से युत दृष्ट कवि या पाप-मध्यत्व।
कोमल पत्नी में भरे, बहुत अधिक पुरुषत्व।।

१०३

शशि शत्रुगत, सप्तमेश पर शनि का होवे स्वत्व।
दिनकर हो जब द्यून में, दारा में पुरुषत्व।।

१०४

काम भाव, कामेश पर मलिन प्रभाव अरूप।
जातक की पत्नी होती, कुल्टा और कुरूप।।

१०५

मदन भवन में मंगल देता कठिन, कठोर, उरोज।
सुनु, सौम्य, शशि हो वहां, कुच हो यथा सरोज।।

१०६

भानु द्यून में देता है, वक्ष, कठोर, नुकीला।
राहु, गुरु, शनि से बने, दीर्घ तथा गर्वीला।।

१०७

वागीश संग जायेश दे, वक्ष गोल पुष्टीला।
पापी से युत हो यदि, कुच छोटा और गठीला।।

१०८

सप्तमेश संग हो कोई पापी ग्रह हठीला।
असमान कुचवाली पत्नी, मन होता रंगीला।।

१०९

कर्क अथवा मीन राशि में कामेश का कक्ष।
जीव दृष्ट होता यदि अति विशाल हो वक्ष।।

११०

भानु, भौम हो दारापति राहु, मन्दि, मन्द संग।
जीवन - साथी का होता, अति दीर्घ गुतांग।।

१११

दारापति जब बनता है, देव या दैत्य-प्रवर।
जीवन साथी का होता, गुप्तांग अति सुन्दर।।

११२

कामेश हो जीव, कवि, मलिन नवांश का संग।
जातक के जीवन साथी का दीर्घ होय गुप्तांग।।

११३

शनि, सोम या सोमयुत, कामभाव के संग।
मंगल से हो दृष्ट अगर, लघु होता गुप्तांग।।

११४

कवि एवं कामेश हो, जल राशि के भाव।
भार्या के गुप्तांग से, रस का अधिक बहाव।।

११५

सबल सोम जल राशिगत, जल ग्रहों की दृष्टि।
कामेश जल राशि में, रस की होती वृष्टि।।

११६

कामेश, कवि, जीव, शशि जब बसता जल भाव।
कान्ता के गुप्तांग से होता रस का निर्झर स्राव।।

११७

कामेश कवि सोम हो अग्नि तत्व के भाव।
पत्नी के गुप्तांग में रस का रहे अभाव।।

११८

कामेश का वास-गृह, दुष्ट युक्त या खुस्क।
या हो पाप-मध्यत्व में, गुप्तांग हो शुष्क।।

११९

कामेश व कवि बसे मृग, तापुरि, तुलाधर।
दुश्चरित्र पत्नी होती जो सकती नहीं सुधर।।

१२०

शुक्र, सौरि और सांप जब जाये शत्रु भवन।
कुल्टा पत्नी तब करे, औरों संग रमण।।

१२१

पंकज अरि पातालगत, कान, कोण अम्बर में।
पत्नी की असाक्ति हो, सतत पराये नर में।।

१२२

मदन, व्यसन, व्ययनाथ हो, पापी ग्रह के साथ।
गैर मर्द के बांह में रमती, पत्नी हाथो-हाथ।।

१२३

तम, कुज से दृष्ट कवि रहे नीच, त्रिक्-भाव।
तब उज्जवल शील की, भार्या में रहे अभाव।।

१२४

शुभ अवलोकित भानु जब जाकर बसे कलत्र।
सुन्दर पत्नी की ही चलती सभी बात सर्वत्र।।

१२५

स्वच्छ सोम हो कामगत, शुभ अंशों में सत्वर।
कामेश शुभयुत सबल, भार्या होती सुन्दर।।

१२६

कामस्थ शशि निर्बल हो, पापी करें प्रहार।
रूप धर्म गुण शील सब पत्नी का बेकार।।

१२७

स्वगृही या उच्चगत मदन में हो रक्ताम्बर।
जीव कवि से दृष्ट हो, पत्नी होती सुन्दर।।

१२८

स्वगृही, शुभ दृष्ट हो, जाया में नीलाम्बर।
उम्र से ज्यादा की लगे, पर पत्नी हो सुन्दर।।

१२९

स्वगृही या उच्च का शशिसुत जाय मदन।
रूपमती पत्नी होती, कान्ति युत हो आनन।।

१३०

मेष लग्न का जातक हो, सप्तम में शुक्लाम्बर।
शुभ से होवे दृष्ट अगर, पत्नी होती सुन्दर।।

१३१

वृष लग्न हो, दारा गृह में, बलपूरित रक्ताम्बर।
कटु स्वभाव की भामिनी, होती लेकिन सुन्दर।।

१३२

मिथुन लग्न की कुण्डली, कान्ता-गृह गुरु जाय।
समझदार पत्नी की होती सुन्दर सरल सुभाय।।

१३३

कर्क लग्न की पत्री हो, सप्तम में रविनन्दन।
दुष्ट प्रवृति की पत्नी का रंग, रूप, साधारण।।

१३४

सिंह लग्न हो जातक का, दारा गृह नीलाम्बर।
शालीन, मितव्ययी, मितभाषी, पत्नी पाता नर।।

१३५

लगन कुमारिका जातक का, द्यून भाव सुर पूज्य।
मिलनसार, विदुषी, मृदुभाषी, पत्नी पा नर धन्य।।

१३६

तुला लगन की पत्री हो, सप्तम में अविनेय।
रूपसी, तेजस्वी पत्नी होती अमित सुयोग्य।।

१३७

सप्तमस्थ हो भृगु तथा कीट लग्न का जातक।
स्वच्छन्द पत्नी होती है सुन्दर व आकर्षक।।

१३८

चापधर हो लग्न तथा सप्तम में शशि-पुत्र।
तेजस्वी पत्नी में हो, अमित गुणों का सूत्र।।

१३९

शीत रश्मि हो द्यून में, मृग लग्न का जातक।
भावुक, सुन्दर, मनचली, पत्नी हो आकर्षक।।

१४०

कुम्भ लग्न की पत्री हो, द्यूनस्थ हो दिनकर।
लावण्यमयी पत्नी होती तेजस्वी व सुन्दर।।

१४१

मीन लग्न हो जातक का, सप्तमस्थ हो बोधन।
सीधी सुन्दर, सरल भामिनी में होता सम्मोहन।।

१४२

शुभ अंशगत सप्तमेश हो, शुभ हो व्योम भवन।
तब जातक की पत्नी का भारी होता स्तन।।

१४३

कामेश रहे शुभ वर्गगत, सपतम राहु लगा।
तब जातक की पत्नी हो प्रायः दीर्घ-भगा।।

१४४

चन्द्र तनय कामेश हो, दिनकर सुत हो संग।
तब हो जीवन साथी की अति ह्रस्व गुप्तांग।।

१४५

कारकांश से द्यून में शशि, गुरु करे प्रवेश।
तब जातक की पत्नी को मिलता रूप विशेष।।

१४६

कारकांश से काम की सौरि करे रखवाली।
निज उम्र से ज्यादा हो जातक की घरवाली।।

१४७

कारकांश से द्यून में जब वसता अविनेय।
तब विधाता जातक को विकलांग वधु देय।।

१४८

कारकांश से कान्तागृह में चन्द्रपुत्र आसीन।
तब जातक की भामिनी होती कला प्रवीण।।

१४९

शिखी, सौम्य जब एक संग करे लग्न में योग।
व्याधि-ग्रस्त पत्नी मिले जो पाले नाना रोग।।

१५०

तोय, व्योम में शुभ संग करे मदेश प्रयाण।
शीलवती पत्नी से बढ़ता जातक का अभिमान।

१५१

निधन भवन में जायापति जब करता विश्राम।
क्रोधी पत्नी संग मचे तब निशि दिन संग्राम।।

१५२

शुभ युत या शुभ दृष्ट हो कान्तागृह या कारक।
अति सुन्दर पत्नी पाकर, प्रफुलित रहता जातक।।

१५३

शुक्र तथा कामेश केन्द्रगत, शुभ प्रभाव हो सारा।
तब जातक को प्राप्त हो अतिशय सुन्दर दारा।।

१५४

गोपुरादि अंशों में जब रमता है शुक्लाम्बर।
शुभ दृष्ट हो द्यून गृह, पत्नी मिली सुन्दर।।

ससुराल की दिशा

१५५

दारा गृह को जो ग्रह देखे या जो वहां प्रविष्ट।
ससुराल की दिशा करें वे ही ग्रह निर्दिष्ट।।

१५६

तपनायक, भृगु जब करें नभ या लग्न प्रवेश।
जातक की ससुराल तब बने दूर ही देश।।

१५७

कोणस्थ कामेश हो, वित्त, व्योम में दुष्ट प्रवेश।
सप्तम हो पापांश अगर, ससुराल सुदूर, विदेश।।

१५८

तनु, द्यून के स्वमी जब करें दृष्टि विनियांस।
जातक की ससुराल हो, सदा आस ही पास।।

१५६

शुक्र से सप्तम गृहपति, पत्री में जिस ओर।
वही दिशा ससुराल की, ज्योतिष करता शोर।।

१६०

पापी ग्रह संग कोण में वसता जब कामेश।
जातक की ससुराल तब होती दूर विदेश।।

ससुराल की स्थिति

१६१

प्रथमेश की तुलना में, सप्तमेश रहे कमजोड़।
पाप - कर्त्तरी में पड़े या नीच अंश में होड़।।
नीच संग या अस्तगत, अरि अलय आसीन।
जातक की ससुराल हो, अपने घर से हीन।।

१६२

लग्नेश्वर की तुलना में कामेश रहे बलवान।
शुभ प्रभाव से युक्त या शुभ नवमांश प्रयाण।।
जब वैशेषिक अंश में दारापति हो मस्त।
जातक की ससुराल हो, धनी और सुभयस्त।।

१६३

लग्नेश यदि कमजोड़ हो तुलना में दारेश।
नवमांश में नीच या त्रिक् में करे प्रवेश।।
दसवर्गादि में दारापति पाता हो जब मान।
निज गृह से जातक की दारागृह धनवान।।

१६४

कामेश्वर से जब रहे लग्ननाथ बलशाली।
नवमांश में उच्च हो, शुभ से हो गुणशाली।।
अथवा कोण या केन्द्र में बनता गौरवशाली।
जातक का ससुराल तब होता वैभवशाली।।

विवाहोपरान्त भाग्योदय

१६५

दैत्यगुरु कामस्थ हो या उपाच्य को जाय।
अथवा बलपूरित होकर धन में यदि समाय।।
शुभ ग्रहों से दृष्ट हो यदि उदय का नाथ।
शादी के उपरान्त तब सदा भाग्य दे साथ।।

१६६

शुक्र संग त्रिक्भाव में, तनु, धन, द्यून का नायक।
शत्रुगृही या अस्त या नीच नवांश का शासक।।
अशुभ ग्रहों की भी पड़े उन पर दृष्टि समान।
तब शादी के बाद में भाग्य का हो अवसान।।

१६७

इन चारों ही ग्रहों का मलिन भले हो अंश।
लेकिन जीव की दृष्टि से दुर्गुण हो विध्वंश।।
तब शादी के बाद में होय तनिक नुकसान।
किन्तु पलटता भाग्य तुरत, बढ़ता है सम्मान।।

१६८

धन, गगन गृह जब करे दैत्य - गुरु स्वीकार।
सप्तमपति का हो यदि केन्द्र - कोण आगार।।
भाग्यनाथ जब लेता है, इन दोनों का आश्रय।
तब तुरत ही शादी के, होता है भाग्योदय।।

१६९

मलिन युक्त कामेश जब जाय बसे आकाश।
अथवा द्रव्य या भाग्य में करता वही प्रवास।।
नवमांश हो मलिन तथा द्यून में बैठे दुष्ट।
शादी के पश्चात् तब भाग्य उभरता पुष्ट।।

१७०

जायापति भव भवन या उपचय करे प्रवेश।
तब शादी के बाद में बढ़ता भाग्य विशेष।।

१७१

बलि पण्डित जब द्यून या उपचय करे प्रयाण।
तब विवाह के बाद ही भरता भाग्य उड़ान।।

१७२

काम, कोष या लग्नपति त्रिक् में हो आसीन।
तब शादी के बाद हो मनुज भाग्य से हीन।।

सुपत्नी योग

१७३

सबल शुक्र दारेश हो, शुभ प्रभाव से युक्त।
शुभ का ही नवमांश हो, पाप दृष्टि से मुक्त।।
मृदु आदि शुभ अंश में, मग्न रहे कामेश।
परम सुन्दरी पत्नी में, गुण हो कई विशेष।।

१७४

सबल शनि जब बनता है दारागृह का नायक।
शुभ युत, गुरु दृष्ट हो, होता परम सहायक।।
सच्चरित्र, पतिपारायण, कई गुणों के लायक।
धर्मशील, विदुषी पत्नी, तब पाता है जातक।।

१७५

पर्वतांश कामेश हो शुभ प्रभाव से सजकर।
जातक होता धन्य तब गुणवती को पाकर।।

१७६

कान्तापति शशिपुत्र हो गोपुरगत व शुभ का।
सुलक्षणा पत्नी बढ़ाती, नाम हमेशा कुल का।।

१७७

गुरु युत दृष्ट श्रेष्ठ अंश में कान्तापति विद्‌मान।
तब जातक की पत्नी होती शीलवन्त, गुणवान।।

१७८

कामेश दिनकर रहे, दृष्टि पड़े शुभकारी।
श्रेष्ठ अंशगत कवि रहे, पतिव्रता हो नारी।।

१७९

शुभ दृष्टिगत जब रहे द्‌यून व दानव पूज्य।
सुलक्षणा पत्नी पाकर, जातक होता धन्य।।

१८०

कवि होवे कामेश तथा शुभ से हो वे तब दृष्ट।
भार्या की तब शील-गुण होती अति उत्कृष्ट।।

१८१

शुक्र संग कामेश हो कान्ता गृह आसीन।
शुभ से रहता दृष्ट तो पत्नी हो शालीन।।

१८२

कान्तेश शुभ अंशगत, गुरु हो काम प्रविष्ट।
धर्म, शील, गुण पत्नी की होती परम विशिष्ट।।

१८३

शुभ अंशगत शुक्र हो, गुरु से दृष्ट कलत्र।
धर्मनिष्ठ हो भामिनी, यश पाती सर्वत्र।।

कुपत्नी योग

१८४

तप, रन्ध्र, रिपु भवन को पापी ग्रह लें लील।
तब कुल्टा पत्नी में हो गुण सारे अश्लील।।

१८५

रन्ध्रगत रन्ध्रेश पर पड़े राहु की मार।
कामस्थ हो भानुसुत, जातक बने कुदार।।

१८६

कामेश के नवमांश पति संग पापी ग्रह आसीन।
चंचल, चालू भामिनी, होती नहीं कुलीन।।

१८७

कामेश क्रूर षष्ट्यंशगत, शुक्र संग स्वरभान।
शीलहीन पत्नी से होता नष्ट सकल सम्मान।।

१८८

नीचास्त या मलिन संग कामेश तथा रतिकारक।
अन्य संग पत्नी रमे, क्षोभित रहता जातक।।

१८९

पापी संग कामेश-रवि मलिन अंश में भ्रष्ट।
कुल्टा दारा धर्म सब कुल का करती नष्ट।।

१९०

सप्तमेश बन शशि करे पापी संग भ्रमण।
तब जातक की पत्नी करती औरों संग रमण।।

१९१

मदन निधन हो पापयुत, रिस्फ में वसता आर।
हत् भाग्य वह जातक तब बनकर रहे कुदार।।

१९२

नीच, अस्त या शत्रुगृही लग्न, मदन के नायक।
गैर मर्द संग पत्नी को विवश देखता जातक।।

१९३

पापयुत शशि काम में, शुक्र सौरि संग पस्त।
जातक की पत्नी रहे, अन्य पुरुष संग मस्त।।

१९४

कामेश कवि नीचगत, शुभ प्रभाव से हीन।
हतभाग्य नर को मिले, पत्नी तब गुणहीन।।

१९५

मलिन अंशगत कान्तापति जब होता है दिनकर।
पाप-दृष्टि से युक्त हो, पत्नी होती दुःखकर।।

१९६

कामेश नीच नवमांशगत या पाप - कर्त्तरी के बीच।
तब जातक की पत्नी होती, दुश्कर्मा और नीच।।

१९७

त्रिक्भावस्थ रहे यदि भानु, भौम, कवि, शनि व नाग।
तब जातक की पत्नी जाती अन्य पुरुष संग भाग।।

१९८

निर्बल मंगल हो यदि मदन भवन का नाथ।
षष्टियंश हो मलिन तथा पापी ग्रह हो साथ।।
शत्रुगृही या अस्त रहे, योग होय अनहितकर।
दुश्कर्म पत्नी करे और मर्द संग रमकर।।

१९९

निधन में दारेश - बुध संग पापी करे प्रवास।
दुष्ट से होवे दृष्ट या पाप - कर्त्तरी का दास।।
कुल्टा पत्नी तब करती है औरों संग सहवास।
नीच कर्म से कर देती, कुल-सद्धर्म विनाश।।

२००

कामेश - कवि हो अगर दुष्ट ग्रहों संग मस्त।
नीच राशि या अंशगत अथवा होवे अस्त।।
तथा मलिन षष्टियंश हो, पत्नी हो व्याभिचारी।
कामुक, कलुषित भामिनी कर्म करे कुविचारी।।

२०१

राहु - केतु जामीत्र में, पड़े दुष्ट की दृष्टि।
मलिन रहे नवमांश में, पाप प्रभाव की वृष्टि।।
दुश्चरित्र पत्नी जीती सब बदनामी सहकर।
पति का लेती प्राण है भोजन में विष देकर।।

पत्नी विछोह

२०२

सप्तमपति हो पापयुत, पुत्रेश काम आसीन।
पीड़ित पाप प्रभाव से, शुक्र रहे बलहीन।।
योग यह उत्तम नहीं, पत्नी के हित - हाल।
तज देती है प्राण वह पुत्र जन्म के काल।।

२०३

कान्तापति जाकर बसे मन्दि राहु के संग।
और धरे द्रेश्कान वह जिसका नाम भुजंग।।
खतरे में रहता सदा, तब पत्नी का जीवन।
मर जाती बेचारी वह, करके विष का सेवन।।

२०४

शुक्र से सप्तम भाव में होता यदि सुधाकर।
चन्द्रपुत्र बसता वहां चन्द्र से जो सप्तम घर।।
तथा करे रन्ध्रेश भी सुत में अगर प्रयाण।
यह योग हर लेता है पत्नी का तब प्राण।।

२०५

रन्ध्र या पाताल में बलि-पंडित आसीन।
पापकर्त्तरी से रहे, उसका हाल मलीन।।
पापांश में हो यदि, शुभ से मिले न त्राण।
यह योग हर लेता पत्नी का तब प्राण।।

२०६

दारा गृह में भौम हो, दारेश का सुत में मोह।
भृगु, भौम नवमांश तब, दे भार्या का छोह।।

२०७

पाश या भुजंग हो कामेश्वर का द्रेश्कान।
तब फांसी में झूलकर तजे भामिनी प्राण।।

२०८

चन्द्र अथवा शुक्र हो सप्तम घर में नीच।
डूब के मरती भामिनी जलधारा के बीच।।

२०६

मंगल हो पाताल में, राहु रहे लाभस्थ।
शनि देखे जामीत्र को, भार्या हो अस्वस्थ।।

२१०

स्त्री - जातक में यही हो सब बात घटित।
गुण रूप धर्म कंत का, होरा की ये रिति।।

२११

सप्तम में हो भानुसुत, लग्न में होता दिनकर।
तब बेचारे जातक की पत्नी जाती मर।।

२१२

तूर्य निधनगत, मलिन मध्य, होवे दानव पण्डित।
तब जाया की मौत से दम्पति सुख हो खण्डित।।

२१३

कामेश संग शुक्र हो पापी ग्रह से भ्रष्ट।
तब निधन से दारा की जातक पाता कष्ट।।

२१४

कवि, भानु जाकर बसे तप तनय या अस्त।
होती प्रिया वियोग तब जातक रहता त्रस्त।।

२१५

बलि पण्डित हो द्यूनगत, सोम रिस्फ आसीन।
पापी ग्रह हो लग्न में, जातक जायाहीन।।

२१६

पापयुत सित का बने अम्बु, रन्ध्र आगार।
जाया गृह का राहू करे दारा का संहार।।

२१७

कामस्थ कुज की रहे नेत्रपाणि अवस्था।
कान्ताक्षति की तब रचे पत्री बीच व्यवस्था।

२१८

सोम शुक्र जब एक संग करते काम प्रवास।
सहजस्थ हो राहु अगर जाया सुख हो नाश।।

२१९

पापी ग्रह निद्रावस्था में दारा गृह आसीन।
पड़ता पाप प्रभाव तो जातक जायाहीन।।

२२०

चन्द्र से सप्तम में बसे भौम तथा नीलाम्बर।
सप्तमपति बलहीन रहे तो, जाया जाती मर।।

२२१

रन्ध्र भवन में सौरि हो, सप्तम में स्वरभान।
अरि भावगत कुज करे पत्नी का अवसान।।

२२२

नीच अस्त ग्रह लग्नगत या लग्नेश्वर नीच।
पत्नी संग विछोह हो भरी जवानी बीच।।

२२३

लग्न भाव में जब वसे छायासुत, स्वरभान।
पत्नी त्याग का तब बने पत्री बीच विधान।।

२२४

द्रव्य द्यूनपति शुक्र संग त्रिक्गृह यदि सजाय।
पापी ग्रह की दृष्टि दे भार्या भोग नशाय।।

२२५

रमणी उदित हो लग्न में लेकर संग दिवाकर।
छायासुत कामस्थ रहे तो, कान्ता जाती मर।।

२२६

अम्बु रन्ध्र में शुक्र संग मंगल करे प्रवास।
दारा में फनिनाथ हो, जाया होती नाश।।

२२७

पाप-कर्त्तरी में रहे दानव पूज्य प्रविष्ट।
सप्तमेश निर्बल रहे, भार्या भोग विनिष्ट।।

२२८

जूक, कीट में पापी ग्रह, शुक्र रहे बलहीन।
अर्धकाय लाभस्थ हो, जातक जायाहीन।।

२२९

कामेश हो पापयुत, सुतपति काम समाय।
निर्बल कवि तब प्रसव समय जाया देत नशाय।।

२३०

नीच शुक्र संग तोय में करता सोम निवास।
रिस्फ भवन का राहू तब दारा करे विनाश।।

२३१

रिस्फ भवन में हो यदि शशि मंगल संयोग।
दारा गृह का शुक्र हरे दम्पति सुख का भोग।।

२३२

क्रूर षष्टिअंश में कामपति, बलि पण्डित बलहीन।
पापी ग्रह हो रमणी-मन्दिर, जातक जायाहीन।।

पुनर्विवाह का योग

२३३

अस्त, नीच या शत्रुगृह कामेश करे निर्बाह।
तब जातक कर सकता फिर से पुनर्विवाह।।

२३४

कामस्थ हो सबल ग्रह कान्तापति से विक्षित।
तब होकर के ही रहे जातक पुनर्विवाहित।।

२३५

रन्ध्रस्थ हो सबलग्रह निधननाथ से विक्षित।
तब होकर के ही रहे जातक पुनर्विवाहित।।

२३६

तनु, कामगत निधनपति सबल सकल विधि लायक।
तब दूसरी बार फिर शादी करता जातक।।

२३७

सबल कल्पपति व्यसनगत, शुभ संग हो निर्बाह।
जातक अपने जीवन में करता पुनर्विवाह।।

२३८

वित्तपित अरिगत रहे, काम में पाप प्रबाह।
जातक करता जीवन में तब भी पुनर्विवाह।।

२३९

शुभ संग कामेश नीचगत, पापी काम विहार।
तब जीवन में नर करे शादी दूजी बार।।

२४०

नीच, अस्त या मलिन अंशगत होवे दाराकारक।
तब दूसरी बार फिर शादी करता जातक।।

२४१

पाप दृष्ट हो वित्तगृह, धनेश रहे कमजोड़।
दूजी पत्नी संग हो जातक का गठजोड़।।

२४२

भव भवन में शुक्र गुरु, काम में पापाचार।
तब पुनः जातक करे शादी दूजी बार।।

२४३

सबल सोम सित एक संग भव में करे निवास।
तब दूसरी शादी से ही होता वंश विकास।।

२४४

शुभ तुंग ग्रह पत्री में लग्न भवन आसीन।
तब दूसरी शादी हो, भार्या मिले नवीन।।

२४५

काम भवन पर जब पड़े सबल शुक्र की दृष्टि।
तब दूसरी शादी का बनता योग विशिष्ट।।

२४६

पापयुत हो काम में तनु, धन, अरि का नायक।
तब दूसरी बार फिर शादी करता जातक।।

२४७

भानु तनय दारेश बन रहता पापी संग।
तब दूसरी शादी से बढ़ता सतत उमंग।।

२४८

सप्तमेश से विक्रम में यदि वसे यदुनायक।
तब दूसरी बार फिर शादी करता जातक।।

२४९

व्यय वित्तपति सहज में गुरु से रहे वलोकित।
या देखे तपनाथ उन्हें, हो नर पुनर्विवाहित।।

२५०

सबल द्यूनपति केन्द्र कोणगत, गगनाथ से दृष्ट।
तब दूसरी शादी का योग बने उत्कृष्ट।।

२५१

काम लाभपति में अगर हो सम्बन्ध अपात।
तब दूसरी शादी का बनता योग हठात।।

२५२

सबल काम व लाभपति करता कोण प्रवास।
तब दूसरी शादी दे जीवन में उल्लास।।

२५३

निधन मदन में मलिन ग्रह, व्यय में भौम समाय।
शुभ विवर्जित जाया गृह हो, पुनर्विवाह हो जाय।।

२५४

धन, मदन संग नायक उनके पत्री में कमजोर।
दूजी पत्नी से तब करता जातक है गठजोड़।।

२५५

मूर्ति मदन के स्वामी हों, नीच अथवा अस्त।
षष्टियंश हो मलिन यदि, पुनर्विवाह का गस्त।।

२५६

वित्त, व्यय के नाथ करें सोदर में संयोग।
गुरु या तपपति देखता, बहु पत्नी का योग।।

२५७

कामेश, लाभेश में हो सम्बन्ध परस्पर।
बहु पत्नी के वास्ते, होता योग उपस्कर।।

२५८

तपनायक हो काम में, कामेश जाय पाताल।
लाभपति हो केन्द्रगत, बहुपत्नी का जाल।।

२५९

नवमांश में कामेश के मेजबान का मेजबान।
पर्वतांश होकर रहे, बहु पत्नी का विधान।।

२६०

वित्तेश के मेजबान का षष्टियंश में मेजबान।
गोपुरगत रहता यदि, बहु पत्नी का विधान।।

२६१

नवमांश चक्र में शुक्र के मेजबान का मेजबान।
पर्वत अंश में हो यदि, बहु पत्नी का विधान।।

२६२

गोपुरगत कामेश हो, धन में धन का नाथ।
कामस्थ कर्मेश हो, बहु पत्नी का साथ।।

२६३

धन, मदन में जब रहें, पापी संग अनेक।
सप्तमेश भी खो रहा, अपने बल का टेक।।
पत्नी के हित बने यह, योग बड़ा बेकार।
जातक को करनी पड़ती, शादी बारम्बार।।

२६४

कामेश का नवमांशपति पत्री में हो नीच।
शत्रुअंशी, अस्त या पाप कर्त्तरी के बीच।।
दुष्ट प्रभाव की हो यदि उसके ऊपर वृष्टि।
योग दूसरी शादी की, तब होती है सृष्टि।।

२६५

अस्त अथवा पापयुत यदि रहे भृगुनन्दन।
या अपने नवमांश में जाता नीच भवन।।
दुष्ट दृष्टि से उसका घटता यदि मनोबल।
तब दूसरी शादी का, बनता योग प्रबल।।

२६६

नीच अथवा शत्रुक्षेत्री जब होता कामेश।
उसके ऊपर हो यदि शुभ का भी आवेश।।
कान्ता गृह में करता हो पापी अगर प्रवेश।
तब दूसरी शादी को जातक सजता वेष।।

२६७

मन्द, मन्दि, भुजंग संग, यदि रहे कामेश।
मलिन षष्टियंश में जब करे जायानाथ प्रवेश।।
अपकारी यह योग जगाये, पुनर्विवाह की आस।
पहली पत्नी के जीवन का जब हो जाता नाश।।

२६८

कान्तापति का हो यदि निधन भवन में वास।
पापयुत हो द्रव्यपति, द्यून में मलिन प्रवास।।
जातक का पहली पत्नी से होता ना निर्वाह।
उसे छोड़कर फिर करे जातक दूजा ब्याह।।

पत्नी संख्या

२६९

काम कोषपति जब करें निज-निज निलय निवास।
मात्र एक ही पत्नी से तब सुख का बढ़े प्रकाश।।

२७०

जितने सारे ग्रह बसे, धन, मदन स्थान।
उतनी पत्नी जातक की, ज्योतिष देय विधान।।

२७१

सप्तमेश के साथ हो जितने ग्रह का योग।
उतनी पत्नी का मिले उस जातक को भोग।।

२७२

शुक्र के नवमांश राशि में संख्या होती जितनी।
पत्नी संख्या जातक की हो सकती है उतनी।।

२७३

नवमांश में सप्तमघर में होती जितनी संख्या।
उतनी पत्नी जातक की ऐसी मिलती व्याख्या।।

२७४

जितना शुभ बिन्दु गहे, कवि अथवा कामेश।
उतनी ही पत्नी का तब जातक बने नरेश।।

२७५

शुक्र से सप्तम, नवम में होता है जो भाव।
अष्टकवर्ग में बिन्दु का देखें कितना वहाँ प्रभाव।।
एकाधिपत्य के पश्चात, शेष बिन्दु हो जितनी।
हो सकती तब प्राप्त नर को उतनी पत्नी।।

२७६

वक्री हो जायापति या मुदित उच्च का बनकर।
सित, सौम्य हो सबल जब शुभ गुणों से सजकर।।
अथवा फिर बलवान कवि बसे लग्न के घर।
जातक होता मुदित तब अगनित पत्नी पाकर।।

२७७

जन्म अथवा चन्द्र लग्न से नौवें घर का नाथ।
पत्नी संख्या के निर्णय में देता अपना हाथ।।
एकाधिपत्य के बाद में, जो शुभ बिन्दु साथ।
उतनी पत्नी प्राप्तकर, जातक बने सनाथ।।

२७८

उपरोक्त नियमों से करें गणना सूक्ष्म, सुचार।
जितनी भी संख्या मिले, सब पर करें विचार।।
बली अगर कामेश हो, लेते अंक अधिकतम।
निर्बल हो दारापति तब,, धरते अंक लघुत्तम।।

२७९

बहु विवाह की प्रथा अब चलती नहीं कहीं पर।
इसलिए मेरे विचार से, व्याख्या करें बदलकर।।
उपरोक्त सब योग से मिलता है संकेत यही।
उतनी नारी से जातक हो सकता सम्बद्ध कहीं।।

मंगली दोष

२८०

वित्त, व्यय, तनु, रन्ध्र, जाया या पाताल में मंगल।
दाम्पत्य जीवन में यह करता अमित अमंगल।।
ज्योतिष के समुदाय में, इसे कहें कुज - दोष।
वर - कन्या की मृत्यु से, भर जाता है रोष।।

२८१

इस योग की सार्थकता पर होता बहुत विवाद।
इस नियम के बीसों से भी ज्यादा है अपवाद।।
मारक शक्ति प्रबल मंगल की देता बढ़ा विषाद।
सूक्ष्म विवेचन करें प्रथम जब चले ब्याह सम्वाद।।

अपवाद

२८२

शत्रुक्षेत्री, नीच, वक्री, अस्त का अविनेय हो।
लग्न अथवा द्यून में, देव, दैत्य अमात्य हो।।
योग प्रबल यह कर देता, कुज दोष को भंग।
जातक के दम्पति जीवन में, भरता नया उमंग।।

२८३

कर्क, अलि, अज, मकर का अम्बु काम में वक्र।
दम्पति जीवन में तब, चले न कुज का चक्र।।

२८४

तनु धन अम्बा अंत्य मदन में चरगत, अंगारक।
मंगल दोष विनिष्ट हो, सुख से जीता जातक।।

२८५

उच्च निजगृही वर्गोत्तम या हरि कुलीर में वक्र।
दम्पति जीवन में तब, चले न कुज का चक्र।।

२८६

उदय अज, व्यय चाप, अथवा काम में तिमि का वास।
कीट - बन्धु, घट - निधन भौम, दोष करे सब नाश।।

२८७

सप्तम - वृष, अष्टम - कलश में मंगल करे प्रवेश।
भौम - दोष लगता नहीं, ज्योतिष का आदेश।।

२८८

सोम सोमसुत देव गुरु से मंगल युक्त या दृष्ट।
ना ही देता दोष, ना करता कभी अनिष्ट।।

२८९

किसी भाव में किसी हाल में मंगल रहे प्रविष्ट।
रमाबन्धु हो केन्द्रगत, मंगल - दोष विनिष्ट।।

२९०

उदय व्यय पाताल नाश में मंगल करे प्रवेश।
कामस्थ अभिशप्त हो, दोष करे सब शेष।।

२९१

मित्र गृही हो मंगल अथवा राहु - केतु हो संग
सौरि सौमय से दृष्ट रहे, कुज - दोष हो भंग।।

२९२

सुरसेवित या असित से अंगारक संयुक्त।
तब जातक रहता सदा भौम दोष से मुक्त।।

२९३

शुभ ग्रहों का केन्द्र कोण में जब होता हैं तोष।
सप्तम घर कर वक्र तब कभी न देता दोष।।

२९४

केन्द्र, कोण में बैठा मंगल करता नहीं अमंगल।
कर्क, सिंह नर के लिए, होता और सुमंगल।।

२९५

जब प्रचुर शुभ गुणों से पत्री होती पूर्ण।
कुज दोष का नाश तब हो जाता सम्पूर्ण।।

२९६

गुरु दृष्ट अविनेय का होवे वास कलत्र।
मंगल दोष विनिष्ट तब हो जाता सर्वत्र।।

२९७

अज कीट या मृग में मंगल हो आसीन।
कुज दोष तब पत्री से रहता सदा विलीन।।

२९८

आद्‌य गृह में छाग हो, अंत्य में हो चापधर।
रसातल में कीट हो, कुलीर जाये नाशघर।।
रतिपति हो मुदित मन नक्र को निजभाव पाकर।
भौम इन स्थान में, लेता है सारा दोष हर।।

२९९

कुज दोष होता नहीं जब धनगत भृगु, सुधाकर।
ना ही होता दोष जब गुरु दृष्टि मंगल पर।।
दोष भंग कर देता है, केन्द्र में जब फनिनाथ।
कुज दोष होता नहीं, जब भौम भुजंग हों साथ।।

मंगल-दोष समीक्षा

३००

उपरोक्त अपवाद से होती साफ बात है एक।
नियम बने वह कैसे जिसके हों अपवाद अनेक।।
पत्री में मंगल - दोष का करके गहन विचार।
विद्वत जन आगे करें, ब्याह -काज विस्तार।।

३०१

अन्तरिक्ष, द्युौ, भूमि तीन हैं काल पुरुष के भाग।
अज से कर्क तथा आगे, भचक्र के तीन प्रभाग।।
नक्षत्र मंडल के ठीक मध्य में मंगल का है क्षेत्र।
इसलिए सब ब्याह काज में इस पर होती नेत्र।।

३०२

आंख मूंद मंगल - दोष की बात नहीं है करनी।
गणना से अशुभत्व का अंक देख लें कितनी।।
वर - वधू की पत्री में अंको का करें विचार।
उसके बाद ही कुज दोष का बनता है आचार।।

३०३

मंगला से मंगली की शादी लगती बड़ी विचित्र।
जब दोनों में मारक गुण तो मृत्यु ही बने चरित्र।।
"जहर - जहर" को काटता, बात बड़ी है सुन्दर।
किन्तु एक का जहर दूसरे के हित होता दुश्कर।।

३०४

श्वान मनुज को काटकर खुद भी जाता मर।
तभी फैलता जहर है, कटे गात के अन्दर।।
अत : दिखे जब पत्री में, कुज दोष का डर।
आयु निर्धारण करें, बहु-विधि गणना कर।।

कुण्डली मिलान

३०५

योनि, नाड़ी, वैश्य, गणादि के
छत्तीस गुण का बना विधान।
अंक अठारह मिल जाने पर
पत्री उचित कहें विद्वान।।
चौबीस से ज्यादा अंकों पर
उत्तम कहलाता है मिलान।
तीस से ज्यादा अंक मिले
तो पत्री श्रेष्ठ कहें गुणवान।।

३०६

केवल अंकों का मिल जाना
दम्पति सुख के लिए न काफी।
बातें अन्य नहीं मिलने पर
शास्त्र-विशारद मांगे माफी।।
इतनी भी आसान नहीं है,
पत्री का बहुभांति मिलान।
परिणय हित जो देहधरा है
उस आत्मा को लें पहचान।।

३०७

पूर्व-कर्म के संस्कार वश
आत्मा से आता है कम्पन।।
इसी शक्ति के बल से चलता
है सारा प्रस्ताव, कथन।
पूर्व-जन्म का कर्ज चुकाने
आत्मा चाहे सतत मिलन।।
लग्न, राशि दैवज्ञ ढूंढ़ता
पत्री का कर सब विधि मन्थन।।

३०८

कान्ता गृह में राशि जो होता
या कान्तेश का जहां प्रयाण।
उसी राशि की लग्न, राशि हो

भार्या का, यह बना विधान।।
कामेश के नवमांश पति से
कोण में जो रहता स्थान।
लग्न, राशि वो भार्या की हो,
ज्योतिष करता यही बखान।।

३०६

द्यून नाथ के अष्टक वर्ग में,
शुभ बिन्दु जहां सबसे ज्यादा।
लग्न, राशि वो कान्ता की
हो, ज्योतिष करता ऐसा वादा।।
भृगु कुल दीपक के वर्गों में,
बिन्दु जहां मिलता है अधिकतम।
उसी लग्न या राशि की भार्या
जीवन में सुख देती उत्तम।।

३१०

पत्री में भृगुनाथ करे जब
जिस राशि में जहां गमन।
वह राशि भी हो सकता है
जातक के जाया का लग्न।।
नवमांश चक्र में बलि पंडित से
कोण में जो रहता स्थान।
कान्ता की वो राशि, लग्न हो,
ज्योतिष देता यही विधान।।

३११

कवि अथवा कान्तापति का
नवमांश चक्र में जहां प्रयाण।
जाया के तब लग्न, राशि हित
उसी राशि को ले संधान।
भृगु कुल दीपक से पत्री में
सप्तम जो रहता स्थान।।
लग्न, राशि भार्या की जो हो,
वही राशि देता है ज्ञान।।

३१२

द्वादशांश में यदुकुल नायक
जिस राशि में करे प्रयाण।
क्या कांता की लग्न, राशि हो,
उस से भी होता अनुमान।।
द्वादशांश में तारा नायक
जिस राशि में करे गमन।
उससे पंचम, नवम राशि भी
हो सकता जाया का लग्न।।

३१३

चन्द्राष्टक वर्ग में जिस राशि को
शुभ बिन्दु मिलता हो अधिकतम।
उस राशि या लग्न की भामिनी
दम्पति जीवन में हो उत्तम।।
राशि वा नवमांश चक्र में
लग्ननाथ का जहां गमन।
वह राशि भी हो सकता है,
जातक की भार्या का लग्न।।

३१४

जन्म-चक्र में आत्मा-कारक
जिस राशि में करे भ्रमण।
उससे सप्तम राशि भी होती
भार्या की तब राशि, लग्न।।
नवमांश चक्र में दारा-कारक
जिस राशि में करे गमन।
जातक के भार्या की होती
वह राशि भी राशि, लगन।।

३१५

आरुढ़ लग्न से सप्तम गृह
में, जो राशि पाता स्थान।
भार्या के तब लग्न, राशि का
उससे हो जाता अनुमान।।

नवमांश चक्र में दारापदपति,
जिस राशि में करे प्रयाण।
भार्या के तब लग्न, राशि का
वह राशि भी देता ज्ञान।।

३१६

समुदायाष्टकवर्ग में होता
जिस राशि में अंक अधिकतम।
उस राशि या लग्न की जाया
जातक को सुख देती उत्तम।।
इसी भांति से लग्न, राशि का
पत्री में कर के संधान।
लग्न, राशि निर्धारित करके
गुण-प्रकरण का करें मिलान।।

३१७

लग्न, राशि ही आनुकुल्य में
सबसे होता अधिक प्रधान।
इसके बाद में अन्य ग्रंथ से
गुण आदि का करें मिलान।।
तन व मन के सामान्जस का
गुण-प्रकरण से होता ज्ञान।
पर आत्मिक आकर्षण के हित
लग्न्न, राशि दे अधिक प्रमान।।

३१८

लग्न, राशि व गुणानुकुल्य से
आगे अब करते हैं प्रयाण।
ये बातें भी अगर मिले तो
दम्पति सुख में हो कल्याण।।
षडाष्टक हो जाता हो गर
वर - कन्या की राशि, लग्न।
तुरत त्याग दें उस पत्री को
ज्योतिष का है यही वचन।।

३१९

एक दूजे का भानु, लग्न जब
नव, पंचम में करे प्रयान।
अथवा रहे त्रिकादस क्रमशः
तब विवाह में हो कल्याण।।
वर-कन्या का गुरु, शुक्र भी
क्रम से लेवें शुभ स्थान।
वैवाहिक जीवन में होता
जातक का प्रति दिन उत्थान।।

३२०

वर-वधू के शशि, भानु का
राशि अंश को लेते जोड़।
नव राशि का मनन करें जो
बनता है इस योग को तोड़।।
पृथक - पृथक दोनों पत्री में
यही राशि कर लें स्पष्ट।
पापा-क्रान्त, षडाष्टक हो तो
आनुकूल्य में होता कष्ट।।

३२१

लग्न, राशि दोनों पत्री का
पाता सबसे अधिक महत्व।
इसलिए आवश्यक है कि
इन दोनों का देखें तत्व।।
मित्र-तत्व के लग्न, राशि से
दम्पति का बहु विधि कल्यान।
शत्रु-तत्व हो लग्न, राशि तो
पत्री त्यागें तुरत सुजान।।

३२२

व्यसन, निधन व सहजभाव
में, जो राशि लेता स्थान।
वही बने गर लग्न, राशि तो
पत्री का मत करें मिलान।।

बहुत बात के मिल जाने से
शुचि सम्बन्ध का होता ज्ञान।
पर परिणय हित प्रकट हुआ जो
उस आत्मा की क्या पहचान?

३२३

बहुत शोध से पाया मैंने
इसका एक उपाय सरल।
कई बार अपना कर देखा
फल मिलता है बहुत विमल।।
विद्वत जन से करुं निवेदन
इसके ऊपर दें कुछ ध्यान।
अधिक सरल हो जाता इससे
तन में आत्मा की पहचान।।

३२४

वर का आत्मा कारक एवं
वधु के भानु का अंश लें जोड़।
पुनः वधू के आत्मा - कारक
एवं वर का भानु लें जोड़।।
पृथक - पृथक फिर प्राप्त करें
जो राशि बना करके संधान।
यही राशि गर लग्न, राशि तो
आत्मा की कर लें पहचान।।

३२५

अमात्य कारक तथा निशाकर
से करते हैं यही क्रिया।
शुभ भाव में दोनों हों तो
मन मिलन का जले दिया।।
देव, दैत्य के पंडित एवं
दारा-कारक का जो योग।
शुभ भावगत रहे अगर तो
दम्पति करते नाना भोग।।

३२६

कई बार कुछ खास ध्येय से
नर, नारी में हो आकर्षण।
दिखता यह नैसर्गिक लेकिन
नहीं ब्याह का निश्चित कारण।।
स्वाभाविक मैत्री के हित में
सृष्टि करे यह सब आयोजन।
आनुकूल्य में इस गुण का भी
विधि पूर्वक करते निस्पादन।।

३२७

तीन या तीन से ज्यादा ग्रह
जब पत्री में हो समसप्तक।
एक दूजे को आपस में वे
जातक लगते मन-भावक।।
वर-वधू के पत्री में जब
ग्रह धरते हैं एक स्थान।
अथवा वे हों उसी राशिगत
तब भी उनमें रहे मिलान।।

३२८

वर-कन्या की पत्री में जब
ग्रह दृष्टि भी रहे समान।
तब भी आपस का आकर्षण
सदा गगन में भरे उड़ान।।
इसी भांति नवमांश चक्र में
ग्रह स्थिति का रहे मिलान।
तब भी दम्पति एक-दूजे पर
न्योछावर करते हैं प्राण।।

३२९

सप्तमेश का उच्च, नीच ग्रह,
वर-वधू की राशि, लग्न।
तब भी करते हैं वे अर्पण
एक-दूजे पर तन व मन।।

वधू के चन्द्राष्टक वर्ग में,
वर-राशि में राशि का दान।
सुखमय दम्पति जीवन में
वह, करे सदा अतिशय कल्यान।।

३३०

वर का सप्तमांश लग्न जब
कन्या की हो राशि लग्न।
तब भी दम्पति एक दूजे में
तन व मन से रहें मगन।।
जब कन्या की चन्द्र राशि में,
वर के भृगु का होय गमन।
अथवा वर की लग्न वही हो,
दम्पति में हो मधुर मिलन।।

३३१

वधू के चन्द्र नवमांश से गिनकर
करते, वर का चन्द्र नवांश स्पष्ट।
अट्ठासी की संख्या गर हो
दम्पति सुख में नाना कष्ट।।

३३२

वधू के जन्म-नक्षत्र से वर नक्षत्र को गिनते।
पांच से करके गुणा प्रथम, सात का भाजन देते।।
शेष फल जो प्राप्त हो, वही कहाता व्यय।
वर नक्षत्र से यही क्रिया कर, देखें कितनी आय।।
व्यय से ज्यादा आय हो, सुन्दर होती शादी।
आय, व्यय से कम रहे, हो जाती बर्बादी।।

३३३

वर-वधू के जन्म-नक्षत्र की संख्या लेते जोड़।
प्राप्त योग में देते हैं, तेरह फिर से जोड़।।
उस योग में बत्तीस का लेते अंक घटा।
पांच से भाजे शेष को, शेष की देखें छटा।।
एक शेष जब बचता तो, पुत्रों की भरमार।
दो शेष देता सदा, वर या वधू को मार।।

तीन शेष आ जाने पर, बढ़ता यौवन, धन।
चार शेष बतलाता है, काया रहे रुगन।।
शून्य शेष आ जाने पर, ज्यादा होती सम्पति।
परिणय में आनन्द हो, सुख से जीते दम्पति।।

३३४

वर-वधू के जन्म-नक्षत्र की संख्या का जो योग।
पांच से देकर भाग फिर, शेष का करते भोग।।
दो शेष से सुख की वृद्धि, एक शेष से सम्पति।
चार शेष से लक्ष्मी आती, तीन से आये विपत्ति।।
शून्य शेष आ जाने पर, ज्योतिष करता आपत्ति।
चिंता, दुःख, संताप से, घिरकर रहता दम्पति।।

समय से विवाह

३३५

लग्नेश, कामेश जब शुभ संग करे निवाह।
पाप प्रभाव से मुक्त हो, होता शीघ्र विवाह।।

३३६

केन्द्र-कोणगत कान हो, शुभ बिन्दु हो चार।
उचित समय पर होता है, ब्याह काज विस्तार।।

३३७

स्वच्छ चन्द्र सुत जाया में, शुभ से हो संयुक्त।
सदा समय पर शादी हो, शीघ्र तथा उपयुक्त।।

३३८

अशुभ प्रभाव से मुक्त हो धन मदन स्थान।
होता शीघ्र विवाह है बिना किसी व्यवधान।।

३३९

सप्तमपति बलवान हो, गुरु रहा हो देख।
शुक्र रहे शुभयुक्त तो शीघ्र विवाह का लेख।।

३४०

कामेश कवि सम्बद्ध हों, अशुभ प्रभाव न ज्यादा।
शीघ्र विवाहित जातक हो, ज्योतिष करता वादा।।

३४१

पाप मुक्त कवि, उदयपति जाये सुख या धन।
उचित उम्र में ब्याह हो, ज्योतिष देय वचन।।

३४२

तनु मदन धन स्वामी संग शुभ करता संयोग।
ठीक समय से शादी हो, जातक करता भोग।।

विवाह में विलम्ब

३४३

दारा गृह, दारेश या शुक्र पर पापाचार।
तब विलम्ब से बनता है शादी का आचार।।

३४४

शशि भानु व शुक्र पर शनि का होवे वेश।
तब विलम्ब से मण्डप में जातक करे प्रवेश।।

३४५

शशि राशीश तथा लग्नेश, पड़े पाप बन्धन में।
तब विलम्ब से ही बन्धता, नर परिणय बन्धन में।।

३४६

दारापति व दैत्य गुरु पर पड़े मन्द की दृष्टि।
तब जातक के ब्याह में हो विलम्ब की सृष्टि।।

३४७

तनु, तनय या व्योम में सौरि रहे जब ढ़ेर।
तब जातक की शादी में होती थोड़ी देर।।

३४८

शुक्र से ग्यारह चौथा सप्तम सौरि करे प्रवेश।
तब विलम्ब से सजता है नर दूल्हे का वेष।।

३४९

कान्ता गृह कामेश पर वक्री ग्रह का वेग।
तब विलम्ब से आता है ब्याह लगन का वेग।।

३५०

जायापति या दैत्य गुरु जब रहता है वक्र।
तब विलम्ब से शादी का विधि चलाता चक्र।।

३५१

सुतेश और कामेश करे आपस में विनियोग।
तनिक विलम्ब से बनाता है शादी का संयोग।।

३५२

लग्न अथवा द्यून में शुक्र, साँप का योग।
होता प्राप्त विलम्ब से दम्पति सुख का भोग।।

३५३

पापी बसे कलत्र मे, वक्री रहे धनेश।
अंत्यस्थ हो दुष्ट ग्रह, हो विवाह में क्लेश।।

३५४

ऊष्ण, उदय या द्यून सब, स्थिर राशि विहार।
तब विलम्ब हो ब्याह में, ऐसा करें विचार।।

अविवाहित-योग

३५५

व्यसन, मदन व नाश में, पापी करे गमन।
प्रियाहीन जातक रहे, दुःखमय होता जीवन।।

३५६

पाप दृष्ट शशि, सौरि जब जाते काम भवन।
बिनु शादी के ही कटे तब जातक का जीवन।

३५७

समसप्तक हों शशि कवि, पड़ता पाप प्रभाव।
अविवाहित जीवन में सुख का रहे अभाव।।

३५८

भानु भानुसुत लग्न में, राहु द्यून में मस्त।
अविवाहित नर सदा जीवन जीता त्रस्त।।

३५९

कामेश हो अस्त तथा शशि, सर्प जाया आसीन।
तब कटता है जातक का जीवन दारा हीन।।

३६०

उदय, अंत्य और द्यून में मलिन ग्रहों का वास।
सुतगत निर्बल शशि रहे नहीं ब्याह की आस।।

३६१

त्रिक् भावों के नाथ जब जाया भवन समाय।
तब जातक के जीवन को भार्या नहीं सजाय।।

३६२

पाप दृष्ट शशि भानु, कुज जाये यदि लगन।
सुतगत निर्बल चन्द्र हो, प्रियाहीन हो जीवन।।

३६३

राहु उदयगत, भौम अंत्यगत, मन्द मदन आसीन।
उमर तलक जातक रहे, भार्या सुख से हीन।।

३६४

सोम सूर्य सुतेश पर करता सौरि प्रहार।
प्रियाहीन उस जातक का बसे नहीं संसार।।

प्रेम विवाह

३६५

लग्नेश सुतेश कामेश का आपस में विनियोग।
प्रेम विवाह के हेतु सब बन जाता संयोग।।

३६६

कवि भौम का हो यदि आपस में परिवर्त्तन।
प्रेम-ब्याह के वास्ते दे अनुपम आकर्षण।।

३६७

कवि एवं कामेश पर सौरि का हो संचार।
प्रेम-विवाह का बन जाता पत्री में आचार।।

३६८

मन्द के ऊपर हो अगर गुरु दृष्टि गर्वीला।
प्रेम-प्रणय के वास्ते, जातक बने छाबीला।

३६९

शुक्र सर्प से दृष्ट रहे, प्रेम का हो निर्वाह।
किन्तु अचानक कुछ घटे, होता नहीं विवाह।।

३७०

मंगल मन्द का हो यदि, भृगु के ऊपर घर्षण।
प्रेम-प्रसंगों में बढ़े, बहुत अधिक आकर्षण।।

३७१

तप, तनय और मदन में हो शुभमय संयोग।
प्रेम-विवाहों के लिए, सुन्दर बने सुयोग।।

३७२

तनय उदय या द्यून में कवि कुज का संयोग।
होता प्रेम-विवाह है, जातक करता भोग।।

३७३

भाग्य गुरु हो दुषित तथा प्रेम का होवे योग।
अन्य जाति में ब्याहह का बनता तब संयोग।।

३७४

वर का राहु कन्या के कवि-गृह में जब होय।
प्रेम-विवाह में यह सदा, नीम नाश का बोय।।

३७५

वर का भृगु जब लड़की के पंगु-भाव सजाय।
प्रेम-विवाह का दीप तब बहुत जल्द बुझ जाय।।

३७६

लड़के का भृगु हो यदि लड़की के फनि घर।
प्रबल प्रेम का वेग तब जाता शीघ्र उतर।।

३७७

लड़के के गुरु, लड़की का भृगु बसे एक ही गेह।
तब दोनों के बीच सदा, प्रेम का बरसे मेह।।

३७८

लड़के के भृगु लड़की के कुज में हो योग विशेष।
तब दोनों के बीच प्रेम का हो अतिशय आवेश।।

विवाह का समय

३७९

तनु, तनय, तप, द्यून, धन, अम्बु एवं अंत्य।
ये भाव, भावेश बताते, पाणि-ग्रहण के सत्य।।

३८०

दशा, भुक्ति या प्रत्यन्तर में इन नाथों का भोग।
अक्सर ही लाता जीवन में परिणय का संयोग।।

३८१

किसी भावेश की दशा हो, किसी भावेश की भुक्ति।
दे सकता है ब्याह वह, करके अगनित युक्ति।।

३८२

पत्री में पहले करें, शीघ्र, देर का निर्णय।
गोचर से गणना करें, कब होनी है परिणय।।

३८३

शनि, कुज एवं गुरु के गोचर गति का ज्ञान।
ब्याह समय का देता है अति सुन्दर अनुमान।।

३८४

जन्म-शुक्र के ऊपर से गुरु जब करे प्रयाण।
तब देता वह जातक को शादी का वरदान।।

३८५

लग्न तथा कामेश के राशि अंश का योग।
जो आता है राशि तब करके सब विनियोग।।
उस पर अथवा कोण में गुरु जाय गोचर में।
शादी की शहनाई तब बजती जातक घर में।।

३८६

चन्द्र लग्न से भी देखें करके यही उपाय।
गोचर का गुरु जातक गृह में मण्डप देत सजाय।।

३८७

लग्न तथा राशि से होता, जो सुतेश, भाग्येश।
उनका राशि-अंश, गणना में करें प्रवेश।।
गोचर में गुरु का बने, जब उन पर आवेश।
तब भेजता काल-पुरुष, शादी का संदेश।।

३८८

शुक्राष्टक वर्ग में, जिस राशि में शुभ बिन्दु हो पांच'।
नवम या पंचम हो वही जब सोम, शुक्र से जांच।।
उसके ऊपर से गोचर में, गुरु जब करे प्रयाण।
देता है वह जातक के ब्याह समय का ज्ञान।।

३८९

चन्द्र लग्न से कामेश और चन्द्र का मेजबान"।
उनके राशि-अंश का, कर लें योग सुजान।।
इस गणना से प्राप्त हो जिस राशि का मान।
गोचरगत गुरु वहाँ पर, ब्याह का रचे विधान।।

३९०

सोम तथा कामेश के नक्षत्रपतियों का योग।
मिलता है जो राशि तब, करके सब विनियोग।।
उसके ऊपर गोचर में जब गुरु का हो संचार।
शुभ परिणय बेला की तब होती है अभिसार।।

३९१

लग्नेश, शुक्र, दारेश का राशि - अंश ले जोड़।
फिर देखें उस राशि को, जो बनता सबको तोड़।।
वहां या उस नवांश पर, गुरु जब करे भ्रमण।
जातक के शादी का तब बंटता है आमंत्रण।।

३९२

लग्नेश और धनेश तथा शनि का जो भावेश।
राशि अंश इनका जोड़े, फिर पायें राशि विशेष।।
उसके ऊपर गोचर में, शनि जब करे भ्रमण।
जातक को शादी का तब देता ईश निमंत्रण।।

३९३

लग्नेश और राहु के राशि अंश का योग।
गुरु स्पष्ट घटाकर देखें, नये राशि की भोग।।
उस राशि से गोचर में छाया ग्रह करें प्रयाण।
तब विवाह का योग वह नर को करे प्रदान।।

३९४

शुक्र से सप्तम भाव में शुभबिन्दु हो जितना।
शुक्र के शोड्यापिण्ड से, कर लें उसे गुणा।।
गुणनफल में सत्ताइस से फिर देते हैं भाग।
जो मिलता है शेष कुछ, उससे हो अनुराग।।
अश्वनी से आगे गिनकर नक्षत्र ले जान।
गोचरगत गुरु भेजता, शादी का फरमान।।

३६५

इसी गुणनफल में, करें बारह से फिर भाजन।
शेष बताता है मेषादि, राशियों का संयोजन।।
उस राशिपति की चले, यदि दशा या भुक्ति।
तब जातक के शादी की, बनती सारी युक्ति।।

कलह एवं तलाक

३६६

दारा गृह, दारेश तथा कारक में हो दोष।
दम्पति जीवन में सदा, तब रहता है रोष।।

३६७

पृथककारी ग्रहों से, दृष्ट युत हो दारा गेह।
तब मंडराता दम्पति पर, सदा तलाक का मेह।।

३६८

सप्तमपति जाकर बसे, जब भी त्रिक् - भवन।
दुष्ट ग्रहों से दृष्ट हो, दुखमय दम्पति जीवन।।

३६९

मंगल, मन्द, भुजंग से क्षुब्ध हो दारा गेह।
कांतापति बलहीन हो, नष्ट होय सब नेह।।

४००

त्रिक् भावों के नाथ जब काम में करें गमन।
शनि, सांप से दृष्ट हों, टूटे दम्पति बन्धन।।

४०१

दारापदपति नीच अंशगत, पद में हो रविनन्दन।
जातक ले संन्यास या दुखमय दम्पति जीवन।।

४०२

दारापद व लग्नपद जब भी रहें षडाष्ट।
पति-पत्नी में प्रेम तब हो जाता है नष्ट।।

४०३

दुष्टयुत हो दारापद, दारापति हो धन में।
तप में पापी ग्रह बसे, दुख दम्पति जीवन में।।

विविध

४०४

सप्तम को जब देखते, रवि शनि फनि ध्वजधारी।
भृगुनन्दन हो पापयुत, जातक हो व्यभिचारी।।

४०५

कामेश मिले पुत्रेश से द्वादश में हो आतुर।
भृगु दृष्ट भुजंग से, नर अतिशय कामातुर।।

४०६

काम भवन पर जब पड़े, कुज प्रभाव अति ज्यादा।
स्त्री जातक को रहे, मासिक धर्म में बाधा।।

४०७

सप्तम गृह में हो यदि नीच अंश का मंगल।
जातक के प्रतिपक्षीगण करते बहुत अमंगल।।

४०८

सप्तमेश, नवमेश का जब हो गृह विनियोग।
द्यून दृष्ट प्रथमेश से, हो अगाध रात्रि-भोग।।

४०९

शशि, कवि या कुज राशि में, आत्मा कारक वास।
पर दारा के संग सतत हो जातक का सहवास।।

४१०

कारकांश से द्यून में सौरि सौम्य का स्वत्व।
राहु की पड़ती दृष्टि तो घट जाता पुंसत्व।।

४११

रिपु भवन में भौम हो, राहु निधन आसीन।
शुक्र रहे कामस्थ तो पुंषत्व हो क्षीण।।

४१२

कामस्थ हो कवि तथा जन्म समय हो सन्ध्या।
रिक्ष-सन्धि में सौरि लग्नगत पत्नी होती वन्ध्या।।

४१३

जन्म चक्र में शुक्लाम्बर व षष्टमपति संयुक्त।
जातक की जाया का जीवन हो खतरे से युक्त।।

४१४

लग्न, चन्द्र से दारा गृह यदि रहे बलवान।
सबल शुक्र सदिखन करे दम्पति का कल्याण।।

४१५

भौम राहु या केतु से सप्तमगृह हो पस्त।
तब पिशाच पीड़ा से पत्नी रहती त्रस्त।।

(अ)

(ब)

कालिका यंत्रम्
शक्ति
महाकाली
महाकाल
मंत्राक्षर
बीजाक्षर
हि
क्लीं
आध्यात्मिक शक्ति
लौकिक शक्ति
भर्गा
वज्रिणी
फलश्रुति
कल्मष नाश
शत्रु नाश

(अ)

(ब)
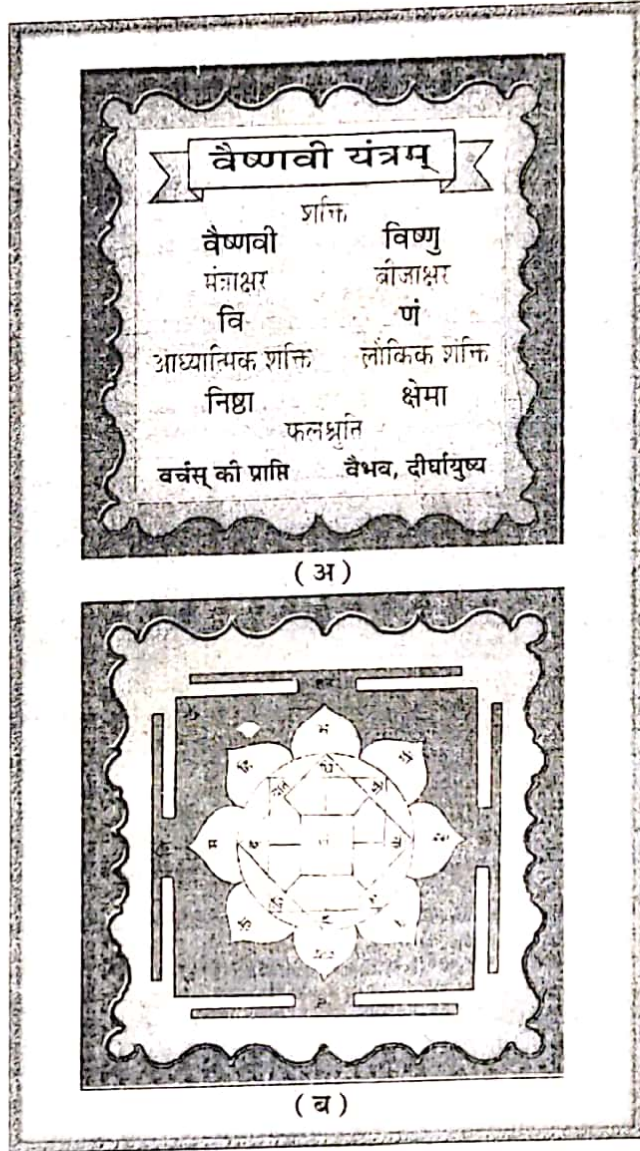
महाकाली

यह महाकाल की सहधर्मिणी कही जाती है। जब महाकाल अशिव के उन्मूलन के लिए संकल्पित होते हैं, तो महाकाली आसुरी वृत्तियों को निर्मूल कर देती है। इसके तेज से आलस्य-प्रमाद, पापकर्मों को आधार देने वाली पापवृत्तियाँ जल जाती हैं। इनकी कृपा से साहसिकता और सामर्थ्य का विकास होता है।

अष्टम भाव

आयुर्दायमनिष्ट हेतुमुदयव्योमायुरी शार्कजैरुक्तं
तत्सकलं तथापि निधनप्राप्ति प्रवक्षये पुनः।

गुह्यं च रंध्रं मरणांतकायुः

रन्ध्रायुश्छिद्रयाम्यं निधन लयपदं चाष्टम मृत्युरन्याद्।

आयु रणं रिपुं चांपि दुर्गं मृतधनं तथा।
गत्यानुकादिकं सर्वं पश्येद्रन्ध्राद्विचक्षण।।

नद्युत्तारेध्ववैषम्ये दुर्गे शास्त्रवसंकटे।
नष्टे दुष्टे रणे व्याधौ छिद्र निरीक्षयेत्।।

अष्टम भाव फल

१

हार, हानि या मान हरण संग
अपयश, आयु, निधन का ज्ञान।
पुरातत्व व बाढ़, गुप्त - धन,
आत्मघात का करे बखान।।
दुर्घटना, दुःख, रोग, अकाल,
मृत्यु का जो सब कारण।
अग्निकोप, भूकम्प, संक्रमण, जेल,
आदि का निधन में पाठन।।
सिन्धु पार की यात्रा हो या
दुःख, दारिद्र विदेश विचार।
गुदा, भार्या - भोग आदि का
अष्टम घर ही है आधार।।
अनुसंधान या अविष्कार हो,
ज्ञान - पूर्ण नूतन सब शोध।
ऋण, अपमान, परा विद्या का
नाश भाव ही करे प्रबोध।।

आयु का ज्ञान

२

लम्बी होती उम्र मनुज की
निधननाथ जब बसे निधन।
अथवा होकर उच्च, मित्रगृह
जाया मन्दिर करे रमण।।

३

उदय, मध्य व याम्यपति
जब तीनों जाये केन्द्र भवन।
शुभ प्रभाव हो पुष्ट वहां
तो लम्बा होता जीवन।।

४

ऊपर वर्णित तीनों ग्रह जब
सौरि दृष्ट हों केन्द - स्थान।
तब भी जातक को वे करते
निश्चय लम्बी उम्र प्रदान।।

५

सबल, उच्च का नभनायक
जब जाकर रहता सखा सदन।
लम्बा देता उम्र अगर हो
शुभ-ग्रह से उसका पोषण।।

६

रन्ध्रपति संग लग्नेश्वर जब,
शत्रु, अंत्य में करे गमन।
शुभ से हो वह दृष्ट वहां
या रिपु, रिस्फपति लग्न भवन।।
शुभ अंशों को ग्रहण करे
व षडबल में होवे बलवान।
ऐसा जातक जग में प्रायः
होता निश्चय आयुष्मान।।

७

देव, दैत्य अमात्य संग जब
उदयनाथ हो केन्द्र-स्थान।
जातक जग में चिरजीव हो,
होता नित नूतन कल्याण।।

८

लग्ननाथ हो दृष्ट गुरु से,
शुभ ग्रह सारा केन्द्र समाय।
अष्टमपति शुभ अंश में शोभे,
जातक लम्बी आयु ही पाय।।

९

सहज, शत्रु एवं आगम में,
पापी ग्रह बस करे प्रयाण।
नैसर्गिक सारे ही शुभ ग्रह,
जाय बसे जब केन्द्र-स्थान।।
लग्न तथा लग्नेश्वर दोनों,
सभी भाँति होवे बलवान।
ऐसा जातक जग में प्रायः
होता निश्चय आयुष्मान।।

१०

गुरु शुक्र से युत दृष्ट जब
निधनपति हो लग्न स्थान।
लग्ननाथ खुद केन्द्र में शोभे,
करता लम्बी आयु प्रदान।।

११

नैसंर्गिक सब शुभ ग्रहों का
रिपु, रन्ध्र, मद होय गमन।
षडबल में बलयुक्त रहे व
शुभ अंशों का करे गहन।।
सहज शत्रु व आयु भवन में
केवल पापी ग्रह हो व्याप्त।
ऐसी पत्री वाला जातक
अक्सर लम्बी आयु को प्राप्त।।

१२

तीन ग्रह जब उच्च का होवे,
निधननाथ का बास लग्न।
अशुभ विवर्जित नाशभवन हो,
नर पाता लम्बा जीवन।।

१३

स्व, उच्च या मित्रगृही जब
ग्रह तीन हो मृत्यु स्थान।
लग्ननाथ बलवान रहे तो
करता लम्बी आयु प्रदान।।

१४

पत्री में जब सातों ही ग्रह
बसे केन्द्र या कोण स्थान।
सिंहासन या पर्वत अंश में,
करते लम्बी आयु प्रदान।।

१५

नैसर्गिक सब अशुभ विराजे
व्यय, विघ्न, लयपद स्थान।
मलिन अंश में लग्ननाथ का
जब होता सब विधि अवसान।।
विवल लग्नपति संग सभी का
शुभ से होय न कोई निदान।
ऐसी पत्री वाला नर हो,
अल्प - जीवी व निःसंतान।।

१६

शुभ प्रभाव से सदा विवर्जित,
पापी केन्द्र में करे गमन।
लग्ननाथ बलहीन रहे तो
जातक की हो शीघ्र मरण।।

१७

शुभ विवर्जित पापी ग्रह जब
व्यय, वित्त को रखे सजाय।
मलिन षष्टियंश में वास करे
तो जातक छोटी उम्र ही पाय।।

आयु-खण्ड

१८

त्रिकालज्ञ ऋषियों न नर के
उम्र की की है तीन प्रभाग।
बत्तीस तक अल्पायु बनाया
सत्तर तक मध्यमायु विभाग।।
सत्तर से ऊपर जो जीता
दीर्घायु वह नर कहलाय।
ऐसे जातक को जीवन में
सुख के मिलते कई उपाय।।

१९

भानुमान जब लग्ननाथ का
पत्री में दुश्मन बनि जाय।
लग्नेश्वर बलहीन रहे तो
नर छोटा जीवन ही पाय।।
सम भाव से रहे अगर तो
मध्यम आयु करे प्रदान।
किन्तु अगर अधिमित्र बने तो
चिर जीवी नर बने महान।।

२०

नवमांश लग्नपति का पत्री में
जो भी ग्रह होता मेजबान।
नवमांश-चन्द्रपति के घर में
जब वो ग्रह करता विश्राम।।
जन्म-चक्र के लग्न पति संग
होता जब वह मित्र समान।
तब जातक को प्रदत्त करें
विधि लम्बी आयु का वरदान।।
वे दोनों समभाव अगर हों
मध्यम आयु का बने विधान।
किन्तु अगर हो शत्रु तुल्य तो
अल्प आयु का देते ज्ञान।।

दीर्घायु योग

२१

निशानाथ हो तनय भवन में,
रक्तवस्त्र का वास गगन।
कोण भवन में देवपूज्य हो
जातक जीता लम्बा जीवन।।

२२

निजगृही हो निधननाथ या
रन्ध्र में हो छाया नन्दन।
दीर्घायु जातक जीवन में
करता नाना यश अर्जन।।

२३

केन्द्र भाव में रन्ध्रपति हो
व्योमनाथ भव भवन समाय।
लग्ननाथ हो कोणगृही तो
जातक लम्बा जीवन पाय।।

२४

स्व, उच्च या उपचय गृह
में वास करे दिनकर नन्दन।
या निधनपति बनकर वो ही
आत्मज गृह में करे रमण।।
इसी हाल में लग्ननाथ हो
सबल सकल विधि लायक।
तब मिलता है लम्बी आयु,
सुख से जीता जातक।।

२५

निधनेश अगर लग्नेश्वर के संग
रन्ध्र या भव में करे भ्रमण।
भोग सकल जगती का करके,
जीता नर अति लम्बा जीवन।।

२६

रिस्फ रिपुपति बलपूरित हो
वसता है जब लग्न भवन।
या सबल व्योमपति केन्द्रस्थ हो
जातक पाता लम्बा जीवन।।

२७

तुंग गगनपति तनय भाव में
या रन्ध्रपति केन्द्र समाय।
शुभ दृष्टि हो लग्न भवन पर
लम्बी आयुष जातक पाय।।

२८

छायात्मज संग व्योमनाथ जब
निधन भवन में करता भोग।
केन्द्रस्थ हो लग्न, निधनपति
दीर्घायु का बनता योग।।

२९

सहज, लाभ व व्यसन भवन में
पापी ग्रह सब करें प्रयाण।
केन्द्र-कोण ग्रहयुत रहे,
तो दीर्घायु नर हो श्रीमान।।

३०

रिपु, रन्ध्र या अरि भवन में
शुभ ग्रह जब करते हैं भ्रमण।
निधननाथ बलवान रहे तो
जातक पाता लम्बा जीवन।

३१

श्रेष्ठ अंशगत रन्ध्रपति जब
लग्न भवन में करे गमन।
भृगु या गुरू से दृष्ट रहे
तो नर पाता लम्बा जीवन।।

३२

केन्द्र, कोण में शुभ ग्रह सारे,
करते जब पत्री में भ्रमण।
पर्बतादि में पापी ग्रह हों,
नर पाता लम्बा जीवन।।

मध्यम आयु भोग

३३

उदयनाथ बलहीन अगर हो
केन्द्र कोण में अमर - अमात्य।
क्षत, अंत्य, मृत मलिन संग हो
नर की मध्यम उम्र जनाय।।

३४

बल परिपूरित शुभ ग्रह सारा
केन्द्र, कोण को रहा सजाय।
सबल शुभांश का भानुतनय
भी केन्द्र, कोण में रहा समाय।।
व्यसन, निधन में पापी ग्रह
सब, बना रहा अपना स्थान।
तब भी जातक को वह करता
केवल मध्यम आयु प्रदान।।

३५

सुख वित्त सुत सहज, निधन।
व भव में पापी करे प्रवास।
तब केबल मध्यम-आयु की
ही रहती जातक को आस।।

३६

रिपु रिस्फ व निधन भवन में
पापी ग्रह सब करें भ्रमण।
निर्बल गुरू लग्नस्थ रहे तो
मध्यम हो जातक का जीवन।।

३७

शुभ ग्रह हो जब केन्द्र, कोणगत
सबल सौरि रिपु, रन्ध्र समाय।
पापी ग्रह भी साथ बसे तो
मध्यम आयु ही जातक पाय।।

३८

केन्द्र, कोण में शुभाशुभ का
मिश्रित पड़ता अगर प्रभाव।
मध्यम होती आयु मनुज की,
परिहारों की चले न दाव।।

अल्पायु योग

३९

रन्ध्रनाथ का पापी ग्रह संग।
रिपु, रिस्फ में पड़े पड़ाव।
अल्पायु ही जातक बनता
निर्बल हो यदि पहला भाव।।

४०

सहज व्यसन तप अंत्य भवन में
पापी ग्रह सब करें प्रवास।
बिबल रहे लग्नेश्वर भी तो
आयुष का हो जाता नाश।।

४१

लग्न, निधनपति निर्बल होकर
रिपु, रिस्फ में यदि समाय।
अल्पायु ही जातक रहता,
व्यर्थ जाय तब सकल उपाय।।

४२

द्रव्यपति हो भाग्य भवन में,
देव, दैत्य गुरू लाभ भवन।
अल्पायु ही जातक हो जब
द्यून में वसता रविनन्दन।।

४३

लग्न भवन में सौरि, भौम हो
निधन भावगत हो यदुनायक।
व्यसन भवन में देवगुरू हो
अल्पायु हो जाता जातक।।

४४

बल विवर्जित लग्ननाथ जब
निधन भवन में रहता व्याप्त।
पाप प्रभाव हो पुष्ट अगर तो
नर छोटी आयुष को प्राप्त।।

४५

पापी सारे ग्रह पत्री में
सजा रहे हों त्रिक्-स्थान।
लग्ननाथ बलहीन रहे तो
अल्पायु विधि करें प्रदान।।

४६

क्रूर षष्ट्यिंशगत निधनेश्वर संग
जब रमता है रविनन्दन।
पापयुत या दृष्ट रहे तो
अल्पायु जातक का जीवन।।

४७

शुभ विवर्जित पापी ग्रह जब
वित्त, अंत्य में करे भ्रमण।
लग्ननाथ बलहीन रहे तब
जातक पाता छोटा जीवन।।

मारक - ग्रह

४८

विपत तारापति ही होता
अल्पायु नर का मारक।
मध्यम जीवन वाले नर का
प्रत्यारी पति हो संहारक।।

पर जिस नर ने भी पाया
है, लम्बी आयु का वरदान।
वध तारापति ही लेता है
उन लोगों का अन्त में प्राण।।
इन तारा से सौरि, गुरु जब
गोचर गति में करे भ्रमण।
इनके पति की दशा भुक्ति हो,
नर करता परलोक गमन।।

४९

मारक प्रायः ही होते है
धन और मदन के नायक।
दशा, भुक्ति जब होती इनकी
गत हो सकता है जातक।।
द्रव्यपति, कान्तापति से हरदम
होता अधिक भयानक।
इसकी दशा भुक्ति होती
है, जीवन के हित घातक।।

५०

बाइसवें द्रेश्कान का स्वामी
भी है मृत्यु का कारक।
यह ग्रह अपनी दशा भुक्ति
में जीवन का हो नाशक।।
चौसठवें नवमांश का स्वामी
इसकी भांति है संहारक।
दशा भुक्ति गर इसकी आये,
तब मर सकता है जातक।।

५१

छायासुत हो अशुभ भाव में,
अशुभ अंश में करे प्रवास।
बल विवर्जित यदि रहे तो
करता जीवन वेग से नाश।।

५२

उदय, अंत्य या द्यून निधन में,
छाया गृह जब रहे प्रविष्ट।
या किसी भी मारक ग्रह से
सप्तम में वे रहे निविष्ट।।
तब वे अपने दशा-भुक्ति में,
मारक बनकर उठें विशिष्ट।
उग्र रूप से नर जीवन को
कर देते तब यही विनिष्ट।।

मृत्यु के कारण

५३

पत्री में कमजोर रहे जब
लग्नेश्वर और निधन के नायक।
उनके संग ही युत रहे
या उनको देखे अंगारक।।
व्यसन भाव का स्वामी भी
जब उन पर डाले पुष्ट प्रभाव।
समरांगन में प्राण तजे या
मरता खाकर शस्त्र से घाव।।

५४

लग्न एवं निधन का स्वामी
व्यसन भवन में करे निवेश।
उनके साथ ही छायायुत संग
सांप शिखी जब करे प्रवेश।।
लग्न एवं निधन नाथ के
दशा मुक्ति का हो संचार।
तस्कर अथवा तीक्ष्ण शस्त्र से
जातक का होता संहार।।

५५

लग्न, निधनपति दोनों ही
जब वाहन घर में करे प्रयाण।
तब वाहन के नीचे दबकर
जातक खोता अपना प्राण।।

५६

देव गुरु संग लग्ननाथ जब
शत्रु भवन में करे रुझान।
तब क्षुधा से व्याकुल होकर
जातक तजता अपना प्राण।।

५७

उदय अम्बुपति देवगुरु जब
तीनों करते साथ रमण।
जीर्णगात नर भूखा रहकर
तब करता है मृत्यु - वरण।।

५८

उदय, अम्बु और धन-स्वामी
जब एक साथ ही करे प्रयाण।
पड़े राहु की कोप अगर तो
भूख ही लेता नर का प्राण।।

५९

लग्न और धन के स्वामी संग
छायासतु जब करे गमन।
सर्प नाथ भी योग करे तो
नर मरता कर विष सेवन।।

६०

त्रिक् भावों में वास करे जब,
उदय, वित्तपति, रवि नन्दन।
भौम, भुजंग की पुट पड़े तो,
फांसी लगकर होय मरण।।

६१

सांप, शिखी या अर्कपुत्र संग
शत्रुभवन पति करे भ्रमण।
कोई जंगली जन्तु ही करता
जातक का तब प्राण हरण।।

६२

सूर्य, चन्द्र दोनों पत्री में
व्यसन निधन में करते घौत।
तब हिंसक दुर्घटना में ही
नर पाता है अपनी मौत।।

६३

रक्तनेत्र हो अम्बु भवन में,
नभ में सौरि रहे विद्मान।
तब विपलव में आहत होकर
जातक करता स्वर्ग प्रयाण।।

६४

गगन भवन में जब वसता है
असुर पूज्य एवं स्वरभान।
सर्प दंश के कारण ही तब
जातक करता स्वर्ग प्रयाण।।

६५

कारकांश में अर्धकाय संग
पत्री में जब हो दिनमान।
विष सेवन के ही कारण तब
जातक करता स्वर्ग प्रयाण।।

६६

दिनकर शोभे गगन भवन में,
अम्बु में करता वक्र भ्रमण।
अर्धकाय हो निधन भवन में,
शस्त्र से होता स्वर्ग गमन।।

६७

लग्न भवन में छायासुत संग
जब रमता पापी अंगारक।
तब शस्त्र से घायल होकर
स्वर्ग गमन करता है जातक।।

६८

जीव वक्र हो गगन भवनगत,
अम्बु में दिनकर करे गमन।
स्वानदंश या विष सेवन से
जातक करता मृत्यु-वरण।।

६९

भानु दृष्ट जब रिपुगत होवे
पाप अंश का धरणीनन्दन।
तब हैजा के कारण ही
जातक तजता अपना जीवन।।

७०

व्यसन भवन में पाप अंशगत
जब रहता है अंगारक।
तब प्रायः अपमृत्यु ही जग
में वरण करे वह जातक।।

७१

द्वादशांश चक्र में आत्माकारक
जिस राशि में करे प्रवास।
वही राशि जब जन्मचक्र में
जातक का बनता आकाश।।
और दिवाकर इसी हाल में
जब वसता है अम्बु भवन।
राजदण्ड ही तब होता है
मृत्यु का जग में कारण।।

७२

निधन भवन में छायासुत हो
अंत्य में वसता हो अंगारक।
लग्ननाथ बलहीन अगर हो
होती प्रायः मौत भयानक।।

७३

अर्धकाय संग रन्ध्र भवन में
जब सुख से रमता दिनमान।
निर्जन स्थल में तब प्रायः
जातक तज दे अपनी प्राण।

७४

व्यसन भवन में तीव्र विलोचन
विभाावसु से हो अवलोकित।
तब अचानक क्रूर ढंग से
जातक करता प्राण तजित।।

७५

निधन भवन में अर्धकाय संग
छायासुत जब करे गमन।
तब वाहन के नीचे आकर
जातक करता मृत्यु वरण।।

७६

रन्ध्र भवन में सोमतनय
संग जब होता दिनकरनन्दन।
कारागृह या पाश में बंधकर
जातक करता मृत्यु वरण।।

७७

श्याममात्र संग भृगुकुल दीपक
जब वसता है निधन भवन।
निद्रावस्था या यात्रा में
जातक करता मृत्यु वरण।।

७८

रन्ध्र भवन में जब वसता
है रक्ताम्बर संग दिनकरनन्दन।
हृदय गति सहसा रुकने से
जातक की हो जाय निधन।।

७९

छायासुत की राशि में बसता
लग्ननाथ संग जब दिनमान।
तब अचानक दुर्घटना में
जातक तज देता निज प्राण।।

८०

लग्ननाथ संग अमर पुरोहित
धर्म भवन में करे गमन।
तब तीर्थ या सत्कार्य में
जातक करता मृत्यु वरण।।

८१

धर्म भवन में सौम्य, कवि
जब अर्धकाय संग करे भ्रमण।
रक्त प्रवाह की अवरुद्धि से
जातक की हो जाय निधन।।

८२

धर्म भवन में जब वसता है
सोमतनय के संग दिनमान।
तब तीर्थ या शिवमंदिर में
जातक तजता अपना प्राण।।

८३

तपनायक जब पत्री अन्दर
लग्न भवन में करे गमन।
तीर्थस्थल या मन्दिर में तब
जातक करता मृत्यु वरण।।

८४

धर्माधिप संग निधन भवन में
जब वसता है यदुनायक।
तब शांति व स्थिर चित्त से
मृत्यु वरण करता है जातक।।

८५

व्यसन भवन में तूर्यपति संग
जब वसता है दिनकरनन्दन।
तब वाहन के नीचे आकर
जातक करता मृत्यु वरण।

८६

अर्धकाय संग सुखनायक जब
व्यसन भवन में करे गमन।
असमाजिक तत्व ही करते
तब जातक का प्राण हरण।।

८७

जैमिनेय संग सुखनायक जब
व्यसन भवन में करे गमन।
तब तीक्ष्ण शस्त्रों से होता
उस जातक का प्राण हरण।।

८८

अम्बु, व्योम में वास करे
जब विभाावसु संग भूनन्दन।
तब मृत्यु का कारण होता
तीक्ष्ण शस्त्र, पावक, पाहन।।

८९

जाया, नभ व अम्बु में क्रमशः
शशि, भौम व सौरि समाय।
तब गिरने के कारण बनती
मरने के जातक की उपाय।।

९०

शशि भानु बाला आंगन में
पत्री में करते हों प्रयाण।
सम्बन्धी जन ही ले लेते
उस जातक की छल से जान।।

९१

मकर राशि में चन्द्र बसे व
कर्क राशि में दिनकरनन्दन।
जलोदर का रोग ही करता
तब जातक का प्राण हरण।।

९२

पाप-मध्यगत निशानाथ जब
भौम राशि में करे गमन।
तब युद्ध या अग्निकाण्ड में
जातक करता मृत्यु वरण।।

९३

पाप-मध्यगत निशानाथ जब
वसता है बाला आंगन।
रक्त-अल्पता के कारण तब
जातक की हो जाय निधन।।

९४

पाप-मध्यगत निशानाथ जब
सौरि राशि में करे गमन।
दीर्घ रोग से विस्तरगत हो
जातक करता मृत्यु वरण।।

९५

मलिन ग्रहों के संग शीतकर,
जाया मन्दिर करे भ्रमण।
मेष राशि में भृगुकुल दीपक
दिवानाथ का वास गगन।
तब कामिनी के ही कारण
जातक का होता है निधन।।

९६

दिवानाथ संग रक्तनेत्र जब
अम्बु भवन में करे विहार।
और गगन गृह में होता हो
दिनकर नन्दन का विस्तार।।
तब पीलिया रोग से होता
जातक का जग में संहार।।।

९७

पत्री में जब तूर्य भवन में
दिवानाथ करता है निवास।
क्षीण चन्द्र से दृष्ट भौम का
व्योम भवन में हो आवास।।
तब पीलिया रोग के कारण
हो जाता जीवन का नाश।।।

९८

व्योम भवन में रक्त वस्त्र जब
सांप संग करता है बिहार।
अम्बु भवनगत दिवानाथ को
दिनकरसुत जब रहा निहार।।
मार-पीट के ही कारण हो
जातक का जग में संहार।।

९९

तनु, तोय, नभ, निधन में क्रमशः
भानु सौरि कुज यदुकुल दीपक।
मार-पीट या मुठभेड़ तब
हो जाता जातक का भक्षक।।

१००

तनु तनय तप व्योम में क्रमशः
सौरि, भानु, कुज यदुनायक।
कारागृह या मार-पीट या
अनल से मरता ऐसा जातक।।

१०१

क्षीण चन्द्र जब पापी ग्रह संग
तनु, तनय या तपगृह जाय।
अर्धकाय से दृष्ट रहे तो
अपमृत्यु का बने उपाय।।

१०२

व्योम, काम या तूर्य में क्रमशः
सौरि, भानु, धरणीसुत जाय।
राजकोप या पावक अथवा
शस्त्र से जातक मौत को पाय।।

१०३

धन, अम्बु व व्योम में क्रमशः
छायासुत, शशि, धरणीनन्दन।
तब विचित्र रोगों के कारण।
जातक करता मृत्यु वरण।।

परलोक का ज्ञान

१०४

कारकांश से निधन भवन में
[illegible] ग्रह रहता कोई व्याप्त।
तब मृत्यु के बाद मनुज को
होता सदा परमपद प्राप्त।।

१०५

सिंहासन गत निशानाथ हो,
पर्बत अंश में हो सुरपण्डित।
ऐराबत का भृगुकुल दीपक
ब्रह्मलोक में करता मण्डित।।

१०६

कारकांश से अंत्य भवन में
जैमिनेय करता हो प्रवेश।
ब्रह्मलोक में पद जातक को
मृत्युबाद मिलता है विशेष।।

१०७

कारकांश से अंत्य भवन को
अज, चापधर रहा सजाय।
शुभ अंशगत शुभ ग्रह बैठे
ब्रह्म लोक में नर पद पाय।।

१०८

एक साथ जब चार ग्रहों
का पत्री में होता संयोग।
एवं उनका भावपति जब
केन्द्र, कोण में करता भोग।।
मृत्यु बाद तब ब्रह्मलोक में
जाने का बन जाता योग।।

१०९

दसम भवन में मीन राशिगत,
सौम्य भौम करता हो प्रवास।
तब मृत्यु के बाद मनुज वह
ब्रह्मलोक में करे विलाश।।

११०

शुभ युत या दृष्ट रहे जब
निद्रित वस्था का निधनेश।
तब मृत्यु के बाद मनुज वह
ब्रह्मलोक में करे प्रवेश।।

विविध

१११

अर्थकाय, लाभेश, गुरु जब
मृत्यु भाव का करे वरण।
तब जातक के ज्येष्ठ बन्धु
को कर देते हैं शत्रु हनन।।

११२

शुभ युत हो निधन भाव या
सबल शुभ्र का अवलोकन।
चलती उसकी दशा भुक्ति तो
अक्समात नर पाता धन।।

११३

त्रिक् भावेश से युत, दृष्ट या
लग्नपति त्रिक् भवन समाय।
सौरि, सांप की कोप रहे तो,
अंग - भंग का बने उपाय।।

११४

सहज, निधनपति शुभ का होकर
तनय, उदय में करे प्रवेश।
अन्वेषक, चिन्तक जातक हो,
ख्याति, प्रतिष्ठा मिले विशेष।।

११५

निधनेश का नवमांशपति भी
पत्री में प्रायः हो मारक।
अक्सर अपनी दशा-भुक्ति में
हो सकता वह संहारक।।

११६

बल विवर्जित लग्न, निधनपति
जन्म-चक्र में हो गर व्याप्त।
शत्रुनाथ हो रक्त-वस्त्र संग,
वीरगति नर करता प्राप्त।।

११७

रसातलगत अष्टमपति जब
मलिन अंश में करता भोग।
अशुभ ग्रहों से दृष्ट रहे तो
दुर्घटना का बनता योग।।

११८

द्वादश एवं अष्टम पति जब
आपस में करते परिवर्तन।
भौम भुजंग हों साथ या देखे,
अक्समात् हो जाय निधन।।

११६

लग्नेश्वर का शत्रुनाथ संग
पत्री में जब हो संयोग।
निधननाथ के नक्षत्रों में
लग्नपति करता हो भोग।।
मलिन अंश में निधनेश्वर हो,
शुभ से बनता कोई न योग।
अर्कपुत्र बलहीन रहे तब
जातक को हो नाना रोग।।

१२०

जाया गृह में अष्टमेश संग,
पापी ग्रह की होये भीड़।
शुक्र की होये दृष्टि नहीं तो
जातक को ही बाबासीर।।

१२१

जिस भाव में लाभनाथ संग
अष्टमपति करता है वास।
उस भावेश की दशाकाल में,
दुश्मन देते नाना त्राश।।

१२२

केन्द्र, कोणगत सबल निधनपति
मलिन अंश में करता भोग।
शुभ दृष्टि से हीन रहे तो
राजभंग का बनता योग।।

१२३

नीचराशि गत अष्टमेश जब
अर्धकाय संग रहता युक्त।
तब अपने सारे दुर्गुन से
अष्टमपति हो जाता मुक्त।।

१२४

निधन भाव में ही रहता जब
सबल और शुभयुत निधनेश।
लग्ननाथ बलवान रहे तब
जातक जाकर बसे विदेश।।

१२५

शुभ अंशगत तप निधनपति,
आपस में हो समसप्तक।
अष्टमेश की दशा चले तब
यश, अर्जन करता जातक।।

१२६

सहजस्थ हो अष्टमपति और
सहजनाथ होवे कमजोड़।
जीविकोपार्जन में प्रयासरत,
पराधीन नर करता होड़।।

१२७

अष्टमेश की दशा, भुक्ति का
जीवन में जब हो संचार।
तब लफड़ों से सावधान नर,
करे न कुछ नूतन व्यापार।।

१२८

अष्टमपति हो थिर राशिगत,
द्विस्वभाव लग्नेश सजाय।
थिर लग्न हो, चन्द्र उभयगत,
जातक निश्चय हो दीर्घायु।।

१२९

अष्टम गृहगत रक्त नेत्र पर
अर्धकाय की पड़ती दृष्टि।
अस्थि दोष या अस्थिभंग
या रक्तालपता की हो सृष्टि।।

१३०

निजगृही या तुंग निधनपति
सबल जीव कवि मृत्यु भवन।
शुभ दृष्ट, शुभ अंश में हो
तो ससुराल गृह से मिलता धन।।

१३१

अष्टम गृहगत सोम तनय हो
अशुभ ग्रहों का अवलोकन।
तब जातक के शिक्षा क्रम में
पड़ता नाना भांति विघन।।

१३२

मलिन अंशगत रन्ध्रनाथ जब
निधन भवन में करे प्रवास।
तब गुदा में रोग के कारण
जातक जग में जिये हताश।।

१३३

त्रिक् भवन में पापी ग्रह संग
पत्री में जब हो निधनेश।
लग्ननाथ बलहीन रहे तो
व्याधि से मिलता नाना क्लेश।।

१३४

अर्धकाय संग निशानाथ जब
निधन भवन में करे प्रवेश।
षष्टमपति हो लग्न भवन में
अपस्मार दे बहुविधि क्लेश।।

१३५

रमाबन्धु संग असुर पुरोहित
केन्द्र भवन में करे रमण।
दुष्ट ग्रहों का पत्री में जब
भीड़ लगा हो निधन भवन।
अपस्मार के कारण नर की
काया रहती नित्य रुगन।।

१३६

अष्टमपति के संग भौम शनि
निधन भवन में करे प्रवेश।
अपस्पमार से प्राप्त करे तब
जातक निज काया में क्लेश।।

१३७

निधन भवन में छायासुत संग
वास करे जब यदुकुल दीपक।
तब जातक के सभी सुखों का
भूत-प्रेत बन जाता भक्षक।।

१३८

निधन भवनगत दिनकर सुत पर
दुश्ट ग्रहों की दृष्टि पड़े।
यह योग तब जातक तन में
बाबासिर की सृष्टि करे।।

१३९

शुभयुत सबल लग्ननायक जब
केन्द्र भवन में रहा समाय।
निधन भवन शुभयुक्त रहे तो
नर लम्बी आयुष को पाय।।

१४०

केन्द्र, कोण व निधन भवन में
पापी ग्रह सब रहे प्रविष्ट।
क्रूर कर्मरत हिंसक नर की
नैतिकता हो जाय विनिष्ट।।

१४१

रन्ध्र भवन में रमाबन्धु संग
पत्री में रहता स्वरमान।
अपस्मार के ही कारण तब
जीवन का होता अवसान।।

१४२

दिवानाथ, संग रक्तनेत्र जब
लाभ भवन में करे गमन।
पावक, शस्त्र या विषसेवन
से जातक करता मृत्यु वरण।।

लक्ष्मी

गायत्री की यह धारा श्री - समृद्धिदायिनी है। स्थूल रूप में यह सम्पत्ति दायिनी मानी जाती है। इसका सूक्ष्म रूप अनुपयोगी को उपयोगी बनाने में सक्षम है। सुगढ़ता इसका लक्षण है। यह अभावों को दूर कर सम्पन्न बनाती है। इसे कमला भी कहते हैं। यह निर्विकार सौन्दर्य का प्रतीक है। यह नीरसता हटाकर उल्लास का संचार करती है।

नवम भाव

धर्मो, दया, पैत्रिकभाग्यभं तु गुरुस्तपोलाभशुभार्जितानि।।

गुर्वारव्यमुक्तं नवमं तपश्च
भाग्यमिधं धर्मपथम् च पुण्यम्।।

दान धर्मसुतीर्थ सेवनतपोगुर्वादि भक्त्यौषधा-
चाराश्चित्त विशुद्धि देवभजने विद्याश्रमो वैभवः।।

भाग्यं श्यालं च धर्म च भ्रातृपत्न्यादिकांस्तथा।
तीर्थ - यात्रादिकं सर्ब धर्मस्थानान्निरीक्षयेत।।

वापी कूप तड़ागादि प्रपादेवगृहाणि च।
दीक्षा यात्रा मठं धर्मं धर्मान्निश्चित्य कीर्तयेत।।

नवम भाव फल

१

ख्याति, धर्म, सत्कर्म तथा जन कल्याण के कार्य।
दया, दान, उत्तम चरित्र, जो प्रभु प्रसाद अनिवार्य।।
पिता, पुत्र, तप, पौत्र, सब गुरुजन प्रति आचार।
यज्ञ, ज्ञान, पूजा, तीर्थाटन, भक्ति का करें विचार।।

भाग्य विचार

२

भाग्यनाथ स्वराशि वर्गगत, दे स्वदेश में उन्नति।
पापाक्रान्त या मलिन अंश में, करता केवल अवनति।।

३

तप तनय के बीच जब सारे ग्रह हों शेर।
मध्यावस्था में ही फिर, जातक बने कुबेर।।

४

अष्टमेश तप भवन में या तपेश संग मिश्रित।
भाग्यहीन जातक सदा औरों पर हो आश्रित।।

५

सबल सुखेश धर्मेश संग रहे धर्म - स्थान।
तब जातक करवाता है मन्दिर का निर्माण।।

६

तप, तनय और लग्नपति जब करते संयोग।
धन अर्जन का तब बने नाना भांति सुयोग।।

७

सुत नायक जाकर बसे भाग्य भवन या मान।
तब जातक को प्राप्त हो खूब योग्य संतान।।

८

शुभ ग्रहों का वास हो, दया, हिबुक स्थान।
तब जनक को करता यह लम्बी आयु प्रदान।।

६

तप, तनय, धन, अंत्य में, पापी ग्रह का मेल।
शुभ प्रभाव से रिक्त हो जातक जाता जेल।।

१०

उदय हृदय तप द्यून तनय अथवा कर्म भवन।
लग्ननाथ जाकर जमे, स्वस्थ, सुखी हो जीवन।।

११

सिंह कीट घट वृषभ लग्न का भाग्येश्वर है बाधक।
भाग्य नाथ की दशा-भुक्ति में पीड़ित रहता जातक।।

१२

भाग्य भाव बलहीन अगर अन्य भवन का बल दे भ्रम।
सभी कार्य - साधन के हित लगता अमित परिश्रम।।

१३

पुत्रेश तथा नवमेश हो पाप प्रभाव में भ्रष्ट।
जीवन का तब सुख सकल हो जाता है नष्ट।।

१४

भाग्येश, भानु, शशि, तीनों हो पत्री में बलहीन।
तब सारे ही राजयोग का फल हो जाता क्षीण।।

१५

अष्टमगृह में जब वसे अम्बुभवन का नायक।
तब सारे शुभ कार्य में भाग्यहीन हो जातक।।

१६

धन, द्यून या लग्नपति त्रिक् में हो आसीन।
सुख विमुख जातक होता सौभाग्य से हीन।।

१७

पापदृष्ट अरिभावगत जब होता तपनायक।
तूर्यपति बलहीन हो, भाग्यहीन हो जातक।।

१८

क्रूर षष्टियंश या नीचगत यदि रहे तपनाथ।
तब जीवन में जातक को भाग्य न देता साथ।।

१९

भाग्यनाथ बलहीन हो, तप में पाप प्रवास।
निर्बल हो लग्नेश तो होता भाग्य विनाश।।

२०

केन्द्रस्थ शनि हो नहीं जीव सोम से विक्षित।
तब जीता है जगत में जातक भाग्य रहित।।

२१

लाभस्थ धननाथ हो नभनायक से दृष्ट।
तपनायक शुभ अंशगत, भाग्य वृद्धि हो पुष्ट।।

२२

चर राशि हो लग्न तथा चरगत हो प्रथमेश।
चर में ही तपनाथ हो, जगता भाग्य विदेश।।

२३

थिर राशि हो लग्न में, थिर में हो लग्नेश।
थिरगत रहे तपेश तो भाग्य बढ़े निज देश।।

२४

शुभाधिक्य में जब रहे तपगृह व तपनाथ।
हर वक्त हर हाल में भाग्य मनुज के साथ।।

२५

कर्मेश से दृष्ट हो जब तपगत लाभेश।
जातक करता प्राप्त है उत्तम भाग्य विशेष।।

२६

कर्मेश से युत, दृष्ट, धनगत हो तपनाथ।
सब प्रयास में देता है भाग्य हमेशा साथ।।

२७

सुत भवन को देखता या वसता वहां तपेश।
तब पुत्रों के साथ ही बढ़ता भाग्य विशेष।।

२८

जब पत्री में साथ हो तनयनाथ, तपनायक।
शुभ अंश पाकर बने वे विशेष उपकारक।।
शुभ गुणों से हो सजा पत्री में सुतकारक।
तब पुत्र सहयोग से भाग्यवान हो जातक।।

२९

शुभयुत या दृष्टि हो धर्माधिप, सहजेश।
या वैशेषिक अंश में शुभ गुण गहे विशेष।
तथा सबल शुभ संग रहे पत्री में लग्नेश।
तब भ्रातृ सहयोग से बढ़ता भाग्य विशेष।।

३०

तप भवन में जब वसे लाभ भवन का नायक।
और लाभ में मस्त हो शुभ संग धननायक।
कर्मेश से युत दृष्ट जब सुखगत रहे तपेश।
तब जीवन में जातक का बढ़ता भाग्य अशेष।।

३१

कवि, जीव से युत या दृष्ट रहे तप भाव।
भाग्यवान जातक बने, निर्मल होय स्वभाव।।

३२

शुक्र गुरु से युत या दृष्ट रहे तपनायक।
लग्ननाथ हो सबल तो भाग्यवान हो जातक।।

३३

लग्न भवन में जब बसे धननायक, प्रथमेश।
तपनायक शुभ अंशगत, बढ़ता भाग्य विशेष।।

३४

लग्न भवन में ही बसे जब लग्न का नाथ।
तपनायक तप भवन मे, सदा भाग्य दे साथ।।

३५

तपनायक होता यदि लाभ भवन विद्मान।
तब भाग्य बल से बने जातक वह श्रीमान।।

३६

पत्री में हो एक संग तप व भव के नायक।
सकल मनोरथ पूर्ण हो, भाग्यवान हो जातक।।

३७

पत्री में हो एक संग द्रव्यपति, धर्मेश।
जातक करता प्राप्त है उत्तम भाग विशेष।।

३८

सुत, सहज व लग्न में सब ग्रह करें प्रवेश।
तब जातक को प्राप्त हो उत्तम भाग्य विशेष।।

पुण्य एवं पापकर्म

३६

शुक्र संग पाताल में जब हो चन्द्र तनय।
पुण्यवान जातक रहे धर्म निरत नित सविनय।।

४०

शुभ कर्त्तरी में जब रहे पत्री में सुखभाव।
पुण्यवान नर की होती विनयशील स्वभाव।।

४१

धर्मभवन पर हो यदि शुभ प्रभाव अति पुष्ट।
पुण्य कर्म में निरत नर जीवन में संतुष्ट।।

४२

तपभवन में जब वसे अष्टम गृह का नायक।
नाना पापों में सदा लिप्त रहे वह जातक।।

४३

नवम भाव में एक संग दिवानाथ, अंगारक।
दुश्कृत्य में नित निरत होता ऐसा जातक।।

४४

गुलिक संग सुखेश हो पापी ग्रह पाताल।
पापकर्म में लिप्त नर रहता अति बेहाल।।

४५

अशुभ ग्रहों का हो यदि भाग्यभाव आगार।
तब जातक का होता है पापपूर्ण आचार।।

४६

भोजनावस्था में रहे जब तपगत दिनमान।
धर्मनिरत जातक तब होता अति श्रीमान।।

४७

क्रूर षष्टियंश या पापमध्य जब होता तपनायक।
कई तरह के पापकर्म में लिप्त रहे वह जातक।।

४८

गोपुरादि में हो अगर पत्री में शुक्लाम्बर।
पुण्यवान जातक की धर्मकर्म अति सुन्दर।।

४९

मृदु षष्टियंश में जब रहे दानव, देव पुरोहित।
धर्मशील जातक में सब अवगुण होय तिरोहित।।

५०

सहजस्थ हो गुलिक तथा तपगत शनि, स्वरभान।
पापकर्म में तब रमे जातक दस्यु समान।।

५१

देवगुरु त्रिक् भवन में, मलिन अंशगत तपनायक।
रविनन्दन हो रिस्फ में, महापातकी हो जातक।।

५२

कामस्थ शशि, भानु हो छायासुत से विक्षित।
नीच राशि में तपपति हो, जातक पाप ग्रसित।।

५३

क्षीण सोम संग युक्त हो पत्री में अंगारक।
तपनाथ निर्बल रहे, पापी होता जातक।।

५४

पापी ग्रह व गुलिक संग युत रहे धननायक।
मलिन अंशगत भाग्यपति, पाप कर्मरत जातक।।

५५

लग्नस्थ गुरु पर पड़े दृष्टि पंगु की पुष्ट।
स्वरभान सुतगत रहे, जातक होता दुष्ट।

५६

अरिभवन में जब करे सोम भौम संयोग।
धर्मेश बलहीन हो, पापकर्म का योग।।

५७

भाग्यभवन, भाग्येश पर पाप दृष्टि, स्पर्श।
तब जातक तज देता निज, धर्म और आदर्श।।

५८

दया, मान के नाथ में शुभमय हो सम्बन्ध।
धर्म, कर्म से भाग्योदय का तब बन जाय प्रबन्ध।।

५९

धन सुत तप और नाश गृह जब होता है शुद्ध।
सुर पण्डित कर्मस्थ हो, नर धर्मज्ञ, प्रबुद्ध।।

६०

लग्नेश और भाग्येश में हो परिवर्तन योग।
तब विदेश में भाग्योदय का बनता प्रबल सुयोग।।

६१

दया, मान या आय में सप्तमपति का वास।
तब नाना व्यापार में, जातक करे विकास।।

६२

सुराचार्य हो लग्न में, केन्द्र कोण में दिनकर।
नवमभाव शुभ युक्त हो, पितृ भक्त होता नर।।

६३

पाप ग्रहों से भ्रष्ट हो तप तनय और द्यून।
आत्महीन जातक करे तब कृत्रिम-मैथुन।।

६४

भाग्येश और धनेश का आपस में विनियोग।
लग्नेश्वर बलवान यदि लाटरी का हो योग।।

६५

नवमेश और सप्तमेश का आपस में परिवर्तन।
व्यवसाय से नर करे तब प्रचुर धन अर्चन।।

६६

सहजनाथ, भाग्येश का आपस में परिवर्तन।
सोदर में हो भौम अगर, भ्राता से धन अर्जन।।

जन-कल्याण योग

६७

नवमांश चक्र में कुम्भ में बसता आत्माकारक।
लोक हितों के कार्य में रहे समर्पित जातक।।

६८

मृदु षष्टियंश में हो अगर नवमनाथ सुभ्यस्त।
लोकोपकारी कार्य में जातक रहता व्यस्त।।

६९

सुखेश संग तपेश का नभगृह हो आगार।
नर पुराने मठों का करता जीर्णोद्धार।।

७०

सौम्य संग तपेश जब गोपुरादि में जाय।
कुज गुरु बलवान हो, जातक मठ बनबाय।।

७१

सौम्य, जीव, तपेश सब पत्री नें बलवान।
यज्ञ कर्म से तब मिले जातक को सम्मान।।

७२

नभनायक तप भवन में, नभ में हो शशिपुत्र।
जनोपकारी कार्य का जातक रचता सूत्र।।

७३

पाप विवर्जित सौम्य हो भाग्य भवन में तुंग।
तब जनहित के कार्य में नर का बढ़े उमंग।।

शील तथा आचरण

७४

मलिन ग्रहों से त्रस्त निशाकर,
भाग्य भवन में करे गमन।
दैत्य गुरु हो मलिन वहां तो
गुरु पत्नी संग होय रमण।।

७५

दैत्य सचिव और रमाबन्धु संग,
भाग्यनाथ सप्तम- स्थान।
अर्धकाय लाभस्थ रहे तो
शील, धर्म, निकृष्ट, निदान।।

७६

निशानाथ बलहीन, मलिन हो,
शुक्र अंश में करे प्रयाण।
पाप युक्त तप भाव रहे तो
पाप - कर्म का बने विधान।।

७७

तपनायक शुभ युक्त, दृष्ट हो
वैशेषिक में करे गमन।
षष्टियंश गर मलिन नहीं तो
धर्म, कर्म में मनुज मगन।।

७८

मलिन अंश में धर्मनाथ हो,
कलुषित ग्रह जब बसे धरम।
अशुभ दुर्धरा धर्माधिप का,
जातक करता नीच करम।।

७९

देव, दैत्य अमात्य अगर हो
मित्र-गृही या निज-स्थान।
तपनायक शुभ युक्त, सबल दे
धर्म सभा में अति सम्मान।।

८०

कवि, सौम्य या जीव अंश में,
तप नायक जब करे प्रयाण।
शुभ कर्त्तरी, शुभ दृष्ट रहे तो
धर्म निरत नर बने महान।।

८१

धर्म भाव शुभ से सज्जित हो,
मलिन अंश धर्मेश बिहार।
षष्टियंश हो अशुभ अगर तो
पापयुक्त आचार-विचार।।

८२

धर्मनाथ का मलिन अंश हो,
नील, नाग, तपभवन समाय।
अशुभ दुर्धरा धर्म भाव का
घृणित कर्म नाना करवाय।।

८३

शुभ अवलोकित सुकृतिपति जब
तुंग-राशि में करे प्रयाण।
धर्मभाव शुभ युक्त रहे तो
नर करता है जन-कल्याण।।

८४

सुराचार्य विक्षित धर्मेश्वर
पर्वत अंश में करे भ्रमण।
दानवीर जातक होता जब
दैत्य-गुरु से दृष्ट लगन।।

८५

लग्नभाव या लग्न नाथ पर
तपनायक की दृष्टि पड़े।
धर्मनाथ हो केन्द्र-कोणगत
जातक बहु विधि दान करे।।

८६

लग्ननाथ विक्षित धर्मेश्वर
सिंहासन में करे प्रयाण।
कर्मनाथ से दृष्ट रहे तो
नर करता है जन कल्याण।।

८७

तुंग राशि में श्यामगात्र हो,
धर्माधिप की दृष्टि पड़े।
लाभेश्वर केन्द्रस्थ रहे तो
जातक बहुविधि दान करें।।

८८

दानयोग हो सफल तभी जब
राजयोग, धनयोग प्रबल।
वैभवशाली नर ही करता
दान, पुण्य का कर्म सकल।।

८६

तपनायक से दृष्ट सूर्य जब
गोपुर अंश में करे गमन।
पाप विवर्जित यदि रहे तो
जनक से पाता जातक धन।।

६०

कर्माधिप हो भाग्य भवन में,
भाग्यनाथ होवे बलवान।
शुभ प्रभाव से युक्त रहे तो,
जातक करता जप और ध्यान।।

६१

देव लोक या पर्वत अंश में,
तप, नभ नायक करे प्रयाण।
शुभ प्रभाव से युक्त रहे तो,
जातक करता जप और ध्यान।।

९२

उच्च राशि गत धर्म नाथ या
केन्द्र, कोण में करे प्रयाण।
कर्म नाथ से दृष्ट रहे तो
जातक पाता भूप से दान।।

९३

पुत्रेश तथा कर्मेश जब भाग्य में करे प्रयाण।
लग्नेश्वर से दृष्ट हो, जातक पाता धन, सम्मान।।

९४

लग्नेश्वर लाभस्थ हो, नभ में हो तपनायक।
कर्मनाथ बलवान हो, सुख से जीता जातक।।

९५

केन्द्र, कोणगत तपनायक जब पर्वत अंश प्रविष्ट।
शुभ से हो संयुक्त अगर भाग्य बने उत्कृष्ट।।

९६

द्रव्यपति हो लाभगत, लाभेश भाग को जाय।
कर्मेश दृष्ट धनेश हो, अतिउत्तम हो भाग्य।।

९७

भाग्याधिप लाभेश का आपस में विनियोग।
भाग्य उदय के वास्ते परम विलक्षण योग।।

९८

सप्तम घर में उच्च का यदि रहे नवमेश।
तब विवाह के बाद तुरत, जातक जाय विदेश।।

९९

सप्तमेश नवमेश का आपस में परिवर्त्तन।
पत्नी के सहयोग से, तब धन होता अर्जन।।

१००

भाग्य भवन में राहु को, देख रहा अंगारक।
तब कूल्हे के दर्द से, व्याकुल रहता जातक।।

१०१

उच्चस्थ ग्रह जब कभी भाग्य भवन को जाय।
स्वामित्व हर स्वत्व का खुद ही जातक पाय।।

पिता

१०२

नवमेश संग सूर्य करे व्ययघर की रखवाली।
तब जातक का तात हो अतिशय गौरवशाली।।

१०३

मेष राशि में सूर्य अगर पिता हो सम्पतिवान।
नीचस्थ दिनकर यदि तात का हो अवसान।।

१०४

द्वादशेष, नवमेश संग व्यय भाव में दिनकर।
अथवा गुरु अंत्यस्थ हो, भाग्य पिता का सुन्दर।।

१०५

शुभ ग्रह हो धर्मेश तथा शुभ गृह करे प्रयाण।
दीप्त-रश्मि शुभ अंश में, पिता हो आयुष्मान।।

१०६

सुकृतिपति व सूर्य का पर्वत अंश में वास।
तब जनक के जोड़ से जातक करे विकास।।

१०७

तप नायक, तप भवन में, गुरु, शुक्र की दृष्टि।
आयुष्मान पिता होता, सुख की होती वृष्टि।।

१०८

तप नायक, तप भवन जब दोनों पापाक्रान्त।
मलिन अंश में भानु रहे, तात की हो देहान्त।।

१०९

धर्मनाथ व भानु जब दोनों होते भ्रष्ट।
राहु दृष्ट तप भाव हो, मिले पिता को कष्ट।।

११०

नीच, अस्त या शत्रुगृही, रहे धर्म का नायक।
अल्पायु हो जनक या दुःख में जीता जातक।।

१११

पितृस्थानेश का नवमांशेश्वर जब होता है भ्रष्ट।
तब जातक के जनक को, मिलता नाना कष्ट।।

पिता से सम्बन्ध

११२

लग्नेश की तुलना में नवमेश रहे बलवान।
शुभयुत, दृष्टि या अंश में यदि रहे दिनमान।।
पिता-पुत्र सम्बन्ध हित योग परम उपकारी।
जातक अपने जनक का होता आज्ञाकारी।।

११३

पिता का अष्टम भाव जब पुत्र का होता लग्न।
तथा पुत्र का लग्नेश्वर, लग्न में रहे निमग्न।।
हर प्रकार तब निभता है, पिता- पुत्र का धर्म।
जनक निधन के बाद करे जातक सारा कर्म।।

११४

जातक का लग्नेश जब, पिता का हो कर्मेश।
तब तात की भांति ही, होता उसका वेश।।
पिता-पुत्र का लग्न जब, बने एक ही राशि।
जातक करता प्राप्त तब, पिता की कुल धन राशि।।

११५

पिता का षष्टम भाव जब, जातक का हो लग्न।
तब जातक बन जाता है, अपने तात का दुश्मन।।
तप, धन, आय पिता का, हो जातक का अंग।
आज्ञाकारी जातक रहता सदा पिता के संग।।

११६

पिता के अष्टम भाव मे, रहता जो नक्षत्र।
यदि वही बन जाता है नर का जन्म नक्षत्र।।
पिता-पुत्र में तब रहे हर पल कोई अनबन।
आपस में बन जाते हैं एक-दूजे को दुश्मन।।

११७

जनक के द्वादश भाव में, रहता जो नक्षत्र।
यदि वही बन जाता है, नर का जनम-नक्षत्र।।
तब जातक सब भांति ही तात को देता कष्ट।
घर से रहता दूर तथा सम्बन्ध सब नष्ट।।

११८

तप, सहज का नाथ जब विक्रम, धर्म में लीन।
बल से हो संयुक्त तथा तुंग राशि आसीन।।
जातक एवं जनक का रहता उच्च मनोबल।
नैतिकता से पूर्ण तथा यश कीर्ति हो उज्जवल।।

देवभक्ति विचार

११९

तप तथा सुतभाव में पुरुष ग्रह आसीन।
पुरुष देव की साधना में नर रहता है लीन।।

१२०

भानु, केतु हो एक संग कारकांश में मस्त।
ऐसा जातक जगत में प्रायः हो शिवभक्त।।

१२२

सुतभाव के साथ हो दिनकर जब आसक्त।
तब होकर के ही रहे जातक वह शिवभक्त।।

१२३

कारकांश में केतु संग सोम रहे संयुक्त।
तब जातक होता है अक्सर गौरीभक्त।।

१२४

कारकांश में केतु संग शुक्र करे विश्राम।
तब जातक की भक्ति बढ़े ललिता में अविराम।।

१२५

कारकांश में साथ हो सौम्य तथा रविनन्दन।
महाविष्णु की नर करे भक्तिभाव से वन्दन।।

१२६

पातालेश का हो यदि आत्मज गृह आगार।
विष्णुभक्ति की नर कर जग में सतत प्रचार।।

१२७

सुतेश संग धन निधन में हो अंत्येश प्रविष्ट।
तब सात्विक देव ही जातक के हों ईष्ट।।

१२८

कारकांश में साथ हो केतु तथा अंगारक।
स्कन्ध भक्ति में तब रमे दिवारात्रि वह जातक।।

१२९

गुरु के भावेश का नवमांश में भावेश।
शुक्र गुरु से दृष्ट हो, हो गुरुभक्त नरेश।।

१३०

तनय भवन या नाथ संग रमाबन्धु अनुरक्त।
नवम भाव शुभयुत रहे, जातक यक्षिणीभक्त।।

१३१

सुत भवन या नाथ संग युत रहे भूनन्दन।
तब काल भैरव की जातक करता वन्दन।।

१३२

सोम तनय से युत रहे सुत गृह या सुतनायक।
देवोपासना में सतत रमता है वह जातक।।

१३३

सुतभवन या नाथ संग युत रहे वागीश।
माँ शारदा होती है जातक की तब ईश।।

१३४

सुत भाव या नाथ संग युत रहे बलिपण्डित।
चामुण्डा की साधना से जातक हो मण्डित।।

१३५

शुक्र की जगह सुतेश से युत रहे रविनन्दन।
छुद्र शक्तियों की सतत जातक करता पूजन।।

१३६

इसी हाल में सौरि के बदले हो स्वरभान।
बेतालादि की साधना करता तब मतिमान।।

१३७

शशि शुक्र से युत रहे सुतगृह अथवा नायक।
तब दुर्गा की साधना में रत रहता जातक।।

तीर्थ स्थान एवं यात्रा

१३८

शुभ दृष्ट तपनाथ जब करता केन्द्र प्रयाण।
तब जातक को प्राप्त हो रुचिर तीर्थ स्नान।।

१३९

अमर पूज्य तप भवन में करता यदि प्रयाण।
तब जातक को प्राप्त हो रुचिर तीर्थ स्नान।।

१४०

शुभदृष्ट शशिपुत्र जब निधन भवन को जाय।
तब तीर्थ स्नान का सजता सकल उपाय।।

१४१

दया, मान के नाथ जब पत्री में हो संग।
तीर्थाटन से तब बढ़े नर का सतत उमंग।।

१४२

चन्द्र से धर्मेश जब केन्द्र में करे गमन।
कई तीर्थ स्नान का जातक करे भ्रमण।।

१४३

शुभयुत या दृष्ट हो चन्द्र से नौवां भाव।
सतत तीर्थ यात्रा बने जातक का स्वभाव।।

१४४

शुभ ग्रहों का हो यदि भाग्य भवन आगार।
केन्द्र, कोण में सज रहा तपपति का आचार।।
या लाभगृह में रहे तपभवन का नायक।
कई तीर्थों की यात्रा करता ऐसा जातक।।

विविध

१४५

व्यय भाव में शुक्र रहे, भार्या देती भाग्य।
चन्द्र रहे अंत्यस्थ तो जननी देती आश्रय।।

१४६

भाग्योदय हो भाई से द्वादश जब अविनेय।
नवमेश व्यय भावगत, भाग्य पिता के श्रेय।।

१४७

देवगुरु, सुतनाथ का उच्च राशि में सूत्र।
भाग्यवान होता सदा तब जातक का पुत्र।।

१४८

सहजेश, नवमेश का शुभमय हो सम्बन्ध।
जातक के भाग्योदय का भ्राता करें प्रबन्ध।।

१४९

तपेश संग पुत्रेश जब तप गृह रहा सजाय।
सुत में हो वागीश यदि पुत्र बढ़ाता भाग्य।।

१५०

तप रिपु के नाथ का आपस में विनियोग।
श्यामगात क्षतगत रहे मातुल दें सहयोग।।

१५१

तप एवं रिपुनाथ जब एक-दूजे घर जाय।
शुभ ग्रह से विक्षित रहे, शत्रु से जगता भाग्य।।

१५२

पापदृष्ट सुकृतेश जब नाश में हो आसीन।
अथवा होवे नीचगत, मनुज भाग्य से हीन।।

१५३

श्रेष्ठ वैशेषिक अंशगत बलि पण्डित, वागीश।
नवमनाथ बलवान हो, जातक न्यायाधीश।।

१५४

बुध के नवमांश में देव, दनुज आमात्य।
तब जगत में ढूंढ़ता, जातक केवल सत्य।।

१५५

शुभयुत या शुभ अंशगत यदि रहे तपनायक।
देवगुरु बलयुत रहे, न्याय विद् हो जातक।।

१५६

लग्नेश से षडाष्टक यदि रहे धर्मेश।
पिता-पुत्र सम्बंध में भरता नाना क्लेश।।

१५७

पत्री में धर्मेश जब पर्बत अंश गहे।
तब समाज में हर तरह जातक पूज्य रहे।।

१५८

भाग्य भवन में चन्द्र संग पापी करे प्रयाण।
राहुयुत हो सौम्य तो रोग बने पामान।।
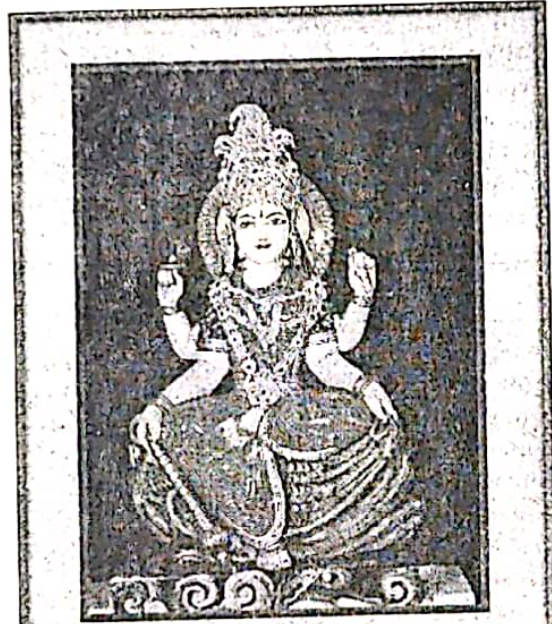
३.वैष्णवी

विष्णु स्वरूपा, पालनकर्त्री। सृजन के साथ ही पोषण का क्रम प्रारम्भ होता है। सृष्टि की पोषक धाराएं इसी की कलाएं हैं। व्यवस्था स्वरूपा, सफलता प्रदायिनी यही है। आतंक के प्रतीक सर्प का भक्षक गरुड़ इसका वाहन है। शंख-सत्संकल्प, चक्र-प्रगति, गदा-शक्ति तथा पद्म-सौम्यता, पवित्रता के प्रतीक इसके आयुध हैं।

अन्नपूर्णेश्वरी यंत्रम्
शक्ति
अन्नपूर्णा
पूसा
मंत्राक्षर
बीजाक्षर
प्र
अं
आध्यात्मिक शक्ति
लौकिक शक्ति
तृसा
पूर्णोदरी
फलश्रुति
तृप्ति
अभाव मुक्ति

(अ)
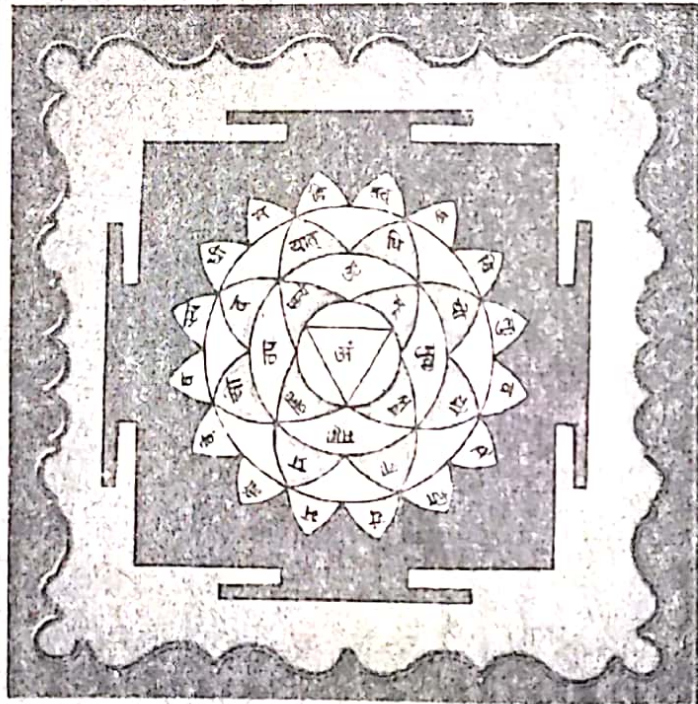
(ब)

अन्नपूर्णा

प्रकृतिमें सभी प्राणियों का जीवन उनके आहार - अन्न पर निर्भर रहता है । आद्यशक्ति की एक धारा उर्वर प्रवाहों को प्रेरित करके चर - अचर प्राणियों के लिए विविध प्रकार के अन्नों की आपूर्ति करती है । इस शक्तिधारा की आराधना से व्यक्तित्व के सभी अंग-अवयवों को पोषक अन्न प्राप्त होने तथा अन्न से प्राण का चक्र चलने का सुयोग बनता है।

दशम भाव

राज्यंचाकाशंवृत्ति च मानं चैव पितुस्तथा।
प्रवासस्य ऋणस्यापि व्योमस्थानान्निरीक्षणम्।।

ताताज्ञामान कर्मास्पद गगननभेव्योम
मेषूरणाख्यां मध्यं व्यापारमूचुर्दशममथ।

व्यापरमेषूरणमध्यकर्ममानास्पदाज्ञा जनकं च राज्यं।

आज्ञामानविषूनानि वसन व्यापार निद्राकृषि-
प्रब्रज्यागमकर्मजीवनय शोविज्ञानविद्याः क्रमात्।

राज्यं मुद्रा पुरं पण्यं स्थानं पितृ प्रयोजनम्।
वृष्टियाद व्योमवृतान्तं व्योम स्थाना द्विलोकयेत्।।

दशम भाव फल

१

सत्ता, राज्य, मान, नौकरी, सत्कर्म तथा अधिकार।
यश, कीर्ति और पितृधन, प्रभुता, पद, व्यापार।।
भोग, ऐश्वर्य, नेतृत्व गुण, राजनीति - आचार।
संतान-रोग, घुटना, शासन, सब का करें विचार।।

२

लाभ भवन में जब बने कर्मनाथ का वास।
कई स्त्रोत से आय पा जातक करे विलास।।

३

दशमेश तथा नवमेश जब दोनों हो बलहीन।
पद, मर्यादा विरत नर, जीवन जीता दीन।।

४

कर्मेश यदि त्रिक् भाव में पापी ग्रह संग जाय।
शुभ प्रभाव से रिक्त हो धन सम्पति वर्षाय।।

५

दशमेश हो केन्द्रगत, दशमस्थ भानु अंगारक।
उच्च पदों को प्राप्त नर होता क्रूर प्रशासक।।

६

दशमस्थ भानु से युत रहे राहु तथा अंगारक।
छायात्मज की दृष्टि पड़े, दण्डित होता जातक।।

७

लाभेश, कर्मेश का अंशपति, होवे एक भवन।
धन, गगनपति केन्द्रगत, मिलता प्रचुर धन।।

८

कर्मेश तुंग या स्वगृही, शुभ अंशों में व्याप्त।
प्रभुता, पद, सम्मान, धन, जातक करता प्राप्त।।

९

दशमनाथ हो बल रहित, उन्नति सब अवरुद्ध।
सिंही सुत हो कोण में, शील, आचरण, शुद्ध।।

१०

पापी ग्रह लाभस्थ हो, दशमेश पाप ग्रह संग।
दुश्कृत्य से नर करे तब कुल - मर्यादा भंग।।

११

अर्धकाय के संग नाश में कर्मनाथ का वास।
लोभी, कामी, मूढ़, मनुज, पाप में करे विलास।।

१२

मन्द, भौम के संग द्यून में यदि बसे कर्मेश।
पाप युक्त कामेश हो, रति में ध्यान विशेष।।

१३

सुर-पंडित के साथ हो, कर्मनाथ उच्चस्थ।
भाग्येश हो गगन में, जातक उच्च पदस्थ।।

१४

कर्मेश्वर भव-भवन में, नभ में हो लाभेश्वर।
या केन्द्र में युति करे, जातक बने सुखेश्वर।।

१५

कर्मनाथ के संग अंगिरा तिमि में करे गमन।
वस्त्र-अलौकिक, नृप कृपा, दिव्यालंकृत भूषण।।

१६

लाभस्थ कर्मेश हो, लग्न में लाभ का नायक।
असुर अमात्य हो कर्मगत, रत्नवान हो जातक।।

१७

केन्द्र या कोणस्थ रहे तुंग, स्वगृही कर्मेश्वर।
गुरु की पड़ती दृष्टि तो सत्कर्म करता नर।।

१८

लग्नेश्वर, कर्मेश संग तनु में करे प्रवास।
केन्द्र कोण में निशापति, कीर्ति उठे आकाश।।

व्यापार विचार

१९

भानु, भौम और सिंहीसुत लाभ में करे प्रवेश।
रविनन्दन से दृष्ट हो, व्यवसाय सब शेष।।

२०

दसमस्थ हो सोमसुत शुभ प्रभाव हो पुष्ट।
तब सफल व्यापार से जातक हो संतुष्ट।।

२१

लग्नेश, दसमेश करे जब संग-संग संचार।
जातक जीवन में करे परम सफल व्यापार।।

२२

लग्नेश्वर का जब बने गगन भवन आगार।
तब जातक का होता है परम सफल व्यापार।।

२३

केन्द्र, कोण या भव वसे दसम भाव का नायक।
शुभ का पड़े प्रभाव तो व्यापारी हो जातक।।

२४

शुभयुत दसमेश जब वसता है नभ भाव।
तब सफल व्यापार से बढ़ता अगित प्रभाव।।

२५

शुभ अंशो में दसमपति, शुभग्रह हो नभचारी।
प्रभुता, पद, सम्मानयुत, जातक हो व्यापारी।।

कर्म विचार

२६

त्रिक्भाव में गगनपति का मलिन चुराये धर्म।
पाप अंश में देवगुरु, नर करता दुश्कर्म।।

२७

जीव, सौम्य, कवि तीनों त्रिक् में रहे निवेसित।
कर्मनाथ हो विबल तो, कर्म करे नर अनुचित।।

२८

कर्म भवन में हो यदि भीषण पापाचार।
नीच कर्म में निरत नर खोता सब आचार।।

२९

त्रिक् भावेश के संग हो नभभवन का नायक।
मलिन संग धर्मेश हो, दुश्कर्मी हो जातक।।

३०

दया, मान से युत रहे देवगुरु, शुक्लाम्बर।
तब जीता है जगत में जातक नाम कमाकर।।

३१

पर्बतादि गत पत्री में यदि रहे कर्मेश।
तपनायक शुभयुत रहे, जातक हो धर्मेश।।

३२

शुभग्रहों से जब सजे नभपति का आचार।
सबल रहे लग्नेश तो जातक अमित उदार।।

३३

शुभ कर्त्तरी में जब पड़े नभ अथवा नभनायक।
अपने उज्जवल कर्म से बहु चर्तित हो जातक।।

३४

शुभ नवांश में गणनपति जब होता है हर्षित।
तब सदा सत्कर्म से जातक रहता चर्चित।।

३५

नभनाथ हो देवलोक में, लग्नेश रहे बलवान।
सिंहासन में धर्माधिप हो, जातक बने महान।।

३६

गगनपति के संग करे पापी ग्रह विश्राम।
दुश्कर्म से जीवन में जातक हो बदनाम।।

३७

नीच अंश में जब करे नभनायक विश्राम।
अशोभनीय कर्मो से तब जातक हो बदनाम।।

३८

व्योम भवन में सौरि संग भानु करे विश्राम।
तब अशोभनीय कर्म से जातक अर्जे नाम।।

३९

पापकर्त्तरी में जब सजे नभपति का आचार।
तब जातक निज कर्म से बन जाता खूंखार।।

४०

पापयुत हो गगनगत सौम्य तथा यदुनायक।
नीच अंशगत हो यदि, नर होता अति घातक।।

४१

नभगत होवे भौम गुरु, सौरि संग हो दिनकर।
दुरवृत्ति में लिप्त रहे जातक तब निशिवासर।।

४२

गोपुरादि में हो अगर नभ भवन का नायक।
जन-जन के कल्याण हित रहे समर्पित जातक।।

४३

जीव सौम्य व गगनपति पत्री में बलवान।
जातक तब करता सदा जनजन का कल्याण।।

४४

नीच अंशगत नभनायक संग पापी करे प्रवास।
तब सकल शुभ कर्म को करता मनुज विनाश।।

४५

मलिन संग नभनाथ जब त्रिक् में करे गमन।
यज्ञ कर्म में विघ्न तब करता नर उत्पन्न।।

४६

शशि, शुक्र से पापीग्रह यदि बसे आकाश।
अनुचित कर्म से तब सहे जातक नित उपहास।।

ख्याति और सम्मान

४७

कर्मनाथ का जब रहे देवलोक में गेह।
और यदि नवमांश में सिंह राशि संग नेह।।
नैसर्गिक शुभ ग्रह यदि, स्वयं रहे कर्मेश।
तब जातक का नाम हो चारों ओर विशेष।।

४८

दशमेश शुभ ग्रह रहे, उच्च राशि में वास।
या स्वराशि या मित्रगृही, शुभ वर्गादि में निवास।।
अथवा शुभ षष्टियंश में रहे य७दि वो व्याप्त।
तब जातक हो जाता है, नामी और प्रख्यात।।

४९

कर्म भाव में रम रहा, स्वच्छ, सबल सुधाकर।
दशम भाव से कोण में करे गमन कर्मेश्वर।।
लग्नेश लग्न स्थान से केन्द्र में करे प्रयाण।
तब जातक को प्राप्त हो, पद, प्रभुता, सम्मान।।

५०

कारकांश को जब देखे शुक्र तथा दिनमान।
जातक का तब शासन में बढ़ता नित सम्मान।।

५१

कारकांश से दसम में शशिसुत करे प्रयाण।
तब जातक को प्राप्त हो सत्ता में स्थान।।

५२

भानु, सौरि, कुज तीनों हों पत्री में व्योमस्थ।
शुभ प्रभाव हो पुष्ट तो जातक उच्च पदस्थ।।

५३

गुरु दृष्ट धर्मेश जब लग्न में करे प्रयाण।
तब शासक से प्राप्त हो जातक को सम्मान।।

५४

सुरपण्डित से सोमसुत रहता यदि वलोकित।
या दोनों हों साथ तो जातक अति सम्मानित।।

५५

शुभ-मध्य या उच्च का यदि रहे नभनायक।
मान, प्रतिष्ठा से जुड़ा सदिखन रहता जातक।।

५६

सबल गगनपति को मिले श्रेष्ठअंश जब पूर्ण।
तब आत्म सम्मान से जातक हो परिपूर्ण।।

५७

सौरि दसमपति केन्द्र में, षष्टेश वसे नभ जाकर।
जातक की सेवा में रहते व्यस्त अनेकों चाकर।।

५८

दसमेश का नवमांश पति जब होता नीलेश्वर।
एवं उसके साथ में वसता हो षष्टेश्वर।।
शुभ ग्रह सारे जब करें नभपति का अभिषेक।
अधीनस्थ उस जातक के सेवक पलें अनेक।।

बदनामी व अपमान

५६

रवि तथा रविनन्दन दोनों जाकर बसे गगन।
तथा मलिन नवमांश में दोनों करें गमन।।
अशुभ ग्रहों से दृष्ट या पाप कर्त्तरी के बीच।
जातक हो बदनाम तब, कर्म करे सब नीच।।

६०

कलुषित ग्रह कर्मेश हो, मलिन संग संयोग।
क्रूर ग्रहों से दृष्ट या मलिन अंश का भोग।।
और मलिन षष्टियंश हो कर्मेश्वर का धाम।
कई रूप से जातक होता जीवन में बदनाम।।

६१

दशमेश हो उच्च किन्तु मलिन ग्रहों के संग।
नवमांश में नीचगत अथवा निधन में तंग।।
या मलिन षष्टियंश में कर्मेश्वर का वास।
क्रूर कर्म जातक करे, देता सबको त्राश।।

६२

मलिन ग्रहों से युत रहे पत्री में गगनेश।
अपमानों का भोग तब जातक करे विशेष।।

६३

क्रूर षष्टियंश या मलिन अंशगत यदि रहे नभनायक।
बार-बार अपमानित होकर, जीता जग में जातक।।

६४

निर्बल नभपति संग करे पापी ग्रह संयोग।
तिरस्कार अपमान का तब बन जाता योग।।

६५

दसमेश पापांशगत, नभ में मलिन प्रवास।
शुभ विवर्जित हो यदि, अपमानों से त्राश।।

परमार्थ-कर्म

६६

बलशाली कर्मेश करे कर्म या तप में वास।
पर्वत या मृदु अंश में, उसकी बढ़े प्रकाश।।
क्रूर एवं नीच ग्रहों का हो प्रभाव न उस पर।
परमारथ के काम में, जातक जीता डटकर।।

६७

कर्मनाथ या सोम सुत दोनों हों जब तुंग।
रहे परस्पर दृष्ट या बसे एक ही संग।।
देव, दैत्य गुरु दोनों की, शुभ प्रभाव हो उनपर।
परोपकारी जातक जीता धर्म, कर्म में डटकर।।

६८

चन्द्रपुत्र जब बनता है दशम भाव का नाथ।
स्वगृही या उच्च अथवा तप भवन में साथ।।
राहु, केतु या अशुभ संग करे नहीं व्यवहार।
ऐसा जातक करता है, सबका सब उपकार।।

६९

दशमस्थ हो सोमसुत, दशमेश जाय तप भाव।
शुभ ग्रहों की जब पड़े, उस पर पुष्ट प्रभाव।।
सभी भांति, सब तरह से, होवे पाप विवर्जित।
तब उत्तम सत्कर्मों से, जातक होता चर्चित।।

प्रशासन तथा आदेश

७०

शुभयुत, शुभदृष्ट रहे, शुभग्रह हो नभनायक।
लग्ननाथ बलवान हो, जातक बने प्रशासक।।

७१

मृदु षष्ट्यंश, शुभांशगत हो केन्द्रस्थ नभेश।
सत्तायुत नर शोभता दे सुन्दर आदेश।।

७२

भानु, भौम शुभ अंशगत, व्योम में भरे उड़ान।
तब शासन में उच्चपद पाता वह मतिमान।।

७३

क्रूर षष्ट्यंशगत, शुभ दृष्टियुत केन्द्रस्थ हो नभनाथ।
तब शासन में शोभकर नर बनता श्रीनाथ।।

७४

क्रूर षष्ट्यंशगत केन्द्र में यदि रहे नभनायक।
सौरि, भौम हो साथ अगर, जातक क्रूर प्रशासक।।

७५

गुलिक संग जब व्योमगत रहता है सर्पेश।
सत्ताधारी मनुज दे कठिन क्रूर आदेश।।

७६

धनभवन में नभनाथ संग यदि रहे स्वरभान।
तब क्रूर आदेश दे हर्षित हो श्रीमान।।

७७

कारकांश में शुभ अंशगत यदि रहे दिनमान।
राज कार्य में जातक को मिले उच्च स्थान।।

७८

नभनाथ संग भानु जब बसे केन्द्र स्थान।
शासन में पद प्राप्त कर बढ़ता है सम्मान।।

७९

केन्द्र, कोण में पत्री में यदि रहे यदुनायक।
नभनाथ भी सबल हो, नर बन जाता शासक।।

८०

व्योमपति जब केन्द्र या भव में करे प्रवेश।
शुभ से रहता दृष्ट तो जातक बने नरेश।।

८१

रन्ध्रेश संग षष्टेश जब करता केन्द्र निवास।
शुभ ग्रहों की दृष्टि दे सत्ता का आभास।।

८२

षष्टस्थ हो देवगुरु, भव में हो यदुनायक।
पद, प्रभुता सम्मान से सज्जित होता जातक।।

८३

कारकांश से व्योम में नभपति का हो स्वत्व।
शुभ अंशगत हो यदि, बढ़ता अमित प्रभुत्व।।

८४

सोम, जीव, कवि एक संग करते कोष गमन।
प्रभुताशाली जातक को जनजन करे नमन।।

राज योग

८५

कवि, जीव पातालगत, तप में सुखपति व्याप्त।
सबल नभेश हो केन्द्रगत, सिंहासन हो प्राप्त।।

८६

शुभ दृष्ट धनेश जब केन्द्र में करे प्रयाण।
जातक सत्तारूढ़ हो, बढ़ता नित सम्मान।।

८७

रिपु, आय व सहज में पापी होवे व्याप्त।
नभनायक बलयुत रहे, सिंहासन हो प्राप्त।।

८८

चार ग्रह जन्मांग में निज गृह रहा विराज।
नभ नायक हो सबल तो जातक करता राज।।

८९

गगनस्थ होकर रहे कोष, तोय, तपनायक।
कर्मेश बलवान हो, नर बन जाता शासक।।

९०

उत्तमादि वर्गों में हो सुतगत गुरु, यदुनायक।
शुभयुत हो कर्मेश तो शासन करता जातक।।

९१

नीरस्थ गुरु, गगनस्थ कवि, लग्न बसे यदुनायक।
दिनकर सुत हो उच्चगत, नर बन जाता शासक।।

९२

सहज, गगन व लाभ में शुभग्रह करें प्रवास।
तब सत्ता के प्राप्ति की पत्री दे आभास।।

९३

अरि, आय व सहज में पापी रहा विराज।
केन्द्र, कोण में शुभ बसे, जातक करता राज।।

९४

नीच ग्रह का राशिपति रहे वहीं विद्मान।
अथवा उसको देखता, नर हो भूप समान।।

९५

सबल सोम हो केन्द्रगत कवि जीव से दृष्ट।
नृप तुल्य जातक बने, सुख, सुविधा हो पुष्ट।।

९६

नीचग्रह नवमांश में जब रहता है तुंग।
नृप समान जातक बने, बढ़ता सतत उमंग।।

९७

लग्नस्थ हो देवगुरु, चन्द्रपुत्र हो केन्द्र।
धर्मेश से दृष्ट हो जातक बने महेन्द्र।।

९८

पर्वतादि में हो अगर कर्म भवन का नायक।
पाप विवर्जित हो यदि भूपति बनता जातक।।

९९

नीचस्थ गुरु लग्नगत, रन्ध्र में हो धर्मेश।
नभनायक बलवान हो, जातक बने नरेश।।

१००

लाभस्थ हो देवगुरु, सहज में हो नीलेश।
सहजेश, रवि सहज में जातक बने नरेश।।

१०१

छह ग्रह जन्मांग में निजगृह रहा विराज।
वसुन्धरा पर तब बने जातक राजधिराज।।

१०२

नभनाथ हो तनयगत, नभ में हो सुखनायक।
धर्मेश से दृष्ट रहे तो भूपति बनता जातक।।

१०३

द्यून छोड़कर केन्द्र में तप, तनय के नायक।
लग्नेश्वर के साथ बसे, भूपति बनता जातक।।

१०४

लग्न भवन में देवगुरु, जाया में दिनमान।
वक्री कवि हो तनय में, जातक भूप समान।।

१०५

शशि सौम्य कवि भाग्यगृह, नभ में हो अंगारक।
जीव भानु हो मेषगत, नृप बन जाता जातक।।

१०६

सौम्य जीव कवि तनय में, रहे उच्च अंगारक।
छायासुत तप भवन में, नृप समान हो जातक।।

१०७

सारे ग्रह जन्मांग के चर में करें प्रयाण।
नभनाथ शुभ अंशगत, जातक भूप समान।।

१०८

शशि सौम्य व जीव राशि में सब ग्रह करे प्रयाण।
तब वसुधा का भोग करे जातक भूप समान।।

१०९

घट, सिंह, धनु, युग्म में सब ग्रह करे प्रयाण।
तब वसुधा को भोगता जातक भूप समान।।

११०

बाला, गो, अलि मीन में सब ग्रह करे प्रयाण।
तब वसुधा का भोग करे जातक भूप समान।।

१११

सहजस्थ शनि, व्योमस्थ कवि, अरिगत हो अंगारक।
तुंग भानु तप भवन विराजे, भूपति बनता जातक।।

११२

केन्द्रस्थ हो एक संग दया, मान के नायक।
पंचमपति बलवान हो, भूपति बनता जातक।।

११३

मेष लग्न में भानु हो, कर्क में हो यदुनायक।
तीव्र विलोचन व्योम में, भूपति बनता जातक।।

११४

देवलोक में व्योमपति, पर्बत में धर्मेश।
गोपुरगत लाभेश हो, जातक बने नरेश।।

११५

दया, मान के नाथ जब करते हैं संयोग।
नृप तुल्य जातक करे भू पर अतुलित भोग।।

आजीविका विचार

११६

नवमांश में जिस राशि में लग्नेश करे संचार।
उस राशिपति से करें वृत्ति का सकल विचार।।

११७

भानु अगर भावेश हो, स्वर्ण, ऊन, सुगन्ध।
दवा, औषधि, नृप सेवा से बनता कर्म प्रबन्ध।।

११८

मोती, शंख, प्रबाल तथा कृषि या नृप दरबार।
शशि राशिपति हो यदि, वृत्ति का यही प्रकार।।

११९

शस्त्र,यंत्र, मशीन तथा शक्ति जनित जो कर्म।
मंगल हो भावेश तो वृत्ति का ये हो धर्म।।

१२०

विद्युत, गणित, व लेखनी, वुद्धि जनित जो कर्म।
चन्द्रतनय भावेश तो वृत्ति का ये सब धर्म।।

१२१

कर्मकाण्ड या न्याय या शास्त्र जनित आचार।
वागीश हो राशिपति तो वृत्ति का यही प्रकार।।

१२२

नाना, रत्न, सुवर्ण तथा भोग के जितने कारण।
भृगु होता भावेश तो नृत्य, गीत या लेखन।।

१२३

मजदूरी, कृषिकर्म तथा श्रम के जितने रूप।
छायासुत भावेश तो वृत्ति के भिन्न स्वरूप।।

१२४

दसमभाव में जब रहे बलपूरित दिनमान।
राज-काज, व्यापार या वैद्यक से सम्मान।।

१२५

गगन भवन में हो यदि सबल, स्वच्छ, यदुनायक।
तरल वस्तु या सिंधुजन्य चीजों से जुड़ता जातक।।

१२६

दसम भाव में जब वसे शुभ दृष्ट अंगारक।
यांत्रिक अथवा पुलिस या फौजी होता जातक।।

१२७

सबल, स्वच्छ शशि तनय का नभ में हो आगार।
सम्वाददाता, शिल्पकार या जातक लेखाकार।।

१२८

नभ भवन में हो यदि बलपूरित वागीश।
व्याख्याता या कर्मकाण्डरत अथवा न्यायाधीश।।

१२९

बलि पण्डित का हो यदि दसम भवन आगार।
वाहन, भूषण, चलचित्र या भोग जनित श्रृंगार।।

१३०

गगन भवन में जब वसे शुभ, सबल, रविनन्दन।
लोहा, कोयला, चर्म, खनिज, वृत्ति के होते कारण।।

१३१

पत्री में होता अगर उत्तम योग केदार।
भूसंपदा का करे जातक तब व्यापार।।

१३२

जन्म कुण्डली हो अगर शकट योग से ग्रस्त।
ट्रान्सपोर्ट या काष्ठ कर्म में जातक रहता मस्त।।

१३३

दसमेश का नवांशपति बन बुध, शुक्र नभचारी।
तब जातक हो सकता है कपड़े का व्यापारी।

१३४

देवगुरु से केन्द्र में यदि रहे शुक्लाम्बर।
तेल, फुलेल या ईत्र का व्यवसायी होता नर।।

१३५

शिखी, सौम्य का हो यदि कारकांश में वास।
रेडियो, टी.वी. घड़ीसाज बन जातक करे विलाश।।

१३६

दसमेश से दृष्ट या दसम में हो अंगारक।
यंत्र, मशीन, ईंजनादि पर कार्य करे तब जातक।।

१३७

कारकांशगत केतु, शुक्र का देवगुरु हो रक्षक।
तब जातक बन सकता अतिशय सफल चिकित्सक।।

१३८

सहजपति संग भौम का गगन भवन आगार।
पुलिस कर्म या फौज में जातक का अधिकार।।

१३९

निशाकर का नवमांशपति होवे चन्द्रतनय।
चलचित्र, ड्रामादि में जातक करता अभिनय।।

१४०

शुक्र, सौम्य, लग्नेश में सम्बन्ध हो सुन्दर।
तनय भाव बलवान हो, फिल्मों में जाता नर।।

१४१

भृगुनन्दन से शुभ भवन में युत रहे यदुनायक।
कवि, लेखक या पत्रकार बन जाता तब जातक।।

१४२

सित, सोम जब करते हैं कारकांश में वास।
कवि या लेखक रूप में जातक करे विकास।।

१४३

भानु, भौम से युत रहे, नभ में हो वागीश।
या दसमपति केन्द्र में, नर हो न्यायाधीश।।

१४४

भानु भौम दस्मस्थ हो, सित से हो अवलोकित।
तब चिकित्सा क्षेत्र में जातक होता पूजित।।

१४५

इसी योग में शुक्र के बदले हो स्वरभान।
राजनीति में जातक को मिलता अति सम्मान।।

१४६

गुरु, बुध जब एक संग नभ में करे प्रवेश।
दर्शन, न्याय, चिकित्सा अथवा हो विज्ञान विशेष।।

१४७

नभ या नभेश संग शशि भौम, शनि व दिनकर।
कलाकार या नेता या बैंक में नर हो अफसर।।

१४८

बुध, गुरु, दसमेश में हो सम्बध प्रमाणिक।
तप,, निधन बलवान हो, जातक हो वैज्ञानिक।।

१४९

गुरु, सोम से दृष्ट सौम्य जब नभ में करे निवास।
दर्शन या साहित्य में जातक करे विकास।।

१५०

दसम भाव, दसमेश संग जब होता रविनन्दन।
मजदूरी करके करे तब जातक निज पोषण।।

१५१

कारकांश की जब करे सूर्य, शुक्र रखवारी।
जातक करे विकास तब नौकर बन सरकारी।।

१५२

कारकांश से गगनगृह रहे बुध से दृष्ट।
तब सरकारी नौकरी पत्री में हो पुष्ट।।

१५३

कारकांश होता यदि शुक्र, भानु से विक्षित।
राजदूत या राजकाज में जातक बने प्रतिष्ठित।।

१५४

कारकांश से अम्बु में जब वसता नीलेश।
सेना अथवा पुलिस में जातक बढ़े विशेष।।

१५५

कारकांशगत सोम का बुध बने जब रक्षक।
लग्ननाथ कर्मेश संग, जातक बने चिकित्सक।।

पदोन्नति के योग

१५६

निज नाथों से व्यसन, गगन हो पत्री में अवलोकित।
राजयोग हो अगर प्रबल तो हो नौकरी में उन्नति।।

१५७

निशानाथ से नभ, अरि निज नायों से दृष्ट।
शुभ हों सारे केन्द्र में, उन्नति होती पुष्ट।।

१५८

षष्टस्थ तपनाथ को देखे जब षष्टेश।
दसमेश हो दसमगत, उन्नति होय अशेष।।

१५९

तनु, धन, भवपति व्योमगत, हो नभेश भाग्यस्थ।
व्यसन दृष्ट तपनाथ से, नर हो उच्च पदस्थ।।

१६०

दसमेश हो भाग्यगत, भव में हो नभनायक।
रिपु दृष्ट निजनाथ से, उन्नति करता जातक।।

१६१

भव भवन में हो अगर दसम नाथ, अरिनायक।
तप, धनपति हो व्यसनगत, उन्नति करता जातक।।

१६२

व्यसन, गगन के नाथ जब निज-निज भवन सजाय।
नम दृष्ट लाभेश से, पदोन्नति नर पाय।।

१६३

नभ दृष्ट निजनाथ से, तप में हो लाभेश।
भाग्यनाथ हो सबल तो, उन्नति होय विशेष।।

१६४

दसम भवन को देखता लग्नेश तथा व्योमेश।
भवपति होवे भाग्य में, उन्नति होय विशेष।।

१६५

दसमस्थ दसमेश को देख रहा तपनायक।
धन में बसे अरीश तो उन्नति करता जातक।।

१६६

दया, मान के नाथ जब तप में करें प्रवेश।
तुंग रहे रिपुनाथ तो पदोन्नति होय विशेष।।

१६७

व्यसन, गगन के नाथ में हो दृष्टि विनियोग।
लाभेश्वर हो अम्बुगत, पदोन्नति हित योग।।

१६८

सहज, व्योम के नाथ का सहज भवन हो वास।
पाप विवर्जित हो अगर, पद तब उठे आकाश।।

१६९

दसमेश और सुखेश संग अम्बु में बसे बृहस्पति।
सोमतनय हो गगनगत, होकर रहे पदोन्नति।।

१७०

सहजस्थ भृगु, तूर्यस्थ गुरू, व्योम बसे यदुनायक।
शशिनन्दन हो तनय में, उन्नति करता जातक।।

१७१

शत्रु गृही अरिनाथ हो, नभपति निधन में ढ़ेर।
पाप दृष्ट षष्टेश हो, पदोन्नति में देर।।

१७२

निधनेश, षष्टेश से नभगृह रहता भ्रष्ट।
छायासुत हो देखता, पदोन्नति में कष्ट।।

१७३

दसमेश, षष्टेश को पापी रहा पछाड़।
पदोन्नति हो देर से, सब प्रयास बेकार।।

१७४

दसमस्थ शनि शत्रुगृही, भाग्य में हो निधनेश।
पदोन्नति में देर हो, सब प्रयास हो शेष।।

१७५

दया, मान के नाथ जब वसे गगन के क्षेत्र।
तथा व्योमगृह पर रहे लाभनाथ की नेत्र।
षष्टेश पाताल में, सहज में हो जायापति।
अक्समात होती तभी नर की सदा पदोन्नति।।

१७६

भाग्य गृह में जब बसे स्वच्छ, सबल दसमेश।
तथा द्रव्यगृह शोभता पाकर वहाँ तपेश।।
षष्टेश हो लग्नगत, नभ में हो आयेश।
अगले पद में तब करे सहसा मनुज प्रवेश।।

१७७

कल्प, गगन व धर्मनाथ का
धन या भव में बिछे विसात।
व्यसननाथ केन्द्रस्थ रहे तो
पद में उन्नति होय हठात्।।

१७८

तपनायक से जब होता है
व्योम, व्योमपति अवलोकित।
और यदि पाताल में वसता
सबल शुभांश का धनपति।।

केन्द्र भवन में एक संग
हो अरिनायक व भवपति।
तब अचानक दैवयोग से
नर की होय पदोन्नति।।

१७९

अरि, आय के नायक की जब
दृष्टि गगन के क्षेत्र रहे।
आय, भाग्य या व्योम भवन
पर दसमनाथ की नेत्र रहे।
भाग्यनाथ हो गगन भवन में
शुभ अंशगत, बलपूरित।
तब ईश कर देते सहसा
नर की शीघ्र पदोन्नति।।

१८०

नभ, अरिपति में योग बने
अरू दसमनाथ भव कोष समाय।
तब पदोन्नति के बन जाते
सभी भाँति ही सकल उपाय।।

१८१

सौरि राशिगत देवपूज्य पर
छायासुत की दृष्टि पड़े।
या बलि पण्ति सौम्य राशि
में, शुभ अंशगत वास करे।।
स्वगृही वसुधानन्दन हो
दिवानाथ से जब अलोकित।
तब हठात् मिल जाता नर
को सुन्दर, सरस पदोन्नति।।

१८२

नीच राशिगत व्यसन सहजपति
लग्न भवन को रहा निहार।
या नीच ग्रह सहज व्यसन से
निशानाथ को रहा पुकार।।
सहसा रुचिर पदोन्नति पाकर
प्रभुता का होता विस्तार।।।

१८३

नभ, कोष के नाथ एक संग
शुभ भावों में मस्त रहे।
तप, तनय के नायक दोनों
व्योम भवन में व्यस्त रहें।।
पत्री में नभनायक पर जब
विघ्ननाथ की दृष्टि पड़े।
तब पदोन्नति दैवयोग से
सहसा जातक प्राप्त करे।।

१८४

उदय, व्योम के नाथ शुभ्र संग
कल्प भवन में वास करे।
अशुभ विवर्जित यदि रहें तो
पद में उन्नति ईश करें।।

१८५

तप, तनय, नभ, कल्पपति जब
व्योम भवन में वास करे।
तब पदोन्नति दैवयोग से
जातक सहसा प्राप्त करे।।

राजनीति में शक्ति एवं सरलता

१८६

चार या उससे ज्यादा ग्रह जब
देखें वर्गोत्तम यदुनायक को।
सभी जगह सम्मान प्राप्त हो
वसुधा पर उस जातक को।।

१८७

लग्ननाथ जब केन्द्र भवन में
सुत, वितपति से दृष्ट रहे।
जन-जन से ऐसे जातक को
प्रभुता, पद, सम्मान लहे।।

१८८

जन्म-लग्न वर्गोत्तम होवे
लग्न हो नभपति से अवलोकित।
कर्म दृष्ट हो लग्नपति से
जातक हो जनता में पूजित।।

१८९

एक दूजे के नक्षत्रों में
दया, मानपति वास करे।
जनजन के उरपुर में जातक
निशिवासर तब राज करे।।

१९०

शुभ कर्त्तरी में जायागत रवि,
लग्ननाथ से दृष्ट रहे।
जन-जन से ऐसे जातक को
प्रभुता, पद, सम्मान लहे।।

१९१

रमाबन्धु से व्योम भवन में
शक्र पुरोहित वास करे।
लग्ननाथ से दृष्ट रहे तो
जातक जग में राज करे।।

१९२

लग्न भवन में सिन्धु तनय हो
व्यसन, निधन मे सब शुभ जाय।
कल्पनाथ हो कोष भवनगत
नृप समान जातक बनि जाय।।

१६३

श्यामगात जब तनयनाथ संग
कोष भवन को रहा सजाय।
भृगुकुल दीपक से सप्तम में
द्रव्यपति शुभ सहित समाय।।
लग्ननाथ बलवान रहे तो
भूपति वह जातक कहलाय।।।

१६४

जल राशिगत अम्बु भवन में
असुर पुरोहित करे भ्रमण।
सहज में हो दिननायक एवं
नभ में धनपति करे गमन।।
लाभ, मान में तनयनाथ हो,
जातक को पूजें तब जन-जन।।।

१६५

अज, अलिगत लग्न भवन में
पत्री में शोभे स्वरभान।
नभ नायक हो सहज भवनगत,
भृगु से अष्टम हो निशिमान।।
केन्द्र, कोण में देवगुरु हो
जनता दे नर को सम्मान।।।

१६६

मेष लग्न में यदि विराजे
निशानाथ एवं दिनमान।
नवमांश में नीच नहीं हो
पंकज बोधन व निशिमान।।
नभ भवन में रक्तवस्त्र हो
जनता दे नर को सम्मान।।

१६७

अमर पूज्य से दृष्ट निशाकर
मेष नवांश में करे गमन
राशि चक्र में पूर्ण रहे वह
अशुभ न करते तेज हरण।।
लग्ननाथ बलवान रहे तो
जन करते जातक का पूजन।।

१६८

मेष लग्न में पूर्ण सुधाकर,
रक्तवस्त्र हो व्योम भवन।
या तुंग गुरुदृष्ट निशाकर
मीन लग्न में करे गमन।
निज नवांश में दोनों हो तो
जन करते जातक का पूजन।।

१६६

निशानाथ कर्कस्थ रहे अरू
वर्गोत्तम नवमांश समाय।
या तुंग शशि नवमांश में
पुनः तुंग होकर रह जाय।।
गुरू से रहता दृष्ट अगर
तो जातक वह भूपति कहलाय।।।

२००

तनय भवन में देवगुरु जब
पत्री में लेता स्थान।
धन, नियन या भव भवन में
स्वच्छ, सबल होवे निशिमान।।
थिर राशि हो लग्न भवन में
नभ में वपुपति भरे उड़ान।
तब जनता में पूजित होकर
जातक बनता भूप समान।।

२०१

पूर्ण निशाकर अरि, आय या
नभ गृह में लेता स्थान।
केन्द्र, कोण में उस से होकर
सुरपूजित देता सम्मान।।
काम अथवा व्योम भवन में
चन्द्र राशिपति भरे उड़ान।
तब जनता में पूजित रहकर
जातक बनता भूप समान।।

तीर्थ स्थान

२०२

नभ, तप, जाया, तनयपति जल में हो विद्‌मान।
जल राशि का सुर सेवित तब दे तीर्थ - स्नान।।

२०३

लग्न मिथुन हो, सौरि गुरु तप में करें मिलान।
तब ये अपनी दशा भुक्ति में, दे तीर्थ - स्नान।।

२०४

लग्न मेष हो, मकरगत, गुरु, शुक्र, दिनमान।
तब ये अपनी दशा भुक्ति में, दे तीर्थ स्नान।।

विविध

२०५

नवगांश लग्न से दशम में, पापी करे प्रवास।
नीच संग शनि गगन में, सकल कर्मफल नाश।।

२०६

भवगत भौम, भानु भाग्य में, सुतगत रहे अपंग।
असफल व्यवसाय सब जब जाया जमे भुजंग।।

२०७

लग्ननाथ कर्मस्थ हो, कर्मेश भाग्य स्थान।
पंचमस्थ हो चन्द्र तो, जातक पाता मान।।

२०८

लाभेश्वर हो कर्म में, कर्मेश रहे बलशाली।
देव गुरु की दृष्टि हो, जातक गौरवशाली।।

२०९

उदय और आकाश से दशम में पाप प्रवेश।
रवि, गगनपति विवल हो, बाधा मिले विशेष।।

२१०

कर्म, रन्ध्र के नायक का आपस में गृह विनिमय।
पापी ग्रह हो साथ तो नीच - कर्म हो अतिशय।।

२११

शुभ कर्त्तरी में गगन हो, गुरु की जमे विसात।
दशमेश्वर शुभ दृष्ट हो, जातक हो विख्यात।।

२१२

पाप प्रभावित दशम घर, पाप अंश में व्याप्त।
पापी संग दशमेश जब, जातक हो कुख्यात।।

२१३

शुभ युत दृष्ट या अंश में दशम भाव का नायक।
स्व, उच्च या मित्र गृहीहो, जातक बने प्रशासक।।

२१४

दशम भाव गत सूर्य हो, साथ रहे अंगारक।
दशमेश्वर हो केन्द्र में, क्रूर कर्मरत जातक।।

२१५

दशमेश्वर के साथ हो, छायासतु, रन्ध्रेश।
क्रूर अंशगत हो यदि, क्रूर दे नर निर्देश।।

२१६

शुभ युत, दृष्ट या अंशगत यदि रहे दशमेश।
केन्द्र - कोण में वास हो, सुन्दर दे आदेश।।

२१७

मन्द, मन्दि हो मान में, अष्टम में स्वरभान।
तपनायक हो नीचगत, क्रूर होय फरमान।।

२१८

कर्म राशि गत चन्द्र की पर्वत अंश विसात।
गुरु, शुक्र की दृष्टि पड़े, जातक हो प्रख्यात।।

२१९

शुभ युत, अंश या दृष्टि में रहता यदि दिवाकर।
जातक बने यशस्वी जग में, जीता नाम कमाकर।।

२२०

शुभ युत, दृष्ट या अंशगत, चन्द्र राशि का नायक।
यश, कीर्ति, धन, मान से, परिपूरित हो जातक।।

२२१

धर्म कारक गुरु का कर्मेश्वर से सम्बन्ध।
सत्कर्मों में रुचि बढ़े, ज्योतिष का अनुबन्ध।।

२२२

पंचमेश, सप्तमेश जब कर्म में करे गमन।
दशा, भुक्ति इनकी चले, करते वेद श्रवण।।

२२३

द्वादशस्थ कर्मेश हो अशुभ अंश में लीन।
पड़ता पाप प्रभाव तो, मनुज धर्म से हीन।।

२२४

कर्मपाद में चन्द्र हो लग्नेश्वर से दृष्ट।
चन्द्र दशा में होता धन अर्जन तब पुष्ट।।

२२५

देव गुरु या तपनायक, जब कर्मपाद को देखे।
लाभेश्वर की दशा, भुक्ति तब धन अर्जन के लेखे।।

२२६

कारकांश से दशम में, सौम्य, जीव, कवि करे प्रयाण।
शुभ दृष्ट या अंश में हो तो, करता राज्य प्रदान।।

२२७

कारकांश से दशम में जब पापी ग्रह समाय।
मलिन ग्रहों की दृष्टि तब, नष्ट करे व्यवसाय।।

२२८

छह शुभ बिन्दु से अगर सजता हो दिनमान।
ऐश्वर्ययुक्त, सम्पन्न शील नर होता है धनवान।।

२२९

पांच से ज्यादा शुभबिन्दु शीत रशिम को प्राप्त।
कर्मेश्वर से युत शशि रहे तो, नर होता प्रख्यात।।

२३०

पाप - कर्त्तरी में गगन हो, कर्म बसे स्वरभान।
शनि दृष्टि से जानु भंग हो, ज्योतिष करे बखान।।

२३१

षष्टेश हो कर्म में, सौरि कर्मपति केन्द्र स्थान।
नाना भृत्य से जातक सेवित, विधि देता वरदान।।

२३२

कर्मेश्वर का नवमांश पति चर में करे गमन।
तब अपने व्यवसाय हित जातक करे भ्रमण।।

२३३

कर्मेश जीव से दृष्ट हो, कर्मपाद में सौरि गमन।
तब परमार्थ के काम में, जातक सहे विघन।।
किन्तु गुरु की दशा भुक्ति में करता वह उपकार।
धन लाभ, यश, मान मिले, प्रतिभा अपरम्पार।।

२३४

मंगल हो आकाश में रन्ध्र बसे रविनन्दन।
तब प्रमेह करके रहे सकल स्वास्थ्य का गंजन।।

२३५

मेष राशि में सोमसुत, सौम वसे आकाश।
सौरि भौम भी साथ हों, कुष्ठ बहुत दे त्राशं

महामाया

माया में उलझ कर मनुष्य तरह - तरह के कष्ट-क्लेश पाते हैं। माया के चक्र से छुड़ाने की क्षमता महामाया में होती है। इनकी कृपा से व्यक्ति यथार्थ समझने लगता है, इसी को दिव्य दृष्टि की प्राप्ति कहा जाता है। जीवन, जगत् और ब्रह्म के बीच का तारतम्य समझ में आने से व्यक्ति सहज ही उस अनुशासन का अनुगमन करके मुक्ति लाभ प्राप्त करता है।

एकादश भाव

भवं चागमं प्राप्तिमायम् ।
भवलाभगमप्राप्तिमायमेकादश स्मृतम् ।

नानावस्तुभवस्यापि पुत्रजायादिकस्य च ।
आयं वृद्धिं पशूनां च भवस्थानान्विरीक्षणम् ।।

लाभस्यानेन लग्नादखिलधनचयप्राप्तिमिच्छन्ति सर्वे
लाभस्थानोपयातः सकलबलयुतः खेचरो वित्तदः स्यात् ।

गजाश्वान वस्त्राणि सस्य कांचकन्यकाः ।
विद्वान विद्यार्थयोर्लाभं लक्ष्येल्लाभः लग्नतः ।।

एकादश भाव फल

१

लाभ भाव में रहता है, सारा ही ग्रह निर्मल।
आय, पुत्रवधू, कान, मित्र का देता ज्ञान प्रबल।।

२

आमदनी के स्त्रोत का करते यहां विचार।
पाप ग्रहों की भीड़ करे जननी का संहार।।

३

अग्रज, चाचा, पिंडली, पशुधन का विस्तार।
भव से हो भवसागर में भोगयुक्त व्यापार।।

४

भव भवन में पाप ग्रह लाभ हेतु उपयुक्त।
अनैतिक धन अर्जन हो, जातक धर्म से च्यूत।।

५

धन लाभ या आय छोड़कर सारा इसमें खोट।
व्याधि, बीमारी, अपघात, व हिंसा, चिंता, चोट।।

६

पत्नी के गर्भाधान का ज्ञान यहाँ से होता।
संकेत, दूसरी शादी का भी , इस घर से ही मिलता।।

आय-विचार

७

सहज, व्यसन, भवभाव में, शुभ ग्रह करे प्रवेश।
लग्न, भाग्यपति सबल हो, जातक बने धनेश।।

८

धननायक बलवान हो, वित्त में शुभ प्रवेश।
भाग्य, लाभपति केन्द्र में, जातक बने धनेश।।

९

केन्द्र, कोण के स्वामी का भवभवन में संगम।
राजयोग बनता प्रबल, धन मिलता है उत्तम।।

१०

लाभेश्वर का तनय भाव में होता यदि गमन।
भाग्यपति हो लग्न में, अक्समात धन अर्जन।।

११

लाभेश और धननाथ का आपस में परिवर्त्तन।
विविध ढंग से तब करे जातक धन का अर्जन।।

१२

लाभेश्वर हो केन्द्र, कोणगत, पापी लाभ भवन में।
तब प्रचुर धन अर्जन करता जातक निज जीवन में।।

१३

लाभेश और धनेश का केन्द्र, कोण में योग।
धन अर्जन के वास्ते, अति उत्तम संयोग।।

१४

कर्मेश हो लाभ में, धन नायक से युक्त।
कई स्त्रोत से आय पा, जातक चिंता मुक्त।।

१५

लाभ भाव को हो यदि शुभ-दुर्धरा प्राप्त।
महाधनी जातक हो, जीवन सुख से व्याप्त।।

१६

लाभेश्वर बन उच्च का धन में करे प्रवेश।
अक्समात् तब हो जाता धन का लाभ विशेष।।

१७

शुभ-कर्त्तरी भवभाव का, पर्वतांश लाभेश्वर।
जातक को तब अतुल धन देता रहता ईश्वर।।

१८

लाभेश्वर का मेजबान हो शुभयुत या शुभ दृष्ट।
शुभ कर्त्तरी हो लाभ का, आमदनी हो पुष्ट।।

१९

लाभेश के नवमांश पर शुभ का रहे प्रभाव।
धननाथ से दृष्ट हो, रहे न कोई अभाव।।

२०

लाभेश्वर के द्रेष्कानपति पर कर्मेश की दृष्टि।
जातक निज पुरुषार्थ से करता धन की सृष्टि।।

२१

रन्ध्रेश दृष्ट लाभेश हो, धनेश्वर नीच प्रविष्ट।
निर्धनता और रोग से जीवन होय विनिष्ट।।

२२

धन, आय के स्वामी जब सुत में करे निवास।
धर्मेश हो लाभगत, धन का बढ़े प्रकाश।।

२३

लग्नेश हो केन्द्र में, द्वितियेश लाभ को जाय।
धर्मेश लाभपति युत रहे, नर लक्ष्मीपुत्र कहाय।।

२४

धनेश संग लाभेश यदि रिपु भवन आसीन।
धन आय पर पाप प्रभाव, जातक सम्पतिहीन।।

२५

शुक्र लग्न में अस्त हो, चन्द्र सहज को जाय।
सुतगत गुरु लाभगत मंगल, नर भिक्षुक हो जाय।।

२६

लाभेश लाभ में चन्द्रयुत, गुरु से होवे विक्षित।
बलवान लग्नेश बनाता, धनवान व शिक्षित।।

२७

लाभस्थ हो चन्द्रमा, शुभ प्रभाव हो पूर्ण।
मनोकामना जातक की पूरी हो सम्पूर्ण।।

२८

लाभेश और व्ययेश का आपस में संयोग।
अपकारक इस योग से मिलता व्याधि व रोग।।

२९

लाभस्थ हो चन्द्रमा, शत्रु में अमर पुरोहित।
शकट योग लगता नहीं, जातक करता उन्नति।।

विविध

३०

शुभ नहीं होता कभी, लाभेश सुखेश का संग।
साथ रहे लग्नेश तो, हो सकता अंग-भंग।।

३१

मिथुन लग्न हो, शनि उच्चगत, क्षत में आर अटूट।
उच्च-वर्ग की मित्रता जाय मनुज की छूट।।

३२

सुत, सहज व आय में, पापी ग्रह की भीड़।
बहरापन या कम सुने, अथवा कान में पीड़।।

३३

आय भवन में बनता हो क्रूर ग्रहों का योग।
दे सकता है तब यही नर के कान में रोग।।

३४

शुभ प्रभाव व शुभ ग्रहों का लाभ भाव में रहना।
देता यह संकेत कि जातक कान में पहने गहना।।

३५

तुला लग्न हो, शनि, मंगल का लाभ भाव में वास।
सुर्य तनयगत, सब सुख देता, अग्रज का कर नाश।।

३६

रिपु एवं भव भवन में, पापी करे गमन।
तब खतरे में रहता नित अग्रज का जीवन

३७

लाभ भाव में चन्द्रमा, सहज में हो सुर वन्द्य।
कुल दीपक वह जातक तब सबसे होता पूज्य।।

३८

लाभेश्वर और लाभराशि का जिस दिशा में वास।
उसी दिशा से होता है आमदनी की आस।।

३९

शुक्र एवं बुध जब भव में करे प्रवास।
भोग एवं शयन सुख, मिलता बिना प्रयास।।

परलोक ज्ञान

४०

मृत्युकाल में रवि यदि भव भवन को जाय।
शुभ प्रभाव से युक्त, नर विष्णु लोक को जाय।।
चन्द्र यदि रहता वहां, मिलता तब शिवलोक।
अवनिसुत सजकर वहीं, देता दुर्गा - लोक।।
ब्रह्मलोक हो शुक्र सचिव से, भू - लोक दे शशिपुत्र।
इन्द्र लोक मिलता यदि, आय में शुक्र का सूत्र।।
छायासुत से नरक मिले, राहु - केतु यम - लोक।
जीवन के सब बुरे कर्म पर जातक प्रकटे शोक।।

४१

लाभनाथ पर जब बने शुभ का वेश अधिक।
जातक तब बन जाता है नाना भाँति धनिक।।

४२

चन्द्र से आगम भाव में कवि जब करे गमन।
निश्चिय होता प्राप्त तब नर को सुन्दर वाहन।।

४३

भव भवन में जब रमें शुक्र तथा यदुनायक।
सुन्दर वाहन प्राप्त हो, सुख से जीता जातक।।

४४

लाभ भवन में पत्री में जाता यदि तपेश।
लग्नपति बलवान हो, जातक बने नरेश।।

४५

पंचमेश संग लाभपति करता सहज प्रवेश।
राहु रहे लाभस्थ तो शूल रोग दे क्लेश।।

भैरव यंत्रम्
शक्ति
कुण्डलिनी
भैरव
मंत्राक्षर
बीजाक्षर
धि
लं
आध्यात्मिक शक्ति
लौकिक शक्ति
धृति
प्रतिभा
फलश्रुति
ओजस वृद्धि
उन्नति

(अ)

भुव
लं
भुव
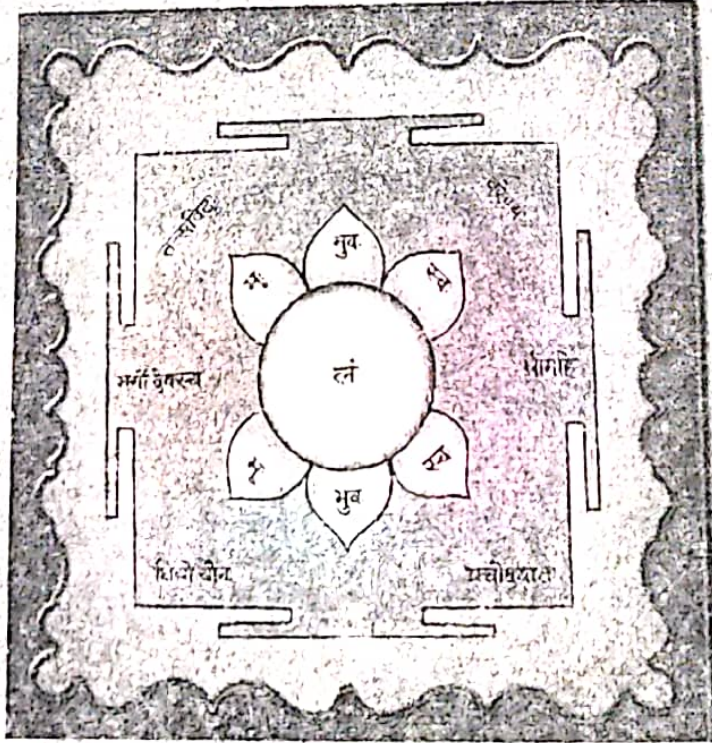
(ब)

कुण्डलिनी

गायत्री प्राणविद्या है, कुण्डलिनी उसकी एक विशिष्ट धारा है। इसे प्राणविद्युत, जीवनीशक्ति, जैव ऊर्जा, योगाग्नि आदि नामों से भी जाना जाता है। प्रजनन क्रम इसी शक्ति से चलता है। जब यह उच्च उद्देश्यों के लिए जागकर ऊर्ध्वमुखी होती है, तो मनुष्य की शक्ति असामान्य हो जाती है। गायत्री साधना से यह शक्ति सहज स्वाभाविक ढंग से विकसित होने लगती है।

द्वादश भाव

प्रांत्यं रिष्फश्चांत्यमाख्यं स्यात्।
व्ययोंत्यभं रिष्फविनाशसंज्ञं लग्नांत्यखण्डः कथितो मुनीद्रैः।

त्याग भोग विवाहेषु दानेष्ट कृषिकर्मणि।
व्यय स्थानेषु सर्वेषु विद्धि विद्वन्व्ययं व्ययात्।।

व्ययं च वैरिवृतान्त रिःफमन्त्यादिकं तथा।
व्ययंचैष हि ज्ञातव्यमिति सर्वत्र धीमता।।

द्वादश भाव फल

१

द्वादश भाव से देखते, गुप्त - शत्रु और नेत्र।
शयन, भोग, शयूया सुख, इस भवन के क्षेत्र।।

२

विक्री, कर्ज, व्यर्थ व्यय, खर्च प्रवृत्ति, प्रकार।
असमय मृत्यु, अशांति का करते यहां विचार।।

३

दुर्घटना, दुःखस्वप्न, क्रोध, अवनति एवं जेल।
सजा, पराजय, पदच्युत, दुःख का सारा खेल।।

४

अपयश, अगला जन्म तथा त्याग और संयास।
दुःसाहस, दुर्भाग्य, विघ्न का होता यहां विकास।।

५

गुप्त कार्य, अपराध वृत्ति, बन्धन, अरि - व्यवहार।
मोक्ष, शत्रुभय, पृथकता, मन्दिर, राष्ट्र - सुधार।।

खर्च-वृति

६

मलिन राशि या पापी ग्रह, व्यय में करे निवास।
पाप दृष्ट व्ययनाथ हो, अनुचित खर्च से त्राश।।

७

जन्मांग में उच्च का यदि रहे व्यय नाथ।
व्यर्थ खर्च के बोझ से सदा तंग हो हाथ।।

८

लग्नेश, अंत्येश का योग कष्ट का कारण।
निर्धनता और क्लेश का होता नहीं निवारण।।

९

मन्द, मन्दि जब राहु संग रिष्फ में करे प्रवेश।
पापांश व्ययनाथ हो, व्यय से बढ़ता क्लेश।।

१०

व्ययभाव में रम रहा जब भी कभी धनेश।
धन की चिंता तब सदा जातक को दे ईश।।

११

कर्क लग्न हो, व्योम में चन्द्रपुत्र व दिनकर।
अर्धकाय अरिगत रहे, व्यवसाय अति दुःखकर।।

१२

सिंह लग्न में सूर्य, सूर्यसुत भ्रातृभाव आसीन।
सुख में शशि - मंगल बसे, होता कर्म मलीन।।

१३

पापी ग्रह कर्मेश हो, पाप अंश में करे निवास।
नीच अथवा अस्तगत, या अरि भवन प्रवास।।
व्ययनायक का उसी पर पड़े कही से दृष्टि।
दुश्कर्मों से होती तब अधिक खर्च की सृष्टि।।

१४

पत्री में बलहीन हो, व्यय - भाव का नाथ।
रिपु भवन पति से यदि उसका होता साथ।।
या गुलिक के संग वह, किसी भाव में पस्त।
शत्रुकोप से जातक का हालत रहता खस्त।।

१५

मलिन अंश में जब रहे, व्यय भाव का नाथ।
निर्बल जायानाथ से दृष्ट रहे या साथ।।
क्रूर ग्रह की यदि पड़े व्ययभाव पर दृष्टि।
तब पत्नी के कारण ही खर्चे की हो सृष्टि।।

१६

इसी हाल में सप्तमेश के बदले हो यदि वक्र।
तब भाइयों के कारण चले खर्च का चक्र।।

१७

यही योग जब बनता है सुतनायक के संग।
पुत्र बढ़ाता खर्च तब शांति सदा हो भंग।।

१८

भाग्यनाथ या भानु से यही योग विस्तार।
तब तात के हित में खर्चा बढ़े अपार।।

१९

सुख नायक के संग में यही योग जब बनता।
तब माता के कारण से खर्चा घर में बढ़ता।।

२०

द्वादशस्थ धननाथ हो, पाप का पड़े प्रभाव।
अति कृपण तब होता है जातक का स्वभाव।।

२१

द्वादशेश हो नीच का, जाये त्रिक् - स्थान।
पाप, दृष्ट या अंशगत, नर का हो उत्थान।।

२२

व्ययेश के नवमांशपति शुभ में करें गमन।
व्ययनाथ शुभयुत रहे, धर्म में जाता धन।।

२३

अंत्येश हो केन्द्र कोण में, मलिन षष्ट्यंश प्रवेश।
तब दुरवृत्ति में जातक का खर्चा बढ़े अशेष।।

२४

सबल, शुभ व्ययेश का व्यय में होय अनुग्रह।
तब जातक हर भांति से धन का करता संग्रह।।

२५

द्वादशेश शुभ राशि में, शुभ ग्रह से संयोग।
तब अपने ही देश में होता सुख का भोग।।

२६

वृषभ लग्न में उच्च का सूर्य रहे अंत्यस्थ।
भाग्यभवन में शनि बसे, जातक उच्च पदस्थ।।

२७

सबल वित्त गृह जब रहे शुभ प्रभाव से युक्त।
निर्बल हो व्यय भाव तो नर लफड़ों से मुक्त।।

२८

कन्या लग्न, दशम गत बुधादित्य का योग।
बाधाओं से जूझकर होता सुख को भोग।।

२९

अलि लग्न, में व्योमगत बुधादित्य का वास।
उत्तम फल मिलता अगर मंगल बसे आकाश।।

३०

मिथुन लग्न, व्यय भाव में, सूर्य, बुध व वक्र।
दुःख, चिंता, संताप का चलता रहे कुचक्र।।

३१

व्यय भाव में जब करे शुक्र और गुरु वास।
अथवा सोम व सौम्य का होता वहां प्रवास।।
शुभ, दृष्टि से युत या पर्वत - अंश प्रवेश।
धर्म - कर्म में तब सदा होता धन का शेष।।

३२

शुभ ग्रह कर्मेश हो, शुभ वर्गों में वास।
शुभ अंश या उच्चगत, मित्र निलय निवास।।
व्ययेश्वर के संग जब करता वह संयोग।
तब सदा सत्कर्म में खर्च का बनता योग।।

त्यागपूर्ण जीवन

३३

अष्टमेश, नवमेश से यदि रहे बलवान।
व्ययपति भी लग्नेश से जब होता बलवान।।
सौरि हो भाग्यस्थ तथा पड़े पाप की दृष्टि।
शुभ ग्रह सारे कर रहे, त्रिक् भावों की पुष्टि।।
लाभ अथवा तनय में मंगल करे गमन।
जातक का इस हाल में, त्यागपूर्ण हो जीवन।।

दुर्घटना तथा कैद

३४

अंत्य भाव का नायक अगर रहे बलहीन।
अथवा वह नवमांश में राशि गहे मलीन।।
नीच राशि या शत्रु ग्रह का होता जब संग।
क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो, विकृति होता अंग।।

३५

राहु, मन्दि और मन्द संग अंत्येश का वास।
पापयुत हो रिस्फ अगर अंग का होता नाश।।

३६

धन एवं व्ययभाव में, पापी करे गमन।
जातक को होता तब कारागृह का बन्धन।।

३७

शनि, राहु और भौम का, व्यय पर पड़े प्रभाव।
राजदण्ड या कैद हो, धन का रहे अभाव।।

३८

मीन लग्न, व्ययभाव में राहु, भौम की छांव।
शुभ प्रभाव से रहित हो जल सकता है पांव।।

३९

मेष लग्न, नीचस्थ शनि, भौम बसे पाताल।
राहु - केतु की दृष्टि दे दुर्घटना सदिकाल।।

४०

सुख, रन्ध्र, रिपु, अंत्य में, मंगल करे प्रवास।
मेष लग्न में शनि हो, अंग - भंग का त्राश।।

४१

कर्क लग्न में, तुला राशि में, राहु, सौम्य संयोग।
बुध दशा या भुक्ति में बन्धन - कैद का भोग।।

४२

वृषभ लग्न, नीचस्थ भानु, उच्चस्थ रविनन्दन।
स्वरभान दे सुहृत में, दुर्घटना व बन्धन।।

सन्तान तथा पत्नी को क्लेश

४३

भाग्येश हो नीच का, तनय बसे व्यय नायक।
राहु संग संयुक्त हो, संतति के हित घातक।।

४४

पंचमस्थ बुध राशि में, सौरि राहु का वास।
भौम सौम्य आकाश में, गर्भ का करता नाश।।

४५

लग्न कर्क हो, तनय में बुध - सूर्य का वास।
राहु से हो दृष्ट अगर, गर्भ का होता नाश।।

४६

कुम्भ लग्न द्वादशस्थ सूर्य का मंगल नक्षत्रेश।
शनि, केतु, कुज सहज में, पत्नी को दे क्लेश।।

४७

उदय भाव में भौम हो, तनय में राहु समाय।
रन्ध्र भाव में रवि बसे, द्वादश सौरि सजाय।।
लग्नेश और सुखेश का त्रिक् - भाव में वास।
मातृशाप से जातक का संतति सुख हो नाश।।

परलोक ज्ञान

४८

शशि, भानु में जो भी होता पत्री में बलवान।
उनका तब द्रेश्कानपति दे, परलोक का ज्ञान।।
द्रेश्कानपति हो गुरु अगर, मिलता देवलोक।
चन्द्र, शुक्र से जाता नर, पितृजनों के लोक।।
रवि, मंगल देता पुनः पशु - रूप में जन्म।
सौम्य सौरि से नरक हो, कटता जहां अधर्म।।

नरक बास

४९

नवमांश में रिस्फेश्वर का मेजबान हो दृष्ट।
पाप ग्रहों की दृष्टि से, नरकबास हो पुष्ट।।

५०

अंत्य भवन में हो यदि मन्दि संग स्वरभान।
क्षत, नाशपति साथ हो, होता नर्क प्रयाण।।

५१

मलिन षष्टियंश में अंत्येश का जब बनता है वेश।
क्रूर ग्रहों की दृष्टि से, नरक में हो होय प्रवेश।।

नेत्र एवं निद्रा

५२

धनगत वक्र, मृत्यु में दिनकर, शशि बसे अरिक्षेत्र।
व्ययभाव का शनि राहु तब हर लेता है नेत्र।।

५३

शुभ राशि, नवमांश में, अंत्येश का बास।
शुभ दृष्टि से युक्त हो, नेत्र का बढ़े प्रकाश।।

५४

नेत्र में पीड़ा होती जब, शुक्र, रिस्फ हो भ्रष्ट।
शुक्र के बदले शनि वही पैरों में दे कष्ट।।

५५

जीव, सौम्य और कवि यदि रिस्फ में रहे प्रविष्ट।
वाहनादि या शमन-सुख की होती तब पुष्टि।।

५६

शुभ प्रभावित अंत्य दे, शयूया सुख सम्पूर्ण।
दुःख देता है क्रूर, दुष्ट ग्रह, निद्रा रहे अपूर्ण।।

पर-उपकार

५७

सिंह लग्न, पंचमस्थ गुरु, भाग्य में भौम सुधाकर।
तब जनता के हित सदा, जातक जीता जुटकर।।

विदेश गमन

५८

लग्नेश व्यय भाव में चर राशि का होय।
तब विदेश यात्रा का नर सपना धरे संजोय।।

५९

लग्ननाथ से द्वादसगृह का नायक केन्द्र समाय।
तब विदेश यात्रा का बनता जग में बहुल उपाय।।

६०

चर राशिगत अंत्यपति, रिस्फ में रहे तपेश।
तब जातब सौभाग्य से करता गमन विदेश।।

६१

तपनायक चर राशिगत, तप में हो व्ययनायक।
बार-बार परदेश की यात्रा करता जातक।।

६२

वायु तत्व में हो अगर तनु, तप व व्यनायक।
तब विदेश की यात्रा करे निरन्तर जातक।।

६३

गगन अंत्य से जुड़े यदि चर राशिगत यदुनायक।
तब विदेश की यात्रा करे निरन्तर जातक।।

६४

सहज निधन या लाभ में जब वसता स्वरभान।
वायु तत्व हो राशि वहां, हो परदेश प्रयाण।।

फोता बढ़ना

६५

मिथुन लग्न के व्यय भाव में, सौरि करे प्रवेश।
राहु, शुक्र हो सहज में, भाग्य में शशि का वेश।
भानु, भौम और बुध संग सुख में करे गमन।
अण्डकोष में जल भरने से होता है आपरेशन।।

विविध

६६

मेष लग्न, उच्चस्थ शुक्र पर राहु भौम का रोष।
रविनन्दन हो गगन में हो शुक्राणु में दोष।।

६७

मीन लग्न में शुक्र हो, रिस्फ में गुरु का मान।
धन में भानु, हिबुक में मंगल, उत्तम बने मकान।।

६८

व्ययभावगत, नीच, अस्त या शत्रुगृही सुतनायक।
राहु, भौम, शनि दृष्टि तब पुत्र प्राप्ति में बाधक।।

६९

धनेश और व्यय नाथ की चले दशा और भुक्ति।
परम कष्टमय समय वह, मिले न दुःख से मुक्ति।।

७०

सिंह लग्न में मंगल हो, शनि तनय को जाय।
दुर्घटना देता सदा जब दिनकर अंत्य समाय।।

७१

लग्न कीट हो, शनि नीच का षष्टम घर में लोट।
द्वादशस्थ दिनकर अगर, सिर में लगती चोट।।

७२

अंत्येश नवमांश में झष में करे प्रवेश।
भाग्योदय हो जातक का यदि बसे परदेश।।

७३

अंत्य भाव में चन्द्र हो, द्यून में दैत्य अमात्य।
गृहणी की होती निधन, ज्योतिष कहता सत्य।।

७४

नीच शुक्र का जब रचे शनि नवांश में नृत्य।
भानु, सोम हो अंत्यगत, जातक बनता भृत्य।।

७५

देवगुरु हो रिस्फगत, लग्न में हो यदुनायक।
केन्द्रस्थ हो सौरि तो भिक्षुक बनता जातक।।

७६

अरि, रन्ध्र में चन्द्र हो, द्यून मन्द आसीन।
व्ययपति हो बलवान तो जातक हो धनहीन।।

७७

उग्र, पाप प्रभाव हो अंत्य भवन के ऊपर।
धनहानि सहना परे, नर को कदम-कदम पर।।

७८

मीन राशि कारकांश में करता ध्वजी विलास।
सब भौतिक सुख त्यागकर जातक ले संयास।।

७९

रवि, कवि, फणि एक संग व्यय में होवे पस्त।
राजदण्ड से धन गँवाकर जातक रहता त्रस्त।।

८०

देवगुरु जाकर वसे यदि रिस्फ स्थान।
व्ययनाथ तपगत रहे, जातक करता दान।।

८१

अंत्यस्थ वागीश पर पाप दृष्टि की भीड़।
द्यूनपति हो दुश्ट संग, गुप्त रोग दे पीड़।।

८२

क्षीण चन्द्र और भानुसुत व्यय में करे प्रवेश।
अंत्येश संग गुरू दे वातरोग से क्लेश।।
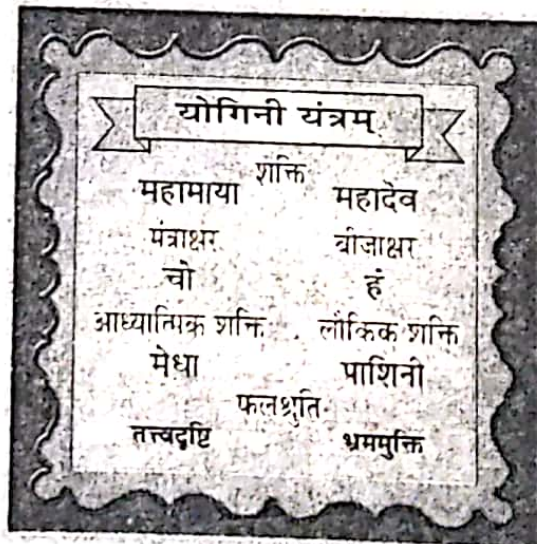
परिशिष्ट "अ"

भावों के प्रर्यावाची नाम

प्रथम भाव;

लग्न, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, वपु, होरा, सिर, कल्प और आद्य।

द्वितीय भाव;

वाक्, चित्त, कुटुम्ब, द्रव्य, स्व, कोष धन तथा अर्थ।

तृतीय भाव;

सहोत्थ, सोदर, सहज, दुश्चिक्य, ग्रीव, भुजा, पराक्रम और विक्रम।

चतुर्थ भाव;

सुख, अम्बु, पाताल, रसातल, बन्धु, वेश्म, हृद, वाहन, मातृ, अम्बा, तूर्य, हिबुक, सुहृत, गेह तथा पानी के सभी पर्यायवाची नाम यथा, जल, तोय, नीर, वारि, आदि।

पंचम भाव;

बुद्धि, प्रभाव, मन्त्र, विवेक, उदर, सुत, विद्या, तनय और आत्मज।

षष्टम भाव;

रोग, क्षत, अरि, व्यसन, रिपु, चोर, विघ्न, द्वेषी, शत्रु और कलह।

सप्तम भाव;

चित्तौथ, काम, मदन, भार्या, दारा, द्यून, जामीत्र, भर्ता, अस्त, स्मर, मद, जाया, कलत्र और रमणी।

अष्टम भाव;

क्षीर, गुड्म, मूत्रकृछ, रन्ध्र, छिद्र, नाश, याम्य, निधन, गूह्य, मरण, अन्त, आयु, मृत्यु, मृति तथा लयपद।

नवम भाव;

धर्म, दया, पितृ, पैत्रिक, भाग्य, गुरु, शुभार्जित, शुभ तथा मार्ग।

दशम भाव;

आज्ञा, मान, कर्म, आस्पद, खं, तात, गगन, व्योम, नभ, अम्बर, आकाश, मेषूरण, मध्य, व्यापार, व्यवसाय तथा राज्य।

एकादश भाव;

आय, लाभ, भव, आगम, आप्ति तथा प्राप्ति।

द्वादश भाव;

व्यय, अंत्य, रिस्फ, विनाश और प्रांत्य।

परिशिष्ट "ब"

राशियों के पर्यायवाची नाम;

मेष;

अज, विश्व क्रिय, तुंबर, आद्य, अबि और छाग।

वृषभ;

वृष, उक्ष, तारूख, गोकुल, तापुरि और गो।

मिथुन;

द्वन्द, नृयुग्म, यम, युग, तृतीय, वैणिक, जितुम, जित्म और युग्म।

कर्क;

कर्कट तथा कुलीर।

सिंह;

कंठीख, मृगेन्द्र, लेय, केसरी और हरि।

कन्या;

पाथोन, रमणी, बाला, अबला, स्त्री, प्रमदा और कामिनी।

तुला;

तौलि, वणिक, जूक और तुलाधर।

वृश्चिक;

अलि, कीट, अष्टम, कौर्पि, कार्ण और सरीसृप।

धनु;

धन्वी, चाप, शरासन, धनुर्धर, कोदण्ड, चाप, हय, तौक्षिक और कार्मुक।

मकर;

मृग, मृगास्य, ओकोकेर, नक्र और मृगवक्त्र।

कुम्भ;

घट, कुम्भधर, हृदिरोग, कलश तथा तोयधर।

मीन;

अंत्य, मतसय, पृथुरोम, शफरी, झष और तिमि।

परिशिष्ट "स"

ग्रहों के पर्यायवाची नाम;

सूर्य; मार्तण्ड, पूषा, अरुण, आद्रि, दिनमनि, नभेश्वर, रवि, भानु, विभावसु,, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर, भास्कर, अहस्कर, हेलि, तरणि, नलिनीविलासी, भानुमान, दिनमान, दिवानाथ, दिननायक, ध्वांतध्वंशी, दीप्तरश्मि, अंशुमाली, चण्डांशु, अर्क, पद्मिनी प्राणनाथ, पंकज-बोधन, पद्म प्रबोधन आदि।

चन्द्र; अब्ज, जैव, अत्रिज, मृगांक, इन्दु, विधु, हिमकर, शशि, सोम, चन्द्रमा, गालु, शीतरश्मि, यामिनीनाथ, शीतकर, यदुनायक, निशाकर, सुधाकर, अब्धिज, कलेश, शीतांशु, रजनीपति, तारापति, अभिरूप, तारानायक, निशिमान, निशानाथ, रमाबन्धु, समुद्रांगज, कुमुदबन्धु, कुमुदेश्वर, पंकजारि, सिन्धुसुत, शशांक, जलाधिपुत्र। नक्षत्रेश, राकापति आदि।

मंगल; भौम, कुज, मुमिसुत, धरापुत्र, अवनीतनय, धरणीनन्दन, वसुधासुत, आर, वक्र, क्रूर, लोहितांग, अविनेभय, रुधिर, रुधिरतिलक, रक्तवस्त्र, रक्तनेत्र, रक्ताम्बर, अंगारक, रक्तलोचन, तीव्रविलोचन, धरणीसुत आदि।

बुध; शशधर तनय, विधपुंत्र, तारातनय, हिमकर सुत, चन्द्रपुत्र, सोमसुत, शशि तनय, रौहिणेय, सौम्य, बोधन, शोभन, वित्त, ज्ञ, चान्द्रि, शांत, श्यामगात्र, अतिदीर्घ, कुमार आदि।

बृहस्पति; सुराधिप, देवसचिव, सुराचार्य, सुरेज्य, गुरु, देवगुरू, सुरगुरू, जीव, अंगिरा, प्रशान्त, वाचांगपति, वागीश, ज्य, दिवेश वंद्य, अमर पूज्य, सुरपण्डित, ग्रहराज ज्यौ, प्रचक्षस, ईड्य, अमर गुरु, शिखंडिज, वचसांपति, देवमंत्री, विबुधपति गुरु, सुर सेवित, शक्रपुरोहित, पीताम्बर, ममतापति, कचतात, सुरामात्य आदि।

शुक्र; भृगु, भार्गव, उश्न, सुनु, अच्छ, कान, कवि, सित, भृगुसुत, आस्फुजित, दानवेज्य, उशना, दैत्य गुरु, बलिपण्डित, असुर पुरोहित, दैत्याचार्य, दैत्यऋत्विक, पुण्डरीक, घिष्ण्य, दैत्याचार्य, शुक्लाम्बर आदि।

शनि; छायात्मज, सूर्यपुत्र, पंगु, अपंग, मन्द, यम, अर्कपूत्र, कोण, असित, सौरि, नील, नीलेश, नीलाम्बर, कपिलाक्ष, दीर्घ, तम, असुर, अगु, दग्धदेह, अभिशप्त, कृशांग, तरणितनय, पातंगी, क्रोड, क्रूरलोचन, द्युमणिसुत, दिनकरात्मज आदि।

राहु; सैंहिकेय, अर्धकाय, स्वरभान, सर्प, दंष्ट्री, विकट, भुजंग, अहिराज, फणिनाथ, विधुन्त आदि।

केतु; ध्वज, ध्वजी, शिखी, जैमिनेय, धूम्रकेतु आदि।
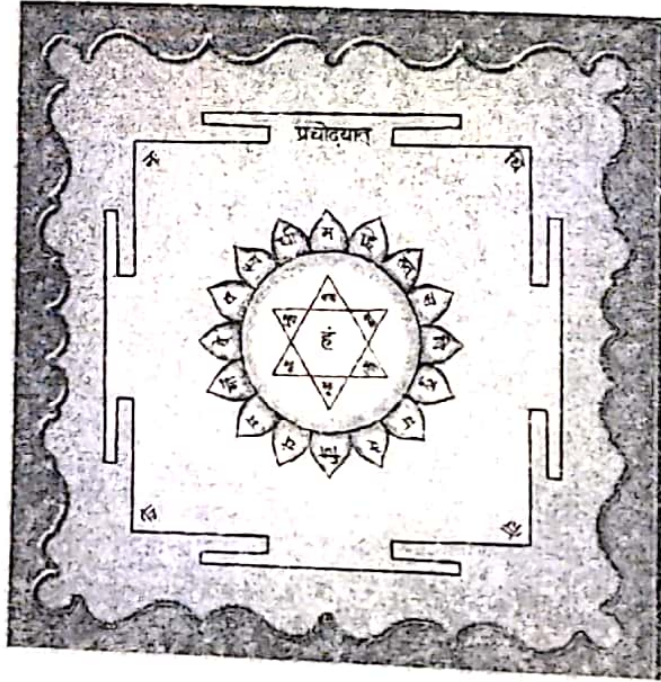
Rare Books Published by Nishkaam Peeth Prakashan

(A Publication Division of *"The Times of Astrology"*)

	Rupees	US $
Rajeshwari Shanker		
* The Times Daily Ephemeris (2000 A.D.-2010 A.D.)	Rs. 250/-	$ 25
* The Times Hundred Years' **(100)** Advanced Ephemeris (2001 A.D.-2100 A.D.)	Rs. 350/-	$ 40
* Times Fortune Book 2001 AD*	Rs. 100/-	$ 15
* Secrets of Lomash Samhita	Underprint	
Swami Sanatan shree		
* Krishna : In The Mirror of Mysteries Revealed	Rs. 70/-	$ 7
* Glimpses of Jyotirved	Rs. 200/-	$ 20
* ज्योतिर्वेद के विभिन्न सोपान – भाग एक	Rs. 80/-	$ 7
* ज्योतिर्वेद के विभिन्न सोपान – भाग दो	Rs. 80/-	$ 7
* ज्योतिर्वेद के विभिन्न सोपान – भाग तीन	Rs. 120/-	$ 12
* सनातन दर्शन के नौ अध्याय	151 रुपये	$ 21
* साधना विज्ञान	101 रुपये	$ 11
* सरयू के तट	101 रुपये	$ 11
* वेद गंगा	10 रुपये	$ 1
* विनायक: बुद्धिमतां / * अधियज्ञ मित्रा / * अश्वत्थ मित्रा / * सीपी के मोती / * कर्म : परमेश्वर / * लव कुश / * यज्ञोपवीत / * दशरथ मार्ग **each**	5 रुपये	$ 1
* गीता : दिव्य दर्शन	प्रकाशनाधीन	
* रहस्य लीला : जादू और जादूगर	प्रकाशनाधीन	
* सनातन वाणी	प्रकाशनाधीन	
K. K. Pathak		
* Remedial Astrology	Rs. 200/-	$ 20
* Garga Hora Shastra	Rs. 60/-	$ 5
* Sage Bhrigu on Predictive Astrology	Rs. 60/-	$ 5
* Hindu Dasa System Vol-I	Rs. 150/-	$ 15
* Hindu Dasa System Vol-II	Rs. 250/-	$ 25
* Hindu Dasa System Vol-III & IV	Underprint	
* Astrological Counselling	Rs. 200/-	$ 20
* Mundane Astrology & Monsoon	Rs. 200/-	$ 20
* Religion and Astrology	Underprint	
* Special Combinations in Astrology	Underprint	
* Riddle of Malefics & Benefics	Underprint	
* Evolution & Involution of Astrology	Underprint	
* Vriddha Yavan Jataka	Underprint	
* Saivika Influences on Astrology	Underprint	
* An Exposition of Rahu & Ketu	Underprint	
* Utility of Shada Bala		
* Fortune and Misfortune	Underprint	
* Ten precious Chapters on Astrology	50 रुपया	$ 5
* ज्योतिष के दस महत्वपूर्ण अध्याय	50 रुपये	$ 5
* यवन-जातक	प्रकाशनाधीन	
* वृहद्यवन जातक	प्रकाशनाधीन	
* एकादशाध्यायी	प्रकाशनाधीन	
* पंचामृत		
Mridula Trivedi & T.P. Trivedi		
* Predicting Marriage	Rs. 550/	$ 75
* Shani Shaman Vol - I	Rs. 250/-	$ 25
* Shani Shaman Vol - II	Rs. 200/-	$ 20
Dr. S.S. Chatterjee		
* Advanced Predictive Astrology -**Vol. I**	Rs. 250/	$ 40
* Advanced Predictive Astrology -**Vol. II**	Rs. 300/	$ 40
S.K. Joshi		
* How to Compute Tax on your Salary & other Income(s)	Rs. 100/-	$ 15
Padmashree Gopal Das "Neeraj"		
* Neeraj Jyotish Dohawali	Rs. 50/-	$ 5
* Neeraj Shuka Nadi Dohawali Vol. I & II	Rs. 50/- Each	$ 5
U.K. Jha		
* Jatakalankar	Underprint	
Sunita Jha	प्रकाशनाधीन	
* ज्योतिश सरित सागर	Rs. 300/-	$ 30
* भाव सिन्धु	प्रकाशनाधीन	
* योग मकरन्द	50 रु.	$ 5
च[illegible] [illegible]काश सिंह : (पातञ्जल योग)		
R.R.[illegible] [illegible]waroop	Underprint	
The Secrets of Vedic Cosmology	Underprint	
The Vedic Integral Yoga		
N.K. Acharya :	Rs. 50/-	$ 5
*Saturn : The Ultimate. Authority of Justice	Underprint	
*Varga Kundli : Divisional Charts		